खूब सोच-विचारकर तिशक्तियोंके बलके सामने अवनत होना ही स्थिर किया। सन् १८६५ ई० की १० वीं मईको जापान सम्राट् मिकाडोका दस्तखती एक फरमान निकला,—"शान्तिके नाना सुविधाओंका विचारकर और अपनी प्रजापर अतिरिक्त दिक्कतोंका भार रख या नई शिकायतें खड़ीकर जातीय भाग्यो न्नतिमें बाधा पहुंचा अवस्थाको और भी शोचनीय बनानेकी खराबीसे बचनेके लिये" जापान-सम्राट्ने "मित्र शक्तियोंकी बात मान ली है। फरमानमें और भी लिखा था,—"इसीलिये मैं अपनी प्रजाको आज्ञा देता हूं, कि वह मेरे विचारकी मर्यादा करे, वर्त्तमान साधारण अवस्थापर ध्यानपूर्व्वक विचार करे, सब बातोंमें सावधान रहे; असम्हलक प्रवृत्तियोंको मनमें स्थान न दे और मेरे साम्राज्यकी उच्चाकांक्षाका विरोध कर उसे सङ्कुचित न बनाये।"

उस समय जापान सिवा इस फैसलेके और कर ही क्या सकता था? सन् १८६५ ई०में जापानी फौजमें सिर्फ सड़-सठ हजार सिपाही थे; कुछ रक्षित सिपाही भी थे, पर वैसे मजबूत नहीं; जाड़ेकी लड़ाईकी क्षति और कष्ट भोगनेके उपरान्त जापानी फौज इस दूसरे महासमरमें प्रवृत्त होनेके लिये बिलकुल ही तय्यार नहीं थी। नौ-सैन्य शीघ्र शीघ्र बढ़ रही थी सही; किन्तु उस समय वह युरोपकी छोटीसे भी छोटी नौ-सैन्यसे सामना करने लायक नहीं थी; उसमें एक भी बड़ा जहाज नहीं था। यही सब देख जापानने चीनको दी हुई जमीनको अतिरिक्त रकम स्वीकारकर उसका देश खाली कर दिया और झटपट घोर युद्धमें प्रवृत्त होनेके

भयङ्कर मसाले जमा करने लगा। जापानी राजनीतिज्ञोंको विश्वास हो गया, कि युद्ध अनिवार्य है। सन् १८९६ ई०में जापानी युद्ध-विभागके आगे-पीछे संस्कारका नकशा तय्यार हुआ और स्थिर हुआ, कि इसीके अनुसार संस्कारकार्य चला अबसे सात वर्ष बाद यानी सन् १९०३ ई०में जल और स्थलकी सेनाको संस्कृत करना चाहिये। इस तय्यारीका मुख्य उद्देश्य यह था, कि जापानने शत्रुको मञ्चूरियासमरमें पराजितकर जिस स्थानपर अपना विजय-निशान उड़ाया है, उसपर जापान हीका अधिकार रहे; औरका नहीं। एक ओर जापान युद्धका सामान करने लगा दूसरी ओर रूसकी चलती हुई कपटचाल हुई। जापानने जैसे ही चीनका लियाउटुङ्ग उपद्वीप खाली किया, वैसे ही रूसने उसपर अधिकार कर लिया और धीरे धीरे अपना अधिकार आगे बढ़ाने लगा; उसकी इस चालपर उस समय युरोपकी किसी शक्तिने किसी तरहकी व्यावहारिक आपत्ति प्रकाश नहीं की।

इस अवसरमें जापान तन्मय हो अपनी साधनामें लगा रहा। जैसे जैसे वर्ष बीते, वैसे वैसे उसका काम आगे बढ़ा। सुश्टङ्खला और सुव्यवस्थाके गुणसे ठीक सातवें वर्ष सन् १९०३ ई०में जापानका यह विराट् आयोजन पूरा हुआ। सन् १९०३ ई०में जापानकी संस्कृत नौ-सेनामें बिलकुल ही नये ढङ्ग और अव्वल दरजेके छः जङ्गी जहाज, एक पुराने ढङ्गका जङ्गी जहाज, छः अव्वल दरजेके, पांच दूसरे दरजेके और नौ तीसरे दरजेके छोटे जङ्गी जहाज, चौदह जङ्गी नावें, उन्नीस डिस्ट्रायेर और पचासी तारपीडो नावें हो गईं। उनके सौदागरोंके जहाजोंकी संख्या

खूब सोच-विचारकर तिशक्तियोंके बलके सामने अवनत होना ही स्थिर किया। सन् १८६५ ई० को १० वीं मईको जापान सम्राट् मिकाडोका दस्तखती एक फरमान निकला,—"शान्तिके नाना सुविधाओंका विचारकर और अपनी प्रजापर अतिरिक्त दिक्कतोंका भार रख या नई शिकायतें खड़ोकर जातीय भाग्यो न्नतिमें बाधा पहुंचा अवस्थाको और भी शोचनीय बनानेकी खराबीसे बचनेके लिये" जापान-सम्राट्ने "मित्र शक्तियोंकी बात मान ली है। फरमानमें और भी लिखा था,—"इसीलिये मैं अपनी प्रजाको आज्ञा देता हूं, कि वह मेरे विचारकी मर्यादा करे, वर्त्तमान साधारण अवस्थापर ध्यानपूर्व्वक विचार करे, सब बातोंमें सावधान रहे; भ्रममूलक प्रवृत्तियोंको मनमें स्थान न दे और मेरे साम्राज्यकी उच्चाकांक्षाका विरोध कर उसे सङ्कुचित न बनाये।"

उस समय जापान सिवा इस फैसलेके और कर ही क्या सकता था? सन् १८६५ ई०में जापानी फौजमें सिर्फ सत्तर हजार सिपाही थे; कुछ रक्षित सिपाही भी थे, पर वैसे शहजोर नहीं; जाड़ेकी लड़ाईकी क्षति और कष्ट भोगनेके उपरान्त जापानी फौज इस दूसरे महासमरमें प्रवृत्त होनेके लिये बिलकुल ही तय्यार नहीं थी। नौ-सैन्य शीघ्र शीघ्र बढ़ रही थी सही; किन्तु उस समय वह युरोपकी छोटीसे छोटी नौ-सैन्यसे सामना करने लायक नहीं थी; उसमें एक भी जङ्गी जहाज नहीं था। यही सब देख जापानने चीनको दी हुई जमीनको अतिरिक्त रकम स्वीकारकर उसका देश खाली कर दिया और झटपट घोर युद्धमें प्रवृत्त होने

भयङ्कर सभाले काम करने लगा। जापानी राजनीतिज्ञोंको विश्वास हो गया कि युद्ध अनिवार्य है। सन् १८९६ ई०में जापानी युद्ध-विभागके आगे-पीछे संस्कारका नक्शा तय्यार हुआ और स्थिर हुआ, कि इसीके अनुसार संस्कारकार्य धीरे धीरे सात वर्ष बाद यानी सन् १९०३ ई०में थल और जलकी सेनाको संस्कृत करना चाहिये। इस तय्यारीका मुख्य उद्देश्य यह था, कि जापानने जिसको समरक्षेत्रमें पराजयकर जिस भूभाग पर अपना विजय-निशान उड़ाया है, उसपर जापान हीका अधिकार रहे; गैरका नहीं। एक ओर जापान युद्धका सामान करने लगा दूसरी ओर रूसकी चलती हुई कपटचाल हुई। जापानने जैसे ही चीनका लियाउटुङ्ग उपद्वीप खाली किया, वैसे ही रूसने उसपर अधिकार कर लिया और धीरे धीरे अपना अधिकार आगे बढ़ाने लगा; उसकी इस चालपर उस समय युरोपकी किसी शक्तिने किसी तरहकी व्यावहारिक आपत्ति प्रकाश नहीं की।

इस अवसरमें जापान तन्मय हो अपनी साधनामें लगा रहा। जैसे जैसे वर्ष बीते, वैसे वैसे उसका काम आगे बढ़ा। सुशृङ्खला और सुव्यवस्थाके गुणसे ठीक सातवें वर्ष सन् १९०३ ई०में जापानका यह विराट् आयोजन पूरा हुआ। सन् १९०३ ई०में जापानकी संस्कृत नौ-सेनामें बिलकुल ही नये ढङ्ग और अव्वल दरजेके छः बड़े जहाज, एक पुराने ढङ्गका बड़ा जहाज, छः अव्वल दरजेके, पांच दूसरे दरजेके और नौ तीसरे दरजेके छोटे जङ्गी जहाज, चौदह जङ्गी नावें, उन्नीस डिष्ट्रायेर और पचासी तारपेडो नावें हो गईं। उनके भाण्डागारोंके जहाजोंकी संख्या

बढ़कर एक हजार तीन सौतक पहुंच गई। इस पचासी सिपाही और अफसर अव्वल दरजेकी नौ-युद्ध-शिक्षामें शिक्षित हुए। मतलब यह, कि उस समय जापानके नौ-सैन्यका कुल सामान—जहाज, तोप, माइन या जलमग्न आग्नेय अस्त्र, तारपेडो, स्फोटकसे लेकर छोटेसे छोटा युद्धोपकरणादि—नया, नये ढङ्गका और बहुत ही कीमती था। स्थल-सैन्य-संस्कारमें जापानने "भरती" या Conscription प्रथासे काम लिया और सात वर्ष अविराम श्रमकर अपनी प्रजाको युद्धकुशल बना दिया। इन वर्ष जापानके स्थल-सैन्यमें युरोपकी सर्व्वोत्कृष्ट युद्धशिक्षासे शिक्षित सात हजार ८ सौ अफसर, तीन लाख इकतीस हजार सिपाही और सत्तर हजार सवार थे। इसमें प्रादेशिक सैन्य भी मिला देनेसे जापानके स्थल-सैन्यकी संख्या इसप्रकार होती थी,—पांच लाख बीस हजार सिपाही, एक लाख एक हजार सवार और एक हजार तीन सौ अड़सठ तोपें। सिवा इसके जापान-सैन्यकी पीठपर कोटि कोटि स्वदेशभक्त जापान-सन्तानोंकी सम्मिलित शक्ति तो थी ही।

युरोपकी शक्तियोंने जितना ख्याल सन १८९५ ई०में जापानके अपमानका किया था; उतना ही ख्याल अब उसकी बढ़ती हुई शक्तिका किया। विशेषतः रूस, जापानकी बल-वृद्धिको कुछ भी ख्यालमें न लाया। जापान-राजधानी टोकियोमें रूसका जो दूत रहता था, वह या तो अन्धा था, या रूस-राज-दरबारमें अपनी बातका कुछ भी प्रभाव उत्पन्न कर नहीं सकता था, या रूसके राजनीतिज्ञोंकी आंखें मुंदी थीं या कुछ नयी बातें यथेष्ट परिमाणसे मौजूद थीं। तमाशा देखिये, कि युद्ध

आरम्भ होनेके कुछ महीने बाद रूस-साम्राज्यके युद्ध-सचिव स्वयं रूसके प्रधान सम्राट्‌को बतलाया था,—"जापानके रणक्षेत्रमें सिर्फ दो लाख कुछ हजार सिपाही हैं; थोड़े से रक्षित सिपाही भी हैं, पर वह गिने जाने लायक नहीं।" रूस आखिर तक वास्तवमें जापानको पहचान नहीं सका। उसको यह खबर नहीं थी, कि जापान एक प्रबलपराक्रान्त शक्ति है और उसे छेड़नेका परिणाम बुरा। शराब पीकर अचेत रहना आसान है, पर प्रभुताका शराब पीकर होश न खोना अत्यन्त कठिन। रूस प्रभुता-मदके नशेसे मतवाला था। "अल्पबुद्धि बन्दर," "पीला मूर्तिपूजक" और इसीतरहकी बहुतसी गालियां दे जापानकी हंसी किया करता था। हमें वह हास्यजनक तसवीरें भूली नहीं हैं, जो युद्धारम्भसे पहले युरोपके अखबारोंमें निकाला करती थीं। किसी तसवीरमें बन्दर जापान अपनी पतली कमरमें तलवार बांध कर पर्व्वतपर चढ़नेकी चेष्टा कर रहा है; किसीमें शिशु जापान काठका घोड़ा कुदा रहा है; किसीमें पर्व्वत-शृङ्गपर खड़े नन्हें से जापानको विशालदेह रूस पैरकी एक ही ठोकरसे नीचेके अथाह सागरमें गिरा रहा है; किसीमें रूस-सिपाही जापानका कान मर्द्दन कर रहा है और जापान इस पीड़ासे व्याकुल हो सिसकियाकर बच्चोंकी तरह रो रहा है। जापान एक तो पददलित एशियाकी शक्ति था,—दूसरे एशियाकी शक्तियोंमें भी बहुत ही छोटा; युरोपकी सर्व्वश्रेष्ठ शक्ति रूस ऐसे जापानके सम्बन्धमें और क्या ख़याल कर सकता था? रूस जापानको मध्य-एशियाकी खीवा, बुखारा या तुर्किस्तान जैसी कोई नगण्य शक्ति समझा; उसके मनमें स्वप्नमें भी

यह विचार उत्पन्न नहीं हुआ, कि जापान युद्धके लिये रूस जैसी अमितशाली शक्तिको भी ललकार सकता है।

रूस बहुत दिनोंसे चीनका मञ्चूरिया हड़प कर जानेकी फिक्रमें था। सन् १८६० ई०में इङ्गलण्ड और फ्रान्सने मिलकर जब चीन-राजधानी पेकिनपर अधिकार कर लिया था, तब चीनसे रूसने मञ्चूरियाको छः सौ मील भूमि और ब्लाडीवष्टक-बन्दर ले पूर्वोक्त शक्तिद्वयसे पेकिन खाली कराया था। सन् १८६६ ई०में रूसने चीनमें "रशो चाइनीज बङ्क" खोल चीनसे ट्रान्ससाइबेरियन-रेलकी शाखा ब्लाडीवष्टक-बन्दरतक ले जानेकी मञ्जूरी ली; पैर रखनेको जगह पाते ही अपनी अङ्गवृद्धि आरम्भ की। देखते देखते रेल-विस्तारका नक्शा बहुत बढ़ गया और मञ्चूरिया रूसी इञ्जीनियरों और उनके रक्षक सिपाहियोंसे भर उठा। ऐसे समय युरोपकी अन्यान्य शक्तियां स्थिर कैसे रह सकती थीं? सन् १८६७ ई०में जर्मनी कियावचावपर कब्जा कर बैठा और इसी सन्में रूसने चीनसे आरथर-बन्दर ले लिया। इसके उपरान्त ही रूसके जङ्गी जहाजोंका बेड़ा आरथर-बन्दर पहुंचा और रूसने चीनसे तालीवान प्रभृति स्थानोंका ठेका और मञ्चूरियासे आरथर-बन्दर-तक रेल बनानेकी मञ्जूरी ली। इस समय अङ्गरेज भी निकम्मे नहीं थे। इसतरह रूसने जिन स्थानोंसे जापानको निकाला था, उन्हीं स्थानोंमें वह स्वयं घुस बैठा। जापान रूसकी इन चालोंको समझता था, पर अपनी निर्बलताकी वजह सिवा मामूली जुबानी जमाखर्चके रूसके विरुद्ध और कोई कार-न सकता था।

एक कोरिय वासी ।



फिरौव.खा जताफरोश ।

सन् १८९८ ई०की अन्ततक आरथर-बन्दरमें रूसकी एक जबरदस्त फौज जमा हो गई और रेल-पथपर रूसी सिपाहियोंका पहरा बैठ गया। इसी समय उत्तर-चीनमें बलवा हुआ; जिसे रूसने मञ्चूरियामें जमकर बैठने और इर्दगिर्द हाथ बढ़ानेका मुंहमांगा मौका दिया। इसके उपरान्त ही रूसकी लालचीली दृष्टि जापानके जीवनाधार कोरियापर पड़ी; चटपट दोनोंमें एक सन्धि हुई, जिसके फलसे कोरियाकी यालू और तूमान नाम्नी नदियोंके किनारे रूस-प्रजाको खानि खोदने और वृक्ष काट शहतीर बनानेका ठेका मिला। रूसके जिन लोगोंने यह ठेका लिया, वह "रूस-प्रजा" होनेके साथ साथ प्रगाढ़ उच्चपदस्थ रूस-राजकर्मचारी भी थे। ठेकादारोंकी रक्षाके लिये यङ्गम्पोपर रूसने कबजा कर लिया; वहांतक तार लगा दिया और रेल ले जाने तथा किलाबन्दीका सिलसिला फैलानेकी तय्यारी करने लगा। रूस! उस समय यदि कोरियाभूमि बोल सकती, तो तुमसे कहती, कि तुम्हारे इस कामका अशुभजनक फल जरूर पाओगे; इसलिये तुम इसके करनेका विचार छोड़ दो; संसारमें तुम्हारे करनेको कामोंकी कमी नहीं।

सन् १९०० ई०से ही रूसकी इस गोपखसोट और सीनाजोरीके विरुद्ध जापानकी शिकायतकी आवाज उत्थित हुई। जापान चीन और कोरिया दोनोंके राजदरबारोंमें पहुंच उन्हें रूसकी कपटचालका हाल समझाकर कहने लगा। जापानके राजनीतिज्ञोंकी गतिविधि बढ़ी,—उनकी बातें बहुत कुछ साफ होने लगीं। इनके फलसे चीनकी आंखें खुलीं और उसने देखा, कि उसकी और जापानकी क्षति-वृद्धिके बीच बहुत कुछ

समता है। रूसके कोरियाका ख्याल करनेके उपरान्त ही सन् १९०१ ई०में जापानके सुप्रसिद्ध राजनीतिविशारद मारक्विस आइटो कोई गुप्तयन्त्रणा करनेके लिये रूस-राजधानी सेण्ट-पिटर्सवर्ग पहुंचे। आइटोकेसे नामी पुरुषके सेण्टपिटर्सवर्ग जानेसे साफ समझमें आता है, कि इस समय जापानने रूसको समझाबुझाकर होशमें लानेकी बहुत बड़ी चेष्टा की; किन्तु उसका कोई फल नहीं हुआ। इसके उपरान्त सन् १९०२ ई०में जापान-अङ्गरेज-सन्धि हुई और इसी सन्में मञ्चूरियाको एक तरहसे मञ्चूरिया खाली करनेके लिये रूसको दबाया; रूसने भी धीरे धीरे मञ्चूरिया खाली करनेका वादा किया; किन्तु कौन करता है? रूसके मञ्चूरिया खाली करनेकी तारीख अक्टूबरकी ८वीं आई और चली गई; मञ्चूरिया खाली करना तो दूर रहा; रूस उससे एक इञ्च भी न टला। समग्र जगत्में झूठ अधर्म समझा जाता है और झूठा समाज द्वारा न्यूनाधिक तिरस्कृत होता है; किन्तु मञ्चूरिया खाली करनेके सम्बन्धमें रूसने इसी निन्दनीय धर्मविरुद्ध झूठ हीको अपना सम्बल बनाया और इसके लिये किसीने उसे उतना बुरा न कहा; शायद आपकर्मजनित धिक्कार छोटोंके लिये है, बड़ोंके लिये नहीं। जगत्में प्रायः ऐसा ही देखा; जो काम बड़ोंके लिये सम्मान सूचक है—गौरवका कारण; वही काम छोटोंके लिये अपमानसूचक। इसीतरह कितने ही झूठे वादोंके बाद रूस अब अपनी असली मूर्त्ति प्रकटकर साफ साफ कहने लगा, कि वह मञ्चूरिया छोड़ना नहीं चाहता। उसके विचारोंकी खबर बदली। रूसके अर्द्धसरकारी अखबार "विरो-

मोस्ती" ने साफ लिख दिया,—" हम राजनीतिक भूल कर सकते हैं; किन्तु उस भूलपर कायम रह नहीं सकते।" इसीके साथ साथ सन् १९०३ ई० को ३०वीं जुलाईको रूस-ज़ारने एक शाही फरमान निकाल सुदूर पूर्वकी लाटगीरीका पद सृष्ट किया। एडमिरल अलेक्सिफ़ इस नये पदपर प्रतिष्ठित किये गये; आप सुदूर पूर्वके पहले बड़े लाट हुए; सुदूर-पूर्वकी जल और स्थलकी फौजोंका और उस देशका शासन-भार आपके हाथ अर्पण किया गया।

जापान सब देख रहा था, सब समझ रहा था; उसने सन् १९०३ ई० को जुलाईके अन्तमें रूसको लिखा, कि हमें परस्पर परामर्शकर ऐसे एक सिद्धान्तमें उपनीत होना चाहिये, जिससे मञ्चूरिया और कोरियामें हम दोनोंके प्रभावको एक दूसरेके प्रकट प्रभावसे हानि न पहुंचे। रूस-सरकारके इस प्रस्तावसे सम्मति करनेपर जापानने अपना एक राजदूत सेण्टपिटर्सबर्ग भेज निम्नलिखित मर्म्मका एक प्रस्ताव-पत्र रूस-सरकारके सामने पेश किया,—

(१) चीन और कोरिया दोनों स्वतन्त्र रहें और उनके देशमें उन्हींका सच्चा अधिकार रहे।

(२) जगत्की कुल जातियोंको इन दोनों देशोंमें व्यापारादिका समान अधिकार मिले।

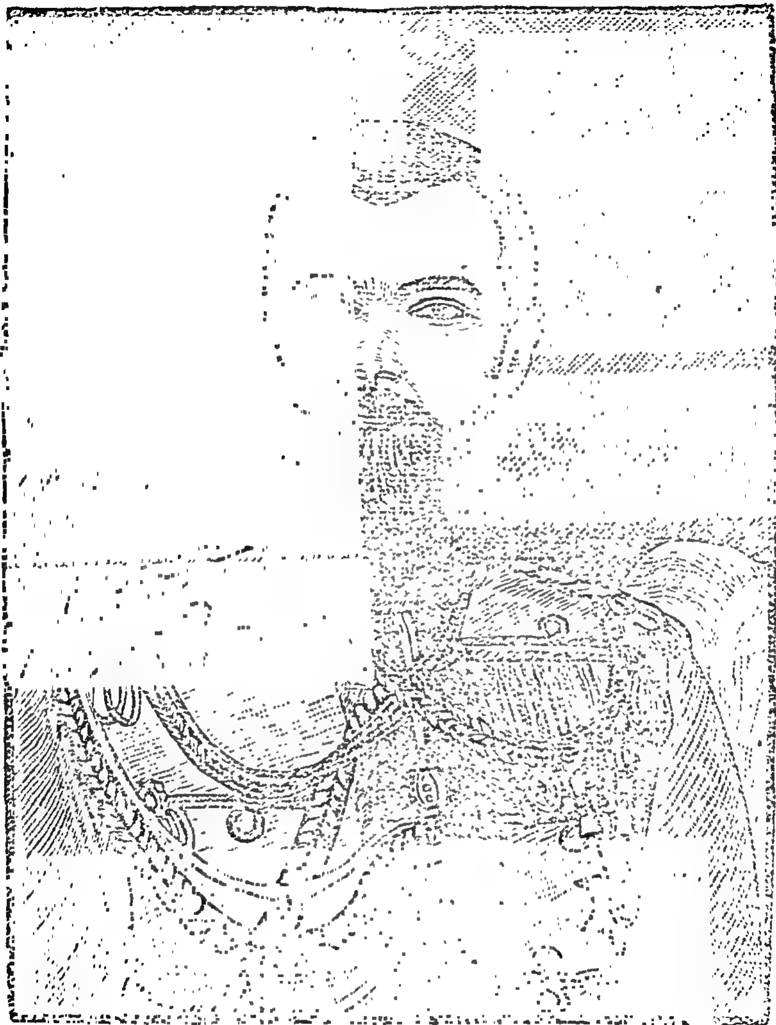
(३) आपसमें यह तय हो जाये, कि कोरियाकी शान्तिलाभकी बातमें जापानका गुरुत्व रहे और मञ्चूरियाकी रेलके व्यवहारमें रूसका।

(४) रूस यह मान ले, कि कोरियाको सुशासनके सम्बन्धमें परामर्शादि देना जापानका एक स्वतन्त्र अधिकार है।

(५) रूस भविष्यत्में दक्षिण-मञ्चूरिया और कोरियाको रेल द्वारा न जोड़नेका वादा करे।

यह प्रस्ताव रूस-सरकारको पसन्द न आये। कोई चार महीने बाद ११ वीं सितम्बरको रूस-सरकारने उत्तर दिया। उत्तरमें मञ्चूरियावाले प्रस्तावका कोई जिक्र ही नहीं किया और कोरियावाला प्रस्ताव साफ अस्वीकार कर दिया। जापानने रूस-सरकारको लिखा, कि एकबार फिर वह अपनी स्थितिपर विचार करे। सन् १९०४ई०की ६ ठी जनवरीको रूस-सरकारका जवाब आया; जिसमें रूसने नियम-पत्रमें एक नया नियम जोड़नेके लिये लिखा था। नया नियम था,—"जापान मञ्चूरियाको अपनी प्रभाव-सीमासे बाहर समझे; इसके बदले रूस-सरकार जापान और अन्यान्य शक्तियोंको वह सुविधायें भोग करने देगी,जो उन्हें सन्धि द्वारा चीन-सरकारसे प्राप्त हुई है; इनमें सिर्फ इस्तिमरारी बन्दोबस्तकी सुविधाओंको भोग करने न देगी।" रूस-सरकारने और भी कहा था,—"जापान मञ्चूरियामें यह सुविधायें उसी समय भोग सकेगा'; जिस समय वह कोरिया और मञ्चूरियाके बीच एक स्वतन्त्र भूखण्ड छोड़ देगा और कोरियाके किसी अंशमें किलाबन्दी न करनेका वादा करेगा।" जापानके सामने एक नया प्रस्ताव और नई बातें उपस्थित करनेपर भी रूसने मञ्चूरियापर चीनका प्रभुत्व अक्षुण्ण रखनेकी बाबत कोई जवाब न दिया। और यही एक प्रधान बात थी; क्योंकि बिना इसके कुल प्रस्ताव अन्तःसारशून्य हो जाते थे। इसीलिये जापानने १३ वीं जनवरीको रूससे फिर कहा,—"... रे प्रस्तावोंपर फिरसे विचार होना चाहिये

रूस सम्राट



द्वितीय निकोलस।

और यथासम्भव शीघ्र जवाब मिलना चाहिये। जापानको इस चालका रूसने कोई जवाब नहीं दिया। रूसने लिखकर जवाब न देनेपर भी अपनी कारवाईसे साफ जवाब दे दिया। वह शीघ्र शीघ्र दृढ़ता पूर्वक अपनी जल और स्थलकी सैन्य सुदृढ़ करने लगा। नवीं मासमें आर्थर-बन्दरमें छोटे बड़े सब मिलाकर कुल कोई [illegible] जहाज जमा हो गये, जिनमें एक हजार तीन सौ पचपन [illegible] और अट्ठारह हजार लिए हुए थे। मञ्चूरियामें रूसके कोई चालीस हजार सिपाही जमा हो गये और कोई एक लाख साठ हजार रूससे मञ्चूरियाकी ओर क्रम क्रमसे भेजे जानेको थे। एक जबरदस्त रूसी फौज आर्थर-बन्दरसे यलू नदीके किनारे भेज दी गई और आर्थर-बन्दरका जङ्गी जहाजोंका बेड़ा खुले समुद्रमें निकल बाहर आकर अपनी शान दिखाने लगा।

सन् १९०४ ई०को ६ वीं फरवरीसे युद्धकी घटा अधिक सघन हुई। जापानने सबसे पहले अपने सौदागरोंके जहाजोंको विदेशसे वापस मंगा जापानमें एकत्र किया। इसके उपरान्त ही युरोपके जेनोआ स्थानमें बने दो अव्वल दर्जेके छोटे जङ्गी जहाज निशीं और कासूगाको शीघ्र जापान मंगा लेनेकी व्यवस्था की। रूसके कितने ही जङ्गी जहाज आर्थर-बन्दरकी ओर आ रहे थे। निशीं और कासूगाने इन जङ्गी जहाजोंको राहमें देखा और फरवरीके आरम्भमें सिङ्गापोर या सिङ्गापुर पहुंच इन जङ्गी जहाजोंके आनेका समाचार जापान सरकारको दिया। इन समाचारोंने और आर्थर-बन्दर तथा मञ्चूरियाकी रूसकी जल-स्थल-सैन्यकी गतिविधिके समाचारने जापानको

शीघ्र ही रूससे सन्धि-परामर्शका चलता हुआ सिलसिला तोड़ देनेके लिये बाध्य किया। ३ री फरवरीको जापान-राजधानी टोकियोके राजप्रासाद जापान-सम्राट् मिकाडोके सभापतित्वमें एक प्रयोजनीय मन्त्रणा-सभा बैठी। मारकुइस आइटो, आन्यके वयोवृद्ध राजनीतिज्ञगण और प्रत्येक विभागके प्रधान मन्त्री इस सभामें उपस्थित थे। कोई सात घण्टे तक तर्क-वितर्क और वादविवाद चला; अन्तमें सभाने सर्वसम्मतिक्रमसे स्थिर किया, कि सेण्टपिटसंबर्गके जापान दूत मिष्टर कुरिनोको सन्धि-सम्बन्धी परामर्श छोड़ शीघ्र ही जापान वापस आनेकी आज्ञा भेजना चाहिये। ६ ठी फरवरीको जापान-दूतने रूसके विदेश सचिवसे अन्तिम भेंटकर अपनी सरकारकी ओरसे कहा,—"जापान सरकार अब सन्धि-सम्बन्धीय बातें करना नहीं चाहती; वह अब अपने न्याय्य स्वार्थ और उपयोगी स्वत्वोंकी रक्षा आप करेगी।" सिवा रूसी अन्धे राजनीतिज्ञोंके जगत्‌के बाकी सब समझदार समझ गये, कि इस बातका अर्थ है,—युद्ध।

———

द्वितीय परिच्छेद।

युद्धारम्भ।

कोरिया-राजधानी सिउलसे कुछ फासिलेपर उसका छोटासा चेमलफो-बन्दर अवस्थित है। इसी गुमनाम बन्दरके बाहर सागर-वक्षपर महाभयङ्कर वृहत् रूस-जापान-युद्धका श्रीगणेश हुआ। सन् १९०४ ई०की ८वीं फरवरी सोमवारको तीसरेपहर इस बन्दरसे कोई तीन मील दूर गहरे जलमें कितनी ही विदेशी शक्तियोंके जङ्गी जहाज लङ्गर डाले पड़े थे। अङ्गरेजोंका छोटा जङ्गी जहाज टेलवट, अमेरिकाका जङ्गी जहाज विक्सवर्ग, इटलीका एलबा, फ्रान्सका पसकल और रूसका अव्वल दरजेका छोटा जङ्गी जहाज वरियाग तथा तीसरे दरजेका छोटा जङ्गी जहाज कोरीज अपने लङ्गरसे बंधा अपनी जातीय पताका उड़ा रहा था। बन्दरमें अपेक्षाकृत सन्नाटा छाया हुआ था और वैदेशिक जहाजोंके यात्री उत्सुकता और चिन्तापूर्वक शीघ्र ही कोई भयङ्कर समाचार सुननेकी प्रतीक्षा कर रहे थे। रूस-जापानके बीचका राजनीतिक सम्बन्ध एकाएक टूट जानेका समाचार सुदूरके इस सुनसान चेमलफो-बन्दरमें भी पहुंच चुका था और उसीके फलसे इस समय जल और स्थलमें अमङ्गल-सूचक निस्तब्धता प्रत्यक्ष विराज रही थी।

सन्ध्या कोई पांच बजे रूसके जङ्गी जहाज कोरीजने लङ्गर

शीघ्र ही रूससे सन्धि-परामर्शका चलता हुआ सिलसिला तोड़ देनेके लिये बाध्य किया। ३ री फरवरीको जापान-राजधानी टोकियोके राजप्रासाद जापान-सम्राट् मिकाडोके सभापतित्वमें एक प्रयोजनीय मन्त्रणा-सभा बैठी। मारकुइस आइटो, राज्यके वयोवृद्ध राजनीतिज्ञगण और प्रत्येक विभागके प्रधान मन्त्री इस सभामें उपस्थित थे। कोई सात घण्टे तक तर्क-वितर्क और वाद-विवाद चला; अन्तमें सभाने सर्वसम्मतिक्रमसे स्थिर किया, कि सेण्टपिटर्सबर्गके जापान दूत मिष्टर कुरिनोको सन्धि-सम्बन्धी परामर्श छोड़ शीघ्र ही जापान वापस आनेकी आज्ञा भेजना चाहिये। ६ ठी फरवरीको जापान-दूतने रूसके विदेश सचिवसे अन्तिम भेंटकर अपनी सरकारकी ओरसे कहा,—"जापान सरकार अब सन्धि-सम्बन्धीय बातें करना नहीं चाहती; वह अब अपने न्याय्य स्वार्थ और उपयोगी स्वत्वोंकी रक्षा आप करेगी।" सिवा रूसी अन्धे राजनीतिज्ञोंके जगत्के बाकी सब समझदार समझ गये, कि इस बातका अर्थ है,—युद्ध।

द्वितीय परिच्छेद।

—∞—

युद्धारम्भ।

कोरिया-राजधानी सिउलसे कुछ फासिलेपर उसका छोटासा चेमलफो-बन्दर अवस्थित है। इसी गुमनाम बन्दरके बाहर सागर-वक्षपर महाभयङ्कर वृहत् रूस-जापान-युद्धका श्रीगणेश हुआ। सन् १९०४ ई०की ८वीं फरवरी सोमवारको तीसरेपहर इस बन्दरसे कोई तीन मील दूर गहरे जलमें कितनी ही विदेशी शक्तियोंके जङ्गी जहाज लङ्गर डाले पड़े थे। अङ्गरेजोंका छोटा जङ्गी जहाज टेलबट, अमेरिकाका जङ्गी जहाज विक्सबर्ग, इटलीका एलबा, फ्रान्सका पसकल और रूसका अव्वल दरजेका छोटा जङ्गी जहाज वरियाग तथा तीसरे दरजेका छोटा जङ्गी जहाज कोरीज अपने लङ्गरसे बंधा अपनी जातीय पताका उड़ा रहा था। बन्दरमें अपेक्षाकृत सन्नाटा छाया हुआ था और वैदेशिक जहाजोंके वहांकी उत्सुकता और चिन्तापूर्वक शीघ्र ही कोई भयङ्कर समाचार सुननेकी प्रतीक्षा कर रहे थे। रूस-जापानके बीचका राजनीतिक सम्बन्ध एकाएक टूट जानेका समाचार सुदूरके इस सुनसान चेमलफो-बन्दरमें भी पहुंच चुका था और उसीके फलसे इस समय जल और स्थलमें अमङ्गल-सूचक निस्तब्धता प्रत्यक्ष विराज रही थी।

सन्ध्या कोई पांच बजे रूसके जङ्गी जहाज कोरीजने लङ्गर

उठाया और शायद गिरदावरीके लिये धीरे धीरे खुले समुद्रकी ओर चला। अभागे कोरीज! तुम्हें खबर नहीं थी, कि रूसके जल-सैन्यके बेड़ेमें बहुत ही लघु होकर भी तुम कैसा महान् गुरुभार अपने ऊपर लेने चले थे; यह बात तुम यदि जानते, तो भयसे कांप अपने लङ्गरसे बंधे रहते, जल-पथ द्वारा समुद्रकी ओर अग्रसर होनेका साहस न करते। जिस युद्धके फलसे रूसको असीम अपमान सहना पड़ा, उस युद्धका सूत्रपात तुम्हींने किया। चेमलफो-बन्दरके सामने ही एक टापू है। कोरीज जैसे ही इस टापूकी बगलसे निकल खुले समुद्रमें आया, वैसे ही कोरीज-कप्तान बोलेव और जहाजी सिपाहियोंको एक आश्चर्यजनक दृश्य दिखाई दिया। उन लोगोंने देखा, कि कितने ही बारबरदारीके जहाजोंकी रक्षा करता हुआ जापानके नौ-सैन्यका एक स्क्वैड्रन चेमलफो-बन्दरकी ओर चला आ रहा था। स्क्वैड्रनमें सिवा तारपेडो नावोंके पांच छोटे जङ्गी-जहाज और असामा नामक एक बड़ा जङ्गी जहाज था। पांचो छोटे जङ्गी जहाजोंमें हरेक जहाज कोरीजका आधा था सही; किन्तु असामा कोरीजका तिगुना या चौगुना था। रूस-कप्तान बोलेवो असामाको देखते ही समझ गये, कि यह स्क्वैड्रन जापानके कुल नौ-सेनापतियोंमें कमउम्र रियर एडमिरल उरिउके अधीन है। कमउम्र होनेपर भी अमेरिकामें युद्धविद्या सीख इन उरिउने चीन-जापान-युद्धमें बड़ी सुख्याति प्राप्त की थी और रूस-कप्तान बोलेवो इस सुख्यातिसे अपरिचित नहीं थे।

किन्तु भावीकी प्रबलता कौन रोक सकता है? जापानके

सुप्रसिद्ध नौ-सेनापति उरिउके अधीन इतना बड़ा बेड़ा देखकर भी मदान्ध कप्तान बोलिवकी आंखें नहीं खुलीं। उन्होंने जापानके साहसका परिचय सामने पाकर भी जापानको तुच्छ ही गिना। जापानी जङ्गी जहाजोंके आगे आगे पहरेको तारपेडो नावें थीं। उनमें एक कोरीजके पास आई। जैसे ही वह नाव कोरीजके पास आई, वैसे ही कोरीजने इस महासमरकी नींव रखी—उसकी एक तोपका एक गोला नावकी ओर गया। यह गोला नावको नहीं लगा; इसके बदले कोरीजकी ओर नावने दो तारपेडो छोड़े। तारपेडो निशानेपर नहीं पड़े; पड़ते तो कोरीजकी समाप्ति हो जाती। तारपेडो देख कोरीजकी आंखें खुलीं; वह भयविह्वल हो जापानी तारपेडो-नावके सामनेसे भाग बन्दरमें वापस आया और वरियाग जहाजकी बगलमें खड़ा हुआ। जापानी जङ्गी जहाजोंका बेड़ा बन्दरके बाहर खड़ा हुआ और तारपेडो-नावोंकी रक्षामें बारबरदारीके जहाज बन्दरमें पहुंचे। इन जहाजोंसे चार बटालियन फौज या कोई तीन हजार सिपाही उतरे; इनमें कुछ सिपाहियोंने चेमलफो-बन्दरपर अधिकारकर जापानकी राज-पताका उड़ाई और कुछ सिपाही कोरिया-राजधानी सिउलपर अधिकार करनेके लिये रवाना हुए। बन्दरमें खड़े रूसके दोनों जहाज यह सब देख और भी घबराये। जापानी सिपाहियोंके जहाजसे उतरने और चेमलफोपर कबजा करनेके समय दोनोंने किसी तरहकी आपत्ति प्रकाश नहीं की। अब चेमलफो-बन्दरमें जापानी फौज थी और बन्दरके बाहर जापानी जङ्गी जहाज; इन दोनोंके बीच रूसके दोनों जहाज थे।

ऐसे समय रात्रि हुई; मानो सूर्यदेवने इस दिनकी कार्रवाईपर रात्रिका काला परदा डाला।

८वीं फरवरीको सन्ध्या समय चेमल्फोमें सिर्फ इतना ही हुआ; किन्तु इसी दिन इस घटनाके कोई छः घण्टे बाद अर्द्धरात्रिमें चेमल्फो-बन्दरसे बहुत दूर आरथर-बन्दरमें रूस-जापानके बीच अच्छा-खासा एक जल-युद्ध हो गया। चेमल्फोकी छेड़छाड़का परिणाम लिखनेसे पहले आरथर-बन्दरका यह जल-युद्ध लिख देना उचित जान पड़ता है। शायद आरथर-बन्दरके जङ्गी जहाजोंका बेड़ा दिखा जापानको भयभीत करनेके लिये रूसने अपने बड़े लाट अलकसिफको लिखा था, कि आरथर-बन्दरके बेड़ेको खुले समुद्रमें घुमाना चाहिये। यह आज्ञा पा रूसी बेड़ा आरथर-बन्दरसे निकला और दूर दूरका चक्कर लगा ४थी फरवरीको लौट आरथर-बन्दरके मुहानेपर दुर्भेद्य पार्व्वत्य दुर्गकी रक्षामें उसने लङ्गर डाला। इसके बाद ही यानी ६ठी फरवरीको रूस-जापानके बीचका राजनैतिक सम्बन्ध टूटा। उसी दिन सन्ध्या समय रूस-सरकारने अपने "व्यार्फ्लियल मेसेञ्जर" द्वारा यह सम्बन्ध टूटनेका समाचार अपने सुदूर पूर्व्वक बड़े लाट अलकसिफके पास भेजा। अलकसिफ जान गये, कि इस समाचारका अर्थ युद्ध है; किन्तु यह जानकर भी उन्होंने आरथर-बन्दरसे बाहर पड़े बेड़ेकी रक्षाका वैसा कोई उपाय नहीं किया।

८वीं फरवरीकी अर्द्धनिशा समागतप्राय थी। बहुत ही सुदृढ़ किलाबन्दीसे सुरक्षित आरथर-बन्दरके मुहानेके बाहर

सात रूसी जङ्गी जहाज लङ्गर डाले पड़े थे। वह सब सजधजकर युद्धके लिये तय्यार थे, उनकी छोटी-बड़ी कुल तोपें कल-पुरजोंसे लेस यथास्थान रखी हुई थीं। सातों जङ्गी जहाज अव्वल दरजेके थे; उनके नाम यह हैं,—पैट्रोपावलस्क, पोलटावा, सिवस्तपोल, पेरेसवेट, रेटविजां, पवेदा और जारविच। इनकी बगल होमें अव्वल दरजेके पांच छोटे जङ्गी जहाज थे,—नाविक, वयान, डायना, अस्कोल्ड और वोयारिन। जिस जगह इन जङ्गी जहाजोंका बेड़ा लङ्गर डाले पड़ा था, उसके ऊपर ही अरथर-बन्दरके बहुतेरे किलोंमें एक जबरदस्त किला था, जिसकी पर्व्वत तुल्य बनानेवाली बड़ी बड़ी तोपें समुद्रकी ओर मुंह खोले ताक रही थीं। सुदूर पूर्व्वके बड़े लाटने विचार किया था, कि इस सुदृढ़ दुर्गके समीप या इस सुदृढ़ बेड़े पर कौन शत्रु आक्रमण कर सकता है?

तीन तारपीडो नावें इस बेड़ेके सामने समुद्रमें गिरदावरी कर रही थीं। बेड़ेकी बाकी सब छोटी छोटी जङ्गी नावें बन्दरके भीतर थीं। बन्दरके किनारे लगी जलती हुई लालटेनें जगमगा रही थीं। बन्दरकी बस्ती या पोर्ट-अरथर नगरमें एक सारकस अपना तमाशा दिखा रहा था। किले और जहाजके बहुतेरे सिपाही और अफसर सारकसमें बैठे तमाशा देख रहे थे। समुद्र-जल स्थिर था, वायु मन्द मन्द बह रही थी,—सुनिर्म्मल आकाशमें नक्षत्र मुस्कुरा रहे थे। जैसे जैसे रात भीग रही थी, वैसे वैसे सन्नाटा बढ़ रहा था। जबरदस्त रूस दूसरेके देशपर अधिकारकर—दूसरेके स्वार्थपर खाक डाल—अपने भुजबलपर निर्भर हो सुख-निद्राका आनन्द उपभोग करनेकी चेष्टा कर

सकता था; किन्तु जो जापान रूस द्वारा बारंबार अपमानित तिरस्कृत लांछित हो चुका था—जो जापान दिनरात अपनी स्वतन्त्रता अथवा यथासर्वस्व नाश होनेकी विभीषिका प्रत्यक्ष कर रहा था, वह जापान सुख-शान्तिके साथ सोतो नींदका आनन्द कैसे उपभोग कर सकता था? अर्द्धनिशामें कोई पाव घण्टा बाकी होगा; ऐसे समय आरथर बन्दरके बाहर हलकासा एक शब्द हुआ। इस शब्दके उपरान्त ही एकाएक मानो मन्त्रबलसे रूसके जङ्गी जहाजोंमें हलचल मच गई; "सर्चलाइट" नामक महा तेजःविशिष्ट प्रदीपकी ज्योति इधर-उधर फैलने और कलदार तोपोंसे अविराम गोला-वृष्टि होने लगी। जापानने रूसी जङ्गी जहाजोंपर आक्रमणकर युद्धारम्भ किया।

युद्धका भयङ्कर कोलाहल आरम्भ हुआ। जापानी तारपीडो-नावें समुद्र-गर्भ विदीर्ण करती और गोले तथा तारपीडो मारती रूसी जङ्गी जहाजोंकी पंक्तिके सामने पहले किनारेसे दूसरे किनारेतक और दूसरे किनारेसे पहले किनारेतक दौड़ने लगीं। इनसे कुछ फासिलेपर खुले समुद्रमें जापानके नौ-सेनापति एडमिरल टोगोके बेड़ेके अगुआ चार अच्छे दरजेके छोटे जङ्गी जहाज खड़े धुंधले धुंधले दिखाई देते थे। इन जङ्गी जहाजोंपर रूसकी किले और जहाजोंकी बड़ी बड़ी तोपें गोले बरसाने लगीं और छोटी छोटी तोपें तारपीडो नावोंको लक्ष्यकर आग उगलने लगीं। इस अग्नि-वृष्टिकी कोई परवा न कर तारपीडो-नावें बराबर दौड़ती और तारपीडो छोड़ती रहीं। अनुभवहीन रूसके [illegible] अफसरोंने सर्चलाइट चमका अपने जहाजोंकी स्थिति और

अच्छी तरह प्रकट कर दी और जापानी तारपेडो-नावोंको उन जहाजोंको लक्ष्य ताककर तारपेडो चलानेका अच्छा मौका मिला। जापानके चारों छोटे जङ्गी जहाज भी निकम्मे खड़े नहीं थे; उन सबने अपनी बड़ी बड़ी तोपोंसे रूसके जङ्गी जहाजों और किलेपर गोले बरसाना आरम्भ किया। कोई आध घण्टे तक इसीतरह युद्ध चला। इसके उपरान्त तारपेडो-नावें अपना काम समाप्तकर दूर खड़े अपने छोटे जङ्गी जहाजोंके पास लौट गईं और छोटे जङ्गी जहाज उन्हें ले खुले समुद्रमें चले गये; रूसके इतने जङ्गी जहाज मौजूद थे; किन्तु एकने भी जापानी नावों या जहाजोंका पीछा करनेका साहस नहीं किया। नौ-सेनापति एडमिरल टोगोने इस युद्धके उपरान्त अपने सम्राट् मिकाडोको तार दिया,—"८ वीं और ९ वीं फरवरीके मध्यभाग अर्द्धनिशामें जापानी तारपेडो-नावोंने आरथर-बन्दरके बाहर रूसके जङ्गी जहाजोंपर आक्रमण किया। जङ्गी जहाज रेटविजां और जारविच और छोटे जङ्गी जहाज पोलटावेमें सुराख बना दिया। सुराखोंका आकार अभीतक अज्ञात है। विस्तारित विवरण श्रीमान्‌की सेवामें यथासमय भेजा जायेगा।" टोगोने अपने सम्राट्‌को जो आडम्बरशून्य चार छन्दोंमें जो समाचार भेजा, वह अक्षर अक्षर सत्य था। प्रातःकालके प्रकाशमें रूस-सिपाहियोंने देखा, कि उनका जङ्गी जहाज जारविच और पोलटावा और छोटा जङ्गी जहाज पलाडा टूटफूटकर बहुत ही निकम्मा हो गया है; शीघ्र ही उनकी मरम्मत होनेकी कोई आशा नहीं। इस युद्धमें एक ओर रूसकी इतनी क्षति हुई; दूसरी ओर जापानके सिर्फ चार आदमी

मरे और चब्बन ज़ख़्मी हुए। एक भी तारपेडो नाव या बड़ी जहाज़को वैसी कोई चोट नहीं आई। जिस दिन युद्धारम्भ हुआ, उस दिन चेमलफो और आरथर-बन्दरमें रूस-जापानने ऐसी ही कारवाई की।

९वीं फरवरीको बड़े सवेरेसे ही चेमलफोमें मारकाटकी तय्यारी आरम्भ हुई। अँधेरे कोई चार बजे रियर एडमिरल उरिउने वरियागके प्रधान अफ़सर कपतान रोडनेफसे कहला भेजा,—"दोपहर बारह बजेके उपरान्त भी यदि तुम्हारा जहाज़ और कोरीज जहाज बन्दरमें रहेगा, तो हम बन्दरमें घुस तुम दोनोंपर आक्रमण करेंगे।" यह समाचार पा बेचारे रोडनाफ बड़ी मुशकिलमें पड़े। सहाय्य पानेकी क्षीण आशासे भी वह अपनी छाती मजबूत बना नहीं सके। जापानी बारबरदारोंके जहाजोंका आगमन देखकर ही वह समझ गये थे, कि जापानने रूसके प्रधान बेड़ेको रोकनेका पूरा सामान कर लिया है; नहीं तो वह यहां बारबरदारीके जहाजोंके लानेका साहस ही न करता। बड़े लाट अलक्सिफके मित्र युवक कपतान रोडनेफ बड़े ही दृढ़प्रतिज्ञ और धीर-गम्भीर प्रसिद्ध थे। कुल सामानोंको देख आपको विश्वास हो गया, कि बचना कठिन है; किन्तु नष्ट होनेसे पहले आपने एकबार रूसका नाम और पौरुष प्रकट करना स्थिर किया। जबतक समय मिला, तबतक दोनो जहाज बन्दरमें पड़े रहे। अन्तमें दिन कोई साढ़े ग्यारह बजे दोनोंने लङ्गर उठाये और बाजेसे "God Save the Emperor" गीत गाते बन्दरसे बाहर निकले। खुले समुद्रमें पहुंचते ही दोनो ही बड़ी जहाज एक ओर बेतहाशा भागे। उरिउके जहाज

उनके पीछे पीछे दौड़े। इस दौड़में दोनो ओरसे लगातार गोले चल रहे थे। जापानी गोलोंकी चोटसे रूसी जहाजी सिपाही घबरा गये। उनका प्रायः हरेक निशाना खाली जाता था। कोई साढ़े बारह बजे तक दोनो ओरसे खूब गोलाबाजी हुई। इसके उपरान्त रूसके दोनो जहाज एक टापूका सहारा ले विपदसूचक चिह्न दिखाने लगे। कहते हैं, कि जापानी जहाज यदि चाहते, तो गोलोंकी चोटसे रूसके दोनो जहाजोंको तोड़फोड़ समुद्रमें डुबा देते; किन्तु जैसे ही रूसके जहाजोंने विपदसूचक चिह्न दिखाये, वैसे ही जापानी जहाजोंने गोला बरसाना बन्द कर दिया। यह सुअवसर पा दोनो रूसी जहाज भागकर बन्दरमें वापस आये। जापानी जहाज बन्दरसे बाहर ठहर रूसी जहाजोंकी गतिविधि देखते रहे।

बन्दरमें लौट दोनो जहाजोंने उस जगह लङ्गर डाला जिस जगह विदेशी शक्तियोंके कितने ही जहाज खड़े थे। इस अल्पकालके युद्धमें दोनो जहाज बहुत कुछ टूटफूट चुके थे। विशेषतः वरियाग जहाजका ऊपरी भाग गोलोंकी चोटसे चकनाचूर हो चुका था। देखनेवाले समझ गये, कि इन दोनोका अन्तकाल अत्यन्त सन्निकट है। दर्शकोंका यह अनुमान ठीक निकला; रूसके जहाजी सिपाहियोंने वरियाग और कारकरसीके एक रूसी जहाज सङ्गारीको डुबा दिया और कोरीजको आग लगा दी; जल-जलकर कुछ देर बाद वह भी समुद्र-गर्भमें समा गया। इन जहाजोंके सिपाहियों और अफसरोंको विदेशी जहाजोंने अपने जहाजोंपर चढ़ा लिया। जिस समय रूसी जहाज डूब या जल रहे थे,

उस समय उसके सिपाही और अफसर विदेशी जहाजोंपर खड़े बैठे जातीय गीत गा रहे थे। दिनकी समाप्तिके साथ साथ चेमलफोके रूसी जहाजोंकी समाप्ति हो गई। चेमल-फोमें जल और स्थल दोनोंपर जापानकी विजय-वैजयन्ती फहराई।

चेमलफोका दिनभरका हाल वर्णन किया गया; किन्तु आरथर-बन्दरका अभी बाकी है; इसलिये पाठकोंको एक बार फिर आरथर-बन्दरकी ओर ध्यान देना चाहिये। कहते हैं, कि ९ वीं फरवरीको आरथर-बन्दरके सामने जब सूर्यदेव उदित हुए; तब उनका रङ्ग अत्यधिक लाल था। उनका प्रकाश फैलनेपर दूर खुले समुद्रमें तीन जापानी जहाज दिखाई दिये; सम्भवतः तीनों यह देख रहे थे, कि उस अर्द्धनिशाके आक्रमणसे जापानी तारपेडो-नावें रूसी बेड़ेको कितना क्षति-ग्रस्त कर सकीं। बहुत देरतक तीनों जहाज अपनी जगह खड़े आरथर-बन्दरकी ओर देखते रहे; रूसी बेड़ेने उनकी ओर अग्रसर हो उन्हें हटानेका कोई यत्न नहीं किया। दिन कोई ग्यारह बजे जापानी जङ्गी जहाजोंका सम्पूर्ण बेड़ा क्षितिजमें प्रकट हुआ। बड़ा ही मनोहर और शानदार दृश्य था। छोटे बड़े कुल सोलह सुन्दर और विशाल जङ्गी जहाज कवायदके साथ आगे बढ़ रहे थे। इस बेड़ेमें छः जङ्गी जहाज थे—मिकासा, हेटिउज, आसाही, शिकिशिमा, याशिमा और फूजी। इनमें प्रथमोक्त चारों पहले दर्जेके साज-सामानसे सुसज्जित थे और संसारके बड़े से बड़े जङ्गी-जहाजोंके साथ टक्कर ले सकते थे। बाकी जहाज भी नये ढङ्ग

को थे और उत्तमोत्तम अस्त्र-शस्त्र सजे हुए। यह कुल जहाज "जापानके नेलसन" या प्रधान नौ-सेनापति टोगोके अधीन थे। अवश्य इनके छोटे जङ्गी जहाजोंमें इसकुमा सबसे अच्छा था, छोटा जङ्गी जहाज श्वो,--खासा बड़ा जङ्गी जहाज था। इस समय यह सहकारी नौ-सेनापति कमीमुराके अधीन था। कमीमुरा इसपर बैठे बेड़ेके दूसरे विभागको परिचालना कर रहे थे। इसी जगह जापानी नौ-सैन्यके प्रधान सेनापति टोगोका थोड़ासा हाल सुन लीजिये। चीन-जापान-युद्धमें जिसने युद्धका श्रीगणेश किया था, वह यही टोगो थे; गोलेकी एक ही चोटसे इन्होंने चीनके जहाज कौशिङ्गको सागरके अतल-तलमें पहुंचाया था। इसके उपरान्त सिकाशूमें सवार हो सागर-वक्षपर जापानका अधिकार-विस्तारकर जापान-सरकारकी गौरव-वृद्धि की थी। टोगो छोटे, मोटे, धीर, गम्भीर, साहसी और दृढ़प्रतिज्ञ हैं। कुछ दिनों आपने अङ्गरेजोंके जहाज वरसेस्टरमें रह नौ-युद्ध-विद्या सीखी थी। उनके सहकारी एडमिरल कमीमुरा भी बड़े ही बहुदर्शी और बहुमान्य हैं। ऐसे ही टोगो और ऐसे ही उनके सहकारी कमीमुराकी अधीनतामें जापानी जङ्गी जहाजोंका बेड़ा अरथर-बन्दरके सामने क्षितिजमें प्रकट हुआ।

रूसी दांतपर दांत रख उत्सुकतापूर्व्वक इस नवागन्तुकका काम देखनेकी प्रतीक्षा कर रहे थे। वह अपने जहाज घुमा-फिरा रहे थे; आगे बढ़ जापानपर आक्रमण करनेके लिये नहीं; बल्कि जापानी गोलोंका निशाना न बननेके लिये। किलेके तोपखानोंकी हरेक तोपके पास गोलन्दाज खड़े थे;

दीवार भीतर सिपाही खड़े थे। रूसकी ओरसे दूर या पास दोनों तरहके युद्धकी पूरी तय्यारी की गई थी। किन्तु जापानी आंख मूंद आगमें फांद पड़नेकी बुद्धिमत्ता नहीं समझते; वह अपने बल और अपने सामने के किलेके बलको अच्छी तरह जानते थे। वह दूरसे गोले बरसा रूसी गोलन्दाजोंकी अयोग्यता और अपनी गोलन्दाजीके गुणसे लाभ उठाना चाहते थे। कोई साढ़े ग्यारह बजे एकाएक जापानी जहाजोंमें आगकी चमक उत्पन्न हुई और कोई सवा चार सौ सेर छोटे बड़े गोले आरथर-बन्दरके मुहानेपर फिरते रूसी तारपडो-नावोंके बीच बरस गये, भयङ्कर शब्दसे जलस्थल परिपूर्ण हुआ। रूसी तोपें भी आग बरसाने लगीं। रूसी बेड़े ने यह किया, कि वह अपने छोटे जङ्गी जहाजोंको आगे और अपने जङ्गी जहाजोंको पीछे रख किलेसे सिर्फ एक मीलके फासिलेपर ठहर जापानी जङ्गी जहाजोंपर गोले बरसाने लगा। रूसी तोपोंके गोले एक तो निशानेपर पड़ते नहीं थे; दूसरे बहुतेरे गोले बीच हीमें रह जाते थे। उधर जापानी तोपोंके गोले ठीक निशानेपर पड़ते थे और बहुत दूरतक जाते थे। रूसी जङ्गी जहाजों और किलोंपर जापानी तोपोंके गोले ओलेकी तरह बरसते थे। इसके जवाबमें किलेके तोपखाने अपनी बड़ी बड़ी तोपोंसे जापानी जहाजोंको लक्ष्यकर फेरपर फेर कर रहे थे। किलेकी तोपोंके गोले बड़े ही वजनी और नुकीले थे; निशानेपर लगते ही जङ्गी जहाजका फौलादी चादर कागजकी तरह फाड़ सकते थे। यह भयङ्कर गोले ... नेपर फटकर टुकड़े टुकड़े होनेके साथ साथ ऐसा विषाक्त

धुंआं उत्पन्न करते थे, जिसके गन्धसे मनुष्य मक्खियोंकी तरह मरते थे। मनुष्यके प्राणनाशके लिये मनुष्य ऐसे ही गोले चला रहा था। आरथर-बन्दरका मुहाना जिस पर्व्वत-मालासे बना है; इस युद्धमें उस पर्व्वतमालामें सर्व्वत्रसे तोपें दग रही थीं; बड़े ही सुदृढ़ और आश्चर्यरूपसे यह मुहाना रूसने सुरक्षित किया था। इतने रूसी गोले जापानी जहाजोंको तोड़फोड़ निकम्मा बनाने या डुबा देनेके लिये यथेष्ट थे; किन्तु रूसके दुर्भाग्य और जापानके सौभाग्यवश बहुत कम रूसी गोले जापानी जहाजोंतक पहुंच सकते थे।

जापानी जहाज बड़ी ही सुव्यवस्थाके साथ काम करते थे; उनके गोले ठीक निशानेपर पड़ते थे। जहाजी अफसर और सिपाही लड़नेके लिये नितान्त उत्सुक रहनेपर भी बड़ी ही शान्ति और धैर्य्यके साथ अपना हरेक काम करते थे। जान पड़ता था; मानो वह सब युद्धस्थलमें नहीं; बल्कि नकली लड़ाईमें अपना काम कर रहे थे। टोगोकी दृढ़ता उनके अधीन प्रत्येक अफसरमें न्यूनाधिक परिमाणसे दिखाई देती थी। हलचल और अनुचित जल्दबाजी नामको भी नहीं थी। क्रम क्रमसे तोपें छूटती थीं और क्रम क्रमसे गोले जाकर रूसी जहाजों और किलोंपर गिरते थे। रूसी जहाजों हीपर अधिक गोले गिरते थे। जापानी जानते थे, कि सुदृढ़ दुर्गपर गोले चला थोड़ासा नुकसान पहुंचानेकी अपेक्षा रूसी जहाजों हीको निकम्मा बनाना अधिक उपयोगी है। किन्तु समय समयपर दो चार बड़े बड़े गोले मुहानेकी किलाबन्दीपर भी जा पड़ते थे। दो जापानी गोलोंने किलाबन्दीके भीतर फट रूसियोंको बड़ा नुकसान

पहुंचाया। कोई तीन गोले सुखानेकी पर्व्वतमाला पारकर आरथर-बन्दर नगरमें गिरे। इस गोलन्दाजीसे जापानने आरथर-बन्दरके प्रत्येक रूसीके मनमें घोर आशङ्का उत्पन्न कर दी। जिस समय दोनों बेड़ोंके बीच गोले चल रहे थे, उस समय रूसी बेड़ेके कुल जहाज अपनी किलाबन्दीकी तोपोंका आश्रयकर किनारेसे कोई एक मील दूर खड़े थे; अपनी जगहसे आगे बढ़नेका साहस नहीं करते थे। सिर्फ रूसका दूसरे दरजेका एक छोटा जङ्गी जहाज अतिद्रुतगामी डायना अपने साथी जहाजोंके साथ खड़ा रह न सका; हिम्मतकर गोले बरसाता आगे बढ़ा। जापानी जहाजोंने उसे अपनी ओर आने दिया; इसके उपरान्त विशालाकार मिकासा और आकाशीने डायनापर अविराम गोला-वृष्टि आरम्भ की। डायना गोला-वृष्टिके आरम्भ होनेमें यदि फुरतीसे न भागता, तो शायद कभी भाग न सकता। फुरतीसे भागनेपर भी उसके पेंदेमें गोलोंके बनाये बड़े बड़े सूराख हो गये। इन सूराखोंसे उसमें पानी भरने लगा। रूसके आसकोल्ड और नाविक नामक और दो छोटे जङ्गी जहाज और पल्टावा नामक बड़े जङ्गी जहाजकी भी ऐसी ही दशा हुई। टूटे फूटे यह चारो जहाज बहुत दिनोंतक निकम्मे रहेंगे। दिन बारह और एकके बीच गोलन्दाजी घटकर बन्द हुई और टोगोने उस दिनका कार्य्य समाप्तकर अपने बेड़ेको लौटनेकी आज्ञा दी। इस युद्धमें टोगोके बेड़ेका कोई जहाज निकम्मा नहीं हुआ। कुछ जहाजोंको जो हलकी चोटें आई थीं, वह शीघ्र ही मिट जाने लायक थीं। जिस समय टोगोका बेड़ा लौट रहा था, ठीक उसी

समय फ्रांसीस्के जापान-दूत रूसराजधानीसे जापान लौट रहे थे। जापान-दूतको युद्धारम्भ होनेकी खबर नहीं थी। उन्हें वहां जापानी बेड़ा देख बड़ा ही आश्चर्य हुआ; अन्तमें कुछ बातें समझ उन्होंने और उनके साथियोंने जापानकी जय-कामना करते हुए गगन भेदी हर्षध्वनि की। यह हर्षध्वनि नाचती हुई ऊर्म्मिमालाको चमटोलोके बेड़ेमें घुस सुशीतल मन्द सुगन्धीय वायुमें मिल फल-प्राप्तिके लिये शान्द देशोंक पहुंची।

इसतरह ९वीं फरवरी समाप्त हुई। इस दिन चेमलफो और आरथर बन्दर इन दोनों स्थानोंके जल युद्धमें रूसके छोटे-बड़े कुल नौ जहाज निकम्मे तथा जलमग्न हुए। जापानके लिये आरम्भ होते यह बहुत बड़ी विजय थी और रूसके लिये बहुत बड़ी पराजय। फौजके कट जानेसे शीघ्र ही दूसरी फौज तय्यार की जा सकती है, पर जङ्गी जहाजोंके नष्ट हो जानेसे शीघ्र ही दूसरा जङ्गी जहाज तय्यार किया जा नहीं सकता। एक जहाजको तय्यारीके लिये कई वर्ष चाहिये। कितने ही लोग कहते हैं, कि रूस असावधान था; इसीलिये जापान उसपर आक्रमणकर विजय लाभ कर सका; रूस यदि सावधान रहता, तो उलटा जापान होको नुकसान पहुंचता। पर यह लोग रूसकी असावधानीका ऐसा कोई प्रमाण दे नहीं सकते। असलमें रूस सावधान था और सिर्फ आक्रमण रोकने होके लिये नहीं, बल्कि आक्रमण करनेके लिये भी तय्यार था। उसका बेड़ा सजधजकर आरथर-बन्दरकी सुदृढ़ किलाबन्द खड़ा था; यूरोपकी कोई भी नौशक्ति उस रूसी

आक्रमणकर विजयश्री लाभ करनेकी आशा कर नहीं सकती थी; क्योंकि उस समयतक जितने युद्ध हुए थे, उनमें ऐसे सुरक्षित बेड़े पर आक्रमण करनेका फल अत्यन्त शोचनीय हो चुका था। इससे यह जापान भी रूसी बेड़े पर आक्रमण करनेका साहस न करता; किन्तु इस समय उसने एक ऐसे कौशलके साथ युद्ध करना स्थिर किया था; जैसे कौशलके साथ अबतक युरोपकी किसी शक्तिने किया नहीं था। युरोपमें पलभरमें बड़े बड़े जङ्गी जहाजोंको समुद्रमें डुबा देनेवाले शिकारकी सूरतके तारपेडो अस्त्रका आविष्कार हो चुका था सही, फ्रांसके एडमिरल औबी और चार्म्सके खोले नौ-युद्ध-शिक्षाके "जिउन एकोल" स्कूलमें तारपेडो चलानेकी शिक्षा दी जाने लगी थी सही; किन्तु अबतक तारपेडोपर भरोसाकर किसी जल-युद्धमें इससे काम लिया नहीं गया था। युरोपमें इसपर उतना भरोसा किया जाता नहीं था। और तो क्या,—जो ब्रटानिया समुद्रकी मालिक, कहलाती है, उसके भी नौ-विभागमें तारपेडोका उतना आदर नहीं था। जापानने परीक्षाकर—अपने यहां निर्म्माणकर इसी तारपेडोको अपना अमोघास्त्र बनाया था। उसके नौ-विभागको इसपर इतना विश्वास हो गया, कि उसने अपनी जातिकी खिलती हुई कलियो जापानी नवयुवकोंको छोटी छोटी तारपेडो-नावें दे रूसके अत्यन्त भयङ्कर बेड़े और सुरक्षित दुर्ग दोनोंकी सम्मिलित शक्तिसे टक्कर ले अपना मतलब पूरा करनेके लिये भेज दिया। जिनकी तारपेडो-नावें इतने बड़े बेड़ेमें खलबली डाल—पैरते हुए ... लौह-दुर्ग जैसे कितने ही जङ्गी जहाजोंको तोड़फोड़

सहीसलामत वापस लौट आ । यह देख युरोपकी आंखें खुल गईं; उसे जापानने त ीका मर्म समझा दिया। अब युरोपके नौ-युद्ध-विद्याविशारदोंको यह माननेमें तनिक भी सङ्कोच न होगा, कि जरासी एक तारपेडो-नाव बेड़ेके सबसे बड़े जङ्गी जहाजको चटपट समुद्र-वक्षमें डुबा सकती है। सुतरां जापान इस प्रथम युद्धमें रूसकी असावधानीसे नहीं; वरं अपने अपूर्व बुद्धिबल और साहसिकतासे जीता।

तृतीय परिच्छेद।

जल युद्ध; स्थल-युद्धकी तय्यारी।

८वीं फरवरीको युद्धारम्भ हुआ और इसके दो दिनों बाद १०वीं फरवरीको दोनों शक्तियोंने यथानियम युद्ध-घोषणा की। रूस-सम्राट् ने अपने घोषणा की,—"हम इस विज्ञापन द्वारा अपनी राजभक्त प्रजाको सूचित करते हैं, कि शान्तिप्रियताकी वजह हमने सुदूर पूर्व्वमें शान्ति स्थापन करनेका बड़ा यत्न किया। इसी उद्देश्यसाधनके लिये हमने उस सन्धिका परिवर्त्तन स्वीकार कर लिया, जो अबसे पहले कोरियाके सम्बन्धमें रूस और जापानके बीच हुई थी। इस सम्बन्धमें अभी कोई अन्तिम फैसला होने नहीं पाया था; दोनों शक्तियोंके बीच सन्धि-परामर्श चल रहा था, ऐसे समय एकाएक जापानने सन्धि-परामर्श स्थगित करने और रूस-जापानके बीचका राजनीतिक सम्बन्ध टूटनेकी सूचना दी। बिना यह सूचना दिये, कि इस सम्बन्ध टूटनेके उपरान्त ही युद्धारम्भ होगा; जापान-सरकारने अपना तारपिडो-नावोंको आरथर बन्दरके मुहानेपर खड़े हमारे बेड़ेपर आक्रमण करनेकी आज्ञा दी। सुदूर पूर्व्वके अपने बड़े लाट द्वारा इस युद्धारम्भकी सूचना पा हमने उसी समय जापानका लड़ाईका आवाहन स्वीकारकर उससे युद्धारम्भ करनेकी आज्ञा दी। इस घोषणाका प्रचार करते हुए दैवी साहाय्य पानेकी आशा करते हैं, अपनी राज-

भक्त प्रजाके सम्मिलित बलपर बड़ा भरोसा करते हैं और अपनी जल-स्थल-सैन्यकी यशोप्राप्तिके लिये जगदीशसे प्रार्थना करते हैं।"

इसीके साथ साथ जापान-सम्राट् मिकाडोने भी युद्ध घोषणा की,—"अत्यन्तातीत काल और पुरुषानुक्रमसे जापानसिंहासनके अधिकारी हम जापान-सम्राट् अपनी समस्त राजभक्त और वीर प्रजाके प्रति निम्नलिखित घोषणा प्रचार करते हैं,—

"हमने रूसके विरुद्ध युद्धारम्भ किया है और हम अपने जल-स्थल-सैन्यको आज्ञा देते हैं, कि वह स्वकर्त्तव्य समझ अपनी पूरी शक्तिके साथ रूससे युद्ध करे और हम अपने सुयोग्य उच्चपदस्थ कर्मचारियोंको आज्ञा देते हैं, कि वह जातीय मनोरथ सफल करनेके लिये अपनी पूरी शक्ति व्यवहार जातीय कानूनकी सीमाके भीतर रह अविश्राम यत्न करें।

"सदासे हमारी यही इच्छा है, कि हमारा भिन्नजाति-सम्बन्धीय मेलमिलाप स्थिर रहे, हमारा राज्य शान्तिकी प्रतिच्छायामें सभ्यतापथमें उन्नति करे, अन्यान्य शक्तियोंसे सख्य-सम्बन्ध हो और ऐसी व्यवस्था हो, जिससे सुदूर पूर्व्वमें शान्ति विराजे और बिना किसी विदेशी शक्तिकी क्षतिके हमारे साम्राज्यकी भावी स्थितिकी रक्षा हो। हमारे राजकर्म्मचारी हमारी आज्ञाके अनुसार काम कर रहे हैं, जिससे हमारे और अन्यान्य शक्तियोंके बीचका प्रेम-सम्बन्ध सुदृढ़ होता जाता है।

"हमने रूसके विरुद्ध युद्धारम्भ करनेकी प्रत्याशा की नहीं थी। हमारे साम्राज्यके लिये कोरियाके स्वतन्त्र रहनेका बड़ा प्रयोजन है। इससे सिर्फ हमारे व्यवसाय-वाणिज्य होको लाभ नहीं पहुंचेगा; वरं कोरियाकी स्वतन्त्रतासे हमारे

साम्राज्यकी रक्षा भी होगी। उधर रूस अपनी चीनवाली सन्धि तोड़ मञ्चूरियामें जमकर बैठ गया है और दिन दिन अपने अधिकार-प्रसारकी चेष्टा कर रहा है। मञ्चूरिया चीनके हाथसे निकल जानेपर सुदूर पूर्वकी शान्ति भङ्ग हो जानेकी आशङ्कासे यह झगड़ा मिटानेके लिये हमने रूससे बातचीत आरम्भ की। हमारी इसी आज्ञाके अनुसार हमारे सुदक्ष कर्म्मचारियोंने रूस-सरकारसे बातचीत की और इस सम्बन्धमें गत छः महीनेतक खूब तर्क और वादविवाद चलता रहा।

"किन्तु रूसने हमारी बातकी कोई परवा न की। ऐसे प्रयोजनीय प्रश्नके उत्तरमें वह अकारण ही विलम्ब करने और एक ओर शान्तिकी दुहाई देकर भी दूसरी ओर अपना कुटिल अभिप्राय पूर्ण करनेके लिये सुदूर पूर्वमें अपनी जल-स्थल-सैन्य बढ़ाता गया।

"हमें दृढ़ विश्वास है कि रूस आरम्भ होसे शान्तिस्थापन करनेके लिये उत्सुक नहीं था। उसने हमारी सरकारके प्रस्तावोंको अस्वीकार कर दिया। कोरिया खतरेमें है; हमारे साम्राज्यकी रक्षामें आशङ्का उपस्थित है। जो सुविधायें हम सन्धि द्वारा प्राप्त करना चाहते थे, वही सुविधायें अब हथियार द्वारा प्राप्त करना चाहते हैं। हमें सुदृढ़ विश्वास है, कि अपनी राजभक्त प्रजाकी भक्ति और वीरत्वके बलसे हम शीघ्र ही अपने साम्राज्यकी यशःप्रभा बढ़ा सकेंगे लिये शान्ति स्थापन कर सकेंगे।"

इन द[illegible] म्राटोंने युद्धका घोषणापत्र निकाला, उस

दिन आरथर-बन्दर या अन्यत्र किसी तरहका युद्ध या कोई दुर्घटना नहीं हुई। दूसरे दिन ११वीं फरवरीको बड़े लाट अलक्सिफने एक नई युक्तिकी अवतारणा की। आपने विचार किया कि ८वीं फरवरीकी रातको आरथर-बन्दरका मुहाना यदि जलमें डूबे हुए माइन या आग्नेय अस्त्रोंसे सुरक्षित रहता, तो जापानी तारपेडो-नावें बन्दरके समीप पहुंच रूसी बेड़ेको क्षति पहुंचानेका साहस कैसे कर सकतीं? इसीके साथ साथ आपने यह भी विचार किया, कि आरथर-बन्दरकी बगलहीमें रूसका डालनी बन्दर है; रूसका जहाजी बेड़ा यदि मुंह-जोर होता, तो वह जापानियोंके आक्रमणसे डालनी-बन्दरकी रक्षा कर सकता; किन्तु रूसी बेड़ेकी इस दुरवस्थाके समय जापानी बेड़ा सहज ही डालनी-बन्दरमें जा उसको नष्ट कर सकता है। आपने स्थिर किया, कि ऐसी अवस्थामें डालनी-बन्दरके सामने समुद्रमें माइन लगा बन्दरकी रक्षा करना चाहिये। ११वीं फरवरीको मौसम साफ देख बड़े लाट बहादुरने डालनीमें माइन लगानेकी आज्ञा दी। कोई ढाई हजार टनका येनीसी नामक एक नया जहाज माइन लगाने चला। जहाजके कप-तानका नाम स्टेपनाफ था। उनके अधीन एक सौसे अधिक सिपाही थे; छोटी छोटी कितनी ही तोपोंसे यह जहाज सुस-ज्जित था। येनीसी माइन लगानेके लिये बनाया ही गया था। उसका पिछला-भाग साइवानकी तरह जलपर निकला हुआ था और उसके नीचे एक सूराख था, जिससे माइन जहाजसे पानीमें उतारा जा सकता था। जलके माइन कई तरहके होते हैं। अलक्सिफकी आज्ञासे येनीसी जहाज जो माइन लगाने चला

था, वह "कराटाक्ट" ढङ्गके थे। इन कराटाक्ट माइनोंमें यह गुण है, कि जहाजको टेस लगते ही फटते हैं और पलक झपकाते जहाजको टुकड़े कर पानीमें डुबा देते हैं। जलके माइन जलमें डूबे रहते हैं; जहाजसे दिखाई नहीं देते; ज्वारके साथ ऊंचे होते और भाटेके साथ नीचे होते हैं। यह कहनेका प्रयोजन नहीं है, कि यह जलमग्न आग्नेय अस्त्र जैसे भयङ्कर शत्रुके लिये हैं, निगाह चूकनेपर वैसे ही भयङ्कर अपने लिये भी। माइन लगाते लगाते कपतान स्टेपनाफकी निगाह एक माइनपर पड़ी, जो कारणवश जलमें डूबा नहीं था। इस माइनको जलसे निकाल दुरुस्त करना दुष्कर कार्य समझ कपतानने उसे तोड़ देनेकी आज्ञा दी। कपतानकी आज्ञा पा येनीसी जहाज माइन तोड़ने चला; अभी वह उस माइनसे कुछ फासिले होपर था, ऐसे समय एक दूसरा जलमग्न माइन उसके पेंदेसे टकराया। भयङ्कर शब्द हुआ; साथ साथ येनीसीका अर्द्धांश टूटकर वायुमें उछल समुद्रमें गिर डूब गया; शेष अर्द्धांशने भी उसका साथ दिया। इतना बड़ा येनीसी जहाज क्षणभरमें जलमग्न हुआ। कपतान स्टेपनाफ, बड़े इञ्जीनियर, दो छोटे अफसर और बानवे सिपाही डूब मरे। थोड़े से सिपाही बड़ी ही कठिनताके साथ बचाये गये। बेचारे अलकसिफको अपने विचारका कुफल देख पछताना पड़ा।

जिस दिन अरथर-बन्दरके पास डालनी-बन्दरके सामने यह दुर्घटना हुई, उसी दिन अरथर-बन्दरसे बहुत दूर रूसके व्लडी-वस्टक-बन्दरसे कुछ फासिलेपर और एक दुर्घटना हुई। इस ... के फलसे युद्धमें जापानकी हानि होनेपर भी प्रकारान्तरसे

रूसकी हानि हुई। जिस समय युद्ध आरम्भ हुआ, उस समय व्लडीवस्टकमें रूसके चार छोटे जङ्गी जहाज थे,—रोजिया, ग्रोमोवाय, रूरिक और बोगाटिर। इनमें प्रथमोक्त दोनो बारह बारह हजार टनके थे; शेषोक्त दोनो यथाक्रम ग्यारह और सात हजार टनके। चारोंकी चाल बहुत तेज थी। बारन हारतमन रोजिया जहाजमें बैठ इस छोटेसे बेड़ेकी सरदारी करते थे। शीतकालमें व्लडीवस्टक-बन्दरका जल जमकर बरफ बन जाता है। ऐसी अवस्थामें विशेष बनावटका एक जहाज बरफ तोड़ जङ्गी जहाजोंके निकलनेके लिये राह साफ करता है। ११वीं फरवरीको व्लडीवस्टकके बन्दरसे यह छोटासा रूसी बेड़ा निकल जापानी जहाजोंका शिकार खेलनेके लिये जापान-दीपपुञ्जके समीप पहुंचा। उस समय जापानके दो सौदागरीके जहाज—एक हजार टनका नका-नौरा मारू और तीन सौ टनका जेनशो मारू—उनेनके प्रान्त प्रदेशसे येजोके ओतारू स्थानको ओर जा रहे थे। दोनोपर किसी तरहका युद्धोपकरण नहीं था; वह माल लादे एक स्थानसे दूसरे स्थानको जा रहे थे। रूसी बेड़ा यदि चाहता तो सरलतापूर्वक दोनोंको पकड़ सकता था और यही उसे उचित भी था; किन्तु इसके बदले रूसी जङ्गी जहाजोंके बड़े बड़े गोले दोनोपर पड़ने लगे और दोनो अल्प-कालमें इन गोलोंकी चोटसे टुकड़े टुकड़े हो डूब गये; जहाजोंके साथ साथ उनके मल्लाह आदि भी डूब गये। युद्धारम्भके समय जापानने रूसी सौदागरोंके जहाजोंके प्रति बड़ी कृपा दिखाई थी। उसने कहा था,—"रूसी सौदा-

गरोंके जो जहाज जापानमें या युद्धस्थलमें हैं, वह आगामी १६ वीं फरवरीतक इन स्थानोंको परित्याग कर चले जायें। इस अवसरमें जापान उनसे किसी तरहकी छेड़छाड़ न करेगा।" जापानकी इस सभ्यजनोचित आज्ञाके बदले रूसने जापानके दो निरस्त्र असहाय जहाजोंको डुबा दिया। इस बेड़ेने सिर्फ इतना ही पौरुष प्रकाश किया; इसके उपरान्त वह जापान द्वीपके पास ठहर न सका; जापानी जङ्गी जहाजोंके आगमनका समाचार पा ब्लाडीवष्टक वापस भागा।

ब्लाडीवष्टकवाले बेड़ेके इस दुष्कर्मकी बड़ी निन्दा हुई। यूरोपकी भी कितनी ही जातियोंने घृणासे नाकें सिकोड़ीं; फ्रान्स रूसका परम मित्र होकर भी नितान्त असन्तुष्ट हुआ। जापानमें उत्तेजनाकी हद न रही। जापानने रूसी सौदागरोंके पांच जहाजोंको अपने मासिबो स्थानमें ठहरा दिया था। उनसे कहा था, कि तुम अपनेको कैदी न समझो; तुमने हमारा युद्धका बहुतसा साजसामान देख लिया है और इसका समाचार तुम रूसको दे हमें क्षति पहुंचा सकते हो; इसीलिये हमने तुम्हें कुछ दिनोंके लिये ठहरा लिया है; जैसे ही यथाक्रम युद्ध चल पड़ेगा, वैसे ही तुम छोड़ दिये जाओगे।" किन्तु जिस समय ब्लाडीवष्टकवाले बेड़ेके कुकर्मका हाल जापान-सरकारको मिला; उसी समय उसने इन पांचों जहाजोंको नीलाम करा दिया। इस दुर्घटनाके उपरान्त १२वीं फरवरीको चीन-सरकारने इस युद्धसे अपने जुदा रहनेका विज्ञापन छापा और इसी दिन कोरिया-राजधानी सिउलकी रूस-दूत ने अपना पद परित्यागकर रूस लौट गये।

जापानी बेड़ा निकम्मा रहना नहीं चाहता था। १२ वीं फरवरीकी सन्ध्या होते बेड़े का एक भाग चढ़ाईके लिये तय्यार होने लगा। जैसे जैसे रात भोगी, वैसे वैसे तय्यारी बढ़ी। देखते देखते बेड़े की कितनी ही डिष्ट्रायेर नावें अपने एञ्जिन गर्म्मा चलाकर समुद्रमें दौड़नेके लिये तय्यार हो गये। डिष्ट्रायेर-नाव तारपेडो-नावसे अधिक सुदृढ़ होती है : उसे भगा पास पहुंच हुवा देनेकी शक्ति रखनेकी वजह ही डिष्ट्रायेर-नावोंका नाम "डिष्ट्रायेर" या "ध्वंसी" हुआ। डिष्ट्रायेरका प्रायः अर्द्धांश जलमें डूबा रहता है; एञ्जिनकी चिमनी और उस चिमनीतलेकी छत जलसे बाहर रहती है। छतमें तारपेडो छोड़नेका एक बड़ा नल रहता है; लड़ाईके समय इस नलसे तारपेडो छोड़ा जाता है। डिष्ट्रायेर भी एक तरहकी तारपेडो-नाव ही है; फर्क यह है, कि डिष्ट्रायेर तारपेडो-नावकी अपेक्षा अधिक सुदृढ़, शीघ्रगामी और तूफानी समुद्रमें भी जाने लायक होता है।

८ वीं फरवरीकी अर्द्धनिशाको आरथर-बन्दरमें रूसी बेड़े पर जापानका जो आक्रमण हुवा था; वह उसके तारपेडो-नावों द्वारा हुवा था; जापानी बड़ी जहाजों और छोटे जङ्गी जहाजोंने इस आक्रमणमें आंशिक साथ दिया था; उस समय सिर्फ डिष्ट्रायेर-नावें निकम्मी थीं और निकम्मी खड़ी हाथ मल पछताती थीं। इन कई दिनोंके उपरान्त आज डिष्ट्रायेर-नावोंको भी शत्रुसे भिड़नेका अवसर मिला। प्रधान नौ-सेनापति टोगोकी आज्ञा हुई थी,—"रियर एडमिरल नागाईके अधीन डिष्ट्रायेर-नावोंका एक बेड़ा आरथर-बन्दरके भीतर घुस

जाये और वहां खड़े रूसी जङ्गी जहाजोंपर आक्रमण करे।" इस आज्ञाका प्रचार होते ही डिष्ट्रायेर-नावोंके सिपाहियों और अफसरोंके मन उत्साहसे भर उठे। पहले आक्रमणकी अपेक्षा इस आक्रमणमें जानका बड़ा खतरा था। पहले आक्रमणसे पहले रूसियोंको इस बातका विश्वास नहीं था, कि नन्ही नन्ही जापानी तारपेडो-नावें इसतरह अपना कामकर अछूती लौट जायेंगी; इसलिये रूस सब तरह तय्यार रहनेपर भी उनकी ओरसे असावधान था। फिर तारपेडो-नावोंकी अपेक्षा डिष्ट्रायेर-नावें बड़ी थीं; इसलिये रूसी गोलोंका ज्यादा साफ निशाना बन सकती थीं। खतरे बहुत थे; पर जापानी सिपाहियोंके लिये एक भी नहीं। वह रात्रिके अन्धकारमें आगे बढ़े और प्रातःकाल आरथर-बन्दरके भीतर घुस किसी रूसी ज हाजको डुबा लौट आने या इसी चेष्टामें प्राण त्याग करनेको अपने आनन्दका बड़ा ही प्यारा सामान समझते थे। कितना भयङ्कर काम था! जापानी सिपाही जानते थे, कि जलमग्न डिष्ट्रायेर नावमें छोटासा भी एक सुराख होते ही वह डूब सकती है और उसके डूबनेके साथ साथ उनकी मृत्यु सुनिश्चित है; फिर भी उनके मनमें तनिक भी भयका सञ्चार नहीं हुआ; वह बिना अपने जङ्गी जहाजोंकी सहाय लिये अपने ही बलपर निर्भर हो रूसी जङ्गी जहाजोंको कुचल डालनेके लिये तय्यार हुए।

रात बड़ी ही वाहियात थी। अति शीतल वायु सनसन बह रही थी। काले काले बादलोंसे नभोमण्डल आच्छादित था। रात्रिको अधिक भयङ्कर बनानेके लिये ही अर्द्धनिशाके उप-

हुए। आर्थर-बन्दरकी किलाबन्दीमें लगी कोई तीन सौ बड़ी बड़ी तोपोंको तुच्छ समझ कप्तान अपनी नाव बन्दरके भीतर ले गये। पहले आक्रमणके बादसे रूसी बहुत ही सावधान थे। बन्दरके मुहानेपर रूसी सिपाहियोंका जबरदस्त पहरा था। जैसे ही आशागिरि बन्दरके भीतर पहुंची, वैसे ही एक रूसी किलेकी सर्च रोशनी आशागिरिपर पड़ी। छोटीसी जापानी नाव जलमें डूबी रहनेपर भी सर्च रोशनीके उज्ज्वल प्रकाशमें स्पष्ट दिखाई दी। जैसे ही आशागिरि नाव दिखाई दी, वैसे ही किलाबन्दीकी तोपोंसे उसपर गोलोंकी बाढ़ पड़ने लगी। रूसी तोपोंसे बरसते हुए गोलोंसे एक भी गोला यदि जापानी नावको लगता, तो उसकी समाप्ति हो जाती; किन्तु न जाने कैसे जगदीश्वरने उसे बाल बाल बचा लिया। किसीका कहना है, कि अपनी तेज चालकी वजह इस नावने अपनी रक्षा की; फिर किसी किसीका यह भी कहना है, कि रूसी गोलन्दाजोंकी नालायकी या उनके अपने जहाजोंकी रक्षाके विचारसे खूब सम्हाल सम्हालकर गोले बरसानेकी वजह जापानी नावकी रक्षा हुई। जैसे और जिस वजह हो; इसमें सन्देह नहीं, कि जापानी नावकी आश्चर्यरूपसे रक्षा हुई और उसकी रक्षाकी यह कहानी सिर्फ जापान हीके इतिहासमें नहीं; बल्कि जगत्‌के इतिहासमें लिखी जायेगी। कई कमानसे छूटे तीरकी तरह आशागिरि रूसी पहरेदारोंकी आंखोंमें धूल झोंक—मुहानेकी सेनो ओरकी किलाबन्दीको अपने पीछे छोड़—मुहानेकी सङ्कीर्ण राहसे बन्दरके भीतर घुस गई। बन्दरके भीतर अपने सामने ही उसे

बहुत बड़ा भारी जहाज खड़ा दिखाई दिया; जिसकी

अपने धुनकी पक्की थी; रूसी तोपोंके गोलोंकी कोई परवा न कर तीरकी तरहसे दौड़ती आरथर-बन्दरके मुहानेके समीप पहुंची। मुहानेके ठीक सामने—बन्दरके भीतर—उसे दो रूसी जङ्गी जहाज खड़े दिखाई दिये। एक क्षणमें उसके सिपाही नावकी छतपर आये और उन्होंने पूर्व्वोक्त दोनों रूसी जहाजोंको ताककर एक एक तारपेडो चलाया। तारपेडो चलनेके कुछ ही देर बाद बन्दरके भीतर एकाएक बड़ा ही भयङ्कर शब्द हुआ; हयातरीको विश्वास हो गया, कि उसने अपना काम पूरा किया; उसका चलाया तारपेडो नि-शानेपर बैठा। यह जान हयातरी सन्तुष्ट हो फुरतीके साथ आरथर-बन्दरका मुहाना परित्यागकर अपने बेड़ेकी ओर लौटी। इसके उपरान्त सवेरा हो गया। सूर्य्यदेवका प्रकाश चारों ओर फैल गया। अन्यान्य डिष्ट्रायेर-नावें आरथर-बन्दरके समीप प-हुंचनेका साहस कर न सकीं,—अपने बेड़ेकी ओर लौट गईं। बाकी नावोंके बिना काम किये लौटनेपर भी, आशा-गिरि और हयातरीने जो काम किया था, वह बहुत था। आशागिरिने रूसकी एक तारपेडो-नाव डुबाई और हयातरीने रूसके छोटे जङ्गी जहाज बयारिनके पेंदेमें एक बहुत बड़ा सूराख बना दिया।

नर-नारियोंसे भरे गुलजार आरथर-बन्दर नगरपर बन्दरके इन कई जल-युद्धोंका बड़ा असर हुआ। रूसके सुदूर पूर्व्वके बड़े लाट और समग्र रूसी सुदूर पूर्व्वके सर्व्वोच्च हाकिमोंका आवास-स्थान यही आरथर-बन्दर नगर था। शासनकी सारी कलें इसी जगहसे कमानेसे चलती थीं। पूर्व्वोक्त अन्तिम जल-युद्धके

है। रूसने जब देखा, कि उसका आर्थर-बन्दरवाला बेड़ा प्राय: निकम्मा हो गया है; वह बन्दरसे निकल लियाउटुङ्ग



बड़े लाट अलेक्सिफ।

प्रायद्वीपकी रक्षा कर नहीं सकता, तब उसके मनमें बड़ा भय हुआ। उसने विचार किया, कि ऐसी अवस्थामें जापानी

जहाज बिना विघ्न-बाधाके अपनी स्थल-सैन्य लियावटुङ्गमें उतार आरथर-बन्दरको स्थलकी ओरसे भी घेर लेंगे। उनके बड़े लाट और मञ्चूरिया शासन करनेकी जबरदस्त कल उच्चश्रेणीके राजकर्मचारी—सभी—आरथर-बन्दरमें बन्द हो जायेंगे। यही सब विचार रूसने अपने बड़े लाटको आरथर-बन्दरसे निकाल सुदूरके हारबिन नगरमें बैठा दिया। असलमें आलक-सिफ सुचारूरूपसे मञ्चूरिया-शासन करनेके लिये नहीं; बल्कि अपनेको विपदको फेंदसे बचानेके लिये आरथर-बन्दरसे हारबिन भागे थे।

रूसने अपने बड़े लाटको सुरक्षितकर दूरदर्शिता हीका काम किया; कारण, जापान वस्तुतः ही धीरे धीरे स्थल-युद्धके लिये तय्यार हो रहा था। जापानी बेड़े का एक टुकड़ा आरथर-बन्दरके सामने पड़ा था। चूहेके बिलके पास बैठ बिल्ली जिसतरह चूहेके निकलनेकी राह देखती है; जापानी बेड़ा ठीक उसीतरह आरथर-बन्दरके सामने रह रूसी बेड़ेके निकलनेकी राह देख रहा था; कभी कभी बन्दरके पास कुछ छेड़छाड़ भी करता था; पर वह गिनतीकी नहीं; १४वीं फरवरीसे ९४वीं फरवरी-तक एक भी मारकेका काम नहीं हुआ। बेड़ेका एक दूसरा टुकड़ा रूसके बूडीवस्टक-बन्दर पहुँच गया था और उसके मुहानेपर ठहर बन्दरस्थ रूसी बेड़ेके निकलनेकी प्रतीक्षा कर रहा था। इस अवसरमें बेड़ेका तीसरा या शेष भाग स्थल-सैन्यसे भरे बारबरदारीके जहाजोंको अपने पहरेमें जापानसे मञ्चूरिया भूखण्डकी ओर ला रहा था। जापान अपने छोटेसे बेड़ेको तीन टुकड़ोंमें बांट उनसे यह तीन प्रयोजन

रहा था ; साथ साथ युद्धारम्भ होमें रूसी बेड़ेको परास्त करनेका लाभ उठा रक्खा था। सन् १९०३ ई०के अन्तमें जापानने युरोपकी अरजेंटाइन-सरकारसे अव्वल दर्जेके दो छोटे जङ्गी जहाज निशीं और कासूगा खरीदे थे। कहते हैं, कि जिस समय यह दोनो जहाज युरोपसे जापान चले, उस समय कितने ही रूसी जङ्गी जहाज उनके पीछे पीछे चले ; शायद अपनी तेज चाल होके फलसे जापानी जहाज रूसी जहाजोंसे दूर निकल भागे। यह दोनो १५वीं फरवरीको जापान पहुंच कुछ दिनों बाद तोपों और सिपाहियोंसे लैस हो अपने बेड़ेसे मिल गये। इस समय वह जापानी बेड़ेके दो सुदृढ़ स्तम्भ थे।

कोई दस दिनोंतक आरथर-बन्दरमें शान्ति विराजी। रूसी सिपाही उत्सुकतापूर्वक जापानियोंकी प्रतीक्षा करते रहे। अब पहरेका काम ठीक फौजी कायदेके अनुसार चल रहा था। सन्ध्योपरान्त समुद्रकिनारे किसीतरहकी रोशनी करना मना था ; दिनभरके श्रमके उपरान्त श्रमनिवारणके लिये सिपाहियोंका सान्ध्य आमोद-प्रमोद बिलकुल बन्द कर दिया गया था। रूसी सिपाही जापानियोंकी राह ताकते ताकते शायद उकता गये थे ; ऐसी अवस्थामें २४वीं फरवरी बड़े सवेरे गहरा सन्नाटा तोड़ एकाएक भीषण शब्द उत्थित हुआ। रूसी किलोंके तोपखाने बाढ़ मारने लगे ; शत शत विशाल तोपोंके गर्ज्जनसे जल-स्थल हिलने लगा। रूसी सिपाहियोंने हर्षध्वनि की ; जगत्‌भरमें तार द्वारा घोषित हुआ,—"रूसने बहुत बड़ी विजय पाई। जापानी बेड़ेने आरथर-बन्दरपर भीमवेगसे आक्रमण

किया। बेड़ा अरथर-बन्दरमें घुसा ही चाहता था; पर राह हीमें रूसी गोलोंकी चोटसे चकनाचूर हो गया। बेड़े के चार बड़े जङ्गी जहाज डूब गये—छोटी छोटी नावें जान बचा भाग गईं।" रूसके लिये यह बड़ा ही सुखोज्ज्वलकारी यशोप्रभापूर्ण समाचार था। समाचारका सर्वोत्कृष्ट अंश था,—"रूसका जङ्गी जहाज रेटविर्जा जापानी तारपेडोकी चोटसे अरथर-बन्दरके भीतर मुहानेके ठीक सामने छिछले जलमें पहुंच बैठ गया है। उसकी पेंदेमें पानी भरा हुआ है; इधर उधर चल फिर नहीं सकता। इस जहाजने कमाल किया, कि एक जगह गिरिवत् अचल-अटल रहकर भी अपने गोलोंकी चोटसे जापानी जहाजोंको तोड़ यह चिरस्मरणीय विजय प्राप्त की।" यह समाचार सुन कोटि कोटि मनुष्य चकित-स्तम्भित हुए; असंख्य मनुष्योंके चेहरे मुसकुराये—असंख्य मनुष्योंके मुरझाये।

किन्तु क्रमशः जब इस समाचारके प्रथम प्रभावका आवेग कुछ घटा; इसने अपना प्रकृत रूप धारण किया, तब जान पड़ा, कि हे राम! कहांकी विजय—कैसा जापानी जङ्गी जहाजोंका डूबना,—यहां तो और ही घटना हुई। स्पेन-अमेरिका-युद्धमें लफटनण्ट हाबसनने बन्दरके मुहानेपर अपने कुछ फालतू जहाज डुबा बन्दरस्थ विपक्षीय बेड़े को बन्दर हीमें बन्द कर देनेकी चेष्टा की थी; इतने दिनोंके उपरान्त जापानके प्रधान नौ-सेनापति एडमिरल टोगोने भी वही चेष्टा की। हाबसनने बड़े ही भद्दे ढङ्गसे चेष्टा की थी; टोगोने बड़ी ही खूबसूरतीके साथ की। इसका विवरण इसतरह है,—२४वीं फरवरीको बड़े सवेरे जापानी तारपेडो-नाव और डिष्ट्रायेर-नाव इन दोनों नावोंका बेड़ा पांच

बड़े जहाजोंके साथ आरथर-बन्दरके सामने पहुंचा। जङ्गी जहाजोंकी चाल बहुत तेज होती है; इस बेड़ेकी बहुत धीमी थी। वायुगतिसे दौड़नेवाली जङ्गी नावें बहुत ही धीरे धीरे आगे बढ़ रही थीं। इ०का कारण यह था, कि जङ्गी नावोंके साथ जो बड़े बड़े जहाज थे, वह जङ्गी जहाज नहीं, सौदागरीके जहाज थे। पांचोंके नाम थे,—होकाकू मारू, बुस्यू मारू, तेनश्चिन मारू, बायो मारू और जिनसेन मारू। "मारू" जापानी भाषामें सौदागरीके जहाजको कहते हैं। यह पांचो जहाज जङ्गी जहाजोंके मुकाबिला कागजके बने कहे जा सकते थे; छोटे छोटे कम ताकतके एञ्जिनोंके जोरसे धीरे धीरे आगे बढ़ रहे थे। हरेक जहाजपर थोड़ेसे सिपाही थे, जो जहाजको ठीक राहपर ले जानेके लिये बहुत थे। असंख्य जहाजी सिपाही अपने प्राण हथेलीपर रख यह भयङ्कर कार्यभार ग्रहण करनेके लिये तय्यार हुए थे; उनमें कुछ सिपाही और अफसर चुने तथा इन जहाजोंपर सवार कराये गये। इन पांचों जहाजोंमें ठसाठस पत्थर भरे थे और भरी थी,—बारूद। बारूदमें बिजलीका तार लगा था। इच्छा करते ही तारकी बिजलीसे बारूदमें आग लगा जहाज फाड़ डुबा दिया जा सकता था। टोगो चाहते थे, कि इन पांचो जहाजोंको आरथर-बन्दरके मुहानेमें डुबा बन्दरके भीतरके रूसी जङ्गी जहाजोंके बाहर निकलनेकी राह रोक दी जाये। जङ्गी नावें कुछ तो राहमें इन जङ्गी जहाजोंकी रक्षा करनेके लिये भेजी गई थीं और कुछ इसलिये भेजी गई थीं, कि यदि अवसर मिले, तो बन्दरमें घुस बनेबनाये रूसी जङ्गी जहाजोंको तोड़फोड़ें। बन्दरका मुहाना सङ्कीर्ण है।

इस मङ्गोर्या मुहानेके पास ही भीतर जापानी तारपेडोकी चोटसे फटकर रूसका जङ्गी जहाज छिछले पानीमें बैठ गया था। उसका पेंदा पानीमें डूबा था और ऊपरी भाग पानीसे बाहर। रेटविजा अस्थायी जहाजसे स्थायी लौह-दुर्ग बनकर मानो आर्थर-बन्दरके मुहानेका पहरा दे रहा था। २४वीं फरवरीको सवेरे जब पूर्व्वोक्त जापानी बेड़ा आर्थर-बन्दरके मुहानेके समीप पहुंचा, तब इसपर सबसे पहले रेटविजाके सिपाहियोंकी दृष्टि पड़ी। निर्भीक जापानी जहाजोंका बन्दरमें घुसना देख उसपर रेटविजाकी बड़ी बड़ी तोपोंके गोले एकाएक बरसने लगे। इसके दूसरे ही क्षण किलेकी तोपें भी जापानी जहाजोंको ताक ताककर गोले उतारने लगीं। कोई आध घण्टे तक गोलन्दाजी हुई। रूसी गोलोंकी चोटसे क्षत-विक्षत हो जापानी जहाज मुहानेमें इधर उधर दौड़ अन्तमें फटकर डूबने लगे। क्रम क्रमसे पांचो जहाज डूब गये। रेटविजाके सिपाहियोंने विचार किया, कि इतने दिनोंके उपरान्त आज विजयलक्ष्मी उनके प्रति सुप्रसन्ना हुई है। आनन्दसे अधीर हो आर्थर-बन्दर के रूसी सिपाहियोंने हर्ष-ध्वनि की और उसी समय यह विजय-समाचार समग्र जगत्में घोषित किया गया। अन्धे रूसियोंने यह न देखा, कि जो पांचों जहाज डूब गये, वह यदि जङ्गी जहाज होते, तो गोलोंकी चोटसे क्या इसी आसानीके साथ नष्ट होते? और नष्ट होनेसे पहले क्या एक भी तोप न चलाते? किन्तु मशहूरा और बहुनेचर इन बातोंका कौन खयाल करता है? जिस समय रूसी हर्ष प्रकाश कर रहे थे, उस समय जापानी वीरोंपकरूपमें अपना काम समाप्त कर डूबे हुए जहाजोंके प्रायः

सब सिपाहियोंको छोटी नावोंमें सवार करा जलपथसे अपने बेड़ेकी ओर लौट रहे थे। सूर्योदय होनेके उपरान्त रूसियोंको असली बात जान पड़ी; उस समय उनके मनकी जो अवस्था हुई होगी उसका वर्णन कौन कर सकता है?

दूसरे दिन २५वीं फरवरीको रात कोई १ बजे जापानी डिस्ट्रायेर नावोंका बेड़ा पाससे अपना प्रकृत रूप छिपा आरथर-बन्दर, डालने-बन्दर और पीजन खाड़ीपर दस दस बीस बीस गोले मार अपने बेड़ेकी ओर लौट गया। इसी तारीखको प्रातःकाल समूचा जापानी बेड़ा आरथर-बन्दरके सामने प्रकट हुआ और बहुत देरतक आरथर-बन्दरपर गोला वृष्टिकर एक ओर चला गया। इस गोला-वृष्टिसे आरथर-बन्दरमें आग लग गई, जो बड़ा नुकसानकर बुझी।

एक ओर आरथर-बन्दरमें घम घमकर जल-युद्ध चल रहा था; दूसरी ओर दोनों ओरसे वर्त्तमान भयङ्कर स्थल-युद्धकी बहुत बड़ी तय्यारी हो रही थी। पाठकोंको स्मरण होगा, कि कोरिया-राजधानी सिउलके चेमलफो-बन्दरमें जिस दिन रूसी जङ्गी जहाजने पहला गोला चला युद्धारम्भ किया था, उसी दिन बहुतेरे जापानी सिपाही बारबरदारीके जहाजोंसे चेमलफो-बन्दरमें उतरे थे। चेमलफो-बन्दरकी बनावट अच्छी नहीं है; उसमें जहाजसे फौज और उसका साज-सामान उतारना बहुत ही कठिन काम है। किन्तु यही कठिन काम जापानियोंने अपनी सुशृङ्खला और सुव्यवस्थाकी वजह बड़ी ही आसानीके साथ सम्पन्न किया। छः या सात घण्टेके भीतर भीतर सहस्र सहस्र जापानी सिपाही और उनका साज-सामान किनारे पहुंच गया। बन्द-

रमें खड़े वैदेशिक जङ्गी जहाजोंके अफसर जापानियोंकी स्थल-सैन्यका यह पहला काम देख मुग्ध हुए। जापानकी स्थल-सैन्यका कुल सामान अव्वल दरजेका और नया था। सिपाही अपनी नई खाकी वरदी—नई काली पट्टी, पीतलके नये सितारेसे सजी नई टोपी आदिमें बहुत ही भले जान पड़ते थे। पहले ही लिखा जा चुका है, कि चेमलफो-बन्दरमें उतर कितने ही जापानी सिपाहियोंने बन्दरपर अधिकार कर लिया और कितने ही कोरिया-राजधानी सिउलपर कबजा करनेके लिये रवाना हुए। सिउल भी बड़ी ही आसानीसे जापानियोंके हाथ लगा। इसके उपरान्त कोरियामें क्रम क्रमसे कितनी ही जापानी फौजें आईं और वह सम्हलकर धीरे धीरे कोरिया मञ्चूरियाकी सीमा यालू नदी की ओर बढ़ीं। इनका हाल यथासमय लिखा जायेगा।

रूस भी स्थल-युद्धके लिये तय्यार हो रहा था। रूस-राजधानी सेण्ट-पिटर्सबर्गसे सहस्र सहस्र कोस दूर सुदूर पूर्वकी ओर सिपाहियोंसे भरी ट्रेनपर ट्रेन भेज रहा था। युद्धस्थल-की ओर फौज भेजनेमें रूसको कितनी ही दिक्कतोंसे सामना करना पड़ता था। पहले तो रूस-राजधानीसे युद्धस्थल बहुत दूर था। रूसकी समान दूसरी राजधानी या पहलेकी प्रधान राजधानी मास्को नगरसे पूर्व साइबेरियाकी राजधानी इरकुत्स्क नगर कोई दो हजार कोसके फासिलेपर था। इस नगरके पास ही पृथिवीकी सबसे बड़ी झीलोंमें छठी झील बैकाल लहरें मारती है। इस झीलकी लम्बाई कोई दो सौ कोस है। ग्रीष्मकालमें इस झीलका जल अपनी प्रकृत अवस्थामें रहता

है और शीतकालमें शीताधिक्यवश झीलपर ३।४ फुट मोटी बरफकी तह जम जाती है। बरफकी तह जम जानेसे वैकल झील पार करना कठिन हो जाता है। वैकल झीलसे मञ्चूरिया कोई बीस कोस दूर रह जाता है। इस दो हजार मीलके फासिलेसे एक रेलपथसे रूसको युद्धस्थलमें फौज भेजना पड़ती थी।

जिस समय युद्ध आरम्भ हुआ, उस समय शीतकाल उपस्थित था। वैकल झील जमकर बरफ बन गई थी। जमी हुई झील पार करनेकी तीन राहें थीं। एक खिसकनेवाली गाड़ीकी राह थी, जिसके किनारे किनारे खम्भे गड़े थे; दूसरी पगडण्डी थी और तीसरी रेलकी राह। युद्धारम्भ होतेही यह तीसरी राह शीघ्र शीघ्र बनाई जाने लगी। राह तयार होनेपर एक लोमहर्षण दुर्घटना हुई। एक दिन एक विशाल एञ्जिन इस लाइनसे वैकल पार कर रहा था; ऐसे समय एक जगह एञ्जिनके बोझसे बरफ टूट गई और समूचा एञ्जिन अपने ड्राइवर प्रभृतिके साथ झीलके अतलतलमें चला गया। इस दुर्घटनाके बादसे वैकल पार करनेवाली ट्रेनोंमें सिर्फ माल असबाब या रसद रहती थी; आदमी नहीं। युद्धारम्भ होनेपर इसी राहसे रूस अपनी फौज और रसद शीघ्र शीघ्र मञ्चूरियाकी ओर भेजने लगा। राहकी कठिनाइयां देख पाठक समझ सकते हैं, कि इस कामसें रूसको कैसी दिक्कतें उठाना पड़ी होंगी। युद्धस्थलसे स्वदेश लौटते हुए रूसी स्त्री-बालकों और सुलकी अफसरोंकी भीड़से रूसकी यह कठिनता परम सीमाको पहुंच गई थी।

सिवा शीत, बरफ और कठिनिलेके रूसको युद्धस्थलकी ओर फौज भेजनेमें और एक बड़ी दिक्कतसे सामना करना पड़ा। जिस समयका हाल हम लिखते हैं, उस समयसे अगणित वर्ष पहले जब विजयी चीना दूरसे आ मञ्चूरियामें बसे थे, तब उनके एक सम्प्रदायने एक स्थानमें स्थिर हो रहनेकी अपेक्षा इधरउधर भटकने और लूटमार करने होको अपने जीवनका श्रेष्ठ व्रत बनाया था। उनके सहस्र सहस्र वंशधर अबतक मौजूद थे और वह इसी ढङ्गसे अपनी जीवन-यात्रा निर्वाह करते थे। चीना भाषामें इस आवारा जातिका नाम "हुन-हुज" है—रूसी 'चखुज' कहते थे। चखुज बड़े ही स्वतन्त्र स्वभावके लोग हैं: किसीकी वश्यता स्वीकार करनेकी अपेक्षा मरना अच्छा समझते हैं। युद्धारम्भ होनेपर युद्ध-स्थलकी ओर रूस जब प्रचुर परिमाणसे रसद आदि भेजने लगा, चखुज रसदकी गाड़ियों और अड्डोंपर बारंबार डाके मार रसदकी सामग्री लूटने लगे; रसदसे भरी ट्रेनोंको रोकनेके लिये रेलकी लाइन और तार काटने लगे। रूसने शिकायत की, कि चखुज जापानी अफसरोंके बहकानेसे इतने निर्भीक और उद्दण्ड हो गये हैं; किन्तु अपनी इस बातका रूस कोई प्रमाण दे नहीं सका। लुटेरे क्या जितेन्द्रिय योगी थे, कि सुन्दर आहार्य इतनी सामग्री सामने पा बैठे बैठे देखा करते? रूसने चखुओंके अपकर्मका बदला लेनेके लिये कितने ही ग्रामोंको ध्वंस कर दिया; किन्तु इससे कोई सुफल उत्पन्न नहीं हुआ; चखुओंके साथ ग्रामवासियोंका वैसा कोई सम्बन्ध नहीं था। अन्तमें रूसने अपने रेलपथकी रक्षाके

नामक सुदृढ़ स्थानको विजय किया था और अफगानस्थानसे कुछ दूर समरकन्दपर रूसको विजय-वैजयन्ती उड़ाई थी। रूस-रूम-युद्धके समय जब सुविख्यात रूमी योद्धा गाजी उस्मान पाशा प्लवनामें बैठ भीमवेगसे रूसका प्लवना-प्रवेश रोक रहे थे, उस समय इन्हीं कुरोपाटकिनने सहस्र सहस्र रूसी कटवा प्लवना-प्रवेशकर अपनी यशःप्रभासे दिशायें चमकाई थीं। इसके उपरान्त कई वर्षतक वह रूसके ट्रान्सकास्पियन प्रदेशके गवर्नर रह चुके थे; इस समय कोई छः वर्षसे रूसके समर-सचिव थे। इन्हीं मोटे, दाढ़ीवाले और सुस्वर कुरोपाटकिनको ओर अपने इस घोर दुर्दिनके समय व्याकुल रूसियोंने नितान्त आशापूर्ण लोचनसे देखा। ११वीं फरवरीको रूस-सम्राट्ने एक फरमान निकाल कुरोपाटकिनको अपने सुदूर पूर्वकी सैन्यका सर्वप्रधान सेनापति नियुक्त किया।

हमें याद है, कि इन वयोवृद्ध वीर कुरोपाटकिनने प्रधान-सेनापतिका पद पा एक बार घोर-गम्भीर गर्ज्जन किया था। इस पुरुषसिंहकी गर्ज्जनध्वनिसे जगत् प्रतिध्वनित हुआ था। कुरोपाटकिनने गर्ज्जनकर कहा था,—"हे जगत्‌के लोगो! तुम्हें मैं बड़ा ही वीभत्स तमाशा दिखाऊंगा; ससैन्य जापान-राजधानी टोकियो पहुंच जापानसे सन्धि-पत्रपर हस्ताक्षर कराऊंगा।" इस गर्ज्जनके उपरान्त कुरोपाटकिनने युद्ध-यात्राकी तय्यारी की। कितने ही नये सेनापतियोंको अपने साथ लिया। कहते हैं, कि कुरोपाटकिनने आर्थर-बन्दरके रूसी बेड़ेके प्रधान नौ-सेनापतिके पदपर नया अफसर नियुक्त कराया। कुरोपा-

टकिनके नियोगके बाद ही क्रोन्स्टेटके नौ-सेनापति वाइस एड-मिरल मेकराफ बहुत पूर्व्वके रूसी बेड़े के प्रधान नौ-सेनापति बनाये गये। मेकराफ अपने गुण-गरिमाके लिये रूसमें बड़े प्रतिष्ठित थे। इन दोनो सुप्रसिद्ध अफसरोंके नियोगसे लोगोंको विश्वास हुआ, कि अब रूस संभलकर जापानके साथ प्रकृत प्रस्तावसे युद्ध आरम्भ करना चाहता है। रूसकी यह तय्यारियां देख, कितने ही समझदारोंतकने जापानके लिये दुःख प्रकाश किया था। इसमें सन्देह नहीं, कि जापानके लिये यह कठिन परीक्षाका समय था। रूसकी जल और स्थलसैन्य दो सुयोग्य सेनापतियोंके अधीन कर दी गई थी और युद्धारम्भके उपरान्तसे अबतक—कोई एक महीनेमें—मञ्चूरियामें रूसके कोई दो लाख सिपाही पहुंचा दिये गये। जापानके सामने अब युरोपका वही विशाल-विराट् रूस ताल ठोंककर युद्धके लिये खड़ा हुआ था।

जल और स्थलपर घोर समरानल प्रज्वलित होनेसे पहले एक दो छोटे मोटे जल-युद्ध हुए; पहले उन्हींका वर्णन कर देना चाहिये। पाठक इस पुस्तकमें सबसे पहले कई बार रूसके ब्लडीवष्टक-बन्दरका नाम पढ़ चुके हैं। साइबेरियन रेलके छोरपर ब्लडीवष्टक एक बड़ा बन्दर है। तीन ओरसे पर्व्वतमाला द्वारा घिरा है और भूखण्डसे कुछ आगे निकल समुद्रमें फैला हुआ है। भारतके बम्बई या चीनके हाङ्गकाङ्ग-बन्दरसे बहुत कुछ मिलताजुलता है। पहले बन्दरमें बड़ी आबादी थी; बड़ा रोजगार था। किन्तु गत ६वीं फरवरीसे बन्दरकी स्वाभाविक रौनक फीकी पड़ गई; गुलजार बाजारोंमें सन्नाटा छा गया। कारण, उसी तारीखको युद्धारम्भ होनेका

समाचार बन्दर पहुंचा और वहांके हाकिमोंने विचार किया कि जापानने कल यदि आरथर-बन्दरपर आक्रमण किया है, तो आज व्लडीवष्टकपर भी कर सकता है। शीघ्र शीघ्र जापानी आक्रमणसे सामना करनेकी तय्यारी आरम्भ हुई। सबसे पहले पर्व्वतमालाके सर्व्वप्रधान किलेसे एक बहुत बड़ी तोपकी तीन फेर हुए। इसका मतलब था,—"बन्दरके इर्द-गिर्द जितने सिपाही हैं, वह तुरन्त बन्दरमें आयें,—बन्दरकी फौज शीघ्र तय्यार हो।" इसके उपरान्त नगरवासियोंके नाम इस मतलबका एक विज्ञापन निकला,—"जापान व्लडीवष्टक घेरना चाहता है। कोई नगरवासी बिना सरकारी अनुमति लिये माल-असबाबके साथ नगरसे बाहर न जाये।" यह विज्ञापन निकलते ही नगरमें भगदर पड़ी। ष्टेशन यात्रियोंसे भर उठा। व्लडीवष्टक नगर और अञ्चलमें बहुतेरे जापानियोंका निवास था। रूसी इनसे बहुत डरे। अफवाह उड़ी, कि जापानी रूसी यात्रियोंसे भरी ट्रेन किसी विस्फोरक पदार्थ द्वारा उड़ा देना चाहते हैं।" इसलिये व्लडीवष्टक रेल-ष्टेशनसे बहुत दूरतक कज्जाक सवारोंका रिसाला ट्रेनकी रक्षाके लिये उसके साथ साथ दौड़ा करता था। जापानी पड़ोसियोंको देखकर रूसी बहुत उत्तेजना दिखाते थे। उन्हें भय था, कि कहीं यह सब व्लडीवष्टक नगर उड़ा न दें। जापानी भी प्रवासभूमि यथासम्भव शीघ्र त्यागना चाहते थे। कोई सवा सौ जापानी अपनी सम्पत्ति बेच अपने कनसलके साथ एक डाकके जहाजपर सवार हो व्लडीवष्टकसे जापानकी ओर चल दिये। रूसी निश्चिन्त ... । स्थलमें यह हो रहा था और जलमें यह हुआ, कि

जहाज बन्दरमें जमी कोई चार फुट मोटी बरफकी तह तोड़ अपने लिये राह बना निकले थे। जापानी जहाजोंपर जमी और लगी बरफ देख स्पष्ट जान पड़ता था, कि वह खुले और जमे हुए समुद्रमें दौड़ रूसी जहाजोंको ढूंढ चुके थे। जैसे जैसे वह बन्दरके समीप पहुंचे, वैसे वैसे बन्दरके निकट जमी बरफसे उनकी गति मन्द हुई। कोई एक बजे चारो अव्वल दर्जेके छोटे जङ्गी जहाज बाकी तीन जहाजोंको बन्दरसे कोई ढाई कोसके फासिलेपर अपने पीछे ठहरा बन्दरके समीप पहुंचे। बन्दरसे कोई डेढ़ कोसके फासिलेपर रह चारो जहाज एक लम्बी पंक्तिमें पहली ओरसे दूसरी ओर और दूसरी ओरसे पहली ओर दौड़ने और फैर करने लगे। पहले कितनी ही फैरें बिना गोलेके कारतूसकी, तोपें गर्म करनेके लिये कीं; इसके उपरान्त बड़े बड़े गोले बलूडीवष्टक-बन्दरपर बरसने लगे। तीन बार जापानी जहाज पहली ओरसे दूसरी ओर गये और दूसरी ओरसे पहली ओर और इस आवागमनमें अविराम गोला-वृष्टि करते गये। सिर्फ लौटनेके समय गोलावृष्टि रुकती थी। कोई चालीस मिनटमें जापानियोंने दो सौ बड़े बड़े गोले मारे। रूसकी ओरसे जवाबमें एक भी गोला चलाया नहीं गया; कहा गया, कि जापानी जहाज यदि और समीप आते, तो गोला चलाया जाता। तीसरा चक्कर लगा जापानी जहाज समुद्रचसे दक्षिण चले गये। सन्ध्या कोई पांच बजे क्षितिजमें पहुंच लोप हो गये। अनुमान किया गया, कि रूसी जहाजोंकी खोजमें आये थे; उन्हें न पा लौट गये। दूसरे दिन जापानी बेड़ा [illegible]या और दूसरे तरफ-बन्दरके आसपास चक्कर लगा कौर

गया। मानो जापानी बेड़ा हैरान था, कि बन्दरके पूर्वोक्त जहाज कहां छिप गये,—आसमानमें उड़ गये या जल-गर्भमें समा गये।

इधर वृहीवहक़में यह हुआ और उधर आरथर-बन्दरमें जो हुआ, उसका हाल सुनिये। आरथर-बन्दरके रूसी जङ्गी जहाजोंके प्रधान सेनापति शार्क पदच्युत हुए; ५वीं मार्चको आरथर-बन्दर पहुंच उनका पदभार मेकराफने ग्रहण किया। पदभार ग्रहण करते ही चारों ओरकी कुव्यवस्था मिटा सुव्यवस्थाकी बुनियाद डाली। जिन फौजी कायदों या फरमा-नोंसे सिपाहियोंके मन्मेलो पोड़ा पहुंचती थी, उन कायदोंको तोड़ सन्तोषजनक कायदे बनाये। यह भी देखा, कि बन्दरके रूसी जङ्गी जहाज नितान्त हीनावस्थामें हैं; उनकी क्षतिका जो वृत्तान्त प्रकाशित हुआ था, उसकी अपेक्षा अधिक क्षति-ग्रस्त हुए हैं; शीघ्र उनकी मरम्मतकी व्यवस्था की गई। मेकराफको आये अभी तीन दिन बीते थे; इसी अवसरमें आरथर-बन्दरके रूसी बेड़ेमें एक तरहकी सजीवता दिखाई देने लगी। ६वीं मार्चकी अर्द्धनिशाको जापानी डिष्ट्रायेर-नावोंके दो बेड़े आरथर-बन्दरके मुहानेके सामने पहुंचे और रात्रिके घोर अन्धकारमें मुहानेके सामने माइन पानीमें डुबाने लगे। इसका मतलब यह था, कि रूसी जङ्गी जहाज जब बन्दरसे बाहर निकलें, तब इन माइनोंसे टकरा डूब जायें। अर्द्ध निशासे प्रातःकालतक दोनों बेड़ोंने निर्विघ्न अपना काम किया। प्रातःकालके प्रकाशमें बन्दरके किलेके रूसी सिपाहियोंने बेड़ोंको देखा; बड़ा शोर हुआ। सबसे पहले रूसी यदि बेड़ेको

देखते, तो सिर्फ अपनी किलेकी तोपोंसे नावोंपर गोले मारते किन्तु मेकराफके नियोगसे रूसी बेड़े में जान आ गई थी । मेकराफने उसी समय अपनी छः डिस्ट्रायेर-नावोंको अरथर-बन्दरसे निकल जापानी डिस्ट्रायेर-नावोंसे मुकाबला करनेकी आज्ञा दी। युद्धारम्भके उपरान्तसे अबतक अरथर-बन्दरमें रूसके नौ-सैन्यने ऐसी कार-रवाई की नहीं थी। सवेरे कोई साढ़े चार बजे कपतान मेटू-सविचकी अधीनतामें इन रूसी डिस्ट्रायेर-नावोंका बेड़ा अरथर-बन्दरसे निकल बन्दरके मुहानेसे पश्चिम पहुंचा । यहां जापानी कपतान शोजीरो आशाईकी अधीनतामें जापानकी तीन डिस्ट्रा-येर नावें,—असाशिमो, कुसुमी और अकत्सुकी इधरउधर घूम फिरकर समुद्रमें मारन हुवा रही थीं। जापानकी तीन डिस्ट्रा-येर नावें थीं और रूसकी छः—एककी दूना दो। ऐसी अवस्थामें जापानी डिस्ट्रायेर-नावें यदि समर-विमुख हो हट जातीं, तो कोई उन्हें बदनाम कर नहीं सकता था। किन्तु जापानियोंने रणक्षेत्रमें पीठ दिखाना मानो सीखा ही नहीं है। जापानकी डिस्ट्रायेर-नाव आशागिरि और इयातसीका अद्भुत कर्म पाठक भूले न होंगे; जिस मन्त्रसे पूर्वोक्त दोनो नावोंके कपतान दीक्षित थे; उसी मन्त्रसे इन तीनो नावोंके कपतान भी। कपतान आशाईने जैसे ही रूसी डिस्ट्रायेर-नावोंको अपने सामने देखा, वैसे ही उनपर अपनी नावोंको आक्रमण करनेकी आज्ञा दी। नौ-युद्धके इतिहासमें अपने ढङ्गकी यह एक नई बात हुई। तीन जापानी डिस्ट्रायेर-नावें सिर्फ अपने युद्धकौशल और साहसिकतापर निर्भर हो छः [illegible]ी डिस्ट्रायेर नावोंसे भिड़ गईं। दोनो पक्षकी नावोंके बीच

घोर युद्ध आरम्भ हुआ। युद्धकी आज्ञा पाते ही जापानी नावें झपटकर रूसी नावोंके बहुत पास पहुंच गई, और बड़ी तेजीके साथ रूसी नावोंके सामने इधर-उधर दौड़ने और रूसी नावोंपर गोलोंकी दृष्टि करने लगीं। रूसियोंने समझा था, कि जाप नी अपनी कमजोरी देख युद्धस्थलसे भागेंगे; किन्तु इसके बदले जब रूसियोंने जापानियोंको एकाएक सम्मुख प्रहार करते देखा, तब रूसी घबरा गये। वह भी अपनी तोपोंसे गोले चलाने लगे सही; किन्तु घबराहट और नालायकीकी वजह उनके गोले प्रायः निशाना खता करते थे। उधर जापानी गोले प्रायः ही अपने निशानेपर बैठते थे। अगणित तोपोंके गर्ज्जनसे दिशायें परिपूर्ण हुईं। उस अन्धकारमयी रजनीमें सुगभीर सागरवक्षपर परस्पर आग्नेय-अस्त्रसे युद्ध करते यह दोनो बेड़े बड़े ही भयङ्कर जान पड़ते थे। कुछ ही देरके युद्धमें रूसकी एक डिष्ट्रायेर-नावका एञ्जिन गोलेकी चोटासे चकना चूर हो गया; एञ्जिनकी आगने समूची नावमें आग लगा दी; दृश्य और भी भयङ्कर हुआ। इसके उपरान्त ही रूसी नावें पीछे हटने और जापानी नावें आगे बढ़ने लगीं। और एक रूसी नावका एञ्जिन टूटा। दो रूसी नावें अपने बेड़ेसे पृथक् हो बन्दरकी ओर भागीं। शेष चार नावें भी ज्यादा देरतक ठहर न सकीं; अन्तमें उनके भी आसन हिले और वह भी भागकर आर्थर-बन्दरकी किलाबन्दीके नीचे पहुंच गईं। इस-तरह तीन जापानी डिष्ट्रायेर नावोंने छः रूसी डिष्ट्रायेर-नावोंको पराजित करनेका अपूर्व्व काम सम्पन्न किया। जिस समय रूसी नावें भागीं, उस समय जापानी नावोंके कुल सिपाहियोंने सम-

स्वरसे हर्षध्वनि की ; सागर-सलिलपर क्रीड़ा करनेवाली वायु यह हर्षध्वनि दूर दूरतक ले गई।

पहले ही लिखा जा चुका है, कि जापानी डिस्ट्रायेर नावोंके दो बेड़े आरथर-बन्दरके मुहानेके सामने समुद्रमें माइन लगाने आये थे। जिस समय जापानी नावोंका एक बेड़ा रूसी नावोंसे लड़ रहा था, उस समय दूसरा जापानी बेड़ा बड़ी ही बेपरवाईके साथ अपना माइन लगानेका काम कर रहा था। दिन कोई सात बजे यह दूसरा बेड़ा माइन लगानेका काम समाप्तकर आरथर-बन्दरके पाससे खुले समुद्रकी ओर चला ; ऐसे समय उसे दो रूसी डिस्ट्रायेर-नावें खुले समुद्रसे आरथर-बन्दरकी ओर आती दिखाई दीं। अबकी पासा पलट गया था। इससे पहलेके युद्धमें रूसी नावें दूनी थीं ; अब जापानी नावें दूनी थीं। रूसकी दो नावें थीं और जापानकी चार। दोनों रूसी नावें जापानी नावोंको देखते ही आरथर-बन्दरकी ओर भागीं। किन्तु जापानी नावोंने यह सुअवसर हाथसे जाने नहीं दिया ; वह बीच हीमें रूसी नावोंके पास पहुंच गईं। घोर युद्ध आरम्भ हुआ। जापानी डिस्ट्रायेर-नाव साजानामी रूसी डिस्ट्रायेर-नाव स्टिरेगचीसे सट गई। जैसे ही दोनों नावें आपसमें मिलीं, वैसे ही एक जापानी सिपाही तलवार मियानसे बाहरकर अपनी नावसे रूसी नावपर कूद पड़ा। उस समय रूसी नावका प्रधान अफसर अपनी कोठरीसे बाहर निकल रहा था। जापानी सिपाहीको देख रूसी अफसरने अपनी तलवारके कब्जेपर हाथ रखा ; ऐसे समय जापानी सिपाहीकी तलवार चल गई। रूसी अफसरका सिर उड़ गया ; उसकी बेसिरकी लाश जापानी

सिपाहीको एक ही ठोकरसे सागर-गर्भमें जा पड़ी। रूसी प्रधान अफसरके मरनेके बाद रूसी लफटण्टने जहाजका अधिनायकत्व ग्रहण किया; किन्तु शीघ्र ही एक जापानी गोलेकी चोटसे उसके दोनों पैर उड़ गये। देखते देखते कितने ही जापानी सिपाही रूसी नावमें कूद पड़े। नावपर रूसियों और जापानियोंके बीच अल्पकालके लिये जमकर तलवार चली। नावका तख़्ता रक्तसे रङ्गीन हुआ। रूसके तीस सिपाही मारे गये; बहुतेरे सिपाही क़ैदके अपमानसे बचनेके लिये समुद्रमें कूद गये। इन रूसियोंको जापानियोंने बचा लेना चाहा; किन्तु बन्दरके क़िलेकी तोपोंके बरसते हुए गोलोंकी वजहसे जापानी सफलमनोरथ न हुए। जिस फुरतीसे यह युद्ध आरम्भ हुआ; उसी फुरतीसे समाप्त भी हुआ। रूसकी एक नाव बहुत कुछ टूटफूटकर किसी तरह निकल भागी; दूसरी नाव स्टेरेगोची जापानियोंके हाथ लगी। जापानी इसे अपनी नावके पीछे बांध खुले समुद्रकी ओर चले। स्टेरेगोची गोलोंकी चोटसे बहुत टूट गई थी, उसमें शीघ्र शीघ्र पानी भर रहा था। कुछ देर बाद राहमें स्टेरेगोची डूब गई; दो रूसी सिपाहियोंने गिरफतारीके अपमानसे बचनेके लिये इस नावकी एक कोठरीमें घुस भीतरसे द्वार बन्द कर लिया था; नावके साथ साथ वह दोनों भी डूब गये। इस दिनके इन दोनों युद्धमें जापानकी देखो कोई क्षति नहीं हुई; चार दिनोंमें उनकी नावोंकी मरम्मत हो गई; वह फिर लड़ने लायक हो गईं। इसी जगह एक बात और सुन लेना चाहिये। रूसके नौ-सेनापति मेकाराफने जब देखा, कि दो रूसी डिस्ट्रायेर नावें चार जापानी नावोंके बीच घिर गई हैं, तब मेकाराफ

छोटे जङ्गी जहाज नाविकपर सवार हो और एक दूसरा छोटा जङ्गी जहाज बयान अपने साथ ले अपनी दोनों नावोंकी रक्षाके लिये अरथर-बन्दरसे बाहर निकले। किन्तु जापानी छोटे जङ्गी जहाज अपनी डिष्ट्रायेर-नावोंको ताक रहे थे। जैसे ही रूसी छोटे जङ्गी जहाज अपनी नावोंकी ओर बढ़े, वैसे ही जापानी छोटे जङ्गी जहाज भी अपनी नावोंकी रक्षा करनेके लिये अग्रसर हुए। जापानी छोटे जङ्गी जहाजोंको देखते ही मेकारोफ अपने जहाजोंके साथ वापस गये; उनके जहाजोंने एक भी गोला न चलाया। इस दिन इतना ही हुआ।

दूसरे दिन १०वीं मार्चको प्रातःकाल कोई आठ बजे जापानी जङ्गी जहाजोंका समूचा बेड़ा अरथर-बन्दरके सामने प्रकट हुआ। आगे आगे तारपेडो और डिष्ट्रायेर-नावें थीं, उनके पीछे छोटे जङ्गी जहाज थे और उनके भी पीछे बड़े जङ्गी जहाज,—जलमें पैरते हुए विशाल लौह-दुर्ग। अरथर-बन्दरके समीप पहुंच यह बेड़ा दो भागोंमें विभक्त हुआ। बेड़ेका एक भाग यानी छोटे जङ्गी जहाज अरथर-बन्दरके ठीक सामने—बन्दरके किलेकी तोपोंकी मारसे बाहर खड़े हुए। बेड़ेका दूसरा भाग यानी बड़े जङ्गी जहाज अरथर-बन्दरकी बगलमें लियाओटिशान प्रायद्वीपके पास पहुंचे। जापानी जहाजके दोनों भाग रूसी गोलोंसे सुरक्षित थे। छोटे जङ्गी जहाजोंतक गोले पहुंचते ही नहीं थे; बड़े जङ्गी जहाज उधर खड़े थे, जिधर रूसका कोई किला या कोई बड़ी तोप नहीं थी। इसप्रकार दो भागोंमें दो जगह प्रतिष्ठित हो चुकने-

पर दिन कोई दश बजे लियावटिशानकी ओरका भाग यानी जापानी जङ्गी जहाजोंने अपनी बड़ी बड़ी तोपोंसे अरथर-बन्दरपर गोला-वृष्टि आरम्भ की। जिस ढङ्गसे इन जहाजोंने गोलावृष्टि आरम्भ की, अङ्गरेजोंमें उसे high angle fire या उच्च-कोण फेर कहते हैं। इसका क्रम इसतरह है,—तोपोंका मुंह किसी कदर आकाशकी ओर उठा गोला चलाया जाता है। यह गोला तोपके मुंहसे निकल बहुत ऊपर जा लक्ष्यस्थलमें गिरता है; गोलेकी गति धन्वाकार होती है। इसतरहकी गोलन्दाजीसे पर्व्वतकी एक ओरकी तोपें पर्व्वतकी दूसरी ओर गोले बरसाती हैं; पर्व्वतके माथेसे तोपोंका गोला निकल जाता है; पर्व्वतकी ऊंचाई गोलोंकी गति रोक नहीं सकती। जापानी जङ्गी जहाज जिस जगह खड़े थे, उसके सामने ही अरथर-बन्दरकी एक ओरकी पर्व्वतमाला थी; किन्तु जापानी गोले यह पर्व्वतमाला पारकर अनायास ही अरथर-बन्दरमें गिरने लगे। जापानी तोपें जो गोले बरसाने लगीं, वह छोटे नहीं थे। हरेक गोला दश मन पचीस सेरका था; फटनेवाली धातुसे बना था; जहां गिरता था, वहीं फटकर हजारों टुकड़ोंमें बंट जाता था। हरेक टुकड़ा अनेक मनुष्योंके प्राण ले सकता था। जापानी जङ्गी जहाज अपने चलाये गोलोंका फलाफल देख नहीं सकते थे; यह देखनेके लिये ही जापानी छोटे जङ्गी जहाज अरथर-बन्दरके सामने खड़े थे। छोटे जङ्गी जहाज जापानी गोलोंकी मार देखते और उसके फला-फलकी सूचना बेतारके तार द्वारा अपने जङ्गी जहा-जोंको देते थे। यह भी बताते थे कि अमुक ढङ्गसे

गोला चलानेसे अधिक सुफलकी सम्भावना है। जापानी जङ्गी जहाज औसत हिसाबसे एक मिनटमें एक गोला आरथर-बन्दरकी ओर चलाते थे; कोई तीन घण्टेमें छः सौ गोले चले। इनमें एक सौ दश गोले नगरमें गिरे और बाकी बन्दर और किलेमें।

इस भयङ्कर गोला-वृष्टिके फलसे आरथर-बन्दरमें बड़ी खल-बली पड़ी और रूसका बहुत नुकसान हुआ। नुकसानका प्रकृत विवरण प्रकाशित करना कठिन है। कारण, रूसने उसे प्रकाशित नहीं किया और जापानी अच्छी तरह देख नहीं सके। उन्होंने सिर्फ यह देखा, कि अधिकांश गोले बन्दरस्थ नगरमें गिरे और थोड़े से इधर उधर। फिर भी; एक तीसरे पक्षने इस गोला-वृष्टिका फलाफल बहुत कुछ प्रकाशित कर दिया है। जिस दिन यह गोला-वृष्टि हुई; उस दिन आरथर-बन्दरमें नारवेके तीन जहाज मौजूद थे। १३वीं मार्चको यह तीनों जहाज आरथर-बन्दर परित्यागकर शङ्घाई पहुंचे। शङ्घाईमें विलायती अखबार 'डेली एक्सप्रेस'के प्रतिनिधिने पूर्वोक्त तीनों जहाजोंके कप्तानोंसे भेंटकर गोला-वृष्टिका जो समाचार प्राप्त किया; उसका निचोड़ यह है,—"नारवेका एक जहाज रूसी जङ्गी जहाज रेटविजानकी बगलमें लङ्गर डाले खड़ा था। इस नारवेवाले जहाजके कप्तानने अपनी आंखों देखा, कि जापानके एक गोलेने रेटविजान जहाजके डेकपर फट उन्तीस रूसी अफसरोंको टुकड़े टुकड़े कर दिये। इस जहाजसे कुछ दूर फासिलेपर रूसका एक छोटा जङ्गी जहाज खड़ा था। एक जापानी गोला आकर इस जहाजको बगलमें फटा। इसके

तीसरे पहर कोई दो बजे समूचे जापानी बड़े ने लङ्गर उठाया और खुले समुद्रमें निकल गया।

युद्ध आरम्भ हुए कोई छः सप्ताह बीते। इस अवसरमें जलमें कई लड़ाइयां हुईं; किन्तु स्थलमें एक भी नहीं। युद्धारम्भके समय सिर्फ इतना मालूम हुआ था, कि कोरिया-राजधानी सिउ-लके चेमलफो-बन्दरमें जापानी फौजने जहाजसे उतर चेम-लफो और सिउलपर अधिकार कर लिया। इसके उपरान्त

रूसको प्रधान सेनापति।



कुरपाटकिन।

अबतक जापानी फौजकी गतिविधिका वैसा कोई समाचार नहीं मिला। समाचार न मिलनेका प्रधान कारण यह था, कि जापान

अपनी स्थल-सेनाको बात छिपाना चाहता था। जापान-सरकारने आज्ञा दे दी थी, कि किसी समाचारपत्रका कोई भी संवाददाता फ़ौजोंकी काररवाईका हाल जानने न पाये। युरोपके कितने ही समाचारपत्रके संवाददाताओंने कितनी ही चेष्टायें कर जापानी फ़ौजोंका हाल जाननेकी चेष्टा की; किन्तु उसका कोई फल नहीं हुआ। जापान, द्वीपपुञ्ज है और वह जलपर अपना प्रभुत्व पूर्णरूपसे विस्तार कर चुका था; इसलिये संवाददाताओंको समाचार पानेमें और भी असुविधा हुई। युरोपके कितने ही समाचारपत्र जापानकी इस काररवाईसे नाराज हुए; कितने ही उसकी इस निषेधाज्ञाकी मुहसतुबसे निन्दा करने लगे; किन्तु निन्दा या स्तुति—आदर या तिरस्कार—किसीसे भी जापान सरकार लक्ष्यभ्रष्ट नहीं हुई; वह उसी धीर-गम्भीर-भावसे अपने कुल काम करती रही।

कितने ही लोगोंने कहा,—"रूस जल-शक्ति नहीं है। उसके सिपाही जङ्गी जहाजोंसे लड़ना क्या जानें? ऐसी अवस्थामें जल-शक्ति जापानने जल-युद्धमें यदि रूसको परास्त कर दिया, तो क्या बड़ा काम किया? रूस स्थल-शक्ति है,—स्थल हीमें उसका रण-पाण्डित्य दिखाई देगा। स्थल-युद्धमें जापानको रूससे नीचा देखना ही पड़ेगा। जापानी पैदल फ़ौज यदि रूसी पैदल फ़ौजसे सामना करे तो कर सकती है; किन्तु जापानी सिपाही रूसके कज्जाक-रिसालेसे किसीतरह सामना कर नहीं सकते। अपनी सवाई खुल जानेके भय हीसे जापान अबतक स्थल-युद्धमें प्रवृत्त हुआ नहीं है।" किसी किसीने मानो इन लोगोंके प्रत्युत्तरमें यह भी कहा,—"जल-युद्धमें प्रवृत्त ही जाना

जितना आसान है; स्थल-युद्धमें प्रवृत्त होना उतना आसान नहीं। स्थल युद्ध आरम्भ करनेसे पहले,—रसद-बारबरदारी, अस्पताल, पड़ाव, रेल, तार इत्यादि इत्यादि कितने ही सामानोंका प्रयोजन होता है। लड़नेवाले सिपाहियोंके लिये तलवार-बन्दूक आदि अस्त्रशस्त्रसे लेकर सूई-दियासलाई आदि प्रयोजनीय छोटी छोटी चीजोंतक संग्रह कर देना पड़ता है। समझदार शक्ति यह सब सामान जब तय्यार कर चुकती है, तभी अपनी फौज युद्धस्थलकी ओर भेजती है। जापान अबतक यही सब सामान संग्रह कर रहा है,—उन्हें यथाक्रम अपनी फौजोंमें बांट रहा है। जैसे ही यह काम समाप्त हो जायेगा, वैसे ही जापानी फौज युद्धस्थलमें पहुंच जायेगी।

अन्तमें पूर्वोक्त लोगोंकी बात ही सत्य प्रमाणित हुई। जापान घोर स्थल-युद्धमें प्रवृत्त होनेके लिये बहुत बड़ा सामान कर रहा था। सामान करने हीमें इतनी देर हुई। जैसे ही सामान पूरा हुआ, वैसे ही बड़ी फुरतीके साथ जापानी फौजें रणस्थलकी ओर भेजी जाने लगीं। जापान तीन स्थानोंमें अपनी फौज उतार स्थल-युद्ध आरम्भकर सकता था,—एक लियाउटुङ्ग प्रायद्वीपमें, दूसरे व्लाडीवष्टकके समीप और तीसरे कोरियामें। इनमें शेषोक्त स्थान ही जापानके लिये अधिकतर उपयोगी था। कारण, इस जगह फौज उतार आगे बढ़नेसे आरथर-बन्दरसे व्लाडीवष्टकतक फैले रूस-राज्यके मध्य भागपर आक्रमण किया जा सकता था। जापानने भी पहलेपहल फौज उतारनेके लिये कोरिया हीको पसन्द किया। कोरियाके मानचित्रमें यालू नदीसे कुछ नीचे कोरियाप्रायद्वीप बहुत चौड़ा दिखाई

देता है। इस सङ्कीर्ण स्थानकी एक ओर जापान-सागर है और दूसरी ओर पीत-सागर। इस सङ्कीर्ण स्थानमें जापान-सागरकी ओर गेनसान या वेनसान-बन्दर है और पीत-सागरकी ओर चिन्नाम्पो-बन्दर। इन दोनों बन्दरोंके मध्यभागवाले भूखण्डतक रूसका आधिपत्य-विस्तार हुआ नहीं था; इससे कोई चालीस मील उत्तर आनजू स्थानमें रूसी फौजकी सबसे आगेकी चौकी थी।* जापानने पूर्वोक्त दोनों बन्दरोंहीको अपनी फौज उतारनेका उपयुक्त स्थान स्थिर किया। बारबरदारीके जहाज इन्हीं दोनों बन्दरोंमें पहुंच सहस्र सहस्र जापानी सिपाही उतारने लगे। रूस-अधिकृत आनजू स्थान चिन्नाम्पो-बन्दरके निकटवर्ती पिङ्गयाङ्गके समीप था; पिङ्गयाङ्ग या आनजूहीमें प्रथम स्थल-युद्ध होनेकी सम्भावना थी। इस लिये जो जापानी सिपाही गेनसान बन्दरमें उतरते थे, वह यथासम्भव शीघ्र पिङ्गयाङ्ग की ओर भेज दिये जाते थे। चिन्नाम्पो-बन्दर पिङ्गयाङ्ग जापानी फौजका केन्द्रस्थल बना। चारों ओरसे फौजें आकर वहां एकत्र होने लगीं। स्थल-युद्धकी घटा सघन हुई।

चतुर्थ परिच्छेद।



प्रथम स्थल-युद्ध।

यालू नदी,—कोरियासे मञ्चूरियाको जुदा करती है। इसका एक किनारा जिसतरह दक्षिण-मञ्चूरियाकी सीमा है; दूसरा किनारा उसीतरह उत्तर-पश्चिम कोरियाकी सीमा। इस नदीके कोरियावाले किनारेपर वीजू नामक एक नगर है। रूस-जापानयुद्ध आरम्भ होनेसे पहले रूसी फौजोंने यालू नदी पारकर इसी वीजू नगरपर अधिकार कर लिया था। रूसने जगत्‌से शिकायत की थी, कि जापानने बिना सूचना दिये युद्धारम्भ किया; किन्तु इससे भी पहले यालू पारकर रूस हीने जापानको मानो घोर युद्धके लिये ललकारा था। आरम्भमें रूसके थोड़े से सिपाहियोंने यालू नदी पार किया था; इसके उपरान्त क्रम क्रमसे रूसके और सिपाही वीजू पहुंचे; १५ वीं फरवरीतक उनकी संख्या बढ़कर चार हजार पांच सौ हो गई। इनमें तीन हजार सिपाही वीजूमें रहे और डेढ़ हजार सिपाही आगे बढ़े। आगे बढ़नेवालोंमें एक हजार सिपाही वीजूसे कोई एक सौ आठ मीलके फासिलेपर सोग्रान नगरपर अधिकारकर बैठ गये; बाकी पांच सौ सिपाही और भी आगे बढ़े और पिङ्गयाङ्गसे चालीस मील इधर पूर्व्वोक्त आनजू स्थानपर कबजा कर लिया। रूसी सिपाही आनजूपर सिर्फ अधिकार करके ही निश्चिन्त नहीं रहे; उन्होंने उसके आस पास मोरचे बना और तोपें चढ़ा

आनजूको इस तरहसे सुरक्षित और सुदृढ़ बना लेनेकी चेष्टा की।

जिस समय यह रूसी सिपाही आनजू पहुंचे, उस समय पिङ्गयाङ्ग नगरपर जापानियोंका अधिकार नहीं था। रूसी चाहते, तो पिङ्गयाङ्गपर बड़ी आसानीके साथ कबजा कर लेते। किन्तु न जाने क्या सोचकर—शायद पिङ्गयाङ्ग-रक्षाकी कठिनताका अनुमानकर—रूसियोंने उसे ज्योंका त्यों रहने दिया।

जिस जगह जापानी फौजें कोरियामें उतरीं उस चिन्नाम्पो-बन्दरसे पिङ्गयाङ्ग नगर कोई पचीस मील दूर है। जापानी फौजोंने एक ही दिनमें चिन्नाम्पो-बन्दरसे चल पिङ्गयाङ्ग नगरपर अधिकार कर लिया। देखते देखते कोरियामें जापान-सेनापति कुरोकीके अधीन पहली जापानी फौज पहुंच गई। विलायतके टाइमसके संवाददाताने इस फौजका हिसाब इसतरह लिखा है,—२री और १२वीं गार्ड-पलटन, रक्षित सिपाहियोंके चार ब्रगेड और दो डिपो-ब्रगेड। कुरोकीके अधिनायकत्वमें इसे पहली फौजमें कोई अस्सी हजार सिपाही थे। और कोई चालीस हजार सिपाही मिलाये गये; किन्तु उस समय नहीं, कुछ दिनों बाद। उस समयके इन कोई अस्सी हजार सिपाहियोंमें तीन हजार सिपाही कोरिया-राजधानी सिउलकी रक्षामें नियुक्त किये गये थे, कई हजार सिपाही बहुतेरी जगहोंके पहरेपर बैठाये गये और कोई चालीस हजार सिपाही पिङ्गयाङ्गसे आगे बढ़कर युद्ध करनेके लिये तय्यार किये गये। रूसियोंसे

जैसे ही जापानकी इस जबरदस्त तय्यारीका समाचार मिला, वैसे ही वह पिङ्गयाङ्गका पड़ोस आनजू छोड़ पीछे हट गये ; अपनी किलाबन्दीके सामान और बड़ी बड़ी तोपें अपने साथ वापस ले गये।

पिङ्गयाङ्गमें जापानी फौज जैसे ही तय्यार हुई, वैसे ही वह आगे बढ़ी। रूसने जिस आनजू बस्तीको खाली किया था, जापानने सबसे पहले उसीपर अधिकार किया। इतना ही नहीं, —इससे आगे पेङ्गयिङ्ग, पाकचेन प्रभृति स्थानोंमें भी जापानी ध्वजा फहराने लगी। पिङ्गयाङ्गसे कोई पैंतालीस मील आगेतक जापानी फौजें जमकर बैठ गईं और जिस जगह बैठीं, उनकी चारो ओर उन्होंने जबरदस्त किलाबन्दी कर ली। जो किलाबन्दी छोरपर थी, उसके गिरदावरीके सवार रूसाधिकृत वीजू नगरसे कोई चालीस मील इधरतक गश्त लगाने लगे। उधरसे रूसी सवार गश्त लगाते निकलते और इधरसे जापानी सवार ; मार्चके अन्तिम सप्ताहमें इन दोनो गश्ती सिपाहियोंसे बीस दो दो हाथ हो जाते। कभी कभी रूसी गश्ती सवार जापानी चौकियोंपर और जापानी सवार रूसी चौकियोंपर जा पड़ते ; छकाछोंकी लड़ाई हो जाती।

इसतरहकी पहली छलकी लड़ाई या छेड़छाड़ २८वीं मार्चको हुई। रूस-सेनापति मिश्चेङ्कोने इस छेड़छाड़का हाल प्रकाश किया है ; इसलिये इसमें बहुत कुछ अत्युक्तिकी सम्भावना है। उन्होंने जो कुछ लिखा है, उसका सारमर्म यह है,—कसाकोंका एक रिसाला गिरदावरीके लिये निकला। रिसालेमें छः सौसे एक कुछ अधिक सवार थे। रिसाला यह

देखने निकला था, कि जापानी फौजें आनजूसे आगेकी नदी छेड़छेड़ पारकर इस किनारे पहुंची हैं या नहीं। कज़ाक इन स्थानोंको जानते थे; कारण, अबसे कुछ दिनों पहले इन स्थानोंके अधिकारी थे। जापानी गिरदावरीके सवारोंकी सिपाह बचा वही ही येचीकी राहसे आनजूसे कोई बारह मील उत्तर-पश्चिम पाकचेन स्थानके समीप पहुंचे। यहां जापानी फौजकी रक्षककी एक चौकी थी। चौकीमें कोई तीन सवार थे। अपने सामने शत शत कज़ाकोंको देख जापानी सवारोंने अपनी दूरकी फौजको साहाय्य भेजनेके लिये संकेत किया। इसके उपरान्त जैसे ही कज़ाक चौकीकी ओर बढ़े, वैसे ही जापानी सवारोंकी गोलियां चलीं। कज़ाकोंने भी गोलियां चलाईं। एक जापानी अफसर, एक सिपाही और एक घोड़ा मारा गया। कज़ाक चौकीसे कोई चार सौ कदमपर, पाहाड़ीपर ठहर गोली बरसाते थे। ऐसे समय कज़ाकोंको एक जापानी पलटन चौकीकी ओर दौड़ी आती दिखाई दी। इसे देख कज़ाक वापस आये। उनमें किसीके एक आघात नहीं आई। रूस-सेनापतिने प्रथम छेड़छाड़ या दल-मुठभेड़ ऐसा ही समाचार दिया है। इससे जान पड़ता है, कि प्रथम दल-युद्धमें रूसी जापानियों हीके रक्षासे क्षित हुई थी।

जापानी आगे बढ़ रहे थे और रूसी पीछे हट रहे थे। रूसी कहते थे, कि हम हार मानकर पीछे नहीं हटते; हम पीछे हटनेमें हमारी एक गूढ़ अभिसन्धि निहित है। किन्तु उपस्थित ह थी, कि रूसियोंकी वह गूढ़ अभिसन्धि किस कठिनोंके

और कोई समझ नहीं सकता था। विशेषतः जिन कोरियावासियोंके देशमें घुस रूसियोंने बड़ा उत्पात मचाया था; कोरियावासियोंकी बस्तियोंपर अधिकार कर लिया था; जिनकी चीजें खरीदनेके बदले रूसी प्रायः लूट लिया करते थे; वही कोहि-स दूर्बु,द्धि कोरियावासी इस गूढ़ अभिसन्धिको और भी समझ नहीं सकते थे। कोरियाके उस अञ्चलमें घर घर यह बात प्रसिद्ध हो गई थी; कि जापानियोंको जबरदस्त फौज धीरे धीरे आ रही है और रूसी उसके सामनेसे भाग रहे हैं। इस समाचारसे सदाके अकर्म्मण्य कोरियावासी रूसियोंको घृणादृष्टिसे देखने लगे और यथाशक्य रूसियोंको व्यतिव्यस्त करनेकी चेष्टा किया करते थे। रूसी फौजोंके पास उतनी रसद नहीं थी; कोरियावासियोंसे खाद्य-द्रव्य लेकर ही रूसी अपनी और अपने पशुओंकी उदरपूर्त्ति किया करते थे। पूर्व्वोक्त समाचार फैलनेके बादसे कोरियावासियोंसे खाद्य-द्रव्य संग्रह करना कठिन हो गया था। रूसी सिपाहियोंको खाद्य-द्रव्यके अभावसे अवश्यः कष्ट होने लगे।

यालू नदीके पार कोरियामें जो रूसी सिपाही थे, उनके प्रधान-सेनापतिका नाम था,—मिष्टचेनको। मिष्टचेनकोकी आज्ञा होते रूसी आनन्दसे पीछे खिसकते खिसकते यालू किनारे तक पहुंच गये थे। कोई कोई अनुमान करते हैं, कि इसमें मिष्टचनकोका दोष नहीं था; रूस-सरकारकी आज्ञा हो ऐसी थी। रूस-सरकारने आज्ञा दे दी थी, कि जबतक प्रधान सेनापति कुरोपाटकिन युद्धस्थलमें पहुंच न जायें, तब-
* सेनापति की इच्छानुसार युद्धमें प्रवृत्त न हो। इस

अफवाहके सत्य होनेका कोई प्रमाण नहीं है। फिर भी; यह बात खटकती है, कि १५वीं मार्चको क्रूरोपाटकिन मञ्चूरिया पहुंचे और दो दिन बाद १७वीं मार्चको रूस-जापानके बीच प्रकृत प्रस्तावसे छोटासा प्रथम स्थल-युद्ध हुआ।

दो दिन पहले होसे रूसी रिसाला जापानियोंको अपने स्थानसे आगे बढ़ युद्धमें प्रवृत्त होनेके लिये उभार रहा था; किन्तु जापानी शान्तभावसे सिर्फ अपने स्थानकी रक्षा करते और रूसियोंके प्रलोभनमें पड़ते नहीं थे। उस समय पिङ्गया-ङ्से य्याशान नामक स्थानतक जापानियोंका कब्ज़ा हो गया था। जापानके काशान और रूसियोंके वीजू स्थानके बीच कहनेको बड़ा फ़ासिला था; पर दोनोंके बीच यदि एक सीधी लकीर खींची जाये, तो इसका फ़ासिला कोई चालीस मीलका होता है। राह पेंच खाकर गई है; इसलिये यह फ़ासिला अधिक जान पड़ता है। यह फ़ासिला और इसके बीचके खास खास मुख्य मुख्य स्थानोंके नाम यह हैं,—यालू किनारेके रूसाधिकार स्थान वीजूसे राह दक्षिण-पूर्व कोई १८ मील चोसन पहुंची है, वहांसे दक्षिण धन्वाकार हो २२ मील कोकशान; वहांसे कोई पन्द्रह मील चोंगजू। इस चोंगजू और रूसके पूर्वाधिकृत स्थान आनजूके बीच काशान स्थान है। इसी काशा-नमें जापानकी अग्रगामिनी सेना थी, जो रूसकी चेष्टासे भी अपने स्थानसे निकाल रूसके छोड़े आनजू स्थानमें कब्ज़ा करनेके लिये नहीं बढ़ी।

रूस-सेनापति मिश्चेन्कोको पहले होसे खबर थी, कि जापानी अभी आनजूकी ओर नहीं बढ़े हैं तो: किन्तु वह इस

ही वह उसपर कब्ज़ा करना चाहते हैं। २७वीं मार्चको सेनापतिको मालूम हुआ, कि जापानी रिसालेका एक टुकड़ा चाङ्गजू पर अधिकार करनेके लिये कूच करना ही चाहता है। मिष्टचेङ्कोको आज्ञा हुई, कि जापानियोंको चाङ्गजू पर अधिकार न करने दो। २८वीं मार्चको प्रातःकाल सेनापति मिष्टचेङ्को स्वयं पांच सौ कज्जाक सवारोंको साथ ले जापानियोंके चाङ्गजू-अधिकारमें बाधा उपस्थित करने चले। यह सब कज्जाक बड़ी ही कट्टर जातिके थे और अपनी समरनिपुणताके लिये प्रसिद्ध थे।

दिन कोई दश बजे रूस-सेनापतिके गिरदावरीके सवारोंने पत्नाट समाचार दिया, कि शत्रु सामने है। कहा,—"जापानी अभी अभी चाङ्गजू पहुंचे हैं; कोई दो सौ सवार हैं।" चाङ्गजू नगरके किनारे जापानी सवार खड़े थे; उन्होंने जैसे ही अपनी ओर कज्जाकोंका रिसाला आता देखा, वैसे ही बन्दूक दागना आरम्भ कर दिया। गोलियोंकी दृष्टिकी वजह वायुवेगसे दौड़ते हुए सवारोंके घोड़ोंकी गति एकाएक मन्द हुई। नगरके बाहरकी इमारतोंसे कोई छः सौ गज फासिलेपर एक टीला था। सौ दो सौ कज्जाक टीलेपर चढ़ गये और बाकी आड़ पकड़कर गोली बरसाते आगे बढ़नेकी चेष्टा करने लगे। रूस ही के कथनानुसार कोई पांच सौ कज्जाक थे और दो सौ जापानी; रूसी जापानियोंसे दूनेसे भी अधिक थे। इसपर भी जापानियोंने बहुत देरतक कज्जाकोंको रोका; अन्तमें उन्हें मैदान छोड़ नगरके मकानोंकी आड़ लेना पड़ी। दोनों ओरकी हानि समान थी। हरेक ओर कोई बीस आदमी हताहत [illegible] एक जापानी लफटण्ट मारा गया और एक जापमी

हुआ; उधर रूसके तीन अफसर जखमी हुए, जिनमें एकको इतना गहरा जखम आया था, कि वह अल्पकाल जीकर मर गया।

जापानी सवारोंके मकानोंकी आड़ पकड़नेके कुछ ही देर बाद जापानकी ओर राहमें गर्दका बादल उड़ा; इसके उपरान्त ही टापोंकी आवाजें सुनाई दीं; जापानी सवार आ रहे थे। देखते देखते सवारोंके दो दल हुए। एक नगरमें घुस मकानोंके पीछे अपने साथी सवारोंमें मिल गया; दूसरा नगरको बगलसे बढ़ कज्जाकोंपर गोली बरसाने लगा। दोनों ओरसे बाढ़पर बाढ़ पड़ने लगी और हरेक अपने प्रतिद्वंद्वीको परास्त करनेकी चालें चलने लगा। दोनों ओरके वीर वीरत्व प्रकाश करने लगे। रूसके लफटण्ट वासिलने तलवार खींची और शत्रुकी ओर झपट पड़े। जापानी कोई एक सौ गजके फासिलेपर थे; ऐसे समय एक गोलीने लफटण्टको धराशायी बना दिया। एक सरजण्ट उन्हें उठाने चला; राहमें जखमी हो गिरा; दूसरा सरजण्ट इसी चेष्टामें जानसे मारा गया। इसपर भी चेष्टा चली; दो कज्जाक एक साथ झपटे और जखमी लफटण्टको उठा लाये। जिस समय गोलियोंकी ओर दृष्टि हो रही थी, उस समय कितने ही कज्जाक सवार घूमकर हस्पिटल-फाटकसे नगर प्रवेश करने चले। हस्पिटल-फाटकपर जापानका ऐसा जबरदस्त पहरा नहीं था; सिर्फ एक सिपाही अकेला खड़ा था, जो कज्जाकोंका आना देख दरवाजेके एक [illegible] छिप गया। ऐसे ही कज्जाक उसके समीप आये, वैसे ही उसने कज्जाकोंके अफसरको गोली मारी। अफसर मारा गया।

लेफ्टनर कज्जाक भाग गये ; अकेले सिपाहीने उसके अनेक सवार भगाये। इतने सवारोंको भगानेमें जापानी सिपाहीको एक खराशतक न आई। इसके बाद की लड़ाईमें एक जख़म आया ; वह भी हलकासा।

थोड़ेसे जापानी सवारोंने दूने कज्जाकोंको रोक रखा ; उनकी लाख चेष्टा होनेपर भी उन्हें आगे बढ़ने न दिया। ऐसे समय चार जापानी कम्पनियां काग्रानकी राहसे चोङ्गजूकी ओर दौड़ी आती दिखाई दीं। इन्हें देखते ही कज्जाकोंके पैर उखड़े। रूस-सेनापति मिश्चेङ्कोंने टीलेकी आड़में घोड़े छोड़ पंक्ति बांध मैदानमें आगे बढ़ते हुए कज्जाकोंको लौट सवार होनेकी आज्ञा दी। मैदानसे पहले जख़मी हटाये गये ; इससे उपरान्त सवार। टीलेपर गोली चलाकर जापानियोंको रोकनेके लिये कोई ८०।९० कज्जाक बैठा दिये गये। अपनी पलटनोंको अपने पीछे और कज्जाकोंको भागते देख जापानी रिसालेने टीलेपरके कज्जाकोंपर आक्रमण किया। कज्जाकोंके रिसालेका बड़ा भाग रवाना हो चुका था ; टीलेके कज्जाक भी उनके पीछे पीछे भागे। जिस समय जापानी रिसाला टीलेपर पहुंचा, उस समय उसे दूर कज्जाकोंका रिसाला भागा जाता दिखाई दिया। कज्जाकोंको भगा जापानियोंने चाङ्गजूपर अधिकार किया। सहस्र सहस्र जापानी सिपाहियोंने समस्वर सम्मकण्ठसे जयध्वनि की—बेनजयो—बेनजयो ; सड़ो टोली ; पर्वतोंमें प्रतिध्वनि हुई।

चाङ्गजूपर अधिकार कर लेनेपर भी जापानियोंका आगे बढ़ना रुका नहीं गया। इन्फेंट्री गार्ड और दूसरे तथा पांचवें

शिविनमके कोई पैंतालीस हजार सिपाही धीरे धीरे आगे बढ़ते हो गये। जापानी फौजकी चाल बहुत धीमी थी। हुआ ही चाहे। कारण, एक तो जाड़ेके दिन थे; नदी-नाले जमे हुए थे; पर्व्वतकी चोटियां बरफकी सफेद टोपियां पहने हुई थीं। इस शीतप्रधान देशकी शीतमें पड़ बहुसंख्यक सिपाही और फौज तथा बारबरदारीके पशु नाना कष्ट भोग रहे थे; शीतजनित कष्टोंने उनकी चाल धीमी कर रखी थी। दूसरे जिस अञ्चलमें जापानी फौज आगे बढ़ रही थी, उस अञ्चलमें कोरियाके तङ्गाक-जातिके लुटेरोंने बगावत मचा रखी थी; रसद, चारा, ईंधन आदि दुष्प्राप्य हो गये थे और जगह जगह यानी तङ्गा-कियोंसे लुटने या मुकाबला होनेकी आशङ्का रहती थी। तङ्गाक-जातिने भविष्यवाणी या घोषणा प्रचार कर दिया, कि आगामी मई मासतक कोरियाके वर्त्तमान सम्राट्का शासनकाल समाप्त और तङ्गाकोंके शासनकालका प्रादुर्भाव होगा। तङ्गाक अपनी भविष्यवाणी आप पूरी करना चाहते थे; अपना शासन-काल उपस्थित करनेके लिये देशके उस अञ्चलमें घोर अशान्ति फैला रहे थे और इस अशान्तिसे जापानी फौजकी गतिविधिमें बड़ी बाधा डाल रहे थे।

जापानी फौजकी चाल धीमी होनेपर भी खूब दुरुस्त होती थी। विलायती अखबार 'एक्सप्रेस' के संवाददाताने जापानी फौजकी चालकी मजबूती अपनी आंखों देखकर लिखा था,—

ऐसी ही चालसे चलकर जापानी फौजने पहले बीस मील पश्चिम सेङ्गचेङ्ग बसतीपर कबजा किया इसके बाद चोलशान बसतीपर। दोनों बसतियोंमें रूसी फौजके रहनेकी सम्भावना की गई थी; किन्तु दोनों ही बसतियाँ खालीकर रूसी सिपाही वीजू चले गये थे। ४री अपरेलको चोलशानपर अधिकारकर जापानियोंने अनुमान किया, कि अब वीजू हीमें घोर युद्ध होगा।

पहले ही लिखा जा चुका है, कि चोलशानसे वीजू कोई अठारह मील या सिर्फ नौ कोस है। जापानी गिरदावरोंके सवार चोलशानसे धीरे धीरे वीजूकी ओर बढ़े। राहमें उन्हें कोई रूसी गिरदावरोंका सवार दिखाई दिया न कोई जङ्गी चौकी मिली। मामला क्या है? क्या रूसी वीजूसे भी चले गये? ४थी अपरेलको गिरदावरोंके सवारोंने वीजूके पास पहुंचकर देखा, कि उनका अनुमान सच्चा था,—रूसी वीजू खालीकर यालू नदीके उसपार चले गये थे। गिरदावरोंके सवारोंके पीछे ही जापानी रिसाला था; जो हर्षध्वनिसे दिशायें परिपूर्ण करता वीजू नगरमें घुस गया। वीजूपर जापानको 'सूर्य्योदय' पताका फर फर उड़ने लगी।

स्थूलतः देखिये, तो वीजू खालीकर रूसने अपना कोई बड़ा नुकसान नहीं किया। रूसी यालूके इसपार युद्धमें प्रवृत्त होना अनुचित समझ यालू नदी पारकर उसके दूसरे किनारेपर डटकर खड़े हो गये; सिर्फ एक नगर और पानीकी चादर शत्रुके हवाले की। किन्तु सूक्ष्मतः देखनेसे रूसकी यह कारवाई कुफलकी जड़ हुई। जगत्‌की दृष्टिमें—इतिहासकी

इसमें रूसने यालू क्या पार किया, मानो कोरियादेश खाली किया और ४थी अप्रैलको जापानियोंने वीजू प्रवेश क्या किया, मानो रूसको कोरियासे निकाल दिया। अबसे कोई दो ही महीने पहले जिस कोरियाकी सैकड़ों कोस भूमिपर अधिकारकर रूस वीरदर्पसे सिर ऊंचाकर खड़ा रहा था; एक ही छोटीसी लड़ाईके बाद उसी कोरिया देशसे रूस अपना रत्ती रत्ती अधिकार खोकर लज्जावनत हो गया। इतना होनेपर भी रूसकी ओरसे यही कहा जाता था, कि रूसकी यह बुद्धि और मनसे अगोचर युद्धानिरुद्ध फौजी चाल है; किन्तु जगत्‌ने यही देखा, कि आरम्भिक जल-युद्धमें रूसका वह हाल हुआ और आरम्भिक स्थलयुद्धमें यह।

युद्धारम्भ होनेके बाद यह पहलेपहल स्थलपर रूस और जापानकी फौजें एक दूसरेके सामने हुईं। यालू नदी बीचमें थी; उसके एक किनारे जापानकी फौज थी और दूसरे किनारे रूस-की। कितने ही लोग भारतकी पतितपावनी गङ्गा और कोरिया-मञ्चूरियाकी सीमा-रेखा यालू नदीको समान बताते हैं। किन्तु इन दोनोंके बीच कोई समता दिखाई नहीं देती। गङ्गाकी अपेक्षा यालू नदीकी चौड़ाई अधिक है और गहराई कम। यालू नदीकी चौड़ाई कहीं दो कोसकी है कहीं तीन कोसकी। गङ्गामें बहुत दूरतक बड़े बड़े जहाज आते हैं; किन्तु यालू नदीमें सिर्फ पचीस कोसतक। इसके बाद ही यालूकी धार इतनी प्रखर हो जाती है, कि जहाज तो जहाज; छोटी छोटी नावोंका चलाना भी कठिन हो जाता है। थोड़ी यालू नदीके बीच कितने ही टापू हैं। इनमें कुछ तो नदीमें बाढ़ आनेपर

या शीतकालके अन्तमें पिघली हुई बरफके जलमें डूब जाते हैं; कुछ बाढ़ आनेपर भी नहीं डूबते। जिस जगह रूस और जापानकी फौजें थीं, उसके बीचमें नदी-गर्भमें मञ्चूरियाकी ओर कई बहुत बड़े बड़े टापू थे। इन टापुओंपर रूसियोंका कब्जा था।

४थी अपरैलको जापानी रिसालेने यालूकिनारेके वीजूपर अधिकार किया। लोगोंने अनुमान किया था, कि अब शीघ्र ही जापानी फौजें नदी पारकर रूसी फौजोंपर आक्रमण करेंगी; किन्तु लोगोंका यह अनुमान व्यर्थ हुआ। असलमें जापानको इतनी शीघ्रताके साथ रूसपर चढ़ जानेकी वैसी कोई जरूरत नहीं थी; जिस कोरियाके लिये जापानने युद्ध आरम्भ किया था, वह कोरिया इस समय जापानके हाथमें था। शीघ्र चढ़ाई करनेकी किसीको यदि जरूरत ही थी, तो रूसको थी; क्योंकि रूस ही कोरियासे निकाला गया था। दूसरे उस समयतक जापान रूसी फौजोंको बाधा हटा नदी पार करनेके लिये पूर्णतया तय्यार नहीं था। सेनापति कुरोकीके अधीन जापानकी जो पहली फौज कोरियामें उतरी थी, वह उस समयतक चारो ओर बिखरी हुई थी। वीजूपर अधिकार करनेके बाद हीसे जापान अपनी समूची पहली फौज यालू किनारे जमा करने लगा था सही, किन्तु यह काम दो दिन चार दिन, या सप्ताह दो सप्ताहका नहीं था। सिवा इसके जापान यालू-किनारे सिर्फ फौज ही जमा करना नहीं चाहता था; इसीके साथ साथ रसद, बड़ी बड़ी तोपें और यावत् युद्धोपकरण भी ... चाहता था। यह सब काम करनेके साथ जापान

वैसे सुसम्पन्न कर सकता था? इसीलिये यालू नदी पार करनेमें उसे बहुत देर लगी।

इतने दिनोंसे जो रूस अपनी फौजोंको पीछे हटाने हीको अपनी गूढ़ फौजी चाल बतलाता था; अब वही रूस यालू नदीकिनारे डटकर खड़ा हो जापानसे सम्मुख समरमें प्रवृत्त होनेके लिये तय्यार हुआ। रूस-राजधानी सेण्टपिटर्सबर्गमें शोर हुआ, कि अब रूस अपनी गई हुई मर्य्यादाको पुनः-प्रतिष्ठित करना चाहता है; जगत्के लोग देखेंगे, कि रूसमें कैसी अपूर्व अलौकिक अचिन्तनीय युद्ध-शक्ति है। समग्र जगत्की दृष्टि यालू नदीकी ओर आकर्षित हुई। रूसके सुप्रसिद्ध सेनापति कुरोपाटकिन युद्धस्थलमें बैठे हुए थे। उनके परामर्शानुसार रूसी फौजें चलफिर रही थीं। कुरोपाटकिनके अधीन थोड़े सिपाही नहीं थे। स्वयं रूसने स्वीकार किया था, कि उस समय कोई ढाई लाख सिपाही कुरोपाटकिनकी आज्ञा पालन करनेके लिये मञ्चूरियामें मौजूद थे। कुरोपाटकिन बड़ी ही आसानीके साथ जापानियोंसे दूने रूसी सिपाही यालू-किनारे भेज सकते थे। जापान अधिकसे अधिक कोई साठ हजार सिपाही यालूकिनारे एकत्र कर सकता था; कुरोपाटकिन इन सिपाहियोंके मुकाबिले एक लाख बीस हजार सिपाही बड़ी ही आसानीके साथ भेज सकते थे। कुरोपाटकिन निश्चिन्त नहीं थे, वह ऐसा ही करनेका बन्दोबस्त कर रहे थे। यालू किनारे आकर फौज रूसकी मोरचे बंद रहे थे और जगह जगह बड़ी बड़ी तोपोंके तोपखाने कायम किये जाते थे।

अब आगे कुछ होना कठिन है। कोरियामें हमें नाना असु-विधाओंसे सामना करना पड़ता था; कोरियाके अधिवासी ही हमसे प्रतुताचरण करते थे; हमें रसद नहीं देते थे; किन्तु मञ्चूरियामें हम घरमें हैं; देखें जापान यालू पारकर मञ्चूरियामें कैसे पैर रख सकता है?" इसी समय और एक विचित्र अफवाह उड़ी। रूसियोंने कहा, कि जापानी पुल द्वारा ही यालू नदी पार करेंगे; हमारे पास ऐसा एक सामान है, जिससे जापानियोंका यह पुल कई मिनटके भीतर पूर्णरूपसे नष्ट किया जा सकता है। जिस कलसे यह महासंहार साधित हो सकता था, उसका हाल लोगोंसे प्रकट किया नहीं गया था। युद्धारम्भसे कोई दो वर्ष पहले रूस-राजधानी सेएटपिटर्सबर्गके जारकोसोलो स्थानमें रूसी फौजोंको बहुत बड़ी कवाइद दिखाई गई थी। उस कवाइदके समय प्रकाश्य स्थानमें इस यन्त्रकी परीक्षा हुई थी। नदीकिनारे यह यन्त्र लगाया गया और नदीमें पुरानी नावोंका पुल बांधा गया। इसके उपरान्त यन्त्र चलाया गया। यन्त्रकी प्रक्रिया आरम्भ होते ही पुलके पास आगकी छोटीसी एक चिनगारी प्रकट हुई। देखते देखते यह चिनगारी बढ़ी और पुलकी लम्बाईमें फैल गई। इसके बाद ही इस लम्बी चिनगारीने एकाएक कोई दो सौ गज लम्बी और कई गज ऊंची आगकी बनी दीवारका रूप धारण किया। जिस फुरतीसे यह दीवार एकाएक खड़ी हुई थी, उसी फुरतीसे एकाएक मिट गई। नई बात यह हुई, कि जिस समय दीवार मिटी, उसी समय वह नावका पुल भी मिट गया; बलकर राख होकर बहते जलमें मिल गया। विशेष ध्यान

देखेकी बात यह हुई, कि यह सब काण्ड सिर्फ साढ़े सात मिनटके भीतर भीतर हो गये।

रूस इसी यन्त्र द्वारा यालू नदीपर बंधनेवाले जापानियोंके पुलको नष्टकर जापानियोंका मञ्चूरिया-प्रवेश रोकना चाहता था। किन्तु समझदारोंने उसी समय कहा था,—"इस यन्त्र द्वारा तमाशा दिखा दिया गया सही; किन्तु इससे क्या प्रकृत कार्य्य भी किया जा सकता है?" प्रकृत कार्य्य शायद कभी किया नहीं गया। फलतः जबतक रूस-जापान-युद्ध चला; तबतक इस यन्त्र द्वारा किसी कार्य्यके सम्पन्न होनेका समाचार नहीं मिला। यालूकिनारे रूस विविध युद्धोपकरणोंसे सजधजकर जापानियोंके आगे बढ़नेकी राह देख रहा था। रूसी सिपाहियोंकी गतिविधिमें बड़ा परिवर्त्तन उपस्थित हुआ था; जिससे स्पष्ट जान पड़ता था, कि रूसी सिपाही किसी नई ही शक्ति द्वारा अनुप्राणित हुए हैं। रूसी सिपाही नावोंमें सवार हो यालू नदीमें गिरदावरी किया करते थे। गिरदावरी करते करते कभी कभी वीजू नगरके समीप पहुंच जापानी मोरचोंपर गोली बरसाया करते थे। जापानी सिपाही भी नावोंमें सवार हो नदीमें गिरदावरी किया करते थे। कभी कभी दोनो ओरके सिपाहियोंके बीच टक्कर हो जाती थी; खूनखराबी होती थी। ऐसी ही एक टक्करका हाल रूसके प्रधान सेनापति कुरोपाटकिनने अपनी रिपोर्टमें लिखा था। जापानकी ओरसे इस टक्करका कोई हाल प्रकाशित नहीं हुआ; इसलिये कुरोपाटकिनकी इस पक्षकी रिपोर्टपर पूर्णरूपसे विश्वास किया जा नहीं सकता। कुरोपाटकिनकी रिपोर्ट थी,—"गत २१वीं अप्रैलकी रातको लिफ्ट॰ रूस्के लि-

जापानी सिपाहियोंको नाव द्वारा नदी पारकर वीजू जानेकी आज्ञा मिली। चार दिन पहले यानी ४थी अपरेलको जापानी रिसालेने वीजूपर अधिकार किया था; इसलिये उस समय यानी ८वीं अपरेलतक वीजूमें अधिक जापानी सिपाहियोंके रहनेकी आशङ्का की नहीं गई थी। लफटण्ट डिमिडोविच और लफ-टण्ट पोटेमकाइनकी आधीनतामें रूसी सिपाही नावों द्वारा वीजूकी ओर चले। नदीमें समालिख नामक एक टापू है। रूसी सिपाहियोंकी नावें पहले इसी टापूसे लगीं। ऐसे समय रूसी सिपाहियोंने रातके अन्धकारमें वीजूकी ओरसे तीन नावें आती देखीं। रूसी समझ गये कि यह नावें जापानी सिपा-हियोंकी हैं और जिस उद्देश्यसे यह रूसी सिपाही निकले हैं; उसी उद्देश्यसे जापानी सिपाही भी। यह देख और समझ रूसी सिपाही अपनी नावें छिपा आप भी टापूपर कहीं छिप गये। जापानी नावें भी टापूसे लगीं; उनसे कोई पचास सिपाही टापूपर उतरे। इसके उपरान्त ही जापानी सिपाहियोंपर रूसी सिपाही बाढ़ दागने लगे। फल यह हुआ, कि प्रायः समग्र जापानी सिपाही मारे, डुबाये या सङ्गीनसे छेद दिये गये। रूसी सिपाहियोंको एक खराशतक नहीं आई।" अपरेल मासमें नदी-वक्षपर दोनों ओरके सिपाहियोंके बीच ऐसी कितनी ही टक्करें हुईं; अधिकांश टक्करोंमें जापानियों हीकी जय हुई।

अपरेलके आरम्भके तीन सप्ताह युद्धकी तय्यारियोंमें बीते। सैन्य एकत्र करनेमें जितना कष्ट रूसको उठाना नहीं पड़ा; उतना जापानको उठाना पड़ा। रूसी फौजें पक्की राहोंसे चल-कर यालू किनारे पहुंचती थीं, जापानी फौजें बरफसे ढंकी

पर्वत, नदी, मैदान अतिक्रमकर नदीकिनारे पहुंचती थीं। जापानी फौजोंकी यालू-यात्राके सम्बन्धमें विलायती अखबार 'डेली टेलीग्राफ'के संवाददाता मेजर मेकडिउने यालूकिनारेसे ९वीं अपरेलको जो पत्र लिखा था, उसका मर्म्मानुसार इस-तरह है,—"इस समय जापानी फौजें अपने निर्दिष्ट स्थानमें पहुंच गई हैं। इन फौजोंने राहकी असंख्य विघ्न-बाधाओंके सामनाकर अपनी यह यात्रा समाप्त की है। कितने ही स्थान अत्यन्त दुर्गम्य थे; इनमें जापानियोंने सिर्फ अपनी फौजों हीके लिये नहीं, बल्कि अपनी बड़ी बड़ी वजनी तोपोंके लिये भी राह तय्यार की। जापानियोंके सुनियम और कामकी सुशृङ्खला देख मैं मुग्ध हुआ हूं। पिङ्गयाङ्ग और चाङ्गजूके बीचकी टूटीफूटी राह जापानियोंने फिरसे आबाद तय्यार की है। कितने ही शस्य-श्यामल खेतोंमें बड़े बड़े राह तय्यार की; नालोंपर छोटे और नदियोंपर बड़े पुल बांधे। वन-वृक्षोंसे शहतीरें काटी गईं और उनसे ऐसे मजबूत पुल बनाये गये, कि इनपरसे बड़ी बड़ी तोपें भी आसानीके साथ चली गईं। बारबरदारीका काम कुलियों और घोड़ोंसे लिया गया। बारबरदारोंके पशु और कुली दूर दूरतक चींटि-योंकी तरह छिटके दिखाई देते थे। हरेक कुलीपर कोई डेढ़-[illegible] सेरका बोझ रहता था। रास्तेमें लदी छोटी छोटी गाड़ियां हैं।

पर जो अस्थायी पुल तय्यार करते थे; वह लोहेके पीपोंके होते थे। लोहेके पीपे पानीमें पैराकर उनपर तख्ते बांध पुल तय्यार कर दिया करते थे। इन पुलोंसे काम निकल जाता था सही; किन्तु वजनी लोहेके पीपोंको स्थानान्तरित करनेमें बड़ा समय और अपव्यय होता था। किसी किसी स्थलमें राहकी कठिनताकी वजह यह वजनी पीपे यथासमय पहुंच ही नहीं सकते थे। इस युद्धमें जापानने एक नये ही ढङ्गके पीपे प्रकटकर युरोपके रणपण्डितोंको एक नई बात बताई। जगद्विख्यात विलायती अखबार टाइम्सके फौजी संवाददाताने इन पीपोंके सम्बन्धमें लिखा है,—"इन पीपोंको देख जपानियोंकी बुद्धिकी प्रशंसा करनेको जी चाहता है। प्रत्येक पीपा चौबीस फुट लम्बा और चार फुट चौड़ा है; कोई दो हजार साढ़े सात सौ सेरका बोझ उठा सकता है। हरेक पीपा दो भागोंमें विभक्त है और इनमेंका हरेक भाग तीन टुकड़ोंमें बंटा हुआ है। पीपे टुकड़े टुकड़े किये जाकर घोड़े या खच्चरकी पीठपर आसानीके साथ लाद दिये जा सकते हैं। इन पीपोंमें विशेष नूतनत्व यह है, कि यह सब लोहेके नहीं; बल्कि काठ और 'कनवास' नामक सूती टाटके बने हैं; इसीलिये बहुत ही हलके हैं। लोहेके पीपेका ऊपरी भाग खुला रहता है; किन्तु यह टाटके पीपे चारों ओरसे अच्छी तरह बन्द हैं।"

पहले ही लिखा जा चुका है, कि कोरियाकी इस पहली जापानी फौजके प्रधान सेनापतिका नाम कुरोकी है। कुरोकी बारन हैं; अपने देशके एक प्रधान सरदार। जिस समय कुरोकी-

पदभार अर्पण किया गया, उस समय उनकी अवस्था

साठ वर्षकी थी। शायद कुरोकोकी वयोवृद्धि होके खयालसे जापानके रूस-दूत बारन वेन्तोसकीने कहा था,—"कुरोकीसे किसी बहुत बड़े कामकी प्रत्याशा की जा नहीं सकती।" किन्तु असलमें कुरोकीसे बहुत बड़े कामकी प्रत्याशा करके ही उन्हें जापान-सरकारने अपनी एक सुदृढ़ और अत्यन्त सुशिक्षित सैन्यकी अफसरी प्रदान की थी। कुरोकी सत्यु सार्वंश-सम्भूत हैं। उनका मत है,—"तुम्हें जो कुछ करना है, उसका रत्ती रत्ती सामान स्वयं एकत्र करो; यह आशा न करो, कि हैंशात् जब अमुक बात हो जायेगी, तब तुम्हारा काम पूरा हो जायेगा।" सन् १८९४ ई०के चीन-जापान युद्धमें जापानी फौजके लिये खाद्य-सामान संग्रह करनेका भार इन्हीं कुरोकी-पर रखा गया था और इससे जो सुफल उत्पन्न हुआ, वह लोगोंसे छिपा नहीं है। उस युद्धमें अपने खाद्य-सामानके अभावसे जापानी फौजोंको कहीं भी कष्ट उठाना नहीं पड़ा। कुरोकीके सम्बन्धमें जापानियोंका मत है,—"कुरोकी आवश्यक हरफेरसे रत्त-परिचित हैं। वह आक्रमण करनेको फुरतीमें नहीं; बल्कि आक्रमण करनेकी तय्यारीमें ही अपनी सारी शक्ति-सामर्थ्य व्यय करते हैं। एक कदम भी आगे बढ़नेसे पहले वह अपनी फौजके लिये जरा जरासी चीजतक संग्रह कर लेते हैं।

रूसी फौजमें सिर्फ पोखो ही पोखी थी; किन्तु जापानी फौजमें युद्धके लिये नितान्त उपयोगी स्वदेशभक्तिजन्य प्रबल उत्तेजना थी। अपने जल-सैन्यकी बारंबार विजयप्राप्तिके समाचारसे यह उत्तेजना और भी बढ़ गई थी। कहते हैं, कि प्रधान सेनापति वारन कुरोकी यदि इस उत्तेजनाको दबानेकी चेष्टा न करते रहते, तो यह उत्तेजना असीम होकर नष्ट हो जाती। कुरोकी जिन जापानी सिपाहियोंको गिरदावरीके लिये भेजते थे; वह सिर्फ नदीमें गिरदावरी करके ही निश्चिन्त होते नहीं थे; बल्कि प्रायः ही नदी पारकर रूसी मोरचोंमें रूसी सिपाहियोंसे दो दो हाथ लड़ आया करते थे।

अब एक झलक उस भूभागको भी देखिये, जिसपर युद्धको यह घन पटा बरसनेको थी। कोई तीस हजार रूसी सिपाही यालूकिनारे कोई बीस मीलकी लम्बाईमें मोरचाबन्दी किये बैठे थे। दोनों फौजोंके बीच यालू नदीकी चौड़ाई कोई डेढ़ कोसकी थी। इस चौड़ाईको दो टापुओंने विभक्तकर नदीधारको तीन शाखाओंमें विभक्त कर दिया था। इनमें जापानवालकी शाखाओंका जल उतना गहरा नहीं था; कहीं कमरतक गहरा था; कहीं छातीतक। बीचकी शाखामें सुगभीर जल था और उसीपर पुल बांधनेका प्रयोजन था। जो टापू रूसी किनारेके समीप था, उसका नाम चिउनसीङ्गडो था और जो जापानी किनारेके समीप था, उसका नाम किनलातान। दोनों टापू जलसे कुछ ही ऊंचे थे और दोनोंका अधिकांश भाग बालूसे बना था। दोनोंपर कुछ कोरियावासियोंका निवास था ... दे शान्त-शिष्ट कोरियावासियोंने जब अपने आवास-

स्थानको दो प्रबल प्रतिद्वन्द्वियोंके बीच पाया, तो अपने मकानोंकी बालमें बड़े बड़े गड्ढे खोद लिये और भावी गोलावृष्टिसे बचनेके लिये इन गड्ढोंमें छिप प्राण रक्षा करना स्थिर किया।

जिस जगह दोनो शक्तियोंकी फौजें आमनेसामने पड़ी थीं, उससे कोई डेढ़ कोस ऊपर आई-यालूका सङ्गमस्थल था। इस सङ्गमस्थलमें यालू और आई इन दोनो नदियोंने मिलकर अङ्गरेजी वर्ण "वाई" Y की सूरत बना दी थी। इस वर्णकी बाईं शाखा आई नदी थी और दाहनी यालू नदी। रूसी फौजका छोर इस अक्षरकी जड़के पास था और छोर इस अक्षरकी बाईं शाखाके छोरपर; यानी आई नदीके किनारे किनारे बहुत दूरतक। आई क्षुद्र नदी है; इसका जल दो या ढाई हाथसे अधिक गहरा नहीं। अभी लिखा है, कि पूर्वोक्त अङ्गरेजी वर्णकी दाहनी शाखा यालू नदी है; सङ्गमस्थलसे ऊपर इसी यालूवाली शाखामें छोटेबड़े कितने ही टापू हैं; इनमें कुलीदो टापू अपेक्षाकृत बड़ा है और यही जापानाधिकृत वीजू नगरके निकट है। वीजूसे कोई साढ़े छः कोस ऊपर सुङ्गुचिन नामक टापू हो टापू हैं; इस नगरके पार यालू निर्द्वीप हो बहती है। [illegible]की बाईं ओर जड़में आयङ्ग्शान और सियाङ्गसिङ्गचिन नामकी पर्वतश्रेणी है, जिनपर रूसकी बड़ी बड़ी तोपें चढ़ी थीं। इन पर्वतश्रेणियोंसे कुछ ऊपर आराटङ्ग नामक नगर है। इस नगरको रूसी फौजने अत्यन्त दृढ़ और दुर्भेद्य बना दिया था। इस नगरसे कुछ ऊपर पार्वत्यभूमिमें सियाङ्गसियाङ्ग नामक दूसरा नगर है, इसी नगरमें रूस-सैन्यका [illegible] था। सियाङ्गसियाङ्ग नगर [illegible]

उसकी चारो ओर पसरी हुई ऊंची पर्व्वतमाला दूर दूरसे दिखाई देती और बड़ी ही डरावनी जान पड़ती है। इस पर्व्वतमालापर रूसकी बड़ी बड़ी तोपें चढ़ी थीं और इसके सङ्गमें जगह जगह सुदृढ़ मोरचे बंधे थे। इसी किउलिनचिङ्गसे मुकदन प्रभृति मञ्चूरियाके प्रधान प्रधान नगरोंकी ओर बहुत ही चौड़ी और सुदृढ़ शाहराह बनी गई है। किउ-लिनचिङ्ग और आई नदीके बीचकी भूमि पार्व्वत्यभूमि है। इस भूमिके आईवाले किनारेपर यूसूकाउ स्थान है और यालूवाले किनारेपर सङ्गमपर माकाऊ। इस भूमि-पर रूसका अधिकार था और इस भूमिके इन दोनो स्था-नोंमें रूसकी बड़ी बड़ी तोपें लगी थीं। इस भूमिके यूसूकाउ स्थान हीमें रूसी फौजका जोर था। Y वर्णकी बाईं ओर रूसा-धिकारका ऐसा ही हाल था। वर्णकी दोनो शाखाओंके मध्य-भागमें जो स्थान है, वह बहुत ही ऊंचा है। इस स्थानमें वर्णकी दाहनी शाखाकी ओर हुसान नामक पर्व्वत है। यह पर्व्वत नीचा होता होता वर्णकी बाईं शाखाके समीप यूचाशान नामक स्थानमें समतलभूमिसे मिल गया है। यह यूचाशान स्थान रूसाधिकृत यूसूकाऊ नामक स्थानके ठीक सामने है। अङ्गरेजी वर्ण Y की दाहनी ओर और उसकी दोनो शाखाओंके मध्यका हाल लिख दिया। इस वर्णकी बाईं ओर आदिसे अन्ततक जापा-नियोंकी फौज फैली हुई थी।

जब दोनो पक्षकी लड़ाईकी तय्यारियां समाप्तिके समीप प-हुंचीं, तब दोनो पक्ष एक दूसरेको बड़ी बड़ी तोपोंवाली तोपखा-ने सामनेके लिये उतावले हुए थे। २१वीं अप्रैलको

जाननेके लिये प्रधान रूस-सेनापति भास्तुलिय एक चाल चले। उन्होंने इस दिन चार बड़ी बड़ी नावोंमें कितने ही रूसी सिपाही भरे और ऐसा ढङ्ग दिखाया मानो वह उन नावोंको चौकूकी ओर भेजना चाहते हैं। रूस-सेनापतिको विश्वास था, कि इन नावोंको देख इन्हें ध्वंस करनेके लिये जापानी तोपखाने गोले बरसायेंगे और यह गोलाहृष्टि होनेसे जापानी तोपखानोंका स्थान प्रकट हो जायेगा। किन्तु जापान-सेनापति रूस-सेनापतिकी यह चाल समझ गये। उन्होंने गोले चलानेकी आज्ञा नहीं दी। नदीकिनारे जापानी सिपाही बैठा दिये और जैसे ही रूसी नावें किनारेके समीप पहुंचीं; वैसे ही जापानी सिपाही उन नावोंपर गोलियोंकी बौछार करने लगे। सोलह रूसी सिपाही मारे गये, कितने ही जखमी हुए। नावें चटपट अपने किनारेकी ओर लौटीं। अपनी नावोंको बचानेके लिये रूसी तोपखानोंको जापानी सिपाहियोंपर गोले बरसाने पड़े। इसतरह रूस-सेनापतिकी इस चालका फल उलटा हुआ। जापानियोंके तोपखानेका स्थान जाननेके बदले रूस-सेनापति अपने ही तोपखानेका स्थान प्रकट करदेनेपर बाध्य हुए।

देख सकते थे; किन्तु जापान-सेनापतिने राहोंके किनारे कोसों तक टट्टियां लगवा दी थीं और इन्हीं टट्टियोंकी आड़में रूसियोंकी दृष्टिसे अगोचर रह जापानी अपनी फौजें और तोपें आदि स्थानान्तरित किया करते थे। अपरेलके अन्तिम सप्ताहमें रूसियोंको धोखा देनेके लिये जापान-सेनापतिकी भी एक चाल हुई। ऊपर लिखा जा चुका है, कि जापानाधिकृत किनारेके समीप वीजूके सामने किनतालाव नामक एक टापू था। जापान-सेनापतिने रूसियोंको सिर्फ धोखा देनेके लिये इस टापूपर पुल बांधनेके बहुतसे साजसामान एकत्र किये; ऐसा ढङ्ग दिखाया मानो जापान इसी टापूके सामने पुल बांध रूसके किउलिनचिङ्ग नगरपर आक्रमण करना चाहता है। यह देख रूसियोंने किउलिनचिङ्ग हीमें अपनी फौजका बड़ा भाग एकत्र किया और रूसी तोपें कई दिनोंतक किनतालाव टापूपर गोले बरसा अपने गोले नष्ट करती रहीं।

२५वीं अपरेलको यालू नदीका युद्ध बड़े ही लघुरूपमें आरंभ हुआ। इस दिन रियर एडमिरल होसोयाके अधीन कितनी ही गनबोटों और तारपेडो-नावोंका एक बेड़ा यालू नदीके मुहानेसे घुसकर रूस-अधिकृत आण्टुङ्गान स्थानके समीप पहुंच उसपर गोले बरसाने लगा। नदीमें बड़े बड़े जङ्गी जहाज आ नहीं सकते थे; आ सकते, तो वही आते। रूसी तोपें भी गोले चलाती थीं; किन्तु उनका गोला जापानी बेड़े तक पहुंचता नहीं था। यह देख रूस-सेनापतिने अपने सुप्रसिद्ध कज्जाक-रिसालेको नदीमें घोड़े पैरा जापानी बेड़े पर आक्रमण करा दी। कज्जाक-रिसाला घोड़े उड़ाता—पांथसे

[illegible]ता—नदीकिनारे पहुंचा। ऐसे समय जापानी बेड़ेसे रिसालेपर भयङ्कर गोला-वृष्टि होने लगी। इस गोला-वृष्टिसे अधीर हो कज्जाक-रिसाला जिस फुरतीसे किनारे पहुंचा था, उसी फुरतीसे किनारेसे भाग पहाड़ोंकी ओट हो गया। इस दिन दिनभर रूस-अधिकृत कितने ही स्थानों-पर गोले बरसा सन्ध्या समय जापानी बेड़ा समुद्रकी ओर लौट गया। दूसरे दिन २७वीं अपरैलको फिर प्रकट हुआ और फिर कल हीकी तरह रूस अधिकृत स्थानों-पर गोले बरसाने लगा। आज भी कज्जाक-रिसालेने बेड़ेपर आक्रमण करनेकी चेष्टा की और आज फिर कल हीकी तरह उसे परास्त हो भागना पड़ा। कलकी अपेक्षा आज कज्जाक-रिसाला अधिक हानिग्रस्त हुआ। इसके उपरान्त फिर उसने जापानी बेड़ेपर आक्रमण करनेका साहस नहीं किया; दूर दूर रह उसे निगाहपर चढ़ाये रहने लगा; कहते हैं, कि कोई दस हजार कज्जाक-सवार बेड़ेके पहरेमें नियुक्त हुए। एक ओर जापानके वह तोपखाने, जिन्हें जाननेको रूस छट-पटाया था; यथास्थान लग चुके थे। रूसको इसकी भी खबर नहीं थी, कि उस समय उसकी पीठके मध्यभाग [illegible] हलिनलिङ्ग नगरकी बगलमें बीहड़ी टाइके सामनेका जितना [illegible] तोपखाना लगा हुआ था। इस तोपखानेमें [illegible] [illegible] तोपें, जिनकी ही छोटी और मोटी [illegible] तोपें और कुछ पहाड़ी लम्बी लम्बी तोपें थीं। तोपखाना इस [illegible] लगा था, कि [illegible] हलिनलिङ्ग नगर [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] पर [illegible]। यह तोपखाना [illegible]

हुआ था और युद्धके तूल पकड़नेके बाद तोपखानेका अस्तित्व रूसियोंको जान पड़ा।

२६वीं फरवरीको बड़े सवेरे एक ओर इस बेड़ेने आगे बढ़ एक घण्टेकी गोलन्दाजीमें रूसकी दश कोस लम्बी मोरचाबन्दीके दाहने छोरवाले आयट्शान पर्व्वतके तोपखानेका मुंह बन्द किया ; दूसरी ओर गार्ड और द्वितीय डिविजन फौजके टुकड़ोंको रूसियोंको नदीके टापुओंसे मार भगा उनपर कबजाकर लेनेकी आज्ञा हुई। भीमवेगसे आगे बढ़ द्वितीय गार्डने वीजूके पासवाले टापू किनताताओपर अधिकार कर लिया ; रूसी भागे। गार्ड फौज वीजूसे कई कोस ऊपर कुलीदो द्वीपपर अधिकार करने चला। कुलीदोसे रूसी आसानीसे न भागे ; छोटीसी लड़ाई हुई ; जापानी फौजके कोई पचीस सिपाही जखमी हुए और रूसी फौजके सिपाहियोंको अपने कितने ही हताहतोंको ले किउलिनचिङ्ग नगर लौटना पड़ा। आज दिनभर जापानके वीजू नगरपर रूसी तोपें अविराम गोलावृष्टि करती रहीं ; किन्तु जापानकी ओरसे एक भी गोला चलाया नहीं गया।

२७ वीं और २८ वीं अपरैलको एक ओर जापानी बेड़ा रूसी मोरचोंपर आक्रमण करता रहा दूसरी ओर जापानी गार्ड फौज अपने नवाधिकृत कुलीदो टापूसे बालू किनारेके हुसान पर्व्वतमालापर अधिकार कर लेनेकी चेष्टामें लगी रही। कुलीदो टापूसे जापानी गोली-गोलोंकी भयङ्कर वृष्टिसे विध्वस्त हो रूसी फौज हुसान पर्व्वतमालासे हट गई ; किन्तु २६ वींको सवेरे उसने फिर आगे बढ़ हुसानपर अधिकार कर लिया। २८ वींकी सन्ध्यातक जापानी फौजने जितनी काररवाई की, उनमेंसे रूसको—या बाह्य-

रके किसी आदमीको—यह ज्ञान न पड़ा, कि जापानका प्रकृत आक्रमण किस ओरसे होगा।

पहले ही लिख चुके हैं, कि सुकुचिन नगर वीजूसे साढ़े छः कोस वीजू-आई सड़कसे ऊपर है। २६ वीं अपरैलको इसी सुकुचिनके पास जापानकी द्वादश डिविजन फौज यालू पार करनेके लिये पुल बांधने लगी। इस जगह यालूमें कोई टापू नहीं है; कोई दो सौ तीस गज चौड़ाईमें यालूकी धारा बहती है। जापानी सिपाहियोंने पहले आसपासके रूसियोंको मार भगाया, इसके बाद पुल बांधना आरम्भ किया। उस जगहका शीतकालीन यालू-जल यदि बरफ बन नहीं गया था, तो बरफसे कम शीतल नहीं था। पुल बांधनेवालोंके ऊपर बरसते हुए रूसी गोले थे और नीचे अति भयङ्कर शीतल जल। पीपेका पुल बंधने लगा। पीपेका लङ्गर ठीक करनेके लिये एक जापानी जैसे ही जलमें उतरा, वैसे ही जलकी शीतलतासे मरकर अकड़ गया; यह देख कितने ही जापानी जलमें कूद पड़े और मर मरकर पीपेका लङ्गर दुरुस्त करने और पुल बांधने लगे। उधर सुकुचिनमें यह हो रहा था और इधर कुलोदोमें गार्ड फौज पुल बांध कुलोरो टापूसे ओचोबरो टापू पहुंची और ओचोकदोके अपने ठीक सामने अवस्थित हूसान पर्व्वतमालापर धावा बोलनेके लिये दूसरा पुल तय्यार करने लगी। रूसी हूसान पर्व्वतमालाकी जड़में नदी-गर्भके ऊपर तोपें लगा जापानियोंको पुल-बन्दीमें बाधा उपस्थित करने लगे; जापा-

डिविजनका पुल तय्यार हो गया और इसी दिन प्रातःकाल सम्राटकी द्वादश डिविजन फौज यालू नदी पार हो गई। उधर यह हुआ ; इधर इसी दिन कोई दश बजे वीजूके समीप लगे बहुत बड़े जापानी तोपखानेके सामनेकी आड़ हटाई गई और तोपखानेसे रूसके किउलिनचिङ्ग नगरपर गोलोंकी भयङ्कर वृष्टि होने लगी। यह गोलावृष्टि मानो कोई दश कोसकी लम्बाईमें जगह जगह लगे जापानी तोपखानों द्वारा रूसियोंपर गोलावृष्टि आरम्भ होनेका सङ्केत हुआ ; हर ओरसे अग्निमुखी तोपें गर्जन करने लगीं ; जापानी बेड़ा भी अपनी जगह पहुंच गोले बरसाने लगा। इस घोर गोलावृष्टिमें एक ओर वीजूके सामने पुल बांध द्वितीय डिविजन फौज रूसी किनारेके निकटस्थ चिउलसङ्गसे और उससे नीचे उसकी बगलके टापू लङ्गाटोसे पुल बांध आगे बढ़ रूसी मोरचाबन्दीके मध्यभागपर आक्रमण करनेके लिये तय्यार हुई और दूसरी ओर सन्ध्यातक कुलीदो टापूके पड़ोसके ओचोकदो टापू और हुसान पर्वतमालाके बीच पांच पुल बांध गार्ड फौज रूसियोंको मार भगा हुसान पर्वतमालापर चढ़ गई। यहांसे और सुकुचिनसे आगे बढ़ती हुई द्वादश डिविजन फौजके सामनेसे पीछे हटकर रूसी फौज आई नदी पारकर उसके दूसरे किनारे वापस गई। ३० वीं अपरैलकी सन्ध्याको जिस समय गोला-वृष्टि बन्द हुई, उस समय जापानी फौजके तीनों डिविजनका बड़ा भाग यालू नदीकी प्रधान धारा पारकर रूसी मोरचाबन्दीके बहुत समीप पहुंच गया। इसी रात जापान-सेनापति कुरोकीने जापान-सम्राट्को तार भेज दूसरे दिन प्रातःकाल १ ली मई रविवारसे युद्धारम्भ करनेकी मञ्जूरी मंगाई।

१ ली मई रविवारका प्रातःकाल उपस्थित हुआ। प्रकाश जैसे जैसे बढ़ा, वैसे वैसे नदी और उसके इर्दगिर्दके भूभागपर छाया कुहरा उड़ा; युद्धस्थलका दृश्य क्रम क्रमसे साफ होने लगा। प्रातःकाल कोई चार ही बजे जापानी फौजें सजधजकर अपनी अपनी जगह खड़ी हो गईं। स्थिर हुआ, कि दिन ८ बजे जापानी द्वादश डिविजन फौज आगे बढ़ जाय नदी पार करे; शत्रुको नदी किनारेसे मार भगाये, मासाकापर दखल करे और किउलिनचिङ्ग नगरसे जब शत्रु भागे, तब उसकी राह रोके। जिस समय द्वादश डिविजन फौज आगे बढ़ी होवे उसी समय कुनार पर्वतमालाकी गार्ड फौज भी आगे बढ़े और द्वादश डिविजनकी बगलमें दहिने जाय गई। पारपर यूशूकाउपर आक्रमण करे। गार्ड फौज द्वादश-कोंके आगे बढ़ किउलिनचिङ्ग नगरपर आक्रमण करे और इसके बाद पीछे इधर अपने बायें आनटुङ्ग नगरपर धावा होवे।

प्रातःकालका प्रकाश अभी अच्छी तरह फैलने भी नहीं पाया था, कि जापानकी कुछ तोपखानों और बेड़ोंसे दनादन होने

अपेक्षाकृत सन्नाटा छा गया। यह देख द्वादश डिविजन फौज कोई दो कोस लम्बी पंक्तिमें हर्षनाद करती आई नदीकी ओर झपटी। रूसी पलटनें हाथोंमें बन्दूक लिये आईके उसपार सुदृढ़ पार्व्वत्य मोरचोंमें चुपचाप बैठ जापानी फौजका बढ़ना देख रही थीं। युद्धस्थलका उस समयका दृश्य देखने लायक था। एशियाकी एक जबरदस्त फौज युद्धके लिये आगे बढ़ रही थी और युरोपकी एक जबरदस्त फौज मोरचोंके भीतर बैठ अपने शत्रुके आगमनकी प्रतीक्षा कर रही थी। एशिया और युरोपके तमाशाई दोनों फौजोंकी कार्रवाई टकटकी लगाये देख रहे थे। वह जानते थे, कि इस युद्धका प्रभाव वर्त्तमान रूस-जापान-युद्ध हीपर नहीं पड़ेगा; बल्कि समग्र एशिया और समग्र युरोपपर पड़ेगा और उस प्रभावसे वह उलटफेर हो सकते हैं, जिनके होनेकी कल्पनातक की जा नहीं सकती।

द्वादश डिविजन फौज आई नदीकी ओर चली। जिस जगहसे फौज चली थी, उस जगहसे आई नदी कोई दो कोस दूर थी। बीचकी भूमि यदि समतल होती, तो जापानी फौज छितराकर आगे बढ़ती, और रूसी गोले-गोलियोंका निशाना न बनती; किन्तु बीचमें पार्व्वत्य भूमि रहनेकी वजह इसके दल जापानी सिपाहियोंको निर्दिष्ट राहों होसे आगे बढ़ना पड़ता था। बीचके समीपका लगा बड़ा जापानी तोपखाना आई नदीके किनारेवाले रूसी मोरचोंपर गोले बरसा रहा था; इस गोला वृष्टिके फलसे रूसी अपने मोरचोंसे निकल जापानियोंपर आक्रमण करनेका साहस कर नहीं सकते थे; सिर्फ अपने मोरचोंमें जापानी फौजके गोलीकी मारके भीतर आनेकी प्रतीक्षा कर

रहे थे। देखते देखते जापानी फौज आईकिनारे पहुंची। आईका जल कहीं गहरा था और कहीं पायाब। जिन जगहोंमें पायाब जल था, जापानी फौज चारों ओरसे सिमटकर उसी जगह एकत्र हुई और नदी पार करने लगी। रूसी पहले हीसे जानते थे, कि जापानी फौज इन्हीं पायाब जगहोंसे नदी पार करेगी ; इसलिये उन जगहोंके सामने ही दलके दल रूसी सिपाही बैठे थे। जैसे ही जापानी फौज नदी पार करने लगी, वैसे ही उसपर रूसी सिपाही गोले-गोलियोंकी विषम वृष्टि करने लगे। जापानी सिपाहियोंकी लाशपर लाश गिरने लगी। एक गिरी, दो गिरी, तीन गिरी,—देखते देखते कोई एक सौ लाशें गिरीं। विलायती अखबार 'डेली क्रानिकल'के संवाददाता जोनोही साहबने यह युद्ध अपनी आंखों देखकर लिखा है,—"किसी युद्धमें किसी फौजको मैंने इसतरह गोला-गोली-वृष्टिमें पतित हो मरते नहीं देखा ; दक्षिण अफरिकाके बोर-युद्धमें भी मुझे यह दृश्य दिखाई नहीं दिया।" किन्तु इससे जापानी सिपाहियोंकी हिम्मत नहीं घटी ; बल्कि अपने भाइयोंकी मृत्यु देख उनकी उत्तेजना और भी बढ़ी ; इसलियेमें रूसखसमारनेमें प्रवृत्त होनेकी लालसा प्रबलसे प्रबलतर हो उठी ; इस अग्निवृष्टिकी कोई परवा न कर जापानी फौज आई नदी पारकर दूसरे किनारे पहुंची और वहां खूब डटकर [illegible] शिक्षायें परिपूर्ण करती रूसी मोरचोंमें घुस तलवारके

इधर यह होने लगा उधर इस अञ्चलसे कुछ नीचे हुमान पर्व्वतकी गार्ड फौज आई नदी पारकर माकाऊकी रूसी मोरचोंपर टूट पड़ी। पहले ही लिखा जा चुका है, कि वीजूके सामनेके टापुओंपर द्वितीय डिविजन फौजका कबजा था। इन टापुओं और रूस-अधिकृत बालू किनारेके बीच नदीकी जो धारा थी, वह पायाब थी। इसी दिन प्रातःकाल भयङ्कर गोलावृष्टिमें द्वितीय डिविजन फौज नदीमें फांद पड़ी। ऊपरसे गोलियां बरस रही थीं; नीचे जलकी प्रखर धारा सिपाहियोंके पैर टिकने नहीं देती थी; फिर भी सिपाही आगे बढ़ते ही जाते थे। बड़ी ही क्षति सहकर अन्तमें जापानी सिपाही किनारे पहुंच गये और उन्होंने थोड़ीही देरके युद्धमें रूसियोंको नदीतटसे मार भगाया। जापानकी तीनों फौज यानी द्वितीय डिविजन, गार्ड और द्वादश डिविजन फौज रूसियोंके मोरचेके समीप पहुंच लम्बी पंक्तिमें फैल गई और इन रूस-अधिकृत यूशूकाऊस्थानसे आएट्झ नगरके समीपतक कोई दश कोसकी लम्बाईमें रूसियों और जापानियोंके बीच घोर युद्ध होने लगा। आज जापानी बेड़ा आएट्ग्रानसे भी कुछ आगे बढ़ अविराम गोला-वृष्टिकर रूसियोंको ध्वस्त-विध्वस्त करने लगा।

देखते देखते युद्धने और भी भयङ्कर मूर्त्ति धारण की। गोलोंसे दलके दल सिपाही उड़ने लगे; गोलियोंकी बाढ़से एक साथ कितने ही सिपाही जमीनपर लोटने लगे। जगह जगह तलवार चलने लगी; वसुन्धरा उष्ण नररक्तसे लाल होने लगी। रूसी सिपाही अपने अस्त्रबलसे, भुजबलसे और सबसे अधिक अपनी सुदृढ़ मोरचाबन्दीके बलसे जापा[illegible]
[illegible] मार भगानेकी चेष्टा करते थे; किन्तु जापानी

दूसरे सौदागरोंके जहाज फुकुई मारूने डूबे हुए पियो मारूको बाहरमें पहुंच लङ्गर डाला। फुकुई मारू हिरोज नामक एक जापानी अफसरकी अधीनतामें था। हिरोज अपने अचिन्त्य-नीय पराक्रमके लिये प्रसिद्ध थे। इससे पहले जब मुहानेमें डुबानेके लिये जहाज भेजे गये थे, तब भी इन हिरोजको एक जहाजकी अफसरी दी गई थी। उस समय अपना जहाज डुबानेके समय इन हिरोजने बड़ा पराक्रम प्रकाश किया था। हिरोज जिस जहाजके परिचालक थे, वह जहाज जब यथा-स्थान पहुंच गोला-गोलोंकी वृष्टिसे डूबने लगा और जब उसके कुल सिपाही नावोंमें बैठ भागनेके लिये तय्यार हुए तब हिरोजको याद आया, कि वह अपनी सरकारी तलवार डूबते हुए जहाजकी सबसे ऊपरकी कोठरीमें भूल आये हैं। उनके साथियोंकी तरह हिरोज भी नावमें सवार हो चुके थे; किन्तु तलवारका खयालकर नावसे कूद जहाजपर चढ़े और गोलोंकी चोटसे चलनी बने जहाजके ऊपरसे दौड़ते ऊपरकी कोठरीमें पहुंच अपनी तलवार लाये। हिरोजके इस पराक्रमकी प्रशंसा उनके शत्रु रूसियोंने भी मुक्तकण्ठसे की थी। वही हिरोज इसी कामके लिये इसी बार आज फिर उपस्थित

हिरोजने इससे अपना कोई नुकसान नहीं देखा। तार-पेडो यदि जहाजमें सूराख न बनाता, तो दूसरे ही पथ वह स्वयं अपना जहाज उड़ा देनेकी व्यवस्था करते। जहाजको डूबता देख हिरोजने अफसरों और सिपाहियोंको जहाजसे उतर नावोंमें सवार होनेके लिये कहा। सबके सवार हो चुकनेपर हिरोज भी नावमें सवार हुए; ऐसे ही समय गतबारकी घटना इस बार फिर हुई; उसबार ठीक इसी समय हिरोजको अपनी छूटी हुई तलवार याद आई थी; इस बार अपना छूटा हुआ मातहत अफसर सुगिनो याद आया। जहाज डूब रहा था; उसपर जाना मृत्युके मुंहमें जाना था; किन्तु हिरोज निःशङ्क मनसे नावसे जहाजपर चढ़ गये। एकबार नहीं—दो बार भी नहीं—तीन बार समूचे जहाजमें सुगिनोके लिये उन्होंने चक्कर लगाया; किन्तु सुगिनो वहां था न मिला। अन्तमें हताश हो हिरोज अपने साथियोंके पास नावमें आये। नाव जहाजसे जुदा हो बढ़ी तेजीके साथ अपनी तारपेडो-नावोंकी ओर भागी। उस समय जलपर दिन जैसा प्रकाश फैल रहा था; रूसी गोलन्दाज ताक ताककर नावपर गोले उतार रहे थे। एकाएक एक गोला आ हिरोजके शिरपर पड़ा। हिरोजका शिर और छाती उड़ गई; छातीसे नीचेका धड़ गोलेकी चोटसे मांसका पिण्ड बन गया। कोई यन्त्रणा नहीं हुई—कोई कष्ट नहीं हुआ,—एक पलमें भी कममें वीरवरने अपनी इहलीला संवरण की। हिरोज जापानके इतिहासमें अमर होनेके लिये मर गये; किन्तु [illegible] नावमें हिरोज थे, वह निर्विघ्न अपनी तारपेडो-नावके पास गई। यथासमय हिरोजकी मृत-देह जापान गई और

बड़े समारोहके साथ समाधिस्थ की गई ; समग्र जापानने अपने इस वीर अफसरकी मृत्युपर अश्रुजलसे वक्षस्थल सिक्त किया।

जिस जहाज फुकुई मारु डूबा था, उसके दायें वालोंको म रूसने पहुँच अपनेको उड़ा दिया। अबतक रूसी किलोंकी तोपों और दो रूसी गनबोटों और एक डिस्ट्रायर-नावके बाधा देनेपर भी जापानके तीनो सौदागरीके जहाज बन्दरके मुहानेमें एक पंक्तिमें डूबे—पहलेसे स्थिर किये हुए मनसूबेके अनुसार काम हुआ। किन्तु इसके बाद जैसे ही जापानका चौथा जहाज योशीनो मारू अपनी जगह पहुंच डूबने चला वैसे ही एक विषम बाधा उपस्थित हुई। रूसी तारपीडोने इसी मुहानेमें [illegible] जापानी जहाजको टक्कर दी और उसका [illegible] [illegible] था। दोनों जहाज सटे हुए थे ; इसलिये डिस्ट्रायर [illegible] तोपोंकी [illegible] जापानी जहाजके किनारियोंमें [illegible] लगती थीं। इस परस्पर धक्केसे भी जापानी जहाज अपनी जगहसे विचलित नहीं हुआ। वह फिर अपनी जगह पहुंच

कपतान हीरोजके अलौकिक पराक्रमका हाल सुन चुके अब पूर्वोक्त योनेमा मारू जहाजके कपतान मामाकीकी अचिन्त्य निर्भीकताका वर्णन भी सुन लीजिये। जिस समय मामाकी अपना जहाज ले बन्दरकी ओर चले, उस समय एक गोलेका टुकड़ा आ उनकी कनपटीपर लगा। कनपटीपर बहुत बड़ा जखम हो गया; जखमसे रक्तधारा बहने लगी; फिर भी वीरवर अपनी जगह अटल-अचल बन खड़े रहे और जहाज निर्दिष्ट स्थानकी ओर ले चले। पूर्वोक्त डिष्ट्रायरके धक्के से संभल जिस समय जहाज फिर अपनी राह लगा, उस समय एक गोलेका टुकड़ा आ कपतानके कन्धेपर लगा। कन्धेपर भी बहुत बड़ा जखम हुआ और इस जखमसे भी रक्तधारा बहने लगी। ऐसी अवस्थामें कोई दूसरा मनुष्य गिर पड़ता या जखमोंके दर्दसे अपनी जगहसे हट जाता; किन्तु मामाकी गिरे भी नहीं; अपनी जगहसे हटे भी नहीं। तारपेडोके धक्के से अपनी जगहसे हटकर किनारे पहुंच जब जहाज डूबने लगा, तब मामाकीने पहले अपने जहाजके आहतों और सिपाहियोंको नावमें सवार कराया इसके उपरान्त आप सवार हुए। नावें जहाजसे जुदा हो, अपनी तारपेडो-नावोंकी ओर चलीं; ऐसे समय मामाकीने अपने साथियोंकी गणनाकर मालूम किया कि उनके लफटनण्ट शिमादा आहत हुए थे और वह डूबते हुए जहाज होमें छोड़ दिये गये हैं। यह जान मामाकी एक नावमें अकेले सवार हो डूबते हुए जहाजके समीप पहुंच ... चढ़ गये। लफटनण्ट शिमादा जखमोंसे चूर एक जगह ... कपतान मामाकी आहत शिमादाको अपनी पीठपर

हार जहाजसे नावमें लाये और अपने इस उपकारकका सिर अपनी जाँघपर रख जखमसे बचे अपने एक हाथसे नावका डाँड़ा चलाते अपनी नारंगी-नावोंकी ओर चले। अभी इनकी नाव कुछ ही दूर गई थी; ऐसे समय इनका जहाज योगीमा बारूद पटकर डूब गया। योगीमा बारूदके डूबते ही इस जहाजके जो सिपाही नावोंमें सवार हो आगे चल चुके थे, उन्होंने जातीय संगीत आरम्भ किया। इस गीतकी ध्वनि नवाबियोंकी गोलन्दाजोंका निशाना बनी। इनकी गीतध्वनि जिधरसे ध्वनि सुनाई देती थी, उसी ओर ताक ताककर गोले बरसाने लगे। किन्तु जीवन-रक्षा, मनुष्यके हाथकी बात नहीं, जिसकी रक्षा ईश्वर करना चाहता है; मनुष्य लाख यत्न करके भी उसका जीवन-संहार कर नहीं सकता। जानसन साहब किसी तरह अपनी नारंगी-नावके पास पहुँच गये; उनके पीछे पीछे जानसन साहबकी भी जानसन कप्तानके सिपाहियोंके साथ पहुँच गयी। सब बाल बाल बच गये।

आरथर-बन्दरसे दश मील दूर खड़े अपने बेड़ेकी ओर बढ़ा। चलतेचलाते बेड़ेने रूसियोंकी डिस्ट्रायेरनाव 'सिलिनी'को फोड़ दिया। सिलिनीमें पानी भर गया; वह पासकी एक जलमग्न चट्टानपर जा बैठ गई।

२७वीं मार्चको कोई साढ़े पांच बजे सवेरे टोगोका बेड़ा आगे बढ़ आरथर-बन्दरके सामने पहुंचा। असलमें यह बेड़ा युद्ध करनेके लिये नहीं; बल्कि इस बातकी जांच करनेके लिये बढ़ा था, कि आरथर-बन्दरका मुहाना कहांतक बन्द हुआ है। दिन कोई नौ बजे रूसी किलोंसे तोपें छूटने लगीं और रूसी जङ्गी जहाज एकके बाद दूसरा बन्दरसे निकल बाहर आया और अपने किलेकी छायामें रह दूर खड़े जापानी बेड़ेपर गोले बरसाने लगा। जापानी बेड़ेने प्रत्युत्तरमें एक भी गोला नहीं चलाया। वह गोला चलाने आया ही नहीं था; मुहानेका हाल जानना चाहता था और जब उसने देख लिया, कि मुहाना अभीतक खुला ही है; मुहानेके एक किनारेसे रूसी जहाज आ जा सकते हैं, तब वह खुले समुद्रकी ओर लौटा और दिन कोई दश बजे क्षितिज-रेखा पारकर आरथर-बन्दरकी सीमामर्य्यादासे बाहर हो गया।

इस घटनाके दूसरे दिन २८वीं मार्चको आरथर-बन्दरमें आरथर-बन्दरके रूसाधिकारभुक्त होनेका षष्ठ वार्षिकोत्सव मनाया गया। गिरजेमें उपासना; मैदानमें कवायद की गई। दरतरह आनन्द प्रकाश करनेकी चेष्टा की गई; किन्तु आनन्द मनकी चीज है; [illegible] बाहरसे मन आनन्दित नहीं होता। सभीको [illegible] जब युद्धमें प्रवृत्त होने या गोलावृष्टिमें पड़ इहलीला

संहार करनेका भय था। रूसी मुंहसे गाते थे, किन्तु मनमें युद्धकी चिन्तासे चिन्तित थे। उत्सवके दिन यह चिन्ता और भी बढ़ गई थी; कारण, उस दिन जापानियोंका एक विशेष आक्रमण होनेकी अफवाह थी। अन्तमें अफवाह अमूलक निकली। तीसरे दिन रूसके बड़े लाट अलक्जिफ भी एक दिनके लिये आर्थर-बन्दरमें आये। आपके सामने जल और स्थलकी सैन्यने कवायद दिखाई। इतनी धूमधाम होनेपर भी आर्थर-बन्दरमें प्रकृत आनन्दकी झलक दिखाई न दी; ग्रहण लगनेसे सूर्य या चन्द्रपर ग्रहणकी धुंधली धुंधली छाया पड़ जाती है।

कई दिनोंतक किसी तरहकी मारकाट नहीं हुई; आर्थर-बन्दर और उसकी चारों ओर शान्ति विराजती रही। किन्तु युद्धके समय छलबलकी शान्ति ठहरती नहीं। १२वीं फर्वरीकी आई निशाको सुगभीर तम-अन्धकार भेदकर आर्थर-बन्दरको

अधिक जोरदार थीं। जापानके कपतान ओडोने इन माइनोंका आविष्कार किया था और बीस वर्षके अविराम श्रमके उपरान्त शिमोस नामक महाभयङ्कर बारूद आविष्कार करनेवाले डाक्तर शिमोसने इन माइनोंमें भरे जानेवाले मसालोंका नुसखा लिखा था।

तारपेडो-नावोंके बेड़े और कोरियो मारूपर घोर अग्नि-वृष्टि हो रही थी; किन्तु यह नावें और जहाज मानो मन्त्रबलसे उस अग्निवृष्टिसे रक्षित रह अपना काम कर रहे थे। कोरियो मारूने बड़ी ही निर्भीकताके साथ आरथर-बन्दरके मुहानेके पास जा कई माइनें डुबाईं। प्रातःकाल अपना काम समाप्तकर यह बेड़ा और जहाज अपने प्रधान बेड़ेकी ओर लौट रहा था; ऐसे समय रूसी डिष्ट्रायेर-नाव स्त्रासनी खुले समुद्रसे आरथर-बन्दरके मुहानेकी ओर भागती दिखाई दी। दो तीन जापानी तार-पेडो-नावें स्त्रासनीकी ओर झपटीं और उन सबने गोला-वृष्टिकर स्त्रासनीको समुद्रके अतलतलमें पहुंचा दिया। स्त्रासनीके सिपाही प्राणरक्षाके लिये समुद्रजलमें पैरने लगे। जापानी तारपेडो-नावें ठहरकर डूबते हुए रूसी सिपाहियोंको बचाने लगीं; ऐसे समय रूसका विशालाकार छोटा क्रूजर जहाज 'बयान' बन्दरसे निकल गोले मारता जापानी तारपेडो-नावोंकी ओर झपटा। अब तारपेडो-नावें स्थिर कैसे रह सकती थीं; रूसियोंको छोड़ अपने प्रधान बेड़ेकी ओर भागीं। बहुसंख्यक रूसी डूब मरे।

अर्द्धनिशाको आरथर-बन्दरके समीप पहुंच कोरियो मारूका माइन डुबाना जापानी नौ-सेनापति टोगोकी एक कल्पनाका एक ... । टोगोने यह देखा, कि आरथर बन्दरका मुहाना

बन्द नहीं हुआ, तब इन्होंने रूसी बेड़ेको ध्वंस करनेकी एक नई कल्पना की। स्थिर किया, कि पहले कोरियो मारू आरथर-बन्दरके समीप जा रूसी जहाजोंके आनेजानेकी राहमें माइन लगाये; इसके उपरान्त एक छोटासा जापानी बेड़ा रूसी जहाजोंको उभार और भुलावेमें डाल अपने पीछे लगा आरथर-बन्दरके मुहानेसे दूर निकाल लाये; अन्तमें आरथर-बन्दरको इलाकेमें छिपा जापानियोंका प्रधान बेड़ा एकाएक अपनी जगहसे निकल रूसी बेड़े पर आक्रमणकर उसे ध्वस्त-विध्वस्त कर दे। टोगोने यह भी सोचा था, कि इस अन्तिम आक्रमणके समय जो बचेखुचे रूसी जहाज भयभीत हो भागेंगे, वह कोरियो मारूके लगाये माइनसे टक्कर खा उड़ जायेंगे; इसतरह रूसी बेड़ा नष्ट हो जायेगा। इसी कल्पनाके अनुसार १३वीं अप्रेलको आर्थर-पोर्टपर आक्रमण हुआ था और कोरियो मारूने माइन लगा इस कल्पनाका प्रथम अङ्ग पूरा किया था।

समाचार क्यानने आर्थर-बन्दर भेजा। समाचार पाते ही आर्थर-बन्दरसे रूसी बेड़ा निकला। आगे आगे रूसी जङ्गी जहाज पेट्रोपावलस्क था। इसी जहाजपर रूसके प्रधान नौ-सेनापति मेकराफ थे और इनकी आज्ञासे पताकाओं द्वारा पेट्रोपावलस्क जहाज जो सङ्केत करता था, उसीके अनुसार बेड़ेके सब जहाज काम करते थे। इस जहाजमें सिवा बड़ी छोटी बहु संख्यक तोपों और अफसरोंके सात सौ जहाजी सिपाही थे। रूसके उच्चश्रेणीके सरदार ग्राण्ड डिउक साइरिल युद्धका तमाशा देखनेके लिये रूससे आर्थर-बन्दर आये थे। सिवा इनके जगद्विख्यात रूसी युद्ध-चित्रकार वयोवृद्ध वेरेश्चेन भी जल-युद्धका चित्र तय्यार करनेके लिये रूससे आर्थर-बन्दर आये थे। ग्राण्ड डिउक और यह वृद्ध चित्रकार दोनों ही आज मेकराफके जहाज पेट्रोपावलस्कमें सवार थे। पेट्रोपावलस्कके पीछे पीछे पवोदा, पोलटावा आदि जङ्गी जहाज और नाविक, डायना, आसकोल्ड प्रभृति अव्वल दरजेके छोटे जङ्गी जहाज बन्दरसे बाहर निकले। यह सब जहाज कवायदके साथ पंक्ति बांध—पूर्व्वोक्त बयान जहाजको अपनी पंक्तिमें मिला—गोले चलाते जापानी छोटे बेड़ेकी ओर झपटे।

यह छोटा जापानी बेड़ा सेनापति देवके अधीन था। पहले ही लिख चुके हैं, कि रूसी बेड़ेको भुलावेमें डाल अपने पीछे लगा खुले समुद्रमें निकाल लाना इस बेड़ेका प्रधान काम था। रूसी बेड़ेको अपनी ओर आता देख थम थमकर गोले मारता देवका बेड़ा पीछे हटने लगा। समुद्रपर कोई साढ़े सात कोस जापानी बे[illegible] पीछे हटा और रूसी बेड़ा आगे बढ़ा। इस अवसरमें

बिना तारके तार द्वारा देवने टोगोको रूसी बेड़ेके बन्दर छोड़ आगे बढ़नेकी खबर दी। रूसी बेड़ेके प्रधान नौ-सेनापति मैकराफके मनमें उस समय बड़ी बड़ी आशायें उत्पन्न हो रही थीं। मैकराफने आर्थर-बन्दर पहुंचनेके बाद बारंबार अपने सम्राट्को तार दिया था,—"अब देर नहीं है; शीघ्र ही मैं जापानी बेड़ेको परास्त करनेका शुभसमाचार आपकी सेवामें भेजूंगा।" मैकराफने देखा, कि आज वह सुअवसर आप ही आप उपस्थित हुआ है। उन्हें विश्वास हुआ, कि आंधीमें भटककर या और किसी तरह यह छोटा जापानी बेड़ा अपने प्रधान बेड़ेसे पृथक हो इधर आ निकला है। थोड़ी ही देरके बाद यह बेड़ा रूसी बेड़ेसे बरसते हुए गोलों द्वारा चकनाचूर हो जायेगा। इस बेड़ेका नाश होते ही जापानका प्रधान बेड़ा आप ही आप निर्बल हो जायेगा और उसपर [illegible] एक निर्बल जापानी बेड़ेको तोड़फोड़ डालनेमें क्या देर —

गया ; किसीका दोष नहीं,—विधिकी चिरन्तनी लीला ही ऐसी है।

दिन कोई ६ बजे बेतारके तार द्वारा देवका भेजा पूर्व्वोक्त समाचार टोगोको मिला। कहते हैं, कि अत्यन्त धीर गम्भीर होनेपर भी टोगो यह समाचार पा कुछ चञ्चल हो उठे थे। आपने तुरन्त अपने प्रधान बेड़े को लङ्गर उठा घटनास्थलकी ओर द्रुत गतिसे चलनेकी आज्ञा दी। महाबलसम्पन्न जापानी बेड़ा सागर-वक्ष विदीर्ण करता रूसी बेड़े की ओर दौड़ा। उस समय दिनकरका प्र..ाश बढ़ रहा था और सूर्य्यरश्मि समुद्र-जलपर छाया कुहरा क्रम क्रमसे मिटा रही थी। जिस समय जापानी बेड़ा रूसी बेड़े के समीप पहुंचा, उस समय कुहरा बहुत कुछ साफ हो गया था और दूर दूरका दृश्य धुंधला धुंधला दिखाई देने लगा था। सुचतुर मेकराफने पहले हीसे सन्तरी बैठा दिये थे। उन्हें दूर, समुद्रजलसे कुछ ऊपर काले बादलका एक टुकड़ा दिखाई दिया। यह क्या है? कुहरेके भीतर यह काले बादलका टुकड़ा कहांसे आया? सन्तरी उत्सुकतापूर्व्वक निगाह जमा दूरबीनसे उस बादलके टुकड़े को देखने लगे। ज्यादा देरतक देखना नहीं पड़ा,—दूसरे ही क्षण दिखाई दिया, कि जापानका जबरदस्त बेड़ा धूंआ फेंकता वायुगतिसे रूसी बेड़ेकी ओर दौड़ा आता है। मेकराफको खबर मिली; मेकराफके पैरतलेसे मट्टी निकल गई। जबरदस्ती उन्हें विश्वास करना पड़ा, कि टोगोने कौशलजाल रच रूसी बेड़े को नष्ट करना चाहा है। एक क्षणमें रम-

नन्दनकानन, नेत्रोंके समक्षसे तिरोहित हुआ;

इसके लिये दुःख प्रकाश करनेका भी अवसर नहीं है। सूर्य्यदेवने कुहरा घटा तोगोके मनस्काम होनेमें बाधा और रूसी बेड़ेको आत्मरक्षा करनेका सुअवसर दिया है। पछतावेमें पड़ यह सुअवसर परित्याग करनेसे फिर कभी न मिलेगा। इसलिये डेवराफने चटपट अपने जहाजोंको बन्दरकी ओर बेतहाशा भागनेकी आज्ञा दी। जिस द्रुत गतिसे रूसी बेड़ा जापानी जहाजोंका पीछाकर रहा था; उसी द्रुत गतिसे भागकर आत्मरक्षा करनेमें प्रवृत्त हुआ।

दिन कोई साढ़े दश बजे सागर वक्षनी यह सङ्गी जहाजोंकी कतारकी समाप्तिके समीप पहुंची। रूसी जहाज क्रम क्रमसे

रूस-नौ-सेनापति।



मेकराफ।

अपने किलोंके समीप पहुंच रहे थे और जापानी जहाज रूसी जहाजोंका पीछा छोड़ अपनी द्रुत गति मन्द कर रहे थे। नौ-सेनापति मेकराफका जहाज पेट्रोपावलस्क जापानी छोटे बेड़े का पीछा करनेके समय जिसतरह सबसे आगे था; बन्दरकी भागनेमें भी वह उसीतरह सब जहाजोंसे अगाड़ था।

बन्दरके मुहानेसे कोई एक मीलके फासिलेपर पहुंच मन्दमति ही पेट्रोपावलस्कने साथकी तारपेडो-नावोंको सबसे पहले बन्दरमें प्रवेश करनेका सङ्केत किया। कवायदके साथ तारपेडो-नावें बन्दरमें घुसने लगीं। मेकराफ चाहते थे, कि तारपेडो-नावें जब बन्दरमें पहुंच चुकें, तब पहले पेट्रोपावलस्क और उसके पीछे क्रमान्य छोटे बड़े जङ्गी जहाज यथाक्रम और यथानियम बन्दरमें घुसें।

बन्दर समीप देख कितने ही रूसी जहाजोंके सिपाही प्रायः अपना अपनी अपनी जगहसे हटकर जहाजके भोजनागारमें वा नाश्ता करने लगे थे। प्रधान नौ-सेनापति मेकराफ पेट्रोपावलस्क जहाजकी सबसे ऊपरवाली मंजिलकी चोटीके बरामदेमें खड़े थे। जहाजके कप्तान याकोव्लेव, ग्राण्ड ड्यूक सिरिल, ग्राण्ड डिउकके मुसाहिब और [illegible]

विशालाकार पेट्रोपावलस्क एक जगह ठहर डगमगाने लगा। दो मिनटके भीतर भीतर यह सब हुआ; इसके उपरान्त पेट्रोपावलस्क एक क्षणमें जलगर्भमें समा गया; जितने आदमी उस पर सवार थे, जहाजके साथ वह सब भी जलमग्न हुए। डूबते हुए मनुष्योंकी एक अन्तिम चीखसे दिशायें परिपूर्ण हुईं; जल और स्थलके रूसियोंमें हाहाकार मच गया।

रुकीं चप्सटीर गवाहने इस दुर्घटनाका जो विवरण प्रकाशित किया है, उसका मर्म इसतरह है,—"एकाएक पेट्रोपावलस्कके अगले भागमें दाहने सफेद धुआं छा गया; दो शब्द हुए और समस्त जहाज भूरे नारङ्गी रङ्गके धुयेंसे आच्छादित हो गया। जहाजके किसी आदमीने चिल्लाकर कहा,—"ओह साइड" यानी जहाजका प्रशस्त पार्श्व। दूरबीनसे देखनेसे पेट्रोपावलस्ककी ऊपरी मञ्जिलकी कितनी ही छोटी छोटी चीजें नीचे गिरती दिखाई दीं। अगला मस्तूल टुकड़े टुकड़े हो गया और आगकी लपटें जगह जगहसे निकलती दिखाई दीं मेरी चारो ओर जितने जङ्गी जहाज थे, उनके अधिरोही समस्वरसे चिल्ला उठे,—"जहाज डूब रहा है।" पेट्रोपावलस्क डूबने लगा; पहले उसका अगला भाग डूबा; इसके डूबते ही जहाज किसी कदर दाहने करवट झुक गया। अगला भाग डूबनेके बाद अगला मस्तूल डूबने लगा; इस मस्तूलके ऊपरका चक्कर अभीतक दिखाई देता है; धुआं निकलनेकी बड़ी बड़ी चिमनियोंसे पानी निकल रहा है; क्रमशः यह सब भी डूब गये। अब पिछला मस्तूल भी डूबने लगा; मस्तूलकी नीचेकी लोहेकी चलतपर्जी बड़ी बड़ी तोपें डूबने लगीं; इनके साथ साथ

जहाजका पिछला भाग भी डूबने लगा। जहाज अगले भागसे डूबने लगा था, इसलिये उसका पिछला भाग पानीसे कुछ ऊंचा हो गया। पिछले भागके पेंदेमें जहाज चलानेकी चरखी दिखाई दी, जो अबतक जोरे जोरे घूम रही है। पिछले भागमें कितने ही मनुष्य जलमें कूदते या जहाजसे लटककर समुद्रकी ओर छिपते दिखाई दिये। अब आग ज्यादा फैल गई है और डूबते हुए पिछले भागमें आग ही आग दिखाई देने लगी है। एकबार जोरसे आग धधकी और इसके उपरान्त सब समाप्त हो गया। पेट्रोपावलस्क डूब गया; काला धूंआ हवामें मिल गया।"

बचानेका समय कहां था? दो मिनट--१ मी २० पल--क्या बहुत बड़ा समय है? बड़ी चेष्टा करनेपर भी रूसी तारपेडो नावें जहाजके प्रत ग्रस्त मनुष्योंसे सिर्फ तीस आदमियोंको प्राणरक्षा कर सकीं। जिन आदमियोंकी रक्षा हुई; उनमें प्रायः सब सिपाही थे; सिर्फ ग्राण्ड डिउक साइरिल उल्लेख-योग्य थे। पहले ही लिखा जा चुका है, कि साइरिल मेकारफके पास ऊपरकी मञ्जिलमें बरामदेमें खड़े थे। मेगजीन फटनेसे ऊपरी मञ्जिलको जो धक्का लगा, उससे साइरिल अचेत हो बरामदेसे उड़कर समुद्रमें जा पड़े। जलकी शीतलतासे उन्होंने चैतन्यलाभ किया और अच्छे पैराक होनेकी वजह पैरना आरम्भ किया। इस अवसरमें एक तारपेडो नावने उनके पास पहुंच उन्हें जलसे निकाल लिया। जहाजके गण्य मान्य लोगोंमें सिवा साइरिलके और कोई न बचा; मेकारफ, कप्तान, सफटगट, चित्रकार वेरेश्चेगिन इत्यादि इत्यादि सभी डूब गये।

इस भयङ्कर दुर्घटनाकी वजह आरथर-बन्दरके सामनेके रूसी बेड़ेमें घोर विश्रृङ्खला उपस्थित हुई। हरेक जहाजको अपनी चारो ओर माइनका भूत दिखाई देने लगा और हरेक जहाज अपनी चारो ओरकी भयकल्पित माइन तोड़नेके लिये गोले बरसाने लगा। जिस जहाजको जिधरसे राह मिली, वह उधर होके बन्दरमें घुसा। जो जिस चीजसे जितना डरता है, वह चीज उतना ही उसके सामने आती है। भयङ्कर माइनोंसे बचनेकी बड़ी चेष्टायें की गईं; किन्तु वही भयङ्कर माइन बन्दरमें घुसते हुए रूसके बड़े जहाजोंमें सबसे बड़े जहाज पबेदाके ... टकरा गई। भयङ्कर शब्द हुआ; पबेदाके पेंदेका कुछ अंश

रह गया। लोगोंने आशङ्का की, कि जो दुर्घटना अभी हो चुकी है, वही फिर होना चाहती है : पवेद्रा भी डूबना चाहता है। किन्तु ऐसा नहीं हुआ ; पवेद्राको मेगजीनमें आग नहीं लगी ; उसका एञ्जिन भी खराब नहीं हुआ। सिर्फ उसके पेंदेमें छेद हुआ, जिससे जहाजमें पानी भरने लगा। देखते देखते जहाजके निम्नभागका तीन खण्ड जलसे भर गया। पवेद्रा अपने एञ्जिनके बलसे शीघ्र शीघ्र बन्दरमें घुसा और छिछले जलमें पहुंच बैठ गया। जो जहाज या नावें बन्दरके बाहर रह गई थीं, वह सभी शीघ्र पीछे बन्दरमें आईं। इसके उपरान्त दोनों टरपिडो नष्ट भाग गये। अपने बेड़ेको संकट [illegible] आरथर-बन्दरकी [illegible] [illegible] [illegible]।

१३वीं अपरेलको यह दुर्घटना हुई; १४वीं और १५वीं अपरेलको टोगोके बेड़ेने फिर आरथर-बन्दरके सामने पहुंच बन्दरपर गोला-वृष्टि की। १५वींको आरथर-बन्दरसे कुछ दूर पीजनकी खाड़ी और डालनी-बन्दरपर भी गोला-वृष्टि की। डालनी-बन्दरके किलेकी तोपें अन्तमें जापानी गोलोंका जवाब देनेमें अक्षम होकर निस्तब्ध हो गईं। टोगोके लाख लाख उत्तेजित करनेपर भी रूसी बेड़ा बन्दरसे नहीं निकला। १५वींकी सन्ध्याको लौटनेके बाद टोगोका बेड़ा कई दिनोंतक बन्दरके सामने नहीं गया। इस अवसरमें ये अफसर रूसी बेड़ेकी अफसरीका प्रबन्ध किया गया। नौ-सेनापति स्क्रडलाफ आरथर-बन्दरवाले बेड़ेके प्रधान नौ सेनापति निर्व्वाचित हुए। उनके रूससे आरथर-बन्दर पहुंचनेतक रूसके बड़े लाट स्वयं अलकजिफने आरथर-बन्दर पहुंच रूसी बेड़ेका तत्त्वावधान किया।



था। हम नहीं जानते, कि दोनोंमें कौन बात सत्य है; किन्तु दोनोंका फल एक है; रूसी बेड़े का पता जापानी बेड़े को न लगा। जिस समय युद्ध आरम्भ हुआ था, उस समय बलडीवष्टक-बन्दरका समुद्र शीताधिक्यसे जमकर बरफ बना हुआ था; बड़े कष्टसे बरफ तोड़—राह बना बन्दरमें जहाज आ जाते थे। किन्तु जिस समयका हाल हम लिखने चले हैं, यानी अपरैलके चौथे सप्ताह बन्दरकी जमी हुई बरफ पिघल चुकी थी और बन्दरमें जहाज निर्विघ्न आजा सकते थे। इस समय बलडीवष्टक-बेड़े के चारों जहाज रोसिया, ग्रोमोबोय, रूरिक और बोगाटिर बन्दरमें मौजूद थे। बेड़े के प्रधान नौ-सेनापति बदल दिये गये थे। बारन ष्टाकलबर्गके बदले जेसेनको यह पदभार समर्पण किया गया था।

२३ वीं अपरैलको नौ-सेनापति जेसेन सुअवसर देख कई तारतपेडो-नावोंके साथ अपना बेड़ा ले बलडीवष्टकसे बाहर निकले। दूसरे दिन बेड़े का रूरिक जहाज बलडीवष्टक लौट गया और समूचा बेड़ा कोरियाके जेनसान-बन्दरकी ओर चला। जेनसान-बन्दरका हाल इससे पहले लिखा जा चुका है। यह बन्दर कोरिया प्रायद्वीपके पार्श्वमें है। जापानने, अपनी पहली फौजका एक अंश जिस समय पिङ्गयाङ्गके निकट चिम्नाम्पो-बन्दरमें उतारा था, उसी समय दूसरा अंश इसी जेनसान-बन्दरमें किनारे पहुंचाया था। जेनसानसे चलकर जापानी फौजें पिङ्गयाङ्ग पहुंची थीं। नौ-सेनापति जेसेनके अधीन बलडीवष्टकवाला बेड़ा तारपेडो-नावोंके साथ २३वीं अपरैलको प्रा[illegible] इसी जेनसान-बन्दरके सामने पहुंचा।

इस बेड़ेको देख जापान-अधिकृत जेनसान-बन्दरमें किसी कदर हलचल पड़ गई। तुलको अफसर तुरन्त नावसे और दिये गये। गेरिसनमें कोई आठ सौ जापानी सिपाही नितान्त बड़ी तोपें थीं; सिपाही जल्द जल्द कमरकस तोपें झपटपट लिये तय्यार हुए। किन्तु जेनसनका बेड़ा वीरोचित सम्मुख संग्रामके ग्रहण होने नहीं; बल्कि निरीह-निरस्त्र सौदागरी या बारबरदारीके जापानी जहाजोंका शिकार खेलने गया था। जेनसानके बाहर कोई ढाई कोसके फासिलेपर रूसी बेड़ेने लङ्गर डाला और आपसी दो तारपीडो-नावें बन्दरकी ओर भेजीं। उस समय

किमलिन' नामक नये कारतूसके बलकी परीक्षा की थी। इस दोनों जहाजके डुबानेके बाद रूसी बेड़ेका हौसला और भी बढ़ा। जिस समय भी उत्साहके साथ शिकार ढूंढनेमें प्रवृत्त हुआ। का गेनसान-बन्दरके एक भारबरदारीके जहाजका नाम किउ-शिउ मारू था। आज सवेरे जिस समय जेसेनका बेड़ा गेन-सान-बन्दर पहुंचा, उससे कुछ पहले यही किउशिउ जहाज ३७ नम्बर पलटनका एक टुकड़ा लाद उत्तर-कोरियाके सिंशोनके लिये रवाना हुआ था। आज दिनभर सिंशोन और उसके निकटस्थ समुद्रतटोंमें सिपाहियोंके गश्त लगा चुकनेपर सन्ध्या समय उन्हें फिर सवार करा किउशिउ गेनसान-बन्दरकी ओर लौट रहा था। रात कोई ग्यारह बजे किउशिउको कई जहाज दिखाई दिये। किउशिउने अनुमान किया, कि जापानी सेनापति कामीमुराका बेड़ा है; गश्त लगा रहा है। किन्तु किउशिउका यह अनुमान भ्रमात्मक था; उस समय कामीमु-राका बेड़ा वहांसे बहुत दूर था; जिस बेड़ेको किउशिउने देखा, वह वही रूस-नौ-सेनापति जेसेनका बेड़ा था।

किउशिउ मारूको देख जेसेनने अपने सौभाग्यकी प्रशंसा की। जेसेनने आज्ञा दी; सङ्केत द्वारा किउशिउ जहाज तुरन्त ठहरा दिया गया। एक डिस्ट्रायर-नाव किउशिउके पास गई और जहाजके कप्तान तथा कुछ व्यापारियोंको किउशिउसे उतार रूसके जङ्गी जहाज रोसियापर लाई; वहां वह सब कैद कर लिये गये। किउशिउ जहाजमें खबर भेजी गई,—"तुमलोग एक घण्टेके भीतर या तो आत्मसमर्पण करो या मरनेके लिये तैयार हो जाओ।" फौजके प्रधान अफसर मेजरने अपनी

कप्तान सिपाहियोंसे सलाह ली, कि कौनसी बात स्वीकार करना चाहिये। प्रायः सब सिपाहियों और अफसरोंने एकस्वर और एकमनसे मरना ही श्रेष्ठ बताया। कितने ही लोग तिनाना हुए जिन की संगिनोंपर दांत पीसने लगे। एक युवक लफटण्ट के शरीरपर इतने जख्म हुए, कि एक छोटीसी गाड़में अपने जापान नाम सिपाही के सामने खड़े प्रबल-पराक्रान्त रूसी सैन्य पर आक्रमण करने चले।

यह घाटा समाप्त हुआ; जापानी सिपाहियोंने वकलता गौरव घटैका कोई चिह्न नहीं दिखाया। रात होते ही रूसी देखेंगे किलाशिरपर एक लालपंजा छोड़ा गया, जो

तारपेडो छूटा। खूब ताककर निशाना लगाया गया था; इसलिये वह जहाजके मध्यभागपर बैठा। इस बार तारपेडो फटा और उसने जहाजको बीचसे फाड़ दिया। पानीकी धारा जहाजमें घुसने लगी और जहाज शीघ्र शीघ्र डूबने लगा। जापानी अफसरोंने अपनी कोठरीमें जा गिरफ्तारीकी लाञ्छनासे बचनेके लिये आत्महत्या कर ली; इसी भयसे सिपाहियोंने एक दूसरेको गोलीसे मार डाला। जो सिपाही बचे, वह अन्ततक रूसियोंपर गोली बरसाते रहे। जहाज जब डूब गया और उन सिपाहियोंके घुटनेतक जल पहुंच गया, तब उन्होंने बन्दूक चलाना बन्द किया और समुद्रमें कूद आत्महत्या की। जहाज डूबता देख कितने ही सिपाही नावोंमें सवार हो जातीय गीत गाते किनारेकी ओर चले। रूसियोंने इनका भागना देख इनपर गोले चलाये। कई नावें गोलोंकी चोटसे डूब गईं और कई बचकर निकल गईं। ऐसी ही एक नाव एक सरजण्ट और छैतीस सिपाहियोंके साथ बयोटो पहुंची और एक नाव आठ सिपाही, छः कुली और तीन सौदागरोंको ले रेयोको। जहाज डूबनेपर रूसी बेड़ेने जिन डूबते हुए आदमियोंको जलसे निकाला, उनमें कुली थे—मल्लाह थे; किन्तु सिपाही एक भी नहीं था। फौजके दो कपतान, दो प्रथम लफटनण्ट, एक द्वितीय लफटनण्ट, एक निशानबरदार, तिहत्तर सिपाही और दो दुभाषिये मारे गये या डूब गये; जो बचे, वह निकल भागे; रूसियोंकी कैदमें नहीं आये।

. लिख चुके हैं, कि जापानी नौ-सेनापति कामीमुरा

अपना बेड़ा ले कोरियाके इसी आखातमें दौरा किया करते थे। इसी अवस्थामें जिस समय रूसी बेड़ा यह शिकार खेल रहा था, उस समय उनका बेड़ा कहां था? जिस रूसी बेड़ेके पानेके लिये वह बहुत दिनोंसे उत्सुक थे, वही रूसी बेड़ा उनके घरमें कुछ उत्पात कर रहा था, उस समय कमीमुरा रूसी बेड़ेका उत्पात रोकते क्यों नहीं थे? असलमें कमीमुराको रूसी बेड़ेके कोरियाके किनारे आनेकी खबर ही नहीं थी। जिस समय रूसी बेड़ा बलाडीवस्टकसे शिकार खेलनेको निकला, ठीक उसी समय कमीमुरा अपना बेड़ा ले रूसी बेड़ेको ढूंढने बलाडीवस्टककी ओर रवाना हुए। बीचमें दोनो बेड़े आपसमें नामहीके वास्ते एक दूसरेको छकानेसे निकल गये; किन्तु समुद्रपर छाये हुए घने कुहरेके कारण एक बेड़ा दूसरेको देख न सका। कमीमुरा यदि रूसी बेड़ेको देख लेते, तो रूसी शिकार खेलनेका मौका न देते।

बचता व्लाडीवष्टक लौट गया। इधर कमीमुराका बेड़ा जब बेनसान-बन्दर पहुंचा, तब उसे रूसी बेड़ेके आनेका समाचार मिला और यह समाचार भी मिला, कि शरणदारोका जहाज कित्रशिउ मारू अभीतक लौटा नहीं है। इस समाचारसे कमीमुराके हृदयको जो आघात लगा, उसका वर्णन किया जा नहीं सकता। दुःख, क्षोभ, रोष, आत्मग्लानि आदिसे उनकी छाती फटने लगी। वह अधीर हो जापानी बेड़े और कित्रशिउ मारूकी खोजमें निकले। राहमें उन्हें कित्रशिउ मारूके सिपाहियोंकी कई नावें मिलीं; कमीमुराने सिपाही अपने जहाजमें चढ़ा उनसे कित्रशिउ मारूके शोचनीय परिणामका हाल सुना। कामीमुरा और सुक्तेदोके साथ रूसी बेड़ेकी ताकमें लगे। रूसी बेड़ेकी पूर्वोक्त कारवाईसे कमीमुरा कलङ्कित हुए; जापानमें उनकी बड़ी कुकीर्त्ति फैली। जापानके साधारण लोगोंने कहा,—"कमीमुरा अपने पदके योग्य नहीं; अबतक उन्होंने मारकेका एक काम न किया; इसके बदले असावधानी की; जिसके फलसे जापानियोंकी बड़ी क्षति हुई।" यह सब जानकर कमीमुराके मनस्तापकी अवधि न रही। वह तनमनसे व्लाडीवष्टकवाले रूसी बेड़ेकी ताकमें लगे। उन्होंने स्थिर किया, कि जिस दिन रूसी बेड़ा मिल जायेगा, उसी दिन मैं अपना कुल कलङ्क मिटा दूंगा।



बचता व्लाडीवष्टक लौट गया। इधर कमीमुराका बेड़ा जब जेनसान-बन्दर पहुँचा, तब उसे रूसी बेड़ेके आनेका समाचार मिला और यह समाचार भी मिला, कि शत्रुओंका जहाज कि उशिउ मारू अभीतक लौटा नहीं है। इस समाचारसे कमीमुराके हृदयको जो आघात लगा, उसका वर्णन किया जा नहीं सकता। दुःख, क्षोभ, रोष, आत्मग्लानि आदिसे उनकी छाती फटने लगी। वह अधीर हो जापानी बेड़े और कि उशिउ मारूकी खोजमें निकले। राहमें उन्हें कि उशिउ मारूके सिपाहियोंकी कई नावें मिलीं; कमीमुराने सिपाही अपने जहाजमें चढ़ा उनसे कि उशिउ मारूके शोचनीय परिणामका हाल सुना। कमीमुरा और सुसौईके साथ रूसी बेड़ेकी ताकमें लगे। रूसी बेड़ेकी पूर्वोक्त कारवाईसे कमीमुरा कलङ्कित हुए; जापानमें उनकी बड़ी अकीर्त्ति फैली। जापानके साधारण लोगोंने कहा,—"कमीमुरा अपने पदके योग्य नहीं; अबतक उन्होंने मारकेका एक काम न किया; इसके बदले असावधानी की; जिसके फलसे जापानियोंकी बड़ी क्षति हुई।" यह सब जानकर कमीमुराके मनस्तापकी अवधि न रही। वह तनमनसे व्लाडीवष्टकवाले रूसी बेड़ेकी ताकमें लगे। उन्होंने स्थिर किया, कि जिस दिन रूसी बेड़ा मिल जायेगा, उसी दिन मैं अपना कुल कलङ्क मिटा दूँगा।



जाता है, उस जगह भी ऐसा ही एक नुकीला ऊंचा लट्ठा खड़ा रहता है। एक लट्ठेसे निकली हुई बिजलीकी लहर दूसरे लट्ठेमें जैसे ही लगती है, वैसे ही उस दूसरे लट्ठेकी जड़में लगे यन्त्रोंमें विशेष प्रकारके सङ्केत होने लगते हैं। यही सङ्केत अक्षर हैं, जिनसे एक जगहका समाचार दूसरी जगह पहुंचता है। इस विवरणसे पाठक यह बात समझ सकेंगे, कि एक लट्ठेसे जब लहर निकलती है, तब वह सीधी दूसरे लट्ठेकी ओर नहीं जाती, बल्कि वायुमण्डलमें लट्ठेकी चारों ओर चन्द्राकारमें फैलती है। ऐसी अवस्थामें इस लहरकी पहुंचके भीतर जितने बेतारके तारवाले लट्ठे आयेंगे, उन सबसे यह लहर टकरायेगी और उन सबके नीचे लगे यन्त्रमें यह एक ही तरहका सङ्केत करेगी। बेतारके तारमें यही एक बड़ा दूषण है; इसके यन्त्र द्वारा भेजा हुआ समाचार वांछित-अवांछित सभी स्थानोंमें अनायास ही पहुंच सकता है। इस युद्धके समय विलायती अखबार टाइम्सके संवाददाताने अपने जहाज हैमूनमें ऐसा ही एक यन्त्र लगवा नौ-सेनापति टोगोके जापान भेजे कितने ही समाचार राह हीमें पा विलायत भेज दिये थे; इसपर जापान-सरकार किसी कदर असन्तुष्ट हुई थी। १५वीं अपरेलके आक्रमणके बाद टोगोको विश्वस्त सूत्रसे खबर मिली, कि आरथर-बन्दरमें रूसियोंने भी बेतारके तारका यन्त्र लगा हमारे भेजे समाचारोंको राह हीमें मालूम कर लेनेकी व्यवस्था की है। यह समाचार पा रूसियोंको बहकानेके लिये टोगो नकली समाचार भेजने लगे। कभी समाचार भेजते,—"आज मैं आरथर-बन्दरके अमुक अंशपर आक्रमण करूंगा।" कभी भेजते,—"कल मैं शत्रुको अमुक

उन्हें ध्वंसमस्त करूंगा।" रूसी इन समाचारोंको पा टोगोका आक्रमण व्यर्थ करनेके लिये कष्टसाध्य नाना प्रकारकी तय्यारियां करते और अन्तमें देखते, कि टोगोका आक्रमण न होनेसे उनकी सब तय्यारियां मट्टी हुईं।

२७वीं अपरेलको रूसियोंको बेतारके तार द्वारा टोगोंका जापान भेजा समाचार मिला,—"आज रात में आरथर-बन्दरपर आक्रमण करूंगा।" रूसी इस आक्रमणके लिये तय्यार हुए। आज टोगोने इस नकली समाचारको बहुत कुछ असली बना देनेका सामान किया। टोगोकी आज्ञासे दो तारपेडो-नावोंने आरथर-बन्दरके सामने पहुंच लकड़ीके कतने ही तखते जलपर पैरा दिये। इन तखनोंपर लट्ठे गड़े थे, जिनपर तेलमें डूबी बड़ी बड़ी मशालें खुंसी थीं। तारपेडो-नावोंने इन मशालोंको आग लगा दी। जलती हुई मशालोंवाले तखते समुद्रकी लहरोंके साथ साथ आरथर-बन्दरकी ओर बढ़ चले। रूसियोंने इन्हें जङ्गी जहाजोंका बेड़ा समझ इनपर गोला-वृष्टि आरम्भ की। जिस समय रूसी, मशालोंपर गोले बरसा रहे थे, उस समय दोनो तारपेडो-नावें मशालोंकी आड़में आगे बढ़ जिस जगह देकराषका जहाज पेट्रोपावलस्क डूबा था, उस जगह माइन डुबाने लगीं। अन्तमें रूसियोंने जब इन नावोंको देख इनपर गोले बरसाये, तब यह अपने बेड़ेकी ओर वापस गईं। इस दिनसे टोगोकी काररवाई देख रूसी समझ गये; कि टोगो हमें भ्रममें डालनेके लिये बनावटी खबरें दिया करते हैं। रूसियोंने विचार किया, ऐसी अवस्थामें कौनसी टोगोका बेतारके तार द्वारा भेजा कौन समाचार सत्य समझा जावे और कौन असत्य।

१ ली मईका यालू किनारेका स्थलयुद्ध लिखा जा चुका है। पाठक जानते हैं, कि इस युद्धमें जापानियोंकी विजय हुई और रूसी पूर्णरूपसे पराजित हुए। टोगो मानो इस युद्धके फलाफलकी प्रतीक्षा ही कर रहे थे। १ ली मईको यालूकिनारेका युद्ध समाप्त हुआ; २ री मईको टोगोने आरथर-बन्दरका मुहाना पूर्णरूपसे बन्द करनेका विराट् आयोजन किया। ऐसा आयोजन पहले दो वारमें एकवार भी हुआ नहीं था। अबके आठ जहाज मुहानेमें डुबानेके लिये चुने गये। आठो कोई १७ हजार ९ सौ १३ टनके थे; बहुत पुराने नहीं थे; कोई जहाज अट्ठारह वर्षका पुरान था और कोई पचोस वर्षका। हरेक सौदागरीके जहाजपर एक शीघ्र शीघ्र गोला मारनेवाली तोप चढ़ा दी गई थी। आठो जहाजमें अफसर और सिपाही सब मिलाकर १ सौ ५८ जापानी सवार हुए। किसी किसीने हिसाब लगाकर दिखाया है, कि इस वारके इस कामके लिये जापान-सरकारने कोई तीस लाख रुपये नकद व्यय किया।

२री मईको रातको आठो सौदागरीके जहाज आकागी और चोगाई नामक गनबोट और तारपेडो-नावोंके जबरदस्त बेड़ेके साथ आरथर-बन्दरको ओर रवाना हुए। रवानगीके समय दक्षिण-पूर्वीय वायु बह रही थी; जो रात भीगनेके साथ साथ बढ़ती गई और अन्तमें जिसने प्रचण्ड तूफानका रूप धारण किया। समुद्रमें पर्वत जैसी लहरें उठने लगीं; लहरोंके आपसमें टकरानेसे भयङ्कर शब्द उत्थित होने लगा। समुद्रकी ऐसी अवस्थामें बेड़ेका दलबादलके साथ चलना असम्भव था। जिन जहाज या नावको जिधरसे राह मिली, वह जहाज या नाव

इधर होसे चल । कपतान हयाश्री इस बेड़ेके प्रधान अफसर थे ; उन्होंने तूफानकी वजह बेड़ेमें यह विशृङ्खला उपस्थित देख बेड़ेको लौटनेकी आज्ञा दी। किन्तु तूफानके जोर और लहरोंके शोरसे कपतानकी बात कपतान होतक रह गई; बेड़े तक पंहुचने न पाई। बेड़ेका हरेक जहाज अपनी धुनमें आगे ही बढ़ता गया। किसी किसीका यह भी कहना है, कि बेड़ेके हरेक जहाजने कपतानकी बात सुन तो मही, किन्तु उसके अनुसार काम करनेकी जरूरत नहीं देखी। जैसे जैसे बेड़ा आगे बढ़ा, वैसे वैसे बेड़ेका हरेक जहाज एक दूसरेसे दूर दूरतर होता गया; किन्तु दूर होनेपर भी अपने उद्देश्यमें सब जहाज एक दूसरेके बहुत ही समीप थे।

सबसे पहले दोनो तारपेडो-नावें आरथर-बन्दरके मुहानेके समीप पहुंचीं। उन्हें देखते ही रूसियोंने उनपर गोला वृष्टि आरम्भ की। तारपेडो-नावें गोलोंसे बचनेके लिये आरथर-बन्दरसे कुछ हटकर खड़ी हुईं। ऐसे ही समय पहला जहाज मिकाशा मारू आरथर-बन्दरके समीप पहुंचा। तोपोंकी गर्जन ध्वनि सुन जहाजके कपतानने ख्याल किया, कि अन्यान्य जहाज उस समयसे पहले ही आरथर-बन्दरके मुहानेमें पहुंच अपना काम कर रहे हैं और रूसी तोपें उन्हीं जहाजोंपर गोले बरसा रही हैं। यह ख्यालकर मिकाशा मारूको उसके सिपाही अत्यन्त शीघ्रतापूर्वक बन्दरके मुहानेमें ले गये। सर्च-प्रकाश चारो-ओर उज्ज्वल ज्योति फैला रहा था, जिससे जापानी और रूसी दोनोंको बड़ा सहारा मिल रहा था। रूसी सामरिकोंका जहाज देख उनपर गोले बरसा रहे थे और जापानी आरथर-

बन्दरका मुहाना देख इधर उधर न भटक ठीक उसी ओर जा रहे थे। रूसियोंने मिकावा मारूको देखते ही उसपर गोला-वृष्टि आरम्भ की। किन्तु मिकावा मारू इस गोला-वृष्टिसे तनिक भी विचलित न हो सीधा मुहानेमें घुस गया और मुहानेके बीचमें पहुंच फटकर डूब गया। मिकावा मारूके फटते ही उसपरके कुल सिपाहियों और अफसरोंने एकस्वरसे हर्षध्वनि की और जहाजके साथ साथ डूब गये। इसके बाद ही अन्यान्य जहाजोंका तांता लग गया। मिकावा मारूके बाद द्रुत गतिसे दूसरा जहाज सकूरा मारू आया और मुहानेके भीतर एक किनारे लङ्गर डाल डूब गया। इसके भी सिपाही और अफसर इसके साथ साथ डूब गये। इसका एक सिपाही इस डूबे हुए जहाजके जलसे बाहर निकले मस्तूलपर चढ़ गया। सिपाहीके हाथमें एक लालटेन थी। सिपाही मस्तूलपर चढ़ लालटेन हिला अन्यान्य जापानी जहाजोंको मुहानेकी राह दिखाने और मुहानेमें बुलाने लगा। इस सिपाहीकी प्राणरक्षाके लिये जापानी तारपेडो-नावोंने नावें भेजीं, जो सिपाही तक पहुंच न सकीं; राह हीमें रूसी गोलोंकी बाढ़से उड़ गईं; एक गोलेसे वह जापानी सिपाही भी उड़ गया। मिकावा मारूके बाद ही सकूरा मारू, तोतोमी मारू, येदो मारू, ओतारू मारू, सगामी मारू, ऐकोकू मारू और असागावो मारू या तो बन्दरके मुहानेमें पहुंचकर या मुहानेके समीप पहुंचकर डूब गये। छः जहाज बन्दरके मुहानेमें डूबे; ऐकोकू मारू एक मारइनसे टकरा मुहानेसे कई हाथ दूर डूबा, असागावो मारू गोलोंकी चोटसे इधर ही मुहानेमें कुछ फासिलेपर डूबा।

इस युद्धके सम्बन्धमें नौ-सेनापति टोगोने अपनी सरकारको जो रिपोर्ट भेजी थी, उसका मर्म्मांश इसतरह है,—"ऐसे ही पिछले दोनो कामोंकी अपेक्षा इस काममें हमारी क्षति अधिक हुई; कारण, अबके मौसम बहुत खराब था और शत्रु ने हमारी रुकावटके बड़े सामान किये थे। सौदागरीके चार जहाज ओतारु मारु, सगामी मारु, सकूरा मारु और असागासी मारुका, एक भी अफसर या सिपाही न बचा। इन चारो जहाजोंके सिपाहियों और अफसरोंने अपना कर्त्तव्य पालन करनेमें जिसतरह जान दी, उसका हाल वही जानते होंगे, किन्तु उनके जान देनेकी कहानी सरकारी जल-सैन्यके इतिहासमें चिरस्मरणीय रहेगी। सौदागरीके जहाजोंके साथ तारपेडो और डिस्ट्रायर-नावोंका जो बेड़ा था, उसने शत्रु की अग्नि-वृष्टिसे तो सामना किया ही; साथ साथ तूफान और ऊंची ऊंची लहरोंसे भी खूब टक्करें लीं। तारपेडो-नावोंने सौदागरीके जहाजोंके साथ साथ डुबानेमें कुछ आधिसे अधिक अफसरों और सिपाहियोंकी प्राणरक्षा की। ६७ नम्बर तारपेडो-नावका भापका नल फट जानेसे तारपेडो-नाव निकम्मी हो गई थी; ७० नम्बर तारपेडो-नाव ६७ नम्बरको अपने पीछे बांध खींच लाई। तीन जहाजी सिपाही मारे गये। डिस्ट्रायर-नाव अकी-वनावा रुसियन गोलेसे खराब हो गया और एक जहाजी सिपाही मारा गया। तारपेडो-नाव हयाडुसाका एक सिपाही गोलेसे उड़ा दिया गया।"

जिन लोगोंने इस दिनका यह हाल अपनी आंखों देखा है, उनका कहना है, कि शत्रु से इनकी अपेक्षा, इनका दिनरात

संसारमें कहा दिखाई नहीं देती। सौदागरोंके जहाज तेजीके साथ मुहानेके भीतर पहुंचते थे, लङ्गर डाल थे और फटकर डूब जाते थे। जहाजका प्रत्येक सिपाही, प्रत्येक अफसर जहाज डूबनेके समय तनिक भी विचलित न होता था; जहाजपर जिस जगह खड़ा रहता था, उसी जगह खड़ा खड़ा डूबता और मर जाता था। जो सिपाही या अफसर किसी तरह बचकर तूफानी समुद्रकी लहरोंमें पड़ किनारे पहुंचता था, वह गिरफ्तारीके अपमानसे बचनेके लिये आत्महत्या कर लिया करता था। किसी डूबे हुए सौदागरोंके जहाजका एक सिपाही लहरोंमें पड़ किनारेकी एक चट्टानपर जा लगा। उसे वहां देख रूसी सिपाहियोंने घेर लिया और उससे आत्मसमर्पण करनेके लिये कहा। किन्तु आत्मसमर्पण करनेके बदले जापानी सिपाही तमञ्चा लेकर झपटा और रूसियोंकी गोली खा मरकर गिर गया। और एक डूबते जापानी सिपाहीको रूसियोंने पानीसे निकाला; जैसे ही जापानीने चैतन्यलाभ किया, वैसे ही अपना गला घोंट आत्महत्या कर ली। जलसे किनारे लगे एक जापानी अफसरको घेरकर रूसियोंने कैद करना चाहा; जापानी अफसरने जब अपने बचावका कोई उपाय न देखा, तब आत्महत्या कर ली; कहा,—"कैद होनेपर मैं अपना कलङ्कित मुंह अपने देशको कैसे दिखाऊंगा?"

जापानियोंका यह काम किसी कदर अमानुषिक हुआ; इसे कुछ नहीं करता। अर्द्धनिशा है; प्रचण्ड तूफान बह रहा है; निस्तेफल्ग सुगभीर अम्बुधिजलसे पर्वत-प्रमाण तरङ्गें उठ [illegible] भयङ्कर शब्द उत्थित कर रही हैं; नीचे नाग-

रहा यह हाल ; ऊपर आकाश बहस सहस बन्दूकोंकी बाढ़से छूटी गोलियों और शत शत कलदार बड़ी बड़ी तोपोंसे छूटे फटकर हजारों टुकड़े होनेवाले गोलोंसे लाल लाल ; क्या ही त्रासदायक अगणित असुविधाजनक वाहियात समय और स्थान था ! किन्तु ऐसे समय और ऐसे ही स्थानमें उपस्थित हो जापानियोंने कितनी निर्भीकताके साथ क्या ही अप्रतिम काम कर डाला ! कितने ही जहाजोंके जापानी सिपाहियोंने प्राणरक्षाके लिये एक ढंगकी हिलाचलतक अच्छा न खयाल किया ; वह अपने जहाजोंके साथ इसतरह डूबे मानो मनुष्य नहीं, पाषाणक खम्भ थे। फिर, कुछ जहाजोंके सिपाही और अफसरोंने निकल भागनेकी चेष्टा भी की। कहते हैं, कि इसतरह भागते हुए जापानी अफसरोंकी कितनी ही नावें गोला-गोलियोंके तूफानमें पड़ न जाने कहां बह गईं । जापानियोंके लिये यह बड़ा ही कठोर समय उपस्थित था ; किन्तु इस कठिन परीक्षाके पेंचमें पड़कर भी वीरचूड़ामणि जापानियोंने अपनेको धैर्यच्युत होने न दिया। बहुसंख्यक जापानियोंमें इसके भी प्राणरक्षाके लिये कायरताकी कार-गुजार किसी तरहका चिह्न न दिखाया। कितने ही अफ़-सर और सिपाही शत्रुओंके पक्ष इस सुनिश्चित मृत्युसे भी पहलेमें समर्थ हुए। जितनी ही नावोंपर जब बाढ़ पड़ने लगी, तब उनके सवार अफसर और सिपाही पानीमें इसतरह धाराकार गिरे, जिस तरह मोती लगनेपर

उठ बैठे और वायुगतिसे अपनी नाव अपनी डिस्ट्रायर-नावोंकी ओर ले चले; और आश्चर्य्य-चकित रूसियोंके सावधान हो तोपोंका रुख नावोंकी ओर फेरनेसे पहले अपनी डिस्ट्रायर-नावोंके आश्रयमें पहुंच गये।

सब मिलाकर एक सौ, उनसठ अफसर और सिपाही पूर्व्वोक्त आठो सौदागरीके जहाजमें थे। इनमें छत्तीस सकुशल वापस पहुंचे, अट्ठारह आहतावस्थामें पहुंचे, पन्द्रह अपने साथियोंके सामने मारे गये और नब्बे गुम हो गये। जितने गुम हुए, उनमें तीसको रूसियोंने बचाया, जिनमें पन्द्रह कैद होनेसे पहले मर गये। इस हिसाबसे कोई अस्सी मनुष्योंने आत्मबलि दी; पन्द्रह अफसर हताहत हुए; इस अपूर्व्व अलौकिक आत्मबलिका फल यह हुआ, कि उस दिन प्रातःकाल कोई चार बजेतक आरथर-बन्दरका मुहाना पूर्णरूपसे बन्द हो गया; रूसका विपुल-बलशाली बेड़ा एक मुद्दतके लिये बन्दरमें कैद हो गया।

जिस समय यह अपूर्व्व काम हो रहा था, उस समय रूसके ओटवाशगी गिलियाक और ग्रोमियाश्ची नामक जङ्गी जहाज भीतर बन्दरके मुहानेके समीप आ जापानी बेड़ेपर गोले बरसा रहे थे। ओटवाशगी जहाजमें अस्थायी प्रधान नौ-सेनापति अलकसिफ स्वयं मौजूद थे। जनरल गिलिन्स्की और कप्तान एबेरहार्ट प्रधान स्थल-सेनापति कुरोपाटकिनके अफसर-दलमें शरीक थे; उन दिनों बड़े लाट नौ-सेनापति अलकसिफसे कोई परामर्श करनेके लिये आरथर-बन्दर आये थे। कौतूहलाक्रान्त हो जापानियोंका युद्ध देखनेके लिये अपने सरदारों और इष्टमित्रोंके साथ अलकसिफके जहाजमें सवार हो गये थे। कहते हैं, कि यह

नवागन्तुक और नौ-सेनापति अलकसिफ स्वयं जापानियोंकी साहसिकता और निर्भीकता देख अवाक् हुए; उनके मनमें स्वतः वीर जापानियोंकी प्रशंसा करनेकी प्रवृत्ति उत्पन्न हुई। इसी युद्धके सम्बन्धमें रूसके टाइम्स 'नवन्नया'ने रूसी जुबानसे कहा था,—"चीनाओंकी कापुरुषताकी वजह हम जापानियोंका वीरत्व जान न सके।" मुमकिन इतनी ही होती, तो हर्ज नहीं था; किन्तु रूसके लिये इससे भी अधिक असुविधाजनक बात यह हुई थी, कि जिस समय रूसी जापानियोंको पहचाननेमें धोखा खा रहे थे, उस समय जापानी रूसियोंको बहुत अच्छी तरह पहचान रहे थे।

१ ली मईको यालू नदीका युद्ध हुआ; २री मईको टोगोने आरथर-बन्दरका मुहाना बन्द किया; ५वीं मईको आरथर-बन्दरको स्थलकी ओरसे भी घेर लेनेकी तय्यारी हुई। इस दिन आरथर-बन्दरसे उत्तर-पूर्व कोई तीस कोसके फासिलेपर पीजुवो स्थानमें जापानियोंके कितने ही बारबरदारीके जहाज किनारे लगे, जिनसे फौजें उतरने लगीं। रूसियोंने जापानी फौजोंके उतरनेमें कुछ बाधा उपस्थित की; किन्तु वह टिकी नहीं; रूसी चटपट मार भगाये गये। साथ साथ पीजुवोके रूसी अधिवासी और सरकारी कर्मचारी रूसी डाकखाने आदिके साथ नगर खाली कर चल दिये। इस दिन सन्ध्यातक कोई दस हजार जापानी सिपाही पीजुवोमें उतरे। पीजुवोसे दो शाहराहें दो प्रधान स्थान गई हैं। एक शाहराह क्वांटुङ्ग प्रायद्वीप पारकर पुलान्टीन नगर और वहांसे किन्चाऊ नगर गई है और दूसरी राह सिनसी नगर गई है, जिससे आरथर-बन्दर सिर्फ [illegible] होते हैं।

मईकी सन्ध्या समय जापानी फौजके दो बड़े टुकड़े तय्यार हुए। एक टुकड़ा पुलानटीन या निउचवांगकी ओर भेजा गया और दूसरा टुकड़ा किनचौकी ओर ।

दूसरे दिन ६ठीं मई को सवेरे कोई आठ बजे पीशुओमें जापानी फौज उतरनेका समाचार आरथर-बन्दर पहुंचा। न जाने कैसे इस समाचारके साथ ही साथ नौ-सेनापति अलकसीफके पास आरथर-बन्दर परित्याग करनेका सरकारी फरमान भी पहुंच गया। अलकसिफ बिटगटको अपना पदभार दे एक स्पेशल ट्रेन द्वारा आरथर-बन्दरसे चले गये। उनके साथ साथ ग्राण्ड डिउक बोरिस तथा बहुसंख्यक रूसी अफसर भी आरथर-बन्दरसे चले गये। आरथर-बन्दर नगर पहले हीसे प्रायः खाली हो गया था; जो गिनतीके लोग रह गये थे, आज सन्ध्या समय वह भी एक पसिञ्जर-ट्रेनमें बैठ आरथर-बन्दरसे चले।

कहते हैं, कि यह ट्रेन यात्रियोंसे खचाखच भरी थी; जिनमें कोई दो सौ बीमार थे। रात्रिके प्रारम्भिक भागमें जिस समय ट्रेन पूर्व्वोक्त पुलानटीन नगरके पुलानटीन स्टेशनके समीप पहुंच रही थी, उस समय एक कज्जाक सवार घोड़ा उड़ाता ट्रेनके समीप पहुंचा और बारंबार ट्रेन ठहरानेके इशारे करने लगा। ट्रेनकी चाल धीमी होनेपर कज्जाक सवारने चिल्लाकर कहा,—"लौटो,—शीघ्र लौटो! जापानी आते हैं।" विचारकर स्थिर किया गया, कि ट्रेन लौटानेसे बरने आगे बढ़ाना ही अच्छा है; शायद सकुशल निकल जायें। पुलानटीन स्टेशनसे कोई पौन कोस ट्रेनकी ... कोई डेढ़ हजार गज पूर्व एक पहाड़ीपर जापानी दिखाई

दिये। जापानी सिपाहियोंकी बाढ़ दगी; ट्रेनपर गोलियोंकी बौछार हुई। यात्री गाड़ीके फर्शपर लेट गये; दो रूसी सिपाही जख्मी हुए। सिर्फ इन्हीं दोनोंके माथे गई; जापानी सिपाहियोंकी बन्दूकोंकी दूसरी बाढ़ दगनेसे पहले ट्रेन द्रुत गतिसे निकल गई। इसके बाद तो जापानियोंने लाइनके पास पहुंच उसे कई जगहोंसे काटकूट दिया; आरथर-बन्दरका रेल-पथ खण्डित हुआ। इसी दिन आरथर-बन्दरके प्रधान सेनापति स्टोसेलने बन्दरमें निम्नलिखित घोषणा प्रचार की,—

"गत ३०वीं और १ली मईको शत्रु यालू नदी पार हुआ; हमारी फौजें यालू किनारेसे पीछे हटकर पहलेसे चुने मोरचोंमें बैठ गई"।

"कल शत्रुने लियावटुङ्ग प्रायद्वीपके पीशुवो स्थानमें अपनी फौज उतारी है; इसीके साथ साथ हमारा कार्य आरम्भ हुआ है। इसमें सन्देह नहीं, कि शत्रुकी जापानी फौजें हमारी रेल-लाइन तोड़ देंगी और हमारे सिपाहियोंको पीछे हटा सुदूर पूर्वके रूसके इस सुदृढ़ स्थान आरथर-बन्दरको स्थलकी ओरसे भी घेर लेंगी।

"मेरा आदेश है, कि वीर योद्धा सहायक फौज आनेतक इस स्थानकी रक्षा करें। आशा है, कि इस परीक्षाके समय मेरे अधीन सिपाही अपना कर्तव्य पालनकर रूसका मुखोज्ज्वल करेंगे। इसमें किसी बातपर निर्भर किया जा नहीं सकता; क्योंकि अनहोनी भी हो जाया करती है; इसलिये बन्दरका प्रत्येक निवासी अपने भुजबल और भगवान्के सहारे ही पर भरोसा करे।"

इसी दिन पारथर-बन्दरमें बहुत बड़ी फौजकी कवायद हुई। सेनापति स्टोसेल स्वयं परेडमें मौजूद थे। आपने अन्यान्य उत्साहवर्द्धक बातोंके साथ साथ रूसी सिपाहियोंसे यह भी कहा,—"युद्धने नया रूप प्रकट किया है; भूमिकी ओरसे भी शत्रु, आरथर-बन्दरको धमकी देने लगा है।"

आरथर-बन्दरमें और भी सन्नाटा छाया; और भी उदासी फैली।

अष्टम परिच्छेद।



इस अवसरमें जापानकी पहली फौज क्या कर रही थी? प्रथितयशा विचक्षण रणपण्डित कुरोकी अपने बहुत सबल भीम-विक्रम सिपाहियोंके साथ इन दिनों क्या कर रहे थे? गत १ली मईको यालूकिनारे रूसियोंके दुर्भेद्य व्यूहको वज्रमुष्टिसे मसल चुरमुरकर दूर फेंक देनेवाली जापानकी वही पहली फौज इस समय क्या कर रही थी?

जितने ही लोगोंने अनुमान किया था कि अपना साज-सामान छोड़ भागती तोपें और आहत सिपाही छोड़ जिस बेतरतीबीके साथ यालू किनारेसे रूसी फौज पीछे हटी है, उससे जापानी उसके पीछे ही पीछे रहेंगे और जहां जहां रूसी फौज कदम जमायेगी, वहीं वहांसे उसे मार पीछे हटायेंगे। किन्तु जिन लोगोंने यह अनुमान किया था, उन्होंने अपनी इस कल्पना-पुष्टिके लिये गत नये-पुराने कितने ही युद्ध सम्बन्धी पोथियोंका संग्रह करके नजीर कायम किया था। उन्होंने यह ख्याल नहीं किया, कि

सेनापति कुरोकीके सामनेकी स्थान-वृत्तान्त-विशिष्ट स्थिति इसप्रकार थी,—यालू किनारेके जिस किउलिनचिङ्ग नगरपर उन्होंने अधिकार कर लिया था, उससे एक शाहराह मध्य मञ्चूरियाकी ओर जाती थी। किउलिनचिङ्गसे मञ्चूरियाका लियावयाङ्ग नगर सीधी लकीरमें कोई आठ कोस दूर था। इसी लियावयाङ्ग नगरमें रूसके प्रधान सेनानायक कुरोपाटकिन कोई अस्सी हजार योद्धाओंके साथ अवस्थान करते थे। अरथर-बन्दरसे चली लियावटङ्ग खाड़ीसे होती हुई रूसी रेलकी लाइन लियावयाङ्गको छूती मुकदन, हारबिन प्रभृति रूसी नगरोंकी ओर चली गई थी। लियावयाङ्गसे कुछ ऊपर मुकदन नगरमें सुदूर पूर्वके रूसी बड़े लाट अलकजिफके लाटगद्दीके दफ्तर थे। इससे भी ऊपर उत्तर हारबिन नगर है। हारबिनसे आगे रूस-अधिकृत चीनका मञ्चूरिया समाप्त होता और रूस-राज्य साइबेरिया आरम्भ होता है; आरथर बन्दरसे चली रेल-लाइन इसी साइबेरियासे होती हुई रूस राजधानी सेण्टपिटर्सबर्ग पहुँचती है।

हमारे पाठकोंको उस चिरस्मरणीय १ ली मईके यालू-युद्धकी सन्ध्या याद होगी। पाठकोंको यह भी याद होगा, कि इस दिन यालू किनारेसे हारकर जब रूसी फौज किउलिनचिङ्गके पीछेकी राहसे भागी थी, तब उस भागती हुई फौजको होटसुनङ्ग स्थानमें रोककर जापानी फौजने एक खासा युद्ध किया था और इस युद्धमें बहुतेरे रूसियोंको कैद कर लिया था। इस युद्धके उपरान्त उस दिन जापानी फौज और आगे न बढ़ी। होमसुनङ्गमें जापानी फौजका अगला भाग प्रतिष्ठित हुआ।

१ ली मईकी सन्ध्या जैसे जैसे प्रगाढ़ हुई, वैसे वैसे मेघशून्य

सुनिर्म्मल आकाशमें चन्द्रदेव उज्ज्वलसे उज्ज्वलतर हुए। चन्द्रके प्रकाशमें वर्द्दीवालोंने रुपहली पोशाक धारण की। ऐसे समय यालूकिनारे दिनभरके श्रमानुषित श्रमसे क्लान्त वीर जापानी सिपाहियोंने क्लान्तिनिवारणके लिये विश्राम करना आरम्भ किया। जो जहां पहुंचे थे, वहीं उन्होंने कमरें खोलीं। फर्श नहीं था—शय्या नहीं थी—तकिया-तोशक कुछ भी नहीं था; शस्पावृत हरिद्वर्ण ऊंचीनीची जमीन थी; जापानी सिपाही कमरें खोल उसी जमीनपर बैठे। यह ऊंचीनीची जमीन ही जापानी सिपाहियोंके लिये मखमल मखमल सुन्दर सामानोंसे सजी शय्याकी अपेक्षा भी अधिक सुन्दर थी। उस दिन कोटि कोटि शय्याशायी व्यक्तियोंको वह आनन्द प्राप्त हुआ न होगा, जो घासभरी हुई ऊसर भूमिमें जापानी वीरोंको प्राप्त हुआ। वह यह सोच आनन्द-पुलकित थे, कि जिस भूमिपर आज वह बैठे हैं, उसे उन्होंने अपनी देहका रक्त बहा अपने बहुसंख्यक साथियोंकी बलि दे प्रबलपराक्रान्त शत्रुके हाथसे छीना है; फिर इससे जापानी वीरोंका हृदय नाना सुखकल्पनाओंसे परिपूर्ण था, जिसका

सेनापति कुरोकीके सामनेकी स्थान-वृत्तान्त-विशिष्ट स्थिति इसप्रकार थी,—यालू किनारेके जिस किउलिनचिङ्ग नगरपर उन्होंने अधिकार कर लिया था, उससे एक शाहराह मध्य मञ्चूरियाकी ओर जाती थी। किउलिनचिङ्गसे मञ्चूरियाका लियावयाङ्ग नगर सोधी लकीरमें कोई साठ कोस दूर था। इसी लियावयाङ्ग नगरमें रूसके प्रधान सेनानायक कुरोपाटकिन कोई अस्सी हजार योद्धाओंके साथ अवस्थान करते थे। अरथर-बन्दरसे चली लियावटङ्ग खाड़ीसे होती हुई रूसी रेलकी लाइन लियावयाङ्गको छूती मुकदन, हारबिन प्रभृति रूसी नगरोंकी ओर चली गई थी। लियावयाङ्गसे कुछ ऊपर मुकदन नगरमें सुदूर पूर्वके रूसी बड़े लाट अलकजिफके लाटगरीके दफतर थे। इससे भी ऊपर उत्तर हारबिन नगर है। हारबिनसे आगे रूस-अधिकृत चीनका मञ्चूरिया समाप्त होता और रूस-राज्य साइबेरिया आरम्भ होता है; अरथर बन्दरसे चली रेल-लाइन इसी साइबेरियासे होती हुई रूस राजधानी सेण्टपिटर्सबर्ग पहुंचती है।

हमारे पाठकोंको उस चिरस्मरणीय १ ली मईके यालू-युद्धकी सन्ध्या याद होगी। पाठकोंको यह भी याद होगा, कि इस दिन यालू किनारेसे हारकर जब रूसी फौज किउलिनचिङ्गके पीछेकी राहसे भागी थी, तब उस भागती हुई फौजको होटमुतङ्ग स्थानमें टोककर जापानी फौजने एक भयानक युद्ध किया था और इस युद्धमें बहुतेरे रूसियोंको कैद कर लिया था। इस युद्धके उपरान्त उस दिन जापानी फौज और आगे न बढ़ी। होमसुतङ्गमें जापानी फौजका अगला भाग प्रतिष्ठित हुआ।

१ ली मईकी सन्ध्या जैसे जैसे प्रगाढ़ हुई, वैसे वैसे मेघशून्य

सुनिर्म्मल आकाशमें चन्द्रदेव उज्ज्वलसे उज्ज्वलतर हुए। चन्द्रके प्रकाशमें धरित्रीदेवीने रुपहली पोशाक धारण की। ऐसे समय यालू किनारे दिनभरके अमानुषिक श्रमसे क्लान्त वीर जापानी सिपाहियोंने क्लान्तिनिवारणके लिये विश्राम करना आरम्भ किया। जो फौजें जहां पहुंची थीं, वहीं उन्होंने कमरें खोलीं। फर्श नहीं था—शय्या नहीं थी—तकिया-तोशक कुछ भी नहीं था; शस्यावृत हरिद्वर्ण ऊंचीनीची जमीन थी; जापानी सिपाही कमरें खोल इसी जमीनपर लेटे। यह ऊंचीनीची जमीन ही जापानी सिपाहियोंके लिये बहुत बहुत सुन्दर सामानोंसे सजी शय्याकी अपेक्षा भी अधिक सुखद थी। उस दिन कोटि कोटि शय्याशायी व्यक्तियोंको वह आनन्द प्राप्त हुआ न होगा, जो [illegible] हुई उस समर भूमिमें जापानी वीरोंको प्राप्त हुआ। वह सब वीर आनन्द-पुलकित थे, कि जिस भूमिपर आज वह लेटे हैं, उसे उन्होंने अपनी वीरता रक्त बहा अपने बन्धु स्वजन साथियोंकी बलि दे महापराक्रान्त शत्रुके हाथसे छीना है; [illegible] इनके जापानी वीरोंका हृदय नाना तरङ्गभावनाओंसे परिपूर्ण था, जिसका

थीं, जखमी तड़पकर हाय हाय कर रहे थे। कहते हैं, कि कितने ही दुर्वृत्त चीनाओंने जङ्गस्थलमें जहां जहां पहरा नहीं देखा, वहां वहांके मृत वीरोंका यथासर्वस्व अपहरण किया। जापानी अफसर यह समाचार पा अत्यन्त क्रुद्ध हुए और उन्होंने आज्ञा दे दी, कि भविष्यतुमें जो चीना इस घृणित कार्यमें प्रवृत्त पाया जाये, वह उसी समय गोलीका निशाना बनाया जाये। इस आज्ञाके फलसे कितने ही चीना मारे गये; किन्तु जिसका जो स्वभाव है, वह उसके जीके साथ है। खैर; जापानी अफसरोंने जब गिरदावरी और पहरेका बन्दोबस्त किया, तब आहतोंको अस्पताल भेजने और मृतकोंकी अन्त्येष्टि क्रियाकी व्यवस्था भी की। सन्ध्योपरान्त प्रायः सब लाशें दफन कर दी गईं। जिस यत्न और सम्मानके साथ जापानियोंकी मृतदेह कब्रमें उतारी गई, उसी यत्न और सम्मानके साथ रूसियोंकी भी। इसीतरह जिस परिश्रम और सहानुभूतिके साथ जापानी आहतोंकी सेवा-शुश्रुषाकी गई; उसी परिश्रम और सहानुभूतिके साथ रूसी आहतोंकी भी। रूसी आहतोंने जापानियोंकी इस कृपाका हाल अपनी सरकारको लिखा था और रूस-सरकारने जापानियोंसे इस कामके लिये उनकी बड़ी प्रशंसा की थी। १ ली मईकी रात्रिके अगले भागमें युद्धस्थलकी कुल दीपशिखायें मिटा दी गईं। रातभर एक ओर जापानी सिपाही विश्राम करते रहे और दूसरी ओर बड़े अफसरोंके खीमोंसे छोटे अफसरोंके नाम आज्ञापत्र निकाले जाते रहे।

चेङ्गकी ओर बढ़ने लगीं। जापानी फौजकी चाल बहुत ही धीमी थी। इसका एक प्रधान कारण था। १ ली मईको यालूके युद्धमें जापानने रूसको परास्त किया; किन्तु इस युद्धसे कोई ग्यारह दिन पहले ही जापानकी पहली फौजके प्रधान सेनापति कुरोकीने स्थिर कर लिया था, कि अमुक दिन जापानी फौजें रूसियोंको परास्तकर अमुक दिनसे आगे बढ़ेंगी। इसी सिद्धा-न्तके अनुसार युद्धसे कई दिन पहले २०वीं अपरेलको कुरोकीने सेनापति नसाकोके अधीन एक जापानी फौज फेङ्गव्हाङ्गचेङ्गकी ओर भेज दी थी। वीजूसे पैंतीस मील उत्तर-पश्चिम यालू नदी पारकर वह ही पेचीले पार्वत्य पथसे नसाकोकी फौज फेङ्गव्हाङ्ग-चेङ्गकी ओर जा रही थी। यालू नदीके युद्धकी समाप्तिके उपरान्त सेनापति कुरोकीको खबर मिली, कि नसाकोकी फौज अभीतक फेङ्गव्हाङ्गचेङ्ग पहुंची नहीं है; दो चार दिनोंके बाद पहुंचेगी। कुरोकी चाहते थे, कि हमारी और नसाकोकी फौज एक ही समय फेङ्गव्हाङ्गचेङ्ग पहुंचे, इसी विचारके अनुसार उन्होंने अपनी फौजकी चाल बहुत धीमी कर दी थी।

६ठी मईको कुरोकीकी फौजका अगला भाग फाङ्गचेङ्गचेङ्ग पहुंचा। फाङ्गचेङ्गचेङ्ग छोटासा एक गांव यालू तटके चिउलिन-चिङ्गसे कोई दस मीलके फासिलेपर अवस्थित है। जापानी फौजके आगे आगे गिरफ्तारीके नज़ारोंका दल रहता था। फाङ्गचेङ्गके

गई। फाङ्गहेङ्गचेङ्ग और फेङ्गहाङ्गचेङ्गके बीचकी राह पहाड़ी है। इस राहकी दोनो ओर दो ऊंची पर्व्वतश्रेणी है; एककी ऊंचाई दो हजार फुट है और दूसरेकी तीन हजार फुट। फाङ्गहेङ्गचेङ्गसे आगे दोनोंके बीच कोई दो हजार फुटका अलगाव है। इसी अलगावके बीचसे फेङ्गहाङ्गचेङ्गकी ओर राह गई है। जैसे जैसे यह राह आगे बढ़ी है, वैसे ही वैसे दोनो पर्व्वतमालायें परस्पर समीपसे समीपतर होती गई हैं। यहांतक, कि कोलीमोन स्थानमें दोनो पर्व्वतश्रेणियां प्राय: मिल गई हैं; बीचमें बहुत थोड़ासा फासिला है, जिससे राह निकल गई है। इस स्थानकी प्राकृतिक स्थितिके अनुसार ही इसका नाम कोलीमोन यानी 'कोरियाका द्वार' रखा गया है। कहते हैं, कि प्राचीन कालमें इस 'द्वार' की एक ओर कोरिया-राज्य था और दूसरी ओर चीनका मञ्चूरिया राज्य। यह द्वार ही मानो दोनो साम्राज्यका सीमास्थल था। जापान-सेनापति कुरोकीको आशङ्का थी, कि इस द्वारको प्रकृतिने सुदृढ़ बनाया है; रूसी यहां ठहर जापानियोंको द्वारमें घुसनेसे रोकेंगे। द्वार या कोलीमोनके इर्दगिर्द बने मोरचों और पुश्तोंको देख स्पष्ट जान पड़ता था, कि यहां रूसियोंने जापानियोंका रोकनेकी तय्यारी की थी; किन्तु जापान-सेनापति आसाकीके आपने पीछे पहुंच जानेका समाचार पानेकी वजह हो, या कुरोपाटकिनका विचार बदल जानेकी वजह हो या कुरोकीकी फौजको बहुत शक्तिकी वजह हो—मतलब यह, कि किसी वजह—अन्तमें रूसी फौजोंने इस जगह जापानियोंकी राह नहीं रोकी, वह अपनी मोरचाबन्दी [illegible] र इसको छोड़ पीछे हट गये; जापानी फौजोंने

अपनी इच्छासे पर्व्वतमाला गुंजा इस द्वारमें प्रवेश किया।

इस द्वारके बाद राह प्रशस्त हो गई थी; पर्व्वतमालाने राहका साथ छोड़ दिया था। जापानी फौजें धीरे धीरे इस राहसे फेङ्गकाङ्गचेङ्गकी ओर बढ़ने लगीं। फेङ्गकाङ्गचेङ्ग सामने दिखाई दिया। कुरोकी को दृढ़ निश्चय था, कि फेङ्ग-काङ्गचेङ्ग नगरमें कोई मारकेकी लड़ाई होगी। फेङ्गकाङ्गचेङ्ग नगरपर एक पताका उड़ रही थी। कुरोकीकी फौजके अफस-रोंने दूरबीनसे देखा, तो उन्हें जान पड़ा, कि वह पताका रूसियोंकी नहीं,—स्वयं जापानियों होकी थी। जापानी समझ गये, कि उनसे पहले सेनापति स्त्राकी फेङ्गकाङ्गचेङ्ग पहुंच गये और उन्होंने अपनी पताका नगरके उच्चभागमें गाड़ दी थी। दमभरमें यह समाचार कुरोकीकी समूची फौजमें फैल गया। कुरोकीकी फौज हर्षनाद करती दौड़ी और फेङ्गकाङ्गचेङ्गमें घुस अपने स्त्राकीकी फौजसे मिल गई। यह स्थान भी बेलड़े-भिड़े जापानियोंके हाथ लगा। कुरोकीकी फौजके आनेसे कुछ घण्टे पहले स्त्राकीकी फौजने फेङ्गकाङ्गचेङ्ग पहुंच देखा था, कि उसे रूसी खाली कर गये थे। जो माल-असबाब साथ ले जा सके थे, उसे साथ ले गये थे; जो साथ ले नहीं जा सके थे, उसे जला गये थे; बहुतसा माल-असबाब जला भी नहीं

सिवा इसके टेलिग्राफके यन्त्र, कुदाल-फावड़े और नाना प्रकारके यन्त्र भी जापानी फौजके हाथ आये।" इससे प्रमाणित होता है, कि रूसी सिपाहियोंने बड़ी ही घबराहटके साथ फिङ्गक्वाङ्गचेङ्ग खाली किया था।

फिङ्गक्वाङ्गचेङ्ग नगर जनसंख्याके हिसाबसे उतना बड़ा न होने-पर भी सामरिक विचारसे बहुत बड़ा और बड़ा ही प्रयोजनीय है। कारण, यह नगर मञ्चूरियाके बहुत कुछ भीतर है और इस जगह तीन शाहराहें आकर एकत्र हुई हैं। इनमें एक राह तो वही है, जिससे होकर जापानी फौज फिङ्गक्वाङ्गचेङ्ग पहुंची, फिङ्गक्वाङ्गचेङ्गसे यानी कितुलिनचिङ्ग-फिङ्गक्वाङ्गचेङ्गवाली राह। दूसरी राह लियाओयाङ्ग, मुकदन प्रभृतिकी ओर गई है और इस नगरसे तीसरी राह पश्चिम ओर लियाओटुङ्ग प्रायद्वीपकी ओर गई है।

उधर रूस-सेनापति कुरोपाटकिनका सदर स्थान मुकदनके समीपका नगर लियाओयाङ्ग बना और इधर जापान-सेनापतिका सदर स्थान नवविजित फिङ्गक्वाङ्गचेङ्ग नगर। कौशलो कुरोपाट-किनने अपनी फौज फैला रखी थी। उनकी फौज प्रायः अर्द्धचन्द्राकारमें फैली हुई थी। इस अर्द्धचन्द्राकारका दाहिना सिरा लियाओटुङ्ग प्रायद्वीपका और झुकता हुआ मुकदन-आरथर-बन्दर रेलके हैचोङ्ग रेल-ष्टेशन और उसके निकटस्थ उसी नामके नगरतक फैला हुआ था और बायां सिरा पहले सिरेसे एक सीधी लकीरमें कोई पैंतालीस या पचास मील दूर मोतीनलिङ्गमें था। प्रधान रूस-सेनापतिका सदर या हेडक्वार्टर पूर्वोक्त अर्द्धचन्द्राकार ...वाली रेखाके मोतीनलिङ्गसे पीछे मुकदनकी तरफ कोई

चालीस मील पूर्व-उत्तर लियावयाङ्ग नगर था। इठी अप्रेलको जिस फेङ्गहाङ्गचेङ्ग नगरको जापानियोंने खालिधारमुक्त किया था, उससे चलो प्राइराइ इसी मोतीनलिङ्गके समीपस्थ मोतीनलिङ्ग नामक गिरि-सङ्कटसे होती हुई कुरोपाटकिनके सदर लियावयाङ्ग नगरकी ओर गई थी। मोतीनलिङ्ग गिरि-सङ्कटको राह बड़ी ही विकट है; गिरि सङ्कटकी एक ओर यदि कोई फौज कुछ कलदार तोपें ले मोरचे बांध बैठ जाये, तो बड़ीसे बड़ी फौजको गिरि-सङ्कटमें प्रवेश करने न दे। इस गिरि-सङ्कटमें कज्जाकोंकी जबरदस्त फौज बैठी थी और इस फौजसे फेङ्गहाङ्गचेङ्ग नगर और उसकी जापानी फौज कोई पचास मीलके फासिलेपर थी। उस समय इन दो दुर्दम्य फौजोंके बीच बस इतना ही फासला था।

रणपण्डित जापान-सेनापति कुरोकीने फेङ्गहाङ्गचेङ्ग नगरपर अधिकार कर जगद्विख्यात कुरोपाटकिनको पूर्वोक्त ढङ्गसे सैन्य-स्थापनकर युद्धके लिये अवस्थान करते देख कुरोकीने अपनी फौजकी अग्रगति और भी धीमी कर दी और कुरोपाटकिनकी अर्द्धचन्द्राकारमें पड़ी फौजके सामने अपनी फौज भी छोटी छोटी अर्द्धचन्द्राकारमें फैला दी। कई दिनोंमें यह

बदल चुकी थी; शिशिर बीती, वसन्त ऋतु उपस्थित थी। कड़कड़ाती शीतके बदले हलकी गर्मी असर जमाने लगी थी। बरफ गल चुकी थी; राहें कीचड़-पानीसे साफ थीं; फौजोंके लम्बे लम्बे धावेके लिये मैदान बहुत कुछ साफ हो गये थे। सिपाही जाड़ेकी ऊनी वजनी वरदियोंके बदले हलकी सूती वरदियां छांट चुके थे। दोनों फौजोंको परस्पर युद्ध करनेके लिये ऋतुपरिवर्त्तनसे कितनी ही सुविधायें हो गई थीं; फिर भी, दोनों लड़ती नहीं थीं; सामना होनेपर भी दोनों अपने अपने मोरचे मजबूतकर आक्रमण करनेके दावघात ढूंढ रही थीं।

गया थी जिस ओरसे आई थी, उसी ओर वापस गई। जापानी फौजके आनेपर जो रूसी सिपाही ताशीचाव नगरसे भाग गये थे, वह फिर नगरमें लौट आये। मानो कुछ हुआ ही नहीं। जिस समय जापानी फौज केचौमें उतरी, उस समय निउच्वांग-की रूसी फौजमें भी बड़ी घबराहट फैली। सिपाही और अफसर जल्द जल्द नगर परित्याग करनेके लिये तय्यार हुए। अफसर मारे बौखलाहटके व्यर्थकी आज्ञायें देते और दूसरे ही क्षण उनका खण्डन करते। जापानी फौजके लौटनेका समाचार पाते ही निउच्वांगमें भी शान्ति फैली; रूसियोंके उड़े हुए होश ठिकाने आये। उस समय जापानी फौजका यह गमनागमन रूसियोंकी समझमें न आया। पीछे मालूम हुआ, कि अन्यस की जापानी फौजें किनारे उतरीं, उनकी ओरसे रूसियोंका ध्यान हटानेके लिये ही जापानी फौज केचौ पहुंची थी।

१८ वीं मईको जापानी फौजका चौथा टुकड़ा कोरियाकी खाड़ीके तालूवान स्थानमें उतरा। जिन बारबरदारीके जहाजोंमें फौज थी, उनके साथ नौ-सेनापति टोगोयाके जहाजोंका पहरा था। टोगोया वही नौ-सेनापति हैं, जो डालू नदीकी कराईमें गनबोट और टारपिडो-बोटोंका बेड़ा ले यालू नदीमें पहुंचे थे और जिन्होंने बड़ी ही योग्यताके साथ रूसियोंके बहुत सख्त इलाके बन्दरोंको निकम्मा बना दिया था। तालूवानमें

बाद ही बारबरदारीके जहाजोंसे जापानी फौज उतरने लगी। बड़ी ही सुशृङ्खलाके साथ जापानी फौज जहाजोंसे किनारे उतरी। जापानी फौजका प्रधान भाग किनारे ठहरा और उसके छोटे छोटे दलने दूर दूरतक फैल गये। ऐसा ही एक दस्ता ताकूशानसे कुछ फासिलेपर अवस्थिति कर रहा था। सन्ध्या कोई सात बजे थे। ऐसे समय इस दस्तेके सिपाहियोंको कज्जाकोंका एक रिसाला ताकूशानकी ओर धीरे धीरे बढ़ता दिखाई दिया; शायद जापानी फौजकी गतिविधि देखने जाता था। दस्ता धीरे धीरे अपनी जगहसे चला और एक चक्कर काट कज्जाक-रिसालेके पीछे पहुंच गया और पंक्ति बांध रिसालेके पीछे लौटनेकी राह रोक दी। कज्जाक-रिसाला जापानी दस्तेकी यह कारवाई देख बहुत ही भय-विह्वल हुआ। पहले उसने जमकर युद्ध करनेकी इच्छा की; किन्तु पलटनसे लड़नेमें रिसाला सदा क्षतिग्रस्त होता है; इसलिये रिसालेने घोड़े भगा पंक्ति भेद भाग जाना ही स्थिर किया। रिसाला भागने लगा; दस्तेकी गोलियां रिसालेपर पड़ने लगीं। रिसालेका एक अफसर और नौ सवार मारे गये; दो अफसर और चार सवार जापानियोंके हाथ कैद हुए; बाकी अफसर और सवार निकल भागे। ताकूशानकी फौज इसतरह कज्जाक-रिसालेको भगा फैलकर क्रम क्रमसे आरथर-बन्दरकी ओर बढ़ने लगी।

जापानी फौजकी खासकी ओरसे आरथर-बन्दरपर चढ़ाई करनेकी फिक्रमें छोड़ हम इस जगह एक कज्जाक-रिसालेके एक धावे [illegible] लिख देना उचित समझते हैं। जापान-सेनापति

कुरोकीकी पहली फौज, जब यालू नदीकी ओर बढ़ी थी, तब अपने पीछे कोरियामें जगह जगह छोटी छोटी फौजें छोड़ती गई थी। जिन जगहोंमें जापानी फौजें छोड़ी गई थीं, उनमें आनजू अन्यतम था। आनजूका नाम पहले कईबार लिखा जा चुका है। यह स्थान पिङ्गयाङ्गसे कोई ६०।६५ मील उत्तर है। आनजू नगर शहरपनाहके भीतर है। शहरपनाह अगले वक्तोंकी है; मोटे मोटे पत्थरोंसे तय्यार की गई है। अगले वक्तोंमें यह मज़बूत शहरपनाह दुर्भेद्य दुर्गका काम दे सकती थी सही; किन्तु आजकलकी पहाड़ सुरमा बनानेवाली भयङ्कर तोपोंके सामने इस शहरपनाहकी हक़ीक़त किसी गिनतीमें नहीं थी। बड़ी बड़ी तोपोंकी कौन कहे, छोटी छोटी पहाड़ी तोपखानोंकी दमदार तोपें भी उसे सुरमा बना सकती थीं। ऐसी ही शहरपनाहसे घिरे आनजू नगरमें कोई दो सौ जापानी सिपाहियोंकी छोटीसी रक्षक फौज थी। १०वीं मईको प्रातःकाल एक जापानी सन्तरी आनजूकी शहरपनाहपर खड़ा पहरा दे रहा था। ऐसे समय उसे सामनेके मैदानमें दूरसे एक रिसाला आता दिखाई दिया। सन्तरीने भयसूचक ध्वनि की। पाँचों सवारोंने दीवारपर चढ़ कज़ाकोंका रिसाला आता देख लिया। उन्होंने जल्द जल्द तय्यार

रोंको ऐसा मजा चखाना चाहिये, जिससे वह फिर इसतरह धावा करनेका साहस न करें।

याळूकी लड़ाईसे कुछ दिनों पहले ही यह रिसाला याळू किनारेकी रूसी फौजसे जुदाकर कोरियाकी ओर भेजा गया था। रिसाला एक दिनमें पचीस मीलके हिसाबसे धावा मारता कोरियामें जहांतहां चमता फिरता था। रिसालेको खबर नहीं थी, कि १ली मईको याळूकिनारे रूसी फौज किस दुर्दशाके साथ परास्त हुई। उसे यह समाचार यदि मिल जाता, तो शायद वह आनजूकी सामने या उसकी ओर वायुवेगसे अग्रसर होनेका साहस न करता। उसे विश्वास था, कि हमारे साथी याळू-किनारे अटल-अचल बने बैठे हैं और जापानी सिपाही कोटि कोटि यत्न करके भी याळू पार कर नहीं सके हैं। कज्जाक-सवार ज्योंही, आनजूकी शहरपनाहकी दीवारके पास पहुंचे, वैसे ही उनपर जापानी सिपाहियोंकी गोलियां बरसने लगीं। गोलियोंकी चोटसे मरकर कितने ही सवार लोट गये; एक अफसरका भी काम तमाम हुआ। यह देख कज्जाकोंका वेग रुका। वह सब पीछे पल टकर एक आश्रयस्थल [illegible] वहांसे आनजूपर गोलियां बरसाने और समय समयपर यथोचित आक्रमण भी करने लगे। दिनभर और रातभर लड़ाई चलती रही। मुट्ठीभर जापानी सिपाहियोंने शत शत रूसी कज्जाकोंको रोक रखा। अन्तमें जापानी सिपाहियोंको मदद मिली; निकटकी चौकियोंसे जापानी पलटनें आनजू पहुंचीं। ११वीं अपरेलको इन पलटनोंका आगमन देख कज्जाक-रिसाला आनजूके सामनेसे [illegible]सियोंको अपने साथ ले गया; सिरमट सवारोंको

लाशें मैदानमें छोड़ गया। जापानकी ओरके चार सिपाही मारे गये और छः जखमी हुए।

जापानके सामनेसे भागकर यह कज्जाक-रिसाला धावा मारता १८वीं मईको जिनसान-बन्दरसे कोई बीस कोसके फासिलेपर हमयेङ्ग पहुंचा। हमयेङ्ग बस्तीके पास ही हमयेङ्ग-किला है। उस समय किलेमें कोई तीन सौ कोरियन सिपाही थे। कज्जाकोंको देख उनपर कोरियन सिपाही गोलियां चलाने लगे। यहां कज्जाक ज्यादा देरतक न ठहरे। थोड़ी ही देरकी गोली-वृष्टि सह सके और चले गये। दो जगहकी अग्नि-वृष्टिसे परेशान हो अब कज्जाक-रिसालेने कोरिया परित्याग करना ही स्थिर किया। इस अन्तिम घटनाके बाद ही वह कज्जाक-रिसाला कोरियासे निकल न जाने कहां चला गया। किसी किसीने कहा, कि ब्लाडीवस्टक गया; किसी किसीने कहा, कि ब्लाडीवस्टक नहीं; कुरोपाटकिनकी प्रधान फौजसे मिल गया।

दशम परिच्छेद।



डालनी—पक्षपरिवर्त्तन।

१२वीं मईको सुदूरपूर्व्वके बड़े लाट और अस्थायी प्रधान नौ-सेनापति अलकसिफका भेजा तार रूस-राजधानी सेण्टपिटर्सवर्ग पहुंचा,—"डालनी-बन्दरको जहाजोंको गोदियां आदि तोड़ दी गईं।" जो लोग डालनी-बन्दरको जानते थे, वह यह समाचार पा विस्मित हुए।

लियावटुङ्ग प्रायद्वीपके जिस छोटेसे सिरके एक छोरपर आरथर-बन्दर अवस्थित है, उससे कोई दश कोस दूर उसी सिरमें यह डालनी बन्दर बना है। रूसने आरथर-बन्दरको अधिकार-भुक्त करते ही इस डालनी-बन्दरपर निगाह डाली। रूसने स्थिर किया, कि सुदूर-पूर्व्वमें हमारा सर्व्वप्रधान व्यवसाय केन्द्र यह डालनी-बन्दर बने और आरथर-बन्दर उस डालनी-बन्दरका रक्षक जल-स्थलसे दुर्भेद्य सुदृढ़ दुर्ग। इसके बादसे रूसने अपने इसी विचारके अनुसार कार्य्य आरम्भ किया और वर्त्तमान युद्धारम्भसे कुछ पहले ही उसने अपना पूर्व्वोक्त विचार कार्य्यमें परिणत कर डाला था।

सचमुच ही आरथर-बन्दर हर तरफसे दुर्भेद्य दुर्ग और डालनी-बन्दर अच्छा खासा व्यवसायप्रधान नगर बन गया था। आरथर-बन्दरकी दृढ़ताका परिचय पाठक पा चुके हैं, अब यह देखें [illegible] ास डालनी कहांतक और कैसा उन्नत हुआ था।

विलायती अखबार 'डेली टेलिग्राफ'के एक संवाददाताने इस बन्दरके सम्बन्धमें लिखा है,—"कोई और जाति होती, तो इस जलदस्युको अपनी पूर्व्वावस्थामें ही रहने देती और बन्दरकी बसती इसी तरहकी पुरानी-धुरानी धीमी चालसे उन्नत होने देती। किन्तु रूस जाति ऐसा कर नहीं सकती थी। उसने इञ्जीनियरों और वास्तुकुशलोंको भेज भूमिकी पैमाइश कराई और डालनी बनानेका नकशा तय्यार किया। ठेकेदारोंको ठेका दिया गया, कि वह साइबेरियन रेलके छोरपर नकशेके अनुसार सर्व्वाङ्गसुन्दर डालनी-बन्दर और नगर तय्यार कर दें। रूस सम्राट् जारके खजानेका मुंह खुला; कहते हैं, कि सात करोड़ पचास लाख रुपये नक़द इस कामके लिये मञ्जूर किया गया। डालनीमें मजदूरी बहुत सस्ती थी; फिर भी, काम बहुत ज्यादा था; इसीलिये बड़ा खर्चा था। डालनीके आसपास पर्व्वतमालाय और छिछले तथा गहरे जलमें सहस्र सहस्र मजदूर काम करने लगे। छिछला जल गहरा और गहरा जल छिछलाकर डक और उसके आसपास मालगुदाम और दूकानें बनवाई जाने लगीं। जहाज लाने लायक गहरा किनारा बनाया जाने लगा; किनारे किनारे रेल बिछाई जाने लगी। इधर किनारेसे कुछ

तय्यार कराने लगी, जिसमें रूहना लोग अपनी सुकृतिका सुफल समझें और जो नगर अपने सौन्दर्य्यमें सुदूर पूर्वके कुल नगरोंमें श्रेष्ठ हो। बड़ी ही फुरतीके साथ क्रम क्रमसे नगर बनकर तय्यार हो गया।"

ऐसे ही मायानगर डालनी-बन्दरके टूटनेका समाचार पा उसके आविर्भावका हाल जाननेवाले विस्मित हुए। किन्तु इसमें विस्मयाविष्ट होनेका वैसा कोई कारण नहीं था। उस समय रूसका यह स्थिर करना स्वाभाविक था, कि जिस डालनीकी हम रक्षा नहीं कर सकते, उसे शत्रुके हाथ समर्पण करनेके बदले नष्ट कर देना ही भला है। डालनी-बन्दरकी एक ओर जलमें भी युद्धविशारद टोगोके बड़ी जहाज या बड़ी नावें गश्त लगा रही थीं और स्थलमें डालनीके समीप ही जगह जगह जापानकी वीरवाहिनी अवस्थान कर रह थीं। टोगोके बेड़े से किसी तरह रक्षा हो भी सकती थी; किन्तु जापानी स्थल-सैन्यसे डालनी सुरक्षित रखना कठिन था। जापानी स्थल-सैन्य क्रमशः डालनीके समीप होती जाती थी; अमितबलसम्पन्न जापानी किसी दिन एकाएक यदि डालनीपर अधिकार कर लेनेके लिये तय्यार हो, तो उनके अधिकारभुक्त होनेसे डालनीको कौन बचायेगा? यही सब सोच रूसने यदि अपनी लाई माया आप ही बटोर ली, तो इसमें लोगोंके विस्मित होनेका कौनसा काम किया?

कर दी। डालनी-बन्दरकी बगलमें भूभागके भीतर थोड़ासा समुद्र चला गया है; लोगोंने इस समुद्रका नाम केर-खाड़ी रख दिया है। ठीक खाड़ी न होनेपर भी यह समुद्रांश खाड़ीका काम दे सकता है और जापानके रियर एडमिरल कतावकाने अपने बेड़ेके लङ्गर डालनेके लिये इसे खाड़ी ही बना लिया। इस बेड़ेमें इतशिकिशुमा, निशीं और मियाको नामक तीन छोटे जङ्गी जहाज और कितनी ही टारपेडो तथा डिष्ट्रायेर-नावें थीं। १२वीं मईको प्रातःकाल इतशिकिशुमा अपने इस बेड़ेके साथ केर-खाड़ीसे निकल डालनी या तालीनवान खाड़ीमें पहुंचा। वहां तीनों छोटे जङ्गी जहाज किनारेके तोपखानोंपर गोले बरसा उन्हें निस्तब्ध करने लगे और टारपेडो तथा डिष्ट्रायेर नावें तालीनवान-खाड़ीमें रूसकी तरह बाकायदा चक्कर लगा रूसकी जलमें छुपाई सुरंगें तोड़ने लगीं। रूसी तोपखानोंको चुप करनेमें ज्यादा देर न लगी। बल्कि जापानके छोटे जङ्गी जहाज मियाकोने रूसी तोपखानोंको चुप करते करते और एक काम किया। तोपखानोंके पास ही एक जगह रूसी फौजकी दस कम्पनियां जमा थीं। मियाकोने इन्हें देख इनपर ताक ताककर गोले उतारे। कई गोले कम्पनियोंके बीच उतरकर फटे; बहु-संख्यक सिपाही हताहत हुए। मियाकोने उसी समय और एक काम किया। केर-खाड़ी और तालीनवान खाड़ीके बीच इसी समय उसे किनारेपर लगा तार दिखाई दिया। रूसियोंके बाधा देते रहनेपर भी अपने जहाजके गोलोंके नीचे नीचे मियाकोने टपाटप गोलोंके बचते मातहत जहाजी सिपाहियोंको और जहाजके भूमिपर उतर बहुत दूरतक वह तार तोड़ दिया।

इसतरह तीसरेपहर कोई तीन बजेतक रूसी तोपखानोंको चुप करनेका काम समाप्त हुआ। माइन तोड़नेका काम बहुत कुछ भयङ्कर और टेढ़ा था; इसलिये सन्ध्या छः बजेतक चलता रहा। सन्ध्या छः बजे जिस समय तारपेडो-नावें अपना काम समाप्त कर रही थीं, उस समय एक दुर्घटना हुई। दिनभरमें तीन माइनें मिलीं और तोड़ी गईं; सन्ध्या समय एक चौथी माइन मिली, जिससे जापानको ४८ नम्बर तारपेडो-नाव टकरा गई। एक भयङ्कर शब्द उत्पन्न हुआ; तारपेडो-नाव दो टुकड़े हो डूब गई। साथकी नावें सिर्फ सात जखमी सिपाही बचा सकीं; प्रायः इतने ही सिपाही नावके साथ साथ डूब गये। इस एक तारपेडो-नावके डूबनेसे जापानको कोई बड़ी क्षति नहीं हुई; क्योंकि जापानी बेड़ेमें तारपेडो-नावोंकी कमी नहीं थी और जापानमें तारपेडो-नावोंके कारखाने थे। किन्तु जापानकी बड़ी क्षति यह हुई, कि वर्त्तमान युद्धमें इस पहले कष्टने जल-यानने डूब जापानको नौ-सैन्यके क्षतिग्रस्त होनेका पथ खोला। जापानको ४८ नम्बर तारपेडो-नाव शुभ घड़ी डूबी नहीं थी।

दूसरे दिन १४वीं मईको प्रातःकाल नौ-सेनापति कतावकोका बेड़ा फिर तालीनवान-खाड़ीमें पहुंचा और कल होकी तरह फिर कारवाई करने लगा। आज रूसियोंने केर-खाड़ी और

दूसरा दल आ मौजूद होता था। इन तोपोंके पीछे जङ्गी नावोंके सामने दल ही व्याघात उपस्थित कर रहे थे। फिर भी; जङ्गी नावोंका काम बन्द नहीं था; वह गोला-वृष्टि तृणवत् तुच्छ समझ कायदेके साथ गश्त लगा माइनें तोड़ रही थीं। आज दिनभरमें नावोंने पांच-माइनें तोड़ीं। इसके उपरान्त कलकी तरह और कल ही के समय आज जिस समय जङ्गी नावें लौटनेके लिये तय्यार हुईं; उस समय कल ही जैसी फिर एक दुर्घटना हुई। आजकी दुर्घटना कलकी अपेक्षा अधिक भयङ्कर और अहितकर थी। कल ४८ नम्बर तारपेडो-नाव माइनसे टकराकर डूबी थी; आज छोटा जङ्गी जहाज सियाकी माइनसे टकरा गया। काले किनारेमें सियाकी डूब गया; उसके दो सौ बीस सिपाहियोंमें सिर्फ दो डूबे और छ: जखमी हुए। बाधकी नावोंको सियाकीके सिपाहियोंकी प्राणरक्षा करनेके लिये बहुत समय मिला।

खाड़ीकी प्रायः सब माइनें तोड़ नहीं दीं, तबतक दम नहीं लिया। जापानियों जैसा अद्भुत अध्यवसाय जगत्‌की कितनी जातियोंमें दिखाई देता है ?

१५वीं मईको एक ओर तालीनवान खाड़ीमें कतावकोका बेड़ा गोलावृष्टि और माइन नष्ट कर रहा था; दूसरी ओर आरथर-बन्दरके सामने जापानके तीन जङ्गी जहाज और कितने ही छोटे जङ्गी जहाज पहुंचे। यह सब आरथर-बन्दरपर प्रायः गोलावृष्टि करना चाहते थे। तीनो जङ्गी जहाज आरथर-बन्दरसे अभी कुछ फासिलेपर थे; ऐसे समय जङ्गी जहाज हेटिउसका पिछला भाग एक माइनसे टकरा गया। माइन फटी; हेटिउसका पतवार उड़ गया और उसका पिछला भाग बहुत कुछ खराब हो गया। हेटिउस मुसीबतमें पड़ा; उसने अपने साथी जङ्गी जहाजको समीप आ सहारा देनेका इशारा किया। माइनका फटना और हेटिउसका इशारा देख एक जङ्गी जहाज हेटिउसको सहारा देने चला था; ऐसे समय धीरे धीरे आगे बढ़ते हेटिउसने एक दूसरी माइनसे टक्कर ली; सब समाप्त हुआ; हेटिउसके पेंदेमें बहुत बड़ा छेद हो गया और आध घण्टेमें विशालाकार हेटिउस जलमग्न हुआ। कोई आठ सौ मनुष्य जहाजपर थे, जिनमें तीन सौ सिपाही और अफसर बचा लिये गये; बाकी सब जहाजके साथ साथ जलधि-जलमें डूब गये। चार सौ फुट लम्बा, पन्द्रह हजार टन बोझ बरदाश्त करनेवाला, घण्टे पीछे उन्नीस नाटके हिसाबसे पानी काटनेवाला, असंख्य बड़ी-छोटी तोपोंसे सुसज्जित हेटिउस जापानी बेड़ेके अव्वल जङ्गी जहाजोंमें अन्यतम था। पर्वत जैसे हेटिउसके

डूबनेसे जापानी बेड़ेको जो क्षति हुई, वह सहज ही अनुमेय है।

इसमें सन्देह नहीं, कि मुसीबत अकेली कभी नहीं आती; एक मुसीबत आनेके बाद ही मुसीबतोंका तांता लग जाता है। जिस १५वीं मई रविवारको हेटिहब डूबा, उसी १५वीं मईको जापानी बेड़ेको और एक जबरदस्त धक्का बैठा। इसी दिन जापानके नौ-सेनापति देवने अपने प्रधान सेनापति टोगोको बेतारके तार द्वारा समाचार दिया,—"आज प्रातःकाल कोई पांच बजे जब मैं अपने बेड़े के साथ आर्थर-बन्दरके मुहानेसे लौट रहा था, तब मार्गमें ऊपर समुद्रमें खूब गहरा कुहरा छाया मिला। कुहरेमें ही दोनों जहाज कासुगा और योशिनोके बीच टक्कर हुई; योशिनो डूब गया। कासुगाकी नावोंने योशिनोके नब्बे अधिकारियोंकी प्राणरक्षा की। अबतक चारों ओर गहरा कुहरा छाया हुआ है।" इस दिनमें दो बड़े एक छोटा और

थी; किन्तु जापानके गिनतीके जङ्गी जहाजों और छोटे जङ्गी जहाजोंमें एकके भी नष्ट होनेसे जापानको नाना प्रकारकी असुविधायें भोगना पड़ सकती थीं। जापान अपने खोये हुए जङ्गी जहाजकी जगह दूसरा जङ्गी जहाज संग्रह कर नहीं सकता था। प्रथम तो जङ्गी जहाजको बनते कई वर्ष लग जाते हैं, दूसरे आन्तर्जातिक सन्धिके अनुसार वर्त्तमान युद्धके समय जापान किसी शक्तिसे जङ्गी जहाज खरीद नहीं सकता था।

विदेशियोंने भी जापानके इस दुःखमें सहानुभूति प्रकट की। अमेरिकाने तो यहांतक कहा, कि जिस जगह हेटिउस डूबा, वह जगह रूस या जापान दोनोमें एककी भी नहीं थी; साधारणकी थी और साधारणको वहां जहाज चलानेका अधिकार था। जिसने उस जगह माइन डुबाई, उसने आन्तर्जातिक नियम भङ्ग किया और इसके लिये समग्र जातियोंको मिल उस माइन डुबानेवालेको, दण्ड देना उचित है। रूसके सरकारी स्थानमें ऊपर ऊपर हेटिउसके डूबनेपर खूब दुःख प्रकाश किया गया सही; किन्तु भीतर भीतर रूसके मनमें जो भाव उत्पन्न हुआ होगा, उसे सभी समझ सकते हैं। हेटिउसके डूबनेपर जो लोग यह कहते थे, कि हेटिउस जापानी माइन होसे टकराकर डूबा है, रूस उनपर नाराज होता था; अमेरिकाके कथनानुसार रूस जातियोंको जुर्माना देनेपर तय्यार था, किन्तु यह सुनना नहीं चाहता था, कि हेटिउस किसी दूसरेकी माइनसे टकराकर डूबा।

जापानकी इतनी बड़ी क्षति हुई; समग्र जगत्‌ने उसकी सहानुभूति दिखाई; दुःख प्रकाश किया; किन्तु स्वयं

जापानने अपनी इस क्षतिके सम्बन्धमें क्या कहा? चारों ओरसे सहानुभूति और दुःखसूचक समाचार पा जापानने अत्यन्त धीर-गम्भीर भावसे सबको धन्यवाद दे कहा,—"किन्तु यह इतनी बड़ी क्षति नहीं है, जिससे जापानी बेड़ा हिल जाये। जापानी बेड़े की शक्ति इस समय भी वैसी ही है, जैसी पहले थी। एक जापान ही क्यों,--संसारकी किसी शक्तिका भी बेड़ा यदि इसतरह जल-युद्धमें प्रवृत्त होता, तो उसकी ऐसी ही क्षति हो सकती थी।" जापानने यह बात सिर्फ ज़ुबानी ही नहीं कही, बल्कि अपने कार्य द्वारा उसका परिचय देना भी आरम्भ किया। पहला परिचय तो उसी समय दिया, जिस समय ऐडमिरल टूगा

होना पड़ा, तबसे जापानी बेड़े ने, और भी उत्साह-पूर्वक कार्य्य आरम्भ किया। जिस दिन हेटिउस डूबा, उसी दिन जापानी गनबोटों और तारपेडो-नावोंका एक बेड़ा किनचौकी खाड़ीमें पहुंचा। वहां पहुंच उसने खाड़ीके किनारेकी रेल-लाइन और किनचौ नगरकी इमारतोंपर गोले बरसाये। टोगोने अपने विश्वासन्त भाव और अभिमानशून्य ढङ्गसे इस गोलन्दाजीकी जो रिपोर्ट अपनी सरकारको भेजी थी, उसका भावार्थ इसतरह है,— "हमारा तारपेडो-नावों और गनबोटोंका बेड़ा किनचौकी खाड़ीमें पहुंचा। गनबोट खाड़ीमें बहुत ही भीतर घुस गये। खाड़ीके किनारे क्वारिली-पुलसे फौजसे लदी एक ट्रेन जा रही थी। गनबोटोंने इस ट्रेन और इमारतोंपर गोले बरसाये। निश्चय ही अब, क्षतिग्रस्त हुआ है।" हेटिउसके डूबनेसे पहले जापानी बेड़ा सिर्फ जल-युद्ध हीमें प्रवृत्त हुआ करता था; किन्तु इसके बादसे वह थल-युद्ध भी करने और अरथर-बन्दरके समीप अपनी फौजोंसे लदे बारबरदारीके जहाज भी पहुंचाने लगा। किनचौ प्रभृति स्थानोंमें जो जापानी फौज उतरी, जिसका वर्णन इससे पहले किया जा चुका है, उसकी सवारीके जहाजोंके साथ जापानी बेड़ेके कई जहाज भी थे। लोगोंने अनुमान किया था — रूसियोंको विश्वास हुआ था, कि हेटि उस प्रभृतिके डूबनेसे जापानी बेड़े का बलक्षय हुआ; किन्तु इसके बाद ही जापानी बेड़े ने अपने कार्योंसे प्रमाणित कर दिया, कि उसकी सुदशा और भी उज्ज्वल हुआ है; क्षतिग्रस्त होनेसे जापानी बेड़े ने और भी ... किया है।

... पूर्व प्रकाश करने या अरथर-बन्दरके उद्धारको

[illegible] आशान्वित होनेका अवसर न मिला। रूसी जिस अन्धकारमें पहले थे, उसी अन्धकारमें अब भी रहे। बल्कि अन्धकार और भी घनीभूत हुआ। जापानकी ओरसे भी आर्थर-बन्दरके घिर जानेसे रूसियोंका सङ्कट और भी बढ़ा। रूस-सेनापति स्टोसलके अधीन कोई तीस हजार रूसी हथेलीपर प्राण ले आर्थर-बन्दर-रक्षाके लिये तय्यार हुए। आर्थर बन्दरमें किलाबन्द होकर युद्ध करनेको सामग्री प्रचुर परिमाणमें संग्रह कर ली गई। आर्थर-बन्दरके रूसियोंने मानो प्रतिज्ञा कर ली, कि प्राण देंगे; किन्तु शत्रुका अधिकार न करेंगे; दूसरी तरफ जापानियोंने भी मानो दृढ़ प्रतिज्ञा कर ली, कि असंख्य सहस्र योद्धाओंकी बलि देंगे; किन्तु आर्थर-बन्दरको अधिकारयुक्त करेंगे। अतएव जगत् इन दो प्रबल प्रतिद्वन्द्वियोंका [illegible] देखनेके लिये उत्कण्ठित हुआ, आर्थर-बन्दरका निरन्तर-[illegible] घेरा आरम्भ हुआ।

एकादश परिच्छेद।

नानशान-युद्ध—डालनीका पतन।

पाठक जानते हैं, कि जापान-सेनापति कुरोकीके अधीन जापानकी पहली फौज मञ्चूरियाके फेङ्गवाङ्गचेङ्ग स्थानमें पड़ी है और जापान-सेनापति ओकूके अधीन जापानकी दूसरी फौज लियावटुङ्ग प्रायद्वीपके छोरपर आरथर-बन्दरके सामने जगह जगह जहाजसे उतरी है। यालू-समरविजयी कुरोकीकी फौजका हाल यथास्थान लिखा जायेगा; इस परिच्छेदमें ओकूके अधीन दूसरी फौज हीकी कार्यावलीका उल्लेख करेंगे। जापानकी पहली फौजकी साहसिकता आदिका परिचय पाठकोंको मिल चुका है; अब इस दूसरी फौजकी वीरत्व और रणचातुर्यको पाठक देखें। पहली फौज दूर दूरतक फैलकर युद्ध, खण्डयुद्ध आदिके लिये तय्यार थी; दूसरी फौजका एक ही लक्ष्य और एक ही उद्देश्य था,—आरथर-बन्दरको स्वाधिकारभुक्त करना।

पहली फौजके कामकी अपेक्षा इस दूसरी फौजका काम अधिक दुष्कर था। सन् १८९४ ई०में चीन-जापान-युद्धके समय एकबार पहले भी जापानी फौजोंने इस आरथर बन्दरपर अधिकार किया था। उस समय जापानको आरथर-बन्दरपर अधिकार करनेमें ऐसी कोई असुविधा हुई नहीं थी। आँधीकी तरह आगे बढ़— फौजोंकी समस्त बाधाओंको पैरोंसे कुचल—चटपट जापानियोंने इस आरथर-बन्दरपर अधिकार कर लिया था। किन्तु

और इस धुससे भी आगे खोदेके बड़े बड़े मेख गाड़ उनके बीच खारदार तार लगा लिये थे; तारोंके बीच स्थलको माइनें गाड़ दी थीं; माइनोंमें बिजलीके तार लगा दिये थे, जिनके द्वारा दूर होसे माइनोंमें आग लगाई और माइनोंके समीपकी शत्रु की फौज उड़ाई जा सकती थी। मतलब यह, कि रूसियोंने अरथर-बन्दरको इस पहली मञ्जिलको दुर्भेद्य बनानेमें कोई कसर उठा नहीं रखी थी और इस स्थानके सम्बन्धमें विलायती टाइम्सके संवाददाताने ठीक ही लिखा था, —"रूसियोंका यह मोरचा छोटा और बड़ी मजबूतीके साथ किलाबन्द किया गया था। इसके दोनो बाजू सुरक्षित थे और यथेष्ट सिपाही इसमें बैठ इसकी रक्षा कर रहे थे। ऐसे सुदृढ़ और दुर्भेद्य मोरचेमें बैठ आठसे बारह हजारतक रूसी सिपाही अपने सामनेके खुले हुए मैदानसे बढ़ते हुए शत्रु द्वारा यदि अपने मोरचेकी रक्षा कर नहीं सकते, तो मैं नहीं जानता, कि इन रूसियोंद्वारा जगत्‌के किस सुदृढ़ मोरचेके रक्षित होनेकी प्रत्याशा की जा सकती है।" इसमें सन्देह नहीं कि सौभाग्यवश ही ऐसे मोर्चे फौजोंको मिलते हैं। जो मोरचा पहाड़ीपर है और जिसके सामने बहुत बड़ा खुला मैदान है, जिस मोरचेकी पीठ अपनी फौज द्वारा और दाहनावायाँ किनारा समुद्र द्वारा सुरक्षित है; उस मोरचेको छुड़ानेकी क्या कोई दर हो सकती है? सुदृढ़ मोरचा साने और सुदृढ़ बनानेके लिये ही रूसी सनद्वीट बन अपने तोपखानेके पास सिपाहुन सन्के बाबवाती नानीनशान-खड़ोंमें जा खड़ा हुआ था।

... पहाड़ीके रूसी मोरचेके आक्रमण शुरू रहनेपर भी

एक बड़ा दुर्ग था। इन पहाड़ोंसे कोई दो कोस दूर साम्पसन नामक पर्व्वत था। पर्व्वत पहाड़ोंसे ऊंचा था; पर्व्वतकी सर्व्वोच्च चोटी दो हजार दो सौ फुट ऊंची थी। इस चोटीपर लगी तोपें अनायास ही इन्ही पहाड़ो नानशानपर गोले बरसा सकती थीं। मशहूर जापान सेनापति ओकूने साम्पसन पर्व्वतकी उपयोगिता समझ तुरन्त ही उसपर अधिकार कर लिया था और साम्पसनके उच्च शिखरपर बैठ रूसी मोरचेकी दृढ़ता देखने लगे थे। [illegible] समझ गये, थे कि हम जापान इनको पूरे आक्रमणकारीके साथ भी लोहा [illegible] चाहते हैं। उन्होंने यह भी देखा था, कि इन मोरचेपर रूसी मैदानसे आक्रमण करनेमें

रहना नहीं पड़ा। जापानी जल या स्थल-सैन्यके सेनापतियोंने जितने युद्ध-सम्बन्धीय समाचार अपनी सरकारको भेजे थे, प्रायः सबमें लिखा था,—"पहलेसे की हुई कल्पनाके अनुसार अमुक युद्ध या अमुक आक्रमण किया गया।" पहलेसे आक्रमण या युद्धकी यह कल्पना करनेवाला कौन था? कौन पहले मन्सूबे बांधता था, जिसके अनुसार पीछे जापानी फौजें काम करती थीं? युद्धारम्भ होनेके कुछ ही दिनों बाद प्रकट हो गया था, कि पहलेसे युद्ध या आक्रमणका यह मन्सूबा बांधनेवाले ओयाम, कोदामा प्रभृति कुछ बहुदर्शी समरनीतिदिग्गज वयोवृद्ध जापानी थे, जो अपनी शारीरिक दुर्बलताकी वजह युद्धक्षेत्रमें न आ जापानमें बैठे बैठे ही अपने अद्भुत मस्तिष्कबलसे मन्सूबे बांधते थे, जिनके अनुसार जापानी फौजें काम किया करती थीं। सुतरां इस स्थलमें इन लोगोंने जापानकी दूसरी फौजके कामका एक मन्सूबा तय्यार किया; एक दिन जापान-सरकारकी ओरसे ओकूको आज्ञा मिली,—"विलम्ब करनेका प्रयोजन नहीं है; यथासम्भव शीघ्र नानशानके रूसी मोरचोंपर आक्रमण करो।" यह आज्ञा पाते ही ओकू चिन्ता छोड़ उठ खड़े हुए; उन्होंने स्थिर कर लिया, कि रूसी मोरचोंपर आक्रमण करना ही होगा।

ओकूने शीघ्र शीघ्र छिटकी हुई जापानी फौजको साम्पसन पर्वतके पीछे एकत्र करना आरम्भ किया। पोतूबो तथा अन्यान्य स्थानोंमें जितनी बड़ी बड़ी तोपें थीं, उन्हें युद्धस्थलमें मंगा; साम्पसन पर्वतकी चोटीपर तथा अन्यान्य उपयुक्त स्थानोंमें काम कराना आरम्भ किया। ओकूने देखा, कि रूसी मोरचेके सामनेवाले स्थानोंमें एक नया गनबोट है और उसके

पास ही एक जबरदस्त रूसी तोपखाना ; इसलिये ताळीनवान खाड़ीकी ओरसे जापानी गनबोटोंका आना असम्भव है। किन्तु रूसी सोचते थे कि किनचौ खाड़ीमें रूसका वैसा कोई तोपखाना भी नहीं है, कोई गनबोट या बड़ी नाव भी नहीं है; इसलिये किनचौ-खाड़ीमें जापानी गनबोट प्रभृति किनारेके छिछले जलमें आ रूसी मोरचेपर गोले बरसा सकते हैं। ओकूने यह देख और समझ टोगोको समाचार दिया ; किनचौ-खाड़ीमें जापानी गनबोटों आदिके मंगानेकी व्यवस्था हुई। शीघ्र शीघ्र इधरकी यह सब आरम्भिक तय्यारियां पूरी हुईं और २५वीं मईको ओकूके आज्ञानुसार जापानी फौजें गिरदावरी करती हुई रूसी मोरचोंकी ओर अग्रसर होने लगीं। उस दिनकी गिरदा-

गया ; साम्यसन पर्व्वतके तोपखाने और भी सुदृढ़ किये गये और साम्यसन पर्व्वतके पीछेकी जापानी फौजें साम्यसन पर्व्वतके आगे तराईमें जमा की जाने लगीं। २४वीं मईकी गिरदावरीके सवार, पूर्व्वोक्त जापानी तोपखाने और नानशान पहाड़ोंके बीचमें अवस्थित ऊंची शहरपनाहसे घिरे किनचौ नगरके समीप पहुंचे। किनचौ नगरपर रूसियोंका अधिकार था। रूसियोंने गिरदावरीके सवारोंपर गोलियां चलाईं ; सवार किनचौकी रूसी फौजकी मजबूतीकी थाह ले अपनी जगह वापस गये। दूसरे दिन २५वीं मईके प्रातःकाल होते साम्यसन पर्व्वतकी जापानी तोपोंने रूसी मोरचेपर गोला वृष्टि आरम्भ की। प्रत्युत्तरमें रूसी तोपखाने भी जापानी तोपखानोंपर गोले बरसाने लगे। जापानी तोपखानोंने रूसी तोपखानोंको गोलाबारीमें फंसा रखनेके लिये ही गोला-वृष्टि आरम्भ की थी। जापानियोंका उद्देश्य यह था, कि रूसी तोपखाने साम्यसन पर्व्वतके तोपखानोंका जवाब देनेमें फंसे रहें और इस अवसरमें जापानी फौजें किनचौ नगरपर धावा करें। यह भी स्थिर हुआ था, कि जिस समय जापानी फौजें किनचौ नगरपर आक्रमण करें, उस समय जापानी गनबोट किनचौ-खाड़ीमें पहुंच किनचौ और उसके समीपके रूसी मोरचेपर गोले बरसावें। किन्तु जापानियोंकी यह अन्तिम कल्पना कार्यमें परिणत नहीं हुई। २५वीं मईको कुछदिन चढ़नेपर जापानी फौजें जिस समय धीरे धीरे किनचौ नगरकी ओर बढ़ने लगीं, उस समय समुद्रकी ओरसे जापानी फौजोंको किसी तरहका सहारा नहीं मिला। जापानी गनबोटोंका बेड़ा सुकुशी, ताकाची और निशीकाई नामक चार नाविकी-वाहिनि

छात्रोंकी शिक्षाके लिये कितने ही उपयोगी मसाले तय्यार करेंगी।" जापानी फौजोंकी पांच दिनोंकी कार्रवाईके उपरान्त दोनों फौजोंकी स्थिति इसतरह हुई,—रूसी मोरचा जैसा पहले था, वैसा ही इस समय भी था। यानी रूसी मोरचा पूर्व्वोल्लिखित सङ्कीर्ण भूभागकी समूची चौड़ाईमें फैला हुआ था; मोरचेका दाहना छोर लिशुटुन शानमें था और बायां छोर किनचौ खाड़ीके किनारे। लिशुटुन शानके पास समुद्र-जलमें रूसी गनबोट बत्र खड़ा था, जो युद्धमें भाग लेनेके लिये हर तरहसे तय्यार था। मोरचेके बीचमें वही नाना किलों और तोपखानोंसे सुदृढ़ नानशान पहाड़ी थी। इधर जापानी फौजें नानशान पर्व्वतमालाके पीछेसे निकल आगे बढ़ रूसी मोरचेकी चौड़ाईमें फैलकर अवस्थान कर रही थीं। जापानी फौजके दाहने भागने रूसी फौजके बायें भागके सामने किनचौ नगरपर अधिकार कर लिया था। किनचौकी बगलकी किनचौ खाड़ीमें चार तारपेडो-नावोंके साथ चार गनबोट खड़े थे। चारों गनबोटोंकी तोपोंकी संख्या बीस थी। छिछले जलमें बड़े जहाज आ नहीं सकते थे; इसीलिये खाड़ीमें गनबोटों और तारपेडो-नावोंका बेड़ा भेजा गया था। सान्‌षसन पर्व्वतपर और किनचौके पूर्व्व जापानी तोपखाने थे; यह तोपखाने रूसी तोपखानोंकी अपेक्षा निर्बल थे; इनमें उतनी बड़ी बड़ी तोपें नहीं थीं। पांच दिनोंकी कमोन्नतिसे जापानी फौजें रूसी मोरचोंके बहुत ही समीप पहुंच गई थीं। सब सामान तय्यार था; आक्रमण करनेकी आज्ञाकी कसर थी।

आज्ञा मिली; २६वीं मईकी सबेरे दो बजके पैंतीस

एकादश परिच्छेद ।

सिगनलपर असली नानशान-युद्ध आरम्भ करनेकी आज्ञा मिली और तदनुसार नानशान-युद्ध आरम्भ हुआ। पिछली रातकी घोर निस्तब्धता भङ्गकर झटपट छिपे रूसी मोरचोंपर एकाएक जापानी तोपोंसे गोले बरसने लगे। रूसी तोपखाने भी जापानी गोलोंका जवाब देने लगे। रात्रिके अन्धकारसे काला आकाश अग्निमय चमकीले गोलोंसे उज्ज्वल हो उठा। प्रति क्षण शत शत गोले जापानी और रूसी तोपखानोंपर गिरने लगे। शत शत तोपोंके एक साथ गर्जन करनेसे पृथिवी हिलने लगी; जल और स्थलके जीव जन्तु व्याकुल हुए; गोलोंके [illegible] दुर्गोंके विध्वंस हो जाते और बरसनेसे [illegible] दिखाई देने लगा। [illegible] सागर-जल स्थिर था; जापानी गनबोटोंके लिये राह साफ था। इसलिये [illegible] जापानी तोपखानोंसे गोला-वृष्टि आरम्भ हो [illegible] जापानी गनबोट और तारपीडो-बोटका बेड़ा भी उनकी

कुछ शिथिल पड़ी। प्रातःकाल कोई छः बजे जापानी तोपें एकाएक एक साथ निस्तब्ध हो गईं।

होते हुए किसी गगनभेदी शब्दके एकाएक रुक जानेसे जैसा सन्नाटा छा जाता है, जापानी तोपोंके निस्तब्ध हो जानेसे रणस्थलमें वैसा ही सन्नाटा छा गया। जैसे ही जापानी तोपें निस्तब्ध हुईं, वैसे ही रूसी मोरचोंके सामने, ओरसे छोरतक बिगुल बजने लगे; हथियार खड़खड़ाने, घोड़े हिनहिनाने लगे; सहस्र सहस्र जापानी सिपाही कवाइदके साथ पंक्ति बांध रूसी मोरचोंकी ओर बढ़े। दाहने किनचौ नगरके पास ओसाका-डिविजन था, मध्यभागमें नानशान पहाड़ीके सामने टोकियो-डिविजन था और बायें लिग्नुटुन रास्तेके पास नगोया-डिविजन था। तीनों डिविजन जब मिलकर आगे बढ़े तब रास्तेसे किनचौ-खाड़ीतक जापानी फौजें ही फौजें दिखाई देने लगीं। हरेक फौजकी हरेक कम्पनी छितराकर नहीं; बल्कि कवाइदके साथ पंक्ति बांधकर आगे बढ़ रही थी। रूसी तोपोंकी गोलावृष्टिमें जापानी फौजोंके पंक्ति बांधकर आगे बढ़नेके दो कारण हो सकते थे। पहला कारण यह था, कि जापानी फौजोंको जर्मन ढङ्गसे स्थल-युद्ध-विद्या सिखाई गई थी और जर्मन रणपण्डित गोला-वृष्टिमें छितराकर आगे बढ़नेकी अपेक्षा पंक्ति बांधकर आगे बढ़ना ही अच्छा समझते हैं। दूसरा कारण यह था, कि जिस मैदानसे जापानी फौजें आगे बढ़ रही थीं, उसमें जगह जगह कितने ही नाले और खन्दकें थीं; इसलिये जापानी फौजें स्थानाभावसे पंक्ति बांधकर आगे बढ़ती थीं। इसमें सन्देह नहीं, ...ल खूब लम्बाचौड़ा होनेपर भी बहुसंख्यक जापानी

जहाजोंके लिये अत्यन्त सङ्कीर्ण था। ओसाका-डिविजन जब अपनी जगहसे आगे बढ़ा तब स्थानाभाववश उसकी कितनी ही कम्पनियां किश्तियोंकी बगलमें समुद्रजलमें ठहरा दी गईं। कितनी ही कम्पनियोंके आगे निकल जानेपर जब राह साफ हुई, तब ठहरी हुई कम्पनियां समुद्रजलसे निकल भूमिपर आईं और आगे बढ़ीं। नई वर्दी और नये हथियारोंसे सुसज्जित इन जापानी कम्पनियोंका आगे बढ़ना बहुत ही भला जान पड़ता था। फौजी बाजे बज रहे थे; कदम कदम वीर जापानी सिपाही एक साथ कदम उठा और रख रहे थे; एक साथ कदम कदम पैरोंके पृथिवीपर पड़नेसे गुरु-गम्भीर शब्द उत्थित हो रहा था। ऐसे समय बाल-वृद्ध सभी अपना कौतूहल दमन करनेमें असमर्थ हो किनारेपर आ उधर पहुंच जापानी फौजोंका आगमन देखने लगे थे। बालसूर्यकी प्रकाश रश्मियोंसे जापानी सिपा-हियोंकी चमकीली सङ्गीनें और जापानी अफसरोंके हाथोंकी हिलती हुई तलवारें बिना रक्तपात किये ही रक्तवर्ण दिखाई देती थीं।

डिविजनको यह सुविधा नहीं थी; दूसरी बात यह थी, कि रूसी मोरचे इस डिविजनके बहुत समीप थे; इसलिये रूसी गोलोंसे डिविजनको बहुत क्षति पहुंच रही थी। किन्तु जापानी फौजें इस क्षतिकी कोई परवा न कर बराबर आगे बढ़ती ही गईं और दिन दश बजेतक रूसी मोरचोंके सामने ओरसे छोर-तक मोरचोंसे तीन सौसे लेकर पांच सौ गजके फासिलेतक अपने मोरचे बांध बैठ गईं।

इसके उपरान्त जगह जगहसे जापानी फौजें अपने मोर-चोंसे निकल रूसी मोरचोंपर धावा करने लगीं। रूसी इन धावोंके रोकनेमें अपनी पूरी शक्ति व्यय करने लगे; अपने मोरचेसे लाल लाल गोलो और गोलियोंका तूफान बहाने लगे। हाड़-मांससे बनी नरदेह इस तूफानका सामना कैसे कर सकती थी? इसतरहके बहुसंख्यक धावोंसे एकका वर्णन हम यहां करते हैं; इसे पढ़ लेनेसे अन्यान्य धावोंकी कठिनताका अन्दाजा आसानीसे किया जा सकेगा। किनचौ नगर और रूसी मोरचेके बीच मौचियायिङ्ग नामक छोटासा एक ग्राम था। कुछ जापानी फौज उस ग्राममें पहुंच मोरचा बांध बैठ गई। अफसरोंकी आज्ञासे जापानी गनबोटोंने इस गांवके सामने रूसी मोरचोंपर खूब गोले बरसाये। अफसरोंका उद्देश्य यह था, कि जब रूसी मोरचेकी तोपें निस्तब्ध हों, तब जापानी फौजें धावा करें। दिन कोई बारह बजे रूसी मोरचेकी तोपोंका मुंह बन्द हुआ; साथ साथ ग्राममें बैठी दो बटालियन जापानी फौजको रूसी [illegible]पर धावा करनेकी आज्ञा मिली। इस धावेका जो फल [illegible] विलायतके प्रसिद्ध अखबार "टाइम्स"के फौजी

एकादश परिच्छेद।

संवाददाताने इसप्रकार लिखा है,—"कुछ देरतक मोर्चियाके ग्रामकी टूटी और गोलोंकी धमकसे घर घर कांपती दीवारोंके पीछे जापानी पलटनोंने दम लिया। इसके बाद वह छोटी छोटी पलटनें ग्रामसे निकल रूसी मोरचोंके सामने हो ढालुवीं भूमिपर चढ़ गईं। नाना विघ्न-बाधाओंको सामनेसे हटा ऊपर चढ़ जाना असम्भव काम था। लाचार, इसके ऊपर [illegible] छिपकर कुछ मोरचोंके भीतर बैठे रूसी सिपाही जापानी फौज [illegible] लगे रहे थे। फिर समय जापानी फौज [illegible] गिरि [illegible] एक समय उसकी [illegible]

इसीतरह कितनी ही जगह जापानी फौजें धावाकर आगे बढ़नेके समय नष्ट हुईं। जापानी सिपाहियोंकी लाशोंसे मैदान भर उठा। अब उपाय क्या था? दोपहर ढल चुकी थी; थकी-मांदी जापानी फौजें हरेक धावेमें नष्ट हो चुकी थीं; रूसी फौजें अपने मोरचोंमें पूर्ववत् अचल-अटल भावसे जमी बैठी थीं; अब जापानी फौजोंके लिये विजय-प्राप्तिकी कौनसी राह थी? ऐसी अवस्थामें पृथिवीकी नौसौ निन्नानवे फौजें उस दिनकी विजय असम्भव समझ धावेका सङ्कल्प छोड़ निरुत्साह हो अपने पड़ाव में लौट आतीं। किन्तु सेनापति ओकू और ही प्रकृतिके आदमी थे; और ही मन्त्रसे दीक्षित थे। उन्होंने विचार किया, कि अभी सूर्यास्तमें कई घण्टे बाकी हैं; सहस्र सहस्र जापानी सिपाही बाकी हैं; अभीसे विजय-प्राप्तिकी आशा परित्याग करनेका कारण क्या है? जब जापानी फौजें बारबार धावाकर हरेक धावेमें प्रायः नष्ट हो गईं, तब उन्होंने बाकी जापानी फौजोंको अपने मोरचोंमें ही ठहरने और जापानी तोपखानोंको रूसी मोरचोंपर गोला-वृष्टि करनेकी आज्ञा दी। विषम गोला-वृष्टि आरम्भ हुई। डेम्पसन पर्व्वतकी बड़ी बड़ी तोपोंके गोले रूसी मोरचोंको खाकमें मिलाने लगे। गोलोंकी चोटसे वैज्ञानिक ढङ्गसे बने रूसी किलोंकी दीवारें विदीर्ण होने लगीं; जिस नानशान पहाड़ीपर रूसी मोरचे थे; उस नानशान पहाड़ीकी चट्टानें सुरमा बनने लगीं। उधर जापानी गनबोट आगई और चिओकाई रूसी गोलोंकी कोई परवा न कर किनारेके अत्यन्त समीप पहुंच रूसी मोरचेके बायें भागपर गोले बरसाने लगे। कहते हैं, कि इस भयङ्कर गोला-वृष्टिके फलसे रूसी मोरचा ओरसे छोरतक हिल गया।

गोला-वृष्टि थमनेपर जापानी फौजोंको फिर आक्रमण करनेकी आज्ञा दी गई। जापानी फौजें अपने मोरचोंमें बैठी हुई लिये रुकती रही थीं। उनके सामने ही उनके साथी सिपाहियोंकी लाशें पड़ी थीं। उन लाशोंको देख मोरचेमें बैठे जापानी सिपाही रूसियोंसे बदला लेनेके लिये अधीर हो रहे थे। जैसे ही आदेश बिगुल बजा, वैसे ही जापानी फौजें सागर-तरङ्गकी तरह अपने मोरचोंसे निकल रूसी मोरचोंकी ओर झपटीं।

हमारे पैरोंकी धमकसे माइनें फट जायें; हम उड़ जायें; हमारे पीछे आनेवाले हमारे साथियोंकी रक्षा हो। किन्तु प्रायः देखा गया है, कि जो लोग इसतरह जान हथेलीपर ले कोई काम करने जाते हैं, उनकी प्राणरक्षा स्वयं भगवान् करते हैं। आज युद्धारम्भसे कुछ पहले कुछ देरके लिये अच्छी वृष्टि हो गई थी। इस वृष्टिके फलसे माइनोंके ऊपरकी मट्टी बह गई थी और माइन साफ साफ दिखाई देती थीं। दौड़ते हुए जापानी सिपाहियोंने माइनोंको देख हर्षनाद किया और उनमें लगे उनके भीतर आग उत्पन्न करनेवाले बिजलीके तार काटकर किनारे किये। माइनका झगड़ा मिटा। जापानी फौजोंकी रूसी मोरचोंकी ओर बढ़नेकी राह साफ हुई। जापानी फौजें भीम-वेगसे आगे बढ़ रूसी मोरचोंपर वारंवार आक्रमण करने लगीं।

क्रमशः दिन बीता, सन्ध्या उपस्थित हुई। सूर्यदेव उदय होनेपर जिस युद्धका आरम्भ देख सके थे, अस्त होनेके समय उस युद्धका अन्त देख न सके। दिन समाप्त हो गया; किन्तु युद्ध समाप्त नहीं हुआ; जिस जोरशोरसे आरम्भ हुआ था, उसी जोरशोरसे बराबर चलता रहा। हताहतोंसे युद्धस्थल भर उठा; रुधिर-मांसके संयोगसे वसुन्धरा कर्दममयी हुई। गोलोंकी चोटसे बहुसंख्यक सिपाही एक साथ चीथड़े होकर आकाशकी ओर उड़ जाते थे और दूसरे ही क्षण उनकी देहकी चीथड़ोंकी चारों ओर वृष्टि होती थी। कहीं फटी हुई खोपड़ी गिरती थी, कहीं विच्छिन्न मुण्ड गिरता था और कहीं अङ्ग-प्रत्यङ्ग छिटक गिरते थे। रूसी किलोंकी खन्दकें, खन्दकोंके आगेके धूम और मोरचे सभी लाशोंसे भर उठे थे। कोषोंकी नामा-

सन्ध्या छः बजेके बाद और सात बजेसे पहले जापानी फौज दशवें या अन्तिम आक्रमणके लिये तय्यार हुई। समय उपस्थित होनेपर सङ्केत किया गया। ओरसे छोर तककी जापानी फौज हर्षध्वनिसे दिग्विदिक् कंपा रूसी मोरचोंकी ओर झपटी। पहले ही लिख चुके हैं, कि ओसाका-डिविजन जापानी फौजके दाहने था। कहते हैं, कि जिस ओसाका-प्रदेशके जवानों द्वारा यह डिविजन संगठित हुआ था, उस ओसाका प्रदेशके लोग समग्र जापानमें कापुरुषता और निर्बलताके लिये प्रसिद्ध थे। किन्तु इस युद्धमें इन्हीं ओसाकावासियोंने अलौकिक पराक्रम प्रकाश किया। दशवें धावेमें जिस समय जापानकी कुल फौजें रूसी मोरचोंकी ओर झपटीं, उस समय ओसाका डिविजन मोरचोंके सामने न जा अपने गनबोटोंके गोलोंके नीचे नीचे समुद्रमें घुस पड़ा। छातीतक समुद्रजलमें घुस ओसाका-डिविजन रूसी मोरचोंके पीछे पहुंच जानेके लिये आगे बढ़ने लगा। रूसियोंने स्वप्नमें भी इस बातकी आशङ्का की नहीं थी, कि जापानी समुद्र-जलसे चक्कर काट रूसी मोरचोंके पीछे पहुंच जायेंगे; इसीलिये रूसियोंने किनचौ-खाड़ीकी ओरसे जापानियोंका आक्रमण रोकनेका वैसा कोई सामान किया नहीं था। जापानी गनबोट जिस समय किनचौ-खाड़ीके जलतक रूसी मोरचेके बायें छोरपर बारंबार गोले मारने और उन गोलोंके नीचे नीचे जापानके ओसाका-डिविजनके सिपाही जिस समय महामानवकी तरह छातीसे समुद्रजल चिरीते करते रूसी मोरचोंकी ओर बढ़े उस समय यह कल्पनातीत आमस ... मानने या रूसी घबरा गये। ... घबराहटमें उन्हें एक

कुश हो उखड़ गये, उस समय जल सचमुच ही लाल हो गया था।"

"बेना बेना" कहता ओसाका-डिविजन भागते रूसियोंके पीछे पीछे चला। सागरजलसे मानो जापानी फौजको पर्व्वतप्रमाण तरङ्ग उठी, जो रूसी मोरचेके सिरेपर और उसके पीछे फैल गई। जापानी सिपाही उस समय रणोन्मत्त थे; उनकी छातीमें प्रतिहिंसाकी आग धाँय धाँय जल रही थी, जिससे वह और भी ज्ञानशून्य और उन्मत्त थे; उनकी खिंची हुई तलवारोंके सामने रूसियोंको पनाह मिलती नहीं थी। जापानी रूसियोंके लिये साक्षात् यमप्रेरित दूत बन गये थे। वारंवार हर्षध्वनिसे दिशायें प्रतिध्वनित करते रूसी मोरचोंके सामनेकी जापानी फौजके बायें भाग यानी ओसाका-डिविजनने समुद्र-जलसे निकल और फैल रूसी मोरचेके समूचे बायें भागपर बायें भागके पीछेसे आक्रमण किया। नानशनकी सुदृढ़ किलाबन्दीको आड़से भी जिन जापानियोंको रोकना बहुत कठिन हो गया था; उन्हीं वीर जापानियोंको खुले मैदानमें सम्मुख पा मोरचेमें बैठी रूसी फौजके पैर उखड़ गये। गगनभेदी जयध्वनिकर ओसाका-डिविजन भागते रूसियोंपर टूट उन्हें खण्ड खण्ड करने लगा। पहले ही लिख चुके हैं, कि कोई एक कोसकी चौड़ाईमें यह युद्ध चल रहा था। रूसी फौजका बायां भाग टूटते ही उसके टूटनेका समाचार बिजलीकी तरह इस एक कोसकी लम्बाईमें लड़ती रूसी और जापानी दोनो फौजोंमें फैल गया। यह समाचार सुन रूसी फौजकी छाती दहल गई और बाकी फौजका मध्य भाग और भाग आकुलताहसे अधीर हो अपनी विध्वस्त पङ्क्तियोंको

घायोंका हिसाब जापान-सेनापति होने दिया ; ऐसी दशामें और युद्धकी भीषणताका खयाल करते हुए दोसेलको बताई हताहतोंकी संख्याका विश्वास कैसे किया जा सकता है ? किसी किसीका कहना है, कि रूस जुबानी चाहे जो कुछ कहे ; असलमें उसकी ओरके कोई दो या ढाई हजार सिपाही हताहत हुए। जबतक रूसी मोरचेके भीतर छिपे बैठे थे, तबतक उनकी अधिक क्षति नहीं हुई सही ; किन्तु जब वह अपना माल असबाब छोड़, तोपें छोड़, अपने हताहत छोड़ मैदानसे भागे ; तब उनकी बहुत क्षति हुई। इसी अवसरपर जापानियोंने अपनी दिनभरकी क्षतिका पूरा पूरा प्रतिशोध ले लेनेकी चेष्टा की थी।

इस विजयसे जापानियोंके हाथ कितने ही रूसी अफसर और सिपाही कैद हुए। सिवा इसके बहुतर बड़ी बड़ी तोपें, द्रुत कलदार तोपें, एकाट्र नका इञ्जिन, तीन सर्च-प्रकाश, पचास माइने, बहुसंख्यक बन्दूकें और बहुतसे कारतूस और गोले भी जापानियोंको मिले। सिवा इसके यह विजय प्राप्तकर जापानियोंने आरथर-बन्दरकी बहुसंख्यक किलाबन्दियोंमें सबसे पहली और नितान्त दुर्गम्य किलाबन्दीपर अधिकारकर बहिर्जगत्से आरथर-बन्दरके कुल सम्पर्क तोड़ दिये। इस विजयसे जापानियोंको यह सब लाभ यदि न भी होते, तो प्रबलपराक्रान्त रूसी फौजको पूर्णरूपसे पददलित करनेका जो सुयश जापानियोंने प्राप्त किया ; उनकी उस युद्धकी सम्पूर्ण क्षतिका वही बहुत बड़ा प्रतिफल था। इस युद्धमें जय प्राप्तकर जापानी सिपाहियोंने रूसियोंके मोरचेको ...ने पर...ने रौंद ; रूसियोंकी राजपताका फाड़ अपनी राज-...का फहरानेमें जो सुख प्राप्त किया था ; वह भी कुछ कम

२६वीं मईको सन्ध्याको युद्ध विजय करनेके उपरान्त थकी-मांदी जापानी फौजें रातभर अपनी जीती जगहमें सोईं। बड़े सवेरे उठ जापानी फौजोंने आगे बढ़ना आरम्भ किया। रूसी रातो रात नानशानसे दक्षिण-पश्चिम नानशानशीलीपू पार्वत्य रेल-ष्टेशन पहुंच गये थे। यह रेल-ष्टेशन जङ्क्शन है। यहांसे एक लाइन अरथर-बन्दर गई है और दूसरी डालनी-बन्दर। नानशानके युद्धमें रूसियोंकी पराजयकी बात सुन डालनी-बन्दरमें जो रूसी फौज थी, वह २६वीं ही मईको डालनी परित्यागकर राहके रेलके पुल तोड़ती नानशानशीलीपू पहुंच अपनी नानशानसे भागी हुई फौजके साथ शरीक हो गई थी। २७वीं मई को प्रातःकाल जापानी फौज नानशानसे चल अपने गश्ती सवारोंसे रूसी फौजकी स्थितिकी खबर पा सीधी नानशानशीलीपू ष्टेशनकी ओर बढ़ी। जापानी फौजोंके आनेका समाचार पाते ही रूसी फौजें नानशानशीलीपू छोड़ और पीछे हट गईं। जापान-सेनापतिने आगे बढ़ इस जङ्क्शन ष्टेशनपर अधिकार कर लिया और अपनी फौजका प्रधान भाग रूसी फौजके पीछे पीछे अरथर-बन्दरकी ओर भेजा और एक छोटासा भाग डालनीकी ओर रवाना किया।

२६वीं मईको जैसे ही रूसी फौजने डालनी नगर खाली किया, वैसे ही नगरमें बलवा फैल गया। रूसियोंने डालनी परित्याग करनेसे कुछ पहले कुछ चीनाओंको नगरकी शान्तिकी रक्षा करनेका समाचार किया था। बिना फौज और पुलिसके बेचारे चीना शान्तिके नगरकी शान्तिको कैसे रक्षा कर सकते थे? उनको आंखोंके सामने नगरमें बलवा मच गया; बलवाइयोंने दूकानोंको लूटना आरम्भ किया;

नगरमें जापानी फौजोंका अड्डा बन सकता था; टूटी हुई रेल-लाइनकी शीघ्र ही मरम्मत हो सकती थी। ऐसे ही डालनी नगरको स्वाधिकारमुक्तकर जापानी फौजने अपनी नानशान-युद्धकी विजयको और भी लाभजनक बना लिया।

तो थीं, कि रूसियोंने कहां कहां तोपें चढ़ाई हैं और किस किस जगह नये किले तय्यार किये हैं। जङ्गी नावोंने गोलोंकी कोई परवा न कर सबूत लगा। अन्तमें यह मालूम कर लिया, कि लियावटीशान शहरकी ओर पर्व्वतमालापर रूसियोंने दो नये किले तय्यार किये हैं और एक पुराने पर्व्वतके समीप सर्च-प्रकाशके यन्त्र लगाये हैं। जापानियोंके तोड़े हुए रेल-पथको दुरुस्तकर रूसी जो एक ट्रेन आरथर-बन्दरमें लाये थे; उसमें किलाबन्दीके उपयोगी बहुतेरे सामान थे। उन्हींमें सर्च-प्रकाशके कितने ही यन्त्र थे और उन यन्त्रोंमें बिजलीका प्रकाश उत्पन्न करनेवाले बिजलीके खजाने या 'डिनामो' भी नावोंकी इस गिरदावरीमें जापानकी कोई बड़ी क्षति नहीं हुई; सिर्फ एक नावपर एक रूसी गोला आकर फटा, जिसके फलसे एक छोटे दर्जेका अफसर उड़ गया और तीन जहाजी सिपाही जखमी हुए।

स्थलकी ओरसे जापान-सेनापति ओकूकी फौज क्रमशः आरथर-बन्दरके समीप पहुंच रही थी; जलकी ओर टोगोकी जङ्गी नावोंका जबरदस्त पहरा बैठा हुआ था; फिरभी आरथर-बन्दरके रूसी नाना छल बल-कौशलसे बहिर्जगत्से कुछ न कुछ सम्बन्ध स्थापित किये हुए थे। कबूतर हरकारोंका काम देते थे। आरथर-बन्दरकी चिट्ठी बाहर ले जाते और बाहरकी चिट्ठी आरथर-बन्दरमें लाते थे। कभी कभी बाहरका रूसी जापानियोंकी निगाह बचा आरथर-बन्दरमें घुस आता और भीतरका रूसी इसीतरह आरथर-बन्दरके बाहर पहुंच जाता था। इसीतरह [illegible] अफसर [illegible]नाओंका एक नावमें सवार हो आरथर-

वक्तृता दिया करते थे। वक्तृताकी समाप्तिपर सहस्र सहस्र सिपाही समस्वरसे पुकारकर कहा करते थे,—"हमलोग प्राण विसर्जन करेंगे; किन्तु जापानियोंकी वश्यता स्वीकार न करेंगे।"

घेरा आरम्भ होनेके साथ साथ रूसियोंने आरथर-बन्दरके चीना अधिवासियोंको बन्दरसे निकाल बाहर करनेकी व्यवस्था की। क्रम क्रमसे चीनाओंने आरथर-बन्दर खाली करना आरम्भ किया। कोई चीना डेरा-डण्डा उठा स्थलपथसे गया; कोई नाव द्वारा जल-पथसे। अफवाह है, कि आरथर-बन्दर परित्याग करनेवाले चीनाओंका कुल खाद्य-द्रव्य रूसियोंने रखवा लिया। राहकी रोटीतक रखवा ली। ऐसे कितने ही चीनाओंकी तलाशी लेते समय उनपर दयाकर उन्हें जापानियोंने आहार दिया।

उधर रूसका नयनसुखकर डालनी-बन्दर जापानी अफसरोंके सत्त्वावधानमें जल-स्थल-सैन्यका सम्मिलित केन्द्रस्थल बनाया जा रहा था। एक ओर जिसतरह सेनापति ओकूकी फौजोंके लिये बारिकें बनने लगी थीं; टूटीफुटी शाखा रेल-लाइन दुरुस्त होने लगी थी; दूसरी ओर उसीतरह टोगोके बेड़ेके किनारे आनेके लिये खाड़ीकी जलमग्न माइनें तोड़ी जाने लगी थीं। इसबार डा. लनी-बन्दरके सामनेकी तालीनवान-खाड़ीमें डूबी माइनोंके तोड़नेमें गोला-गोली बरसा कोई बाधा देनेवाला नहीं था; इसलिये जापानियोंने जापानके क्यूशियो प्रदेशके सुप्रसिद्ध गोताखोरोंको बुला इस भयङ्कर कामका भार दिया। गोताखोरोंने अच्छी नावों या माइन तोड़नेवाले यन्त्रोंकी अपेक्षा अधिक काम किया। बड़ी बड़ी फुरतीके साथ माइनें फूटीं। १६वीं जनसे इठी जूनतक—तीन [illegible]—इकतालीस माइनें फूटीं। गोताखोरके गुच्छमें आर-

निक भागनेमें ही जापानी जहाजोंके डालनी-बन्दर पहुँचने लायक एक निरापद राह तय्यार हो गई।

डालनी-बन्दरमें घेरेके मसाले उतरने लगे और वह सब रेल-लाइन या नाना राहों द्वारा उन फौजोंके पास पहुँचने लगे, जो अर्द्धचन्द्राकारमें आगे बढ़ आरथर-बन्दरको धीरे धीरे घेर रही थीं। बन्दरकी बाहरी किलाबन्दीके सामने पहुँच जापानी फौजें ठहरीं और वहांके प्रायः समग्र उपयोगी पर्व्वतशिखर स्वाधिकारभुक्तकर उनपर तोपखानेके चबूतरे आदि बनाने और उनपर शिरावकी बड़ी बड़ी तोपें चढ़ाने लगीं। पचास पचास गजके फासिलेपर सन्तरी खड़े किये गये, जो चौबीसो घण्टे पहरा देने लगे। गिरदावरोंके सदार और पलटनोंके दस्ते रूसियोंके किलोंके सामने गश्त लगाने लगे। मतलब यह, कि घेरा इतना जबरदस्त तय्यार किया गया, कि आरथर-बन्दरके रूसी उसे तोड़ निकल भागनेकी हिम्मत कर नहीं सकते थे।

आरथर-बन्दरको सुदृढ़रूपसे घेर लेनेकी सुव्यवस्था करके भी जापानी निश्चिन्त नहीं थे। उन्हें यह आशङ्का थी, कि आरथर-बन्दरका घेरा रूस यदि आरथर-बन्दरके भीतरसे न हो, तो बाहरसे तोड़ सकता है; घेरा करनेवाली फौजोंपर उनके पीछेसे आक्रमण कर सकता है। यह आशङ्का नई नहीं थी। जिस समय नानशान-युद्ध हुआ नहीं था, उसी समयसे जापान इस आशङ्कासे नितान्त आशङ्कित था। हम पीछे लिख आये हैं, कि रूसके प्रधान सेनापति कुरोपाटकिन अपने सदर लियाव-याङ्गमें अवस्थान कर रहे थे और उनकी अर्द्धचन्द्राकार व्यूहमें पड़ी फौजका बायां सिरा मोतोमलिङ्ग घाटीमें था और दाहना

हैचोङ्ग नगरमें । हैचोङ्गसे किनचौतक सीधी रेल-लाइन गिड़ी थी ; जिसके द्वारा सहज ही कुरोपाटकिनके सहस्र सहस्र सिपाही किनचौ या उसके पड़ोस पहुँच सकते थे। इसीलिये नानशान-युद्धसे पहले ही जापानियोंको आशङ्का हुई थी, कि जिस समय हमारी फौजें नानशान पहाड़ीकी रूसी फौजोंसे युद्धारम्भ करेंगी; उसी समय कुरोपाटकिन अपनी फौजों द्वारा नानशान पहाड़ीपर आक्रमण करनेवाली जापानी फौजोंपर उनके पश्चाद्भागसे आक्रमण करेंगे। ऐसा होनेसे फल चाहे कुछ ही क्यों न होता ; किन्तु जापानी दो शत्रुओंके बीच अवश्य ही पड़ जाते। किन्तु ऐसा हुआ नहीं और ऐसा न करनेकी वजह युरोपके विचक्षण रणपण्डितों द्वारा कुरोपाटकिनको तिरस्कृत होना पड़ा था। यह एक सुअवसर निकल गया था सही ; किन्तु दूसरा अवसर कुरोपाटकिनके सामने था और जापानियोंको इस बातकी पूर्ण आशङ्का थी, कि कुरोपाटकिनकी फौजें आगे बढ़ आरथर-बन्दर घेरनेवाली जापानी फौजोंपर यदि आक्रमण करना चाहें, तो कर सकती हैं और इस आक्रमणके फलसे या तो आरथर-बन्दरकी फौज नगर खालीकर निर्विघ्न निकल जा सकती है या उसकी खूब दलपुष्टि हो सकती है। और जापानियोंकी यह आशङ्का अकारण नहीं थी ; भीतर ही भीतर रूस आरथर-बन्दरका घेरा तोड़ बन्दरके उद्धारके लिये तय्यार हो रहा था। मेघ दिखाई नहीं देता था ; किन्तु आरथर-बन्दर घेरनेवाले जापानियोंको अपने पीछे उत्तरसे मेघका घोर-गम्भीर गर्जन बारंबार सुनाई देता था।

ऐसी ही आशङ्कासे अस्थिर हो उत्तरसे आनेवाली भावी

विपद रोकनेके लिये जूनके आरम्भ हीमें जापानियोंने तरह तरहकी तय्यारियां आरम्भ कर दीं। जापानकी इस समयकी कुल तय्यारियोंका हाल अबतक किसीको मालूम हुआ नहीं है। फिर भी; इतनी बात उसी समय मालूम हुई थी, कि किनचौसे कुछ ऊपर प्रायद्वीपकी एक ओर पुलानटोन या आदम-बन्दरमें और दूसरी ओर पीस्यूवोमें कितनी ही फौजें उतार और उन दोनोंको भूमिपर मिला जापानियोंने कुरोपाटकिनकी फौज और अरथर-बन्दरके बीच फौजोंकी एक सुदृढ़ दीवार खींचदी थी। हैचौङ्गकी ओरसे रूसी फौज अरथर-बन्दरकी ओर बढ़नेवाली थी; जापानी अफसरोंने किनचौ-खाड़ीसे कुछ ऊपर आदम-बन्दरमें बहुत बड़ी जापानी फौज उतार उसे हैचौङ्गकी ओर फैला दी थी। रूसी फौजके टुकड़े बहुत आगे बढ़ आये थे; इसलिये आदम-बन्दरसे कुछ ही आगे उधर जापानी और रूसी गिरदावरीके सवारोंके बीच हलकी हलकी लड़ाइयां होने लगी थीं। १०वीं मईको दोनों ओरकी गिरदावरीके सवारोंके बीच किसी कदर बड़ी लड़ाई हुई। जापानियोंकी ओरसे इस खण्ड-युद्धका वर्णन प्रकाशित नहीं हुआ; रूसियोंने इसे बहुत ही महत्त्वका समझ इसका बहुत ही लम्बा वर्णन प्रकाशित किया।

रूसके मित्रोंने निरपेक्षताकी दुहाई देकर इस खण्ड-युद्धका वर्णन इस प्रकार किया है,—एक दिन रूसी गिरदावरीके सवारोंने जापानी छावनीके समीप पहुंच जापानी फौजकी ओर जाती हुई घास-चारा आदिकी गाड़ियां लूट लीं। इससे जापानियोंको बड़ा क्रोध आया; उन्होंने रूसियोंसे इस लूटका बदला लेना स्थिर किया। जापान-सेनापति अक्कियामाके अधीन जापानी

रिसाला तीन बटालियन जापानी पैदल फौजके साथ आर्थर-बन्दरसे निकल वाफाङ्गकी रेल-ष्टेशनकी ओर चला। वाफाङ्ग-कौमें रूसियोंका फ्रण्टियर गार्ड रिसाला था। जापान-सेनापति अकियामा इस रूसी रिसालेपर आक्रमणकर इसे ध्वस्तविध्वस्त कर डालना चाहते थे। दोनो दलोंके समीप पहुंचनेपर युद्ध आरम्भ हुआ। रूसियोंने अपने पीछेसे तोपखाना और पलटनें मंगाईं। रूसी रिसालेने जापानी फौजपर आक्रमणकर उसे अत्यन्त क्षतिग्रस्त किया। एक समूचा जापानी स्क्वाड्रन रूसी रिसालेके गोलोंसे फटकर नष्ट हो गया। जापानी फौज जब भगी, तब जापानी अफसर अपनी फौजके साथ साथ आसानीके साथ भाग न सकते थे; इसलिये वह अपने जूते फेंक नङ्गे पैर अपनी फौजके साथ भागे।

रूस और उसके गुप्त-प्रकट मित्रोंने जापानियोंकी इस पराजयका ऐसा ही वर्णन किया है। किन्तु यह वर्णन प्रकट होनेके कुछ ही घण्टोंके उपरान्त रूस-सेनापति कुरोपाटकिनने अपनी सरकारको जो रिपोर्ट भेजी, उससे इस वर्णनकी सारी कलई खुल गई और वर्णनका यथार्थ रूप जगत्‌को दिखाई दिया। कुरोपाटकिनने रिपोर्ट भेजी,—"जापानी फौज आर्थर-बन्दरसे आगे बढ़ वाफाङ्गकी रेल-ष्टेशनसे कोई तीन मीलके फासिलेपर मोरचे बांध सुदृढ़ रूपसे बैठ गई है।" कहां जापानियोंकी पूर्ण पराजय और कहां उनका "मोरचे बांध सुदृढ़ रूपसे" बैठ जाना; इन दोनो बातोंके बीच कितना अन्तर है। रूसियों और उनके नाना मित्रोंका काल्पनिक युद्ध-वर्णन और कुरोपाटकिनकी रिपोर्ट दोनोंको परस्पर मिला देनेसे जान पड़ता है, कि जैसे ही

जापानी फौज वाफाङ्कौके समीप पहुंची, वैसे ही उसपर रूसी रिसालेने आक्रमण किया। आरम्भमें प्रायः रूसी रिसालेने जापानियोंको कुछ दबाया; किन्तु इसके बाद ही जापानियोंकी बाकी फौज पहुंच जानेसे रूसी रिसालेको भागना पड़ा और जापानी फौजें जिस जगह पहुंच गई थीं, वहीं पक्के मोरचे बांध सुदृढ़ रूपसे बैठ गईं।

वाफाङ्कौवाले खण्ड-युद्धके उपरान्त कोई दश या बारह दिनों-तक वाफाङ्कौ और आदम-बन्दर प्रभृति स्थानोंमें जापानी फौजमें बड़ी हलचल दिखाई दी। जापान-सेनापति ओकू स्वयं आदम-बन्दर पहुंच गये और अपने तत्त्वावधानमें नये नये मोरचे बंधवाने और यथास्थान फौजें बैठाने लगे। कहते हैं, कि आदम-बन्दरसे आगे कोई दश मीलकी चौड़ाईमें जापानी फौज फैल अवस्थान करने लगी। जापानकी इस फौज और रूसकी गिरदावरीकी फौजके बीच और भी कितनी ही छोटी छोटी लड़ाइयां हुईं। यह सब १२वीं जूनतक हुईं। इसके उपरान्त एकाएक दोनो ओरकी फौजोंकी गतिविधि रुक गई; जो फौज जिस जगह थी, वह उसी जगह शान्त भावसे बैठ गई जगतको यह देख बड़ा आश्चर्य हुआ; लड़ाईकी खबरोंके शौकीन बहुत परेशान हुए; किन्तु इसमें आश्चर्य या परेशानीकी कोई बात नहीं। समुद्रमें तूफान आनेसे पहले सागर-जल खूब स्थिर हो जाता है; रेगिस्तानमें प्रचण्ड आंधी बहनेसे पहले मलय-समीर बहता है; घोर युद्ध आरम्भ होनेसे पहले विपक्षीय फौजोंमें शान्ति फैल जाती है।

पाठक! भयङ्कर समरानल प्रज्वलित हुआ चाहता है; एक-

बार दोनो ओरकी फौजोंकी स्थिति देखिये। रूस और जापान दोनो ओरकी फौजें कोसोंकी लम्बाईमें एक दूसरेके मुकाबिले पड़ी हुई हैं। जापानी फौजके दाहने यालू-युद्ध विजयी जापान-सेनापति कुरोकीकी फौज है। पहले ही लिख चुके हैं, कि कुरोकीकी फौजका दाहना भाग मोतीनलिङ्गके समीप रूसी मोरचेके पास पहुंच गया है; असलमें यही भाग जापानी फौजका दाहना छोर है। कुरोकीकी फौजका बायां छोर जिस जगह समाप्त हुआ है, उस जगह और एक जापानी फौजने पहुंच अपना दाहना भाग फैला दिया है। हम पीछे एक परिच्छेदमें लिख आये हैं, कि जापान-सेनापति ओकूकी फौजें जिस समय आर्थर-बन्दरके समीप बारबरदारीके जहाजोंसे उतरी थीं, उसी समय एक जबरदस्त जापानी फौज कोरिया-खाड़ीके ताकुशान स्थानमें बारबरदारीके जहाजोंसे उतरी थी। इस फौजकी काररवाई अबतक बहुत गुप्त थी; इसीलिये बहुतेरोंको जान न पड़ा, कि ताकुशानकी फौज क्या है; यह फौज कुरोकीकी फौजका टुकड़ा है या ओकूकी फौजका। असलमें यह फौज पूर्व्वोक्त दोनो फौजोंसे पृथक थी, जापान-सेनापति नोजू इस फौजके प्रधान अफसर थे। नोजूकी फौज कुरोकी और ओकूकी फौजके बीचमें उतर दोनो फौजोंको सहारा देनेके लिये तय्यार थी; विशेषतः वानशान-युद्धमें ओकूकी फौजको सहारा देनेके लिये और भी तय्यार थी। अन्तमें जब नोजूने देखा, कि ओकूने बिना सहारा मांगे ही वानशान-युद्धमें विजयलाभ किया; तब नोजू अपनी फौज ले आगे बढ़े और कुरोकीके सदर स्थान फेङ्ग्हाङ्गचेङ्गके बराबर उससे कोई चालीस मील दूर सेमनची स्था-

नमें पहुंच गये। सिउयेनपर रूसियोंका अधिकार था। नोजूकी फौजने हलकी लड़ाईके बाद इस स्थानसे रूसियोंको मार भगाया और इसपर अपनी ध्वजा उड़ा दी। इसके बाद ही नोजूने अपनी फौज दाहने फैला कुरोकोकी फौजसे मिला दी और बायें फैला ओकूकी फौजके पास पहुंचा दी। इसतरह जापानी फौजकी कोसोंकी लम्बी एक पंक्ति तय्यार हुई; जिसका दाहना सिरा मञ्चूरियाका मोतीनलिङ्ग हुआ और बायां सिरा किनचौके ऊपरका आदम-बन्दर। ओकू और नोगीकी फौजके बीच सिर्फ घोड़ासा अलगाव रह गया।

१३वीं जूनके बाद कई घण्टोंतक कोई उल्लेखयोग्य लड़ाई नहीं हुई सही; किन्तु पूर्व्वोक्त तीनो जापानी फौजें बहुत कुछ मिलकर घोर युद्धके लिये तय्यार हुईं। जापानियोंकी इस तय्यारीके साथ साथ और एक बहुत बड़ी तय्यारी हुई। जापान-राजधानी टोकियोंमें सेनापतियोंका जो दल था, उसके प्रधान अध्यक्ष मार्शल मारक्विस ओयामा थे। टोकियोंमें बैठे बैठे वह मञ्चूरिया और लियाउटुङ्ग प्रायद्वीपकी जापानी फौजों-की परिचालना करते थे। साथ साथ साथ फौजें और अफसर युद्धस्थलकी ओर भेजते थे। जान पड़ता है, कि इस अवसरमें मारक्विस ओयामाने जापानमें भावी वृहत् युद्धकी सब तय्यारियां समाप्त कर दीं। इसीलिये वह जापान परित्यागकर अपने सहकारी वयोवृद्ध सेनापति कोदामाके साथ युद्धस्थलमें पहुंच गये। जापानकी पूर्व्वोक्त तीनो फौजोंका भार इन्हीं मार्शल ओयामापर रखा गया। इसीके साथ साथ नौ-सेनापति टोगो और उनके अधीनस्थ कितने ही नौ-सेनापतियोंकी पदवृद्धि की

गईं और वह नाना सम्मानसूचक उपाधियोंसे विभूषित किये गये।

जापान-सरकारके इस सेनापति-परिवर्त्तन, उपाधिवितरण और सैन्यसमावेश प्रभृतिका समाचार पा समझदार समझ गये, कि लाओयांग-युद्ध समाप्त होनेके साथ साथ रूस-जापान-युद्धका प्रथम या आरम्भिक अंश समाप्त हुआ और द्वितीय या मध्य अंशका आयोजन आरम्भ हुआ है। युद्धका मध्य अंश ही अत्यन्त विकट और प्रयोजनीय होता है। इसीलिये दोनो ओरकी फौजें कुछ समयके लिये युद्ध रोक भावी भयङ्कर युद्धकी तय्यारियोंमें लग गई थीं। दोनो ओरकी फौजें दो जुदा उद्दीपनाओंसे उद्दीपित थीं। रूसी फौजें चाहती थीं, कि युद्धके प्रथम अंशमें जो कुछ होनेको था हो गया; अब इस दूसरे अंशमें खूब सावधानीके साथ, बड़े साजसामानके सहारे युद्ध करना चाहिये; जिससे युद्धके पहले अंशमें रूसको जो क्षति हुई है, वह पूर्ण हो जाये। उधर जापानी फौजें सोच रही थीं, कि युद्धके पहले अंशकी विजयप्राप्ति नाममात्रकी विजयप्राप्ति है; अब युद्धके इस दूसरे अंशमें विजय प्राप्त करने हीसे युद्धके विजयमुकुटसे हमारे देशका मस्तक सुशोभित होगा। दोनो ही ओर बड़े बड़े हौसले थे; बड़ी बड़ी तय्यारियां थीं; पाठक इनका परिणाम आगे क्रम क्रमसे आप ही देख सकेंगे।

त्रयोदश परिच्छेद।



उद्धारका यत्न।

पाठकोंको स्मरण होगा, कि जिस समयका हाल हम लिख रहे हैं, उस समय रूसके प्रधान सेनापति कुरोपाटकिनका सदर स्थान मुकदनसे इधरका नगर लियावयाङ्ग था। इसी लियाव-याङ्गसे कुरोपाटकिनने अपनी फौज जापानी फौजके सामने अर्द्ध-चन्द्राकारमें फैला रखी थी। कुरोपाटकिनकी फौजका बायाँ सिरा जापानी फौजके दाहने सिरेके सामने मोतीनलिङ्ग घाटीमें था और दाहना सिरा जापानी फौजके बायें सिरेके सामने आदम-बन्दरसे कुछ दूर अवस्थान कर रहा था।

कुरोपाटकिनका सदर स्थान लियावयाङ्ग नगर अगले वक्तोंका बना हुआ चौखूटा नगर है। अन्यान्य प्राचीन नगरोंकी तरह इस नगरकी भी चारो ओर ऊंची शहरपनाह है। नगर बहुत बड़ा न होनेपर भी बिलकुल छोटा नहीं है। नगरमें कितने ही बाजार हैं, कितने ही चौक हैं, कितने ही नयनसुखकर स्थान हैं। प्रधान प्रधान बाजार ऊंची ऊंची पक्की अट्टालिकाओंसे सुसज्जित हैं। नगरके बाहर साइबेरिया-आरथर-बन्दर-रेलका लियावयाङ्ग नामक ष्टेशन है। इसी ष्टेशनके समीप कुरोपा-टकिन रहते थे। रूसी फौजके प्रधान सेनापति होनेपर भी कुरोपाटकिनके इर्दगिर्द किसी तरहकी शानशौकत दिखाई देती नहीं थी। कुरोपाटकिन सादगी बहुत पसन्द करते थे,

इसीलिये उनके प्रवासस्थानसे भी सादगीकी झलक दिखाई देती थी। विलायती अखबार 'डेली एक्सप्रेस'के संवाददाता मिस्टर इगलस स्टोरीने कुरोपाटकिनके सदर स्थानके सम्बन्धमें लिखा है, —"लियावयाङ्ग नगरके दक्षिण-पश्चिम लियावयाङ्ग रेल-स्टेशन है। इसी स्टेशनकी एक शाखा-लाइनपर रेलगाड़ीमें कुरोपाटकिन रहते हैं; रेलगाड़ी ही उनका मकान है। कुरोपाटकिनकी गाड़ीके इर्दगिर्द कितनी ही गाड़ियां और झोपड़ियां हैं; इनमें कुरोपाटकिनके अधीनस्थ सेनापति तथा अफसर रहते हैं। शान-शौकत कहीं नामको भी नहीं। तोपें हैं ही नहीं। कुरोपाटकिनकी गाड़ीके पास एक ऊंचे लट्ठे पर झण्डेके बदले एक बड़ा रूमाल वायुमें फरफर उड़ता रहता है। यही मानो सदरका चिह्न है। गिनतीके सन्तरी हैं। हां तार और वैज्ञानिक यन्त्रोंकी भरमार है; विशेषतः वैद्युतिक यन्त्रोंकी अधिकता। कुरोपाटकिनके पास जितने अफसर हैं, उनमें अधिकांश विज्ञानवित् हैं। भूमिके ऊपर टेलिफोन, टेलिग्राफ प्रभृतिके बहुसंख्यक तार दिखाई देते हैं, जो सदर स्थानसे भिन्न भिन्न ओर गये हैं। तार ले जाने और ले आनेवाले चपरासियोंका काम अफसर करते हैं। इस बीसवीं शताब्दिने एक सुशिक्षित सुसज्जित सैन्यके सदर स्थानको बड़ा ही विचित्र सदर स्थान बना दिया है।"

यह न समझना चाहिये, कि कुरोपाटकिन रूससे रणस्थलमें आकर अपनी रेलगाड़ीसे बाहर निकलते ही नहीं थे; समय समयपर वह अपनी गाड़ीसे निकल रूसी फौजों और उनके मोरचोंकी देखभाल किया करते थे। जापानी फौजोंके सामने पड़ी रूसी फौजके प्रायः सभी मोरचे कुरोपाटकिनके देखे हुए

थे; समय समयपर क्रुरोपाटकिन दौरेके लिये भी निकला करते थे। क्रुरोपाटकिन नाना गुणोंके आकर होनेपर भी सुदूर पूर्वके हस्वी बड़े लाट अलक्सिफको वशीभूत कर नहीं सके थे। खबर है, कि क्रुरोपाटकिन और अलकसिफके बीच सदासे रञ्जिश चल रही थी। क्रुरोपाटकिन अलक्सिफको और अलक्सिफ क्रुरोपाटकिनको नीचा दिखानेकी चेष्टा किया करते थे। दो दिग्गजोंकी टक्कर थी। क्रुरोपाटकिन और अलक्सिफ दोनो होकी कार्य्यावली इतिहासका मसाला थी। दोनो श्रेष्ठ और गण्य-मान्य पुरुष थे सही; किन्तु दोनोंने अपना श्रेष्ठत्व दो जुदा पथसे चलकर प्राप्त किया था। क्रुरोपाटकिनने श्रेष्ठत्व प्राप्त किया था श्रम और विद्याबलसे और अलक्सिफने श्रेष्ठत्व प्राप्त किया था; दरबारी साजिशके जोरसे। क्रुरोपाटकिन परिश्रमी और विद्वान् सीधेसादे सिपाही थे; अलक्सिफ जोड़तोड़ करनेवाले राजनीतिसागरके मगर थे। ऐसे ही दोनो महापुरुषोंके बीच इस युद्धके समय भी गज-कच्छपी चल रही थी।

नानशान-युद्धकी समाप्तिके उपरान्त इन दोनोंके बीचका मनोमालिन्य और बढ़ गया। मनोमालिन्य बढ़नेका कारण यह हुआ, कि नानशान-युद्धके उपरान्त आरथर-बन्दर घिर जानेपर अलक्सिफने कहा, कि आरथर-बन्दरका उद्धार होना चाहिये; क्रुरोपाटकिनने कहा यह असम्भव है। समझाकर कहा,— "कुरोकीकी फौज मेरे बायें है; ताकुशानसे आगे बढ़ रूसी मोरचोंके समीप बैठी हुई नोजूकी फौज मेरे सामने है; ऐसी अवस्थामें मैं यदि ओकूकी फौजको परास्तकर आरथर-बन्दरके

उद्धारकी चेष्टा करूंगा, तो कुरोकी और नोजूकी फौज आगे बढ़ मेरी फौजके मध्यम गपर आक्रमण करेगी; फौज ट्ट जानेसे मेरी फौजका मध्यभाग निर्बल हो जायेगा और वह कुरोकी तथा नोजूकी फौजके सम्मिलित वेगको संभाल न सकेगा।" सिवा इसके कुरोपाटकिन यह भी कहते थे,—"अभी मेरे अधीन लाख या दो लाख सिपाही हैं; जब चार लाख सिपाही हो जायेंगे, तब मैं अपना पराक्रम पूर्णरूपसे प्रकाशित कर सकूंगा।" किन्तु अलकजिफ कहते थे,—"यह सब कुरोपाटकिनके बहाने हैं; जो आदमी काम करना चाहता है, वह बेसरोसामानीसे भी सामानकी सूरतें बना लिया करता है।"

अलकजिफ खदलवश मुकदनमें थे। निमन्त्रणरक्षाके लिये या स्वतःप्रवृत्त हो २७वीं मईको सन्ध्या कोई ५ बजे कुरोपाटकिन स्पेशल ट्रेन द्वारा मुकदन पहुंचे। प्रधान सेनापति कुरोपाटकिन सरकारी तौरसे मुकदन गये थे; इसलिये रेल-स्टेशनपर बड़ी धूमके साथ उनकी अभ्यर्थना की गई और जुलूसके साथ उनकी सवारी गवरमेण्ट-भवनमें दाखिल हुई। एक कमरेमें कुरोपाटकिनसे बड़े लाट अलकजिफने भेंट की। कहते हैं, कि भेंट होनेके बाद ही दोनो प्रधान पुरुषोंमें हुज्जत-तकरार चल पड़ी, जो रात दश बजेतक चलती रही। हुज्जतका फैसला नहीं होता; इस हुज्जतका भी फैसला नहीं हुआ। रात दश बजेके उपरान्त कुरोपाटकिन गवरमेण्ट-भवनसे निकल स्टेशन आये और वहांसे अपनी उसी स्पेशल ट्रेन द्वारा अपने सदर स्थान लियावयाङ्ग पहुंच गये। इसके बाद ही अलकजिफने

इनमें और कुरोपाटकिनने लियावयाङ्गसे रूस सम्राट् द्वितीय

निकोलसके पास युक्ति-प्रमाणके साथ अपनी अपनी बातें लिख भेजीं। कहते हैं, कि जिस दिन इन दोनों प्रधान पुरुषोंके लम्बे लम्बे पत्र जारके पास पहुँचे, उस दिन जारने अपने महल 'जार सोसेलो'में अपने वयोवृद्ध सेनापतियों और राजनीतिविशारद मन्त्रियोंकी एक सभा की; सभामें कुरोपाटकिन और अलक्सिफके पत्र पेश किये। सभाके कुछ सभ्योंने कुरोपाटकिनका पक्ष ग्रहण किया और कुछ सभ्योंने अलक्सिफका। खूब तर्क-वितर्क चला। अन्तमें अधिक सम्मतिक्रमसे बड़े लाट अलक्सिफ हीकी बात परिगृहीत हुई। स्थिर हुआ,—"कुरोपाटकिन अरथर-वन्दरके उद्धारके लिये फौज भेजें; अरथर वन्दरका उद्धार करना ही होगा।"

अब कुरोपाटकिनके लिये दूसरा उपाय नहीं था। उनके प्रभु स्वयं जारने जब लिख भेजा, कि अरथर-वन्दरके उद्धारके लिये फौज भेजो जाये, तब कुरोपाटकिन उससे इनकार कैसे कर सकते थे? कितने ही लोगोंने कहा, कि जारने उचित ही आज्ञा दी थी। इसमें सन्देह नहीं, कि उस समय कुरोपाटकिनके पास जितने सिपाही थे, उनकी संख्या जापानी सिपाहियोंकी संख्यासे किसी तरह कम नहीं थी और वह जापानके सामने पड़ी अपनी फौजका मध्यभाग बिना निर्ब्बल किये ही अरथर-वन्दरके उद्धारका काम कर सकते थे। किसी किसीका यह भी खयाल है, कि अरथर-वन्दरके उद्धारका प्रयत्न करनेकी कल्पना कुरोपाटकिनकी नहीं; अलक्सिफकी थी और कुरोपाटकिन यह सोचते थे, कि इस काममें रूसी फौजके कृतकार्य्य होनेसे नाम मेरी सकेगी और नाम अलक्सिफका होगा; इसीलिये वह बारंबार

अलकसिफकी बातका खण्डन कर रहे थे। फिर किसी किसीका यह भी कहना है, कि रूसी सिपाहियोंकी संख्या जापानी सिपाहियोंकी संख्याकी अपेक्षा कम नहीं थी सही; किन्तु अब कुरोपाटकिनको अच्छी तरह मालूम हो गया था, कि जापानी सिपाही रूसी सिपाहियोंकी अपेक्षा अधिक शक्तिशाली हैं; रूसी सिपाही समानसंख्यक जापानी सिपाहियोंको भी रोकनेमें समर्थ नहीं; इसीलिये कुरोपाटकिन आरथर-बन्दरके उद्धारके लिये फौज भेजनेमें सङ्कोच करते थे। किन्तु अब सङ्कोच और आगापीछा करनेका समय नहीं था। जैसे ही रूस-सम्राट्की आज्ञा मिली, वैसे ही कुरोपाटकिनने आरथर-बन्दरके उद्धारके लिये आरथर-बन्दरकी ओर फौज भेजनेकी आज्ञा दी; आज्ञाके साथ साथ कार्य आरम्भ हुआ।

चतुर्द्दश परिच्छेद।

तेलिस्सू-युद्ध—पराजयकी विभीषिका।

आरथर-बन्दरके उद्धारार्थ युद्ध-यात्राकी तय्यारीका हाल इतने दिनों बाद अब लोगोंको मालूम हो गया है; इसीलिये हम भी उसे पाठकोंको सुना सके; नहीं तो जिस समय रूसी फौज इस यात्राके लिये तय्यार हुई थी, उस समय इस यात्राका हाल बाहरी लोगोंको मालूम हो नहीं सका था। उस समय जापानी फौजें रूसियोंके बिलकुल सामने न थे भी तेलिस्सू तनतकपर इसका हाल खुला नहीं और अपनी फौज वेष्टि- छिपाने के लिये ही रूसी रिप्रतिष्ठित की, दूसरी ओर गिरदावरोंके फिरता था। इस युद्ध-यात्रा वह वाफाङ्गकौसो जापानी फौजके होनेपर भी जापानी पहले ही पीछे हटाये। इस दिन जापानी लगाये थे। री गिरदावरोंके सवारोंमें कई बार

रूसियोंके लिये बिलकुल

रूसियोंने प्रत्येक युद्धमें आहार भी गाफिल बैठे नहीं थे। वह किन्तु इस युद्धमें रूसी आगे पहुंचे और उन्होंने अपनी आंखों यूरोपकी सुसभ्य सर्व्वप्रधान युद्धविधि देखी। जापानियोंको बहुत ही युद्धके लिये आगे बढ़ थी, वही हुई; आरथर-बन्दरके सामानोंसे लगभग आगे बढ़ने रूसी फौज तेलिस्सू आ पहुंची। युद्ध-यात्राके लिये फौजें पहले ही से तय्यार थी; वह आत्म- और यह सब इस खूबसूरतीनका समाचार पानेकी प्रती

रहे थे। इससे एक दिन पहले १२ वीं जूनको ही ओकूको समाचार मिला था—"तेलिस्सूमें बड़ी हलचलके लक्षण दिखाई देते हैं; जान पड़ता है, कि रूसकी एक जबरदस्त फौज तेलिस्सू पहुंच रही है।" सेनापति यह समाचार सुननेके लिये तय्यार थे; इसीलिये उन्होंने रूसियोंसे युद्ध-करनेके लिये आदम-वन्दरमें एक फौज तय्यार कर रखी थी। उस समयतक इस फौजका हाल किसीको मालूम हुआ नहीं था। फौजमें कोई तीस या पैंतीस हजार सिपाही और सवार तथा कोई एक सौ तोपें थीं। जापानकी यह फौज रूस-सेनापति स्टाकलवर्गकी फौजके बराबर ही थी। रूसियोंने कहा था, कि इस जापानी फौजकी संख्या बहुत अधिक थी और इसके साथ कोई दो सौ तोपें थीं; किन्तु जापानी अफसरोंने इस बातका खण्डन किया, जिसके प्रत्युत्तरमें अपनी बातके प्रमाणस्वरूप रूसी कोई

बात पेश कर न सके। जापान-सेनापति ओकू यदि चाहते, तो और जबरदस्त फौज रूसियोंके सामने भेजते, किन्तु नाना कारणोंसे यह समसंख्यक फौज ही उन्होंने रूसियोंके लिये यथेष्ट समझी। ओकू वालू नदी और नानशान-युद्धका फलाफल जानते थे; उन्हें विश्वास हो गया था, कि एक रूसीके लिये एक जापानी बहुत है। सिवा इसके ओकू यह भी जानते थे, कि रूसी जिस स्थानमें हैं, उस स्थानमें वह यदि घेर लिये जायेंगे, तो उनके इर्दगिर्दकी पर्वतमालाओंसे—विशेषतः तेलिस्सूके पश्चाद्भागकी पर्वतमालासे रूसियोंको बड़ी क्षति पहुंचेगी। यही सब सोचसमझकर उन्होंने जैसे ही रूसी फौजको

तेलिस्सू आनेकी खबर पाई, वैसे ही आगे बढ़ यथा-सम्भव शीघ्र रूसी फौजपर आक्रमण करना स्थिर किया। इस यात्राके लिये जो फौज उन्होंने पहलेसे तय्यार कर रखी थी, उसे आगे बढ़नेकी आज्ञा दी।

१३ वीं जुलाईको जापानी फौज आदम-वन्दरसे तेलिस्सूकी ओर रवाना हुई। फौज तीन भागोंमें विभक्त की गई। मध्यभाग रेलकी लाइन लाइन आगे बढ़ा। दाहना भाग ताशा नदी किनारे किनारे अग्रसर हुआ; वायां भाग तीन टुकड़ोंमें जुदा होकर तीन जुदा शाहराहोंसे तेलिस्सूकी ओर चला। रिसाला दाहनेकी फौजके किनारे किनारे चला। कई कोसकी लम्बाईमें फैलकर फौज आगे बढ़ी। फौजका रुख इतना चौड़ाकर फौज आगे बढ़ाना बहुत खतरेकी बात है। इसीलिये जापानी फौजका इसतरह बढ़ना देख युरोपके कितने ही रणपण्डित आश्चर्यान्वित हुए थे; किन्तु टाइम्सके फौजी संवाददाताने मानो इन लोगोंके जवाबमें ठीक ही कहा था,—"जापानियोंने सिर्फ नवाविष्कृत अस्त्र-शस्त्र हीपर नहीं; बल्कि अपनी बुद्धि और भुजबलपर निर्भर हो; इस-तरह अपनी फौज आगे बढ़ाई थी।" जिस व्यवस्थाके साथ जापानी फौजके तीनों टुकड़े आगे बढ़ाये गये थे, उससे जान पड़ता था, कि बीचका टुकड़ा रूसी फौजको टक्कर देकर पीछे हटावेगा और अगलबगलके टुकड़े रूसी फौजको घेर लेंगे। १३ वींकी सन्ध्याको जापानी फौजके तीनों टुकड़े आदम-वन्दरसे कोई बारह कोसके फासिलेपर पहुंचे और वहीं तीनों टुकड़ोंने पड़ाव डाल रात बिताई।

१४ वीं जूनको प्रत्यूष होते जापानी फौजें रूसर तरफ आगे

बढ़ने लगीं। आजकी यात्रा उतनी आसान नहीं थी; कारण, आध जगह जगह रूसी गिरदावरीके सवार और रूसी चौकियोंके सिपाही जापानी फौजोंके आगे बढ़नेमें बाधा उपस्थित कर रहे थे। पार्ब्वत्य भूमि आरम्भ हो गई थी; इसलिये पर्ब्वत-श्रेणियोंके अतिक्रम करने या उनकी बगलसे घूमकर जानेमें और भी देर लगती थी। जैसे जैसे जापानी फौजके टुकड़े आगे बढ़े, वैसे वैसे बाधायें बढ़ती गईं। फिर भी; सागरतरङ्गवत् जापानी फौजके टुकड़े कुल बाधाओंको तुच्छ समझ पर्ब्वत-नदी-नाले पार करते, रूसी सवारों और सिपाहियोंको पीछे हटाते आगे बढ़ते ही गये। दो पहर ढल चुकनेपर जापानी फौजके बायें टुकड़ेने एकत्र हो तेलिस्सूके बायें दक्षिण-पश्चिम कोई दस कोसके फासिलेपर पहुंच रूसियोंको भगा नैङ्कियालिङ्ग ग्रामपर अधिकार कर लिया; इसी समय दाहना टुकड़ा पञ्जतन ग्राममें अवस्थित रूसी फौजके बायें किनारे पहुंच गया। इस जगहसे तेलिस्सू कोई चार कोस दक्षिण था। दाहना-बायां टुकड़ा तो दोपहरके उपरान्त ही रूसी मोरचोंके सामने पहुंच गया; किन्तु बीचवाले टुकड़ेके अपने निर्दिष्ट स्थानमें पहुंचनेमें कुछ देर लगी। इसका कारण यह था, कि दाहने बायें टुकड़ेके सामने उतनी बाधायें नहीं थीं, जितनी बीचवाले टुकड़ेके सामने। इस टुकड़ेको प्रत्येक कदमपर रूसियोंसे युद्ध करना पड़ता था। बड़ी कठिनताके साथ तीसरेपहर कोई तीन बजे बीचवाला टुकड़ा लुङ्कियाटुन ग्राम पहुंचा। इस ग्रामके सामने ही लुङ्गवाङ्गमियाव ग्रामसे आगे पर्ब्वतमालापर रूसी फौजका मध्यभाग मोरचा बांधे बैठा था। इस लुङ्गवाङ्गमियाव ग्रामके

पीछे तेलिसु नगर है। जापान-सेनापति, ओकूने बीच-वाले टुकड़ेके साथ लुड़कियाटुन पहुंच देखा, कि उसके सामने रूसी फौज दाहने पश्चात्तन ग्रामसे लेकर बायें ताफाङ्गशेन ग्रामतक धन्वाकार व्यूह बांध अवस्थान कर रही है।

जापानी फौजके तीनों टुकड़े लम्बी यात्रा करनेकी वजह थक गये थे सही; किन्तु उन्हें विश्राम करनेका अवकाश बिलकुल ही नहीं था। रूसी जिस जगह मोरचे बांध बैठे थे; वह जगह रूस-सेनापति श्टाकलवर्गकी दृष्टिमें बहुत अच्छी होने-पर भी सुचतुर युद्धविद्या-विशारद जापान-सेनापति ओकूकी दृष्टिमें बहुत ही खतरेकी थी। रूसियोंका मोरचा देखते ही ओकूको विश्वास हो गया, कि ऐसे समय रूसी मोरचेपर आक्रमण करनेसे जापानियोंकी विजय और रूसियोंकी पराजय अवश्यम्भावी है। इतना ही नहीं; उन्होंने उसी समय यह भी जान लिया था, कि इस जगह रूसियोंको परास्त करनेसे अच्छी तरह पददलित भी कर सकेंगे; नानशानमें रूसियों द्वारा जापानी फ़ौजको जो भयङ्कर क्षति पहुंच चुकी है, उसका प्रतिशोध भी ले सकेंगे। ओकूने विचार किया,—"असंख्य आपदाओंका खयाल न कर यह सुअवसर परित्याग करना न चाहिये। इस वर्षा-ऋतुमें युद्ध करनेमें नाना प्रकारकी असुविधायें उपस्थित होती हैं; किन्तु भगवत्कृपासे सामनेका पार्व्वत्य युद्ध-स्थल उन सब असुविधाओंसे साफ है। दूसरी बात यह है, कि यही युद्ध रूस-जापान-युद्धके द्वितीय भागकी कुञ्जी है; इस युद्धमें यदि जापानी विजयी हुए, तो दूसरे भागके न्याय्य कुल युद्धोंमें

जापानियोंके विजयलाभकी प्रत्याशा की जा सकती है। तीसरी बात यह है, कि कुरोकीकी सैन्य-पंक्तिसे नोदूकी सैन्य-पंक्ति मिली हुई है; नोजूकी सैन्य-पंक्तिके बायें छोर और मेरी सैन्य-पंक्तिके दाहने छोरके परस्पर सम्मिलित हो जानेमें थोड़ासा अभाव है; इस युद्धमें विजय प्राप्त करते ही यह अभाव मिट जायेगा और हमारी और नोजूकी सैन्यका छोर आपसमें मिल जायेगा। इस मेलका फल सामान्य नहीं; सिर्फ इसीकी प्राप्तिके लिये अगणित आपदायें तृणादपि तृण समझी जा सकती हैं।" यही सब बातें सोचसमझ ओकूने अन्तमें स्थिर किया,—"विलम्ब करनेसे सम्भव है, कि रूस-सेनापति अपनी स्थितिकी निर्बलता जान लें और अपनी फौजको उसके वर्तमान स्थानसे हटा दें; ऐसा होते ही मेरी कुल आशायें मट्टीमें मिल जायेंगी; जापानी फौज रूसी फौजको परास्त कर न सकेगी; इसलिये जापानी फौजकी श्रान्ति-क्लान्तिकी कोई परवा न कर अभी युद्धारम्भकी आज्ञा देना चाहिये।"

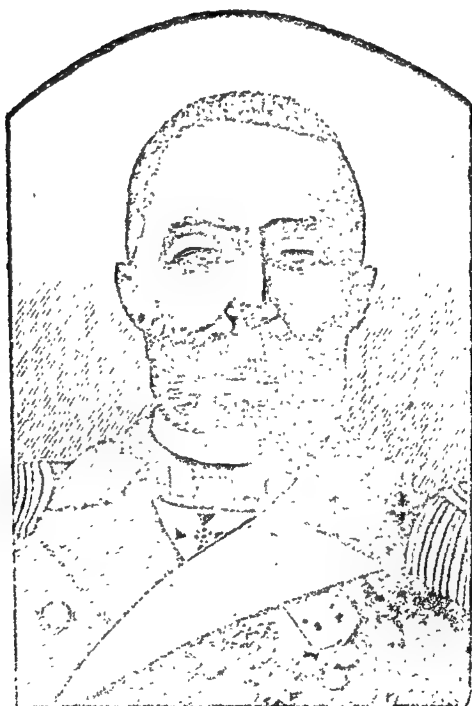
लिखनेमें जितना समय लगा, जापान-सेनापतिको इन सब बातोंका विचार करनेमें उतना समय नहीं लगा। उन्होंने अति अल्पकालमें मन ही मन यह सब तर्क-वितर्ककर उसी समय अपनी फौजके तीनों टुकड़ोंको युद्ध आरम्भ करनेकी आज्ञा दी। युद्धकी आज्ञा घोषित होनेसे पहले ही जापानी फौजके तीनों टुकड़ोंके तोपखाने मोर्चेमें लग गये थे। विशेषतः बायें टुकड़ेका तोपखाना और भी अच्छे मोर्चेमें लगाया जा चुका था। बायें टुकड़ेका तोपखाना रूसी मोरचेके दाहनेछोरसे — आगे बढ़ नाचियालिङ्ग नामी पर्वतमालापर स्थापित

कर दिया गया; बायें टुकड़ेका एक अंश इस तोपखानेसे भी आगे गवियाटुन पांचित्य ग्रामतक पहुंच गया था; यह अंश उस समय अपने सामने बढ़ता, तो रूसी फौजके बायें पार्श्वके पीछे पहुंच जाता। इसतरह जापानी फौजके तोपखाने यथा-स्थान लग चुके थे और जैसे ही सेनापति ओकूने युद्ध आरम्भ करनेकी आज्ञा दी, वैसे ही जापानी तोपखाने रूसी मोरचोंपर गोले बरसाने लगे; तेलिस्सूका युद्ध आरम्भ हुआ।

दोनो ओरकी तोपोंकी संख्या प्रायः समान थी; किन्तु दोनो ओरके गोले समान बलशाली नहीं थे। रूसी तोपखाने युरोपके बने अव्वल दरजेके गोले व्यवहार करते थे; जापानी तोपखाने जापानी डाक्टर शिमोसकी बनाई बारूदसे भरे गोले चलाते थे। युरोपके बने गोलोंकी अपेक्षा जापानके बने गोले अधिक बलसम्पन्न प्रमाणित हुए। रूसी तोपोंके गोले जिस चट्टानपर पड़ते थे, उसे तोड़ कई टुकड़े बना देते थे; जापानी तोपोंके गोले जिस चट्टानपर पड़ते थे, उसे सुरमा बना धुलिकी तरह वायुमें उड़ा देते थे। आपनल गोलेको यदि कहें, तो बहुत बड़ा कारतूस कह सकते हैं। आपनल गोला भीतरसे खाली रहता है, और गोलेके उस खाली गर्भमें सहस्र सहस्र गोलियां भरी रहती हैं। आपनल गोला फौजोंके शिरपर पहुंच आकाशमें फटता है और उसके भीतर भरी वह सहस्र सहस्र गोलियां निकल सिपाहियोंपर बरसती हैं; बहुसंख्यक सिपाही उन गोलि-योंके आघातसे धराशायी होते हैं। जापानके यह आपनल गोले भी रूसी आपनल गोलोंकी अपेक्षा अधिक भयङ्कर थे। दोनो पक्ष सम-संख्यक तोपोंसे एक दूसरेपर गोला-वृष्टि करते

थे; नियमानुसार इन गोला-वृष्टिका फल भी समान ही होना चाहिये था; किन्तु जापानी गोले रूसी गोलोंकी अपेक्षा अधिक भयङ्कर थे; इसलिये रूसी गोलोंकी अपेक्षा जापानी गोलोंका

प्रधान सेनापति ।



जनरल ग्राकलवाँ ।

फल भी अधिक भयङ्कर था। दिनको तीन बजेसे पांच बजेतक यह भयङ्कर गोला-वृष्टि हुई। इसके उपरान्त दोनों ओरके मोरचोंके मान्य अन्धकारके परदेमें छिपने ही दोनों ओरके

तोपखानोंने गोला-वृष्टि बन्द कर दी। पार्वत्य-भूमिने शान्त मूर्त्ति धारण की।

रणभूमिके सान्ध्य अन्धकार द्वारा आच्छन्न होनेपर दोनों ओरकी फौजोंने क्या किया? रूसी फौजने उल्लेखयोग्य वैसी कोई काररवाई नहीं की। पश्चतनमें अवस्थित सिर्फ बायें पार्श्वने कुछ आगे बढ़ जापानी फौजके दाहने पार्श्वके पीछे पहुंचनेकी चेष्टा की; रूसी फौजका बाकी भाग जिस जगह था, उसी जगह रहा। किन्तु जापानी फौजें दिनभर श्रम करनेके उपरान्त भी रातको दम ले न सकीं। दो ही घण्टेकी जापानी गोला-वृष्टिके फलसे रूसी मोरचा हिल गया था; विशेषत: बीचका और उससे भी अधिक दाहना भाग खूब हिल गया था। रूसी फौजके दाहने सिरेपर जापानी गोलोंकी वह मार पड़ी थी, कि उस ओरकी रूसी फौनका कचूमर निकल गया था, अफसर-सिपाही सबमें उदासी छा गई थी। जिन जापानियोंने अपनी दो घण्टेकी गोलन्दाजीका फल ध्यानपूर्वक तन्मय हो देखा था, वह जापानी रूसी फौजकी इस दुर्दशासे अनभिज्ञ नहीं थे; इसीलिये वह कुछ घण्टोंका अल्प विश्राम उपभोग करनेके बदले शत्रुको भगा चिरानन्दमय बनना चाहते थे। रातोरात जापानी फौजका मध्यभाग अपने दाहने टुकड़ेकी ओर झुकता रूसी मोरचेकी ओर उत्तर-पश्चिम आगे बढ़ा और बायां भाग तेनिस्सूकी ओर किसी कदर आगे बढ़ रूसी मोरचेके दाहने सिरेके ठीक पीछे कुछ दूरतक फैल गया; साथ साथ तोपखाने भी ठेला गया; जो रूसी फौजके पीछे ऊंची पहाड़ियोंपर लगा दिये गये। इन तोप-

खानोंसे छूटे गोले दूर दूरतक जा सकते थे ; तेलिस्सू और उसके पीछेकी पर्व्वतमाला और उसकी घाटियां इन जापानी तोपोंकी मारमें थीं। जापानी फौजकी इस गतिका मतलब समझना कुछ कठिन नहीं। जापानी फौजके बायें छोरने रूसी फौजके दाहने छोरको पीछेसे घेर लिया और मध्य भागने किसी कदर अपने दाहने आगे बढ़ रूसी फौजके पीछे लगे अपने तोपखानेको गोलन्दाजोंके लिये सैदान निकाला ; साथ साथ अपने सामनेकी रूसी फौजको पीछे ढकेल पूर्व्वोक्त तोपोंके गोलोंका निशाना बनानेका आयोजन किया। इसतरहकी यह चालें चली गईं, जिनका मुख्य उद्देश्य यह था, कि रूसी फौजें चारो ओरसे दबाई जानेपर भागें और जब तेलिस्सूके पीछेकी घाटियोंसे भागने लगें, तब तोपदम की जायें। जापानी फौजका दाहना टुकड़ा रूसाधिकृत पर्व्वतके सामने जहांका तहां रहा ; उसे आज्ञा मिली थी,—"इस टुकड़े को अपने सामनेकी रूसी फौज यानी रूसके बायें छोरको युद्धमें इसतरह उलझा रखना होगा, कि वह जापानी फौजके मध्यभागके कार्य्यमें आघात उपस्थित करनेका अवसर न पाये।" जापानी फौजने रात सोकर काटनेके बदले प्रातःकालके युद्धकी इन्हीं तय्यारियोंमें बिताई।

१५वीं जूनका प्रभात उपस्थित हुआ। कोई साढ़े पांच बजे थे ; धुंधला धुंधला कुहरा चारो ओर छाया था, जो जल्द जल्द मिट रहा था ; ऐसे समय एकाएक जापानी फौजके मध्यभाग और दाहने भागकी तोपोंका मुंहसे आग की लपक निकलती दिखाई दी ; इसके बाद ही महाभयङ्कर तोपध्वनिसे दिशायें परिपूर्ण हुईं।

रूसी मोरचोंपर गोले पड़ने लगे। रूसी भी तय्यार बैठे थे; उनकी ओरसे भी गोलन्दाजी आरम्भ हुई। इसीके साथ साथ रूसी फौजका बायां ओर जापानी फौजके दाहने ओरके पीछे पहुंचनेके लिये आगे बढ़ा। हम पहले ही लिख चुके हैं, कि जापानी रिसाला अपने इसी ओरके समीप था; वह रूसी फौजके बायें ओरका बढ़ना देख उसपर उसके आगे पीछे और बगलसे बारंबार आक्रमण करने लगा; साथ साथ जापानी फौजके दाहने भागने भी अपनी जगहसे कुछ आगे बढ़ रूसकी इस आगे बढ़ती फौजको रोक युद्धमें फंसाया। रूसी फौज आगे बढ़ न सकी; पीछे भी लौट न सकी। जहां थी, वहीं मोरचे बांध अपने सामनेकी बाधायें मिटाने लगी; खूब गोली-गोले चलाने लगी। उसने विचार किया था, कि कुछ ही देरमें वह बाधा हटा वह आगे बढ़ने और जापानी फौजोंके पीछे पहुंच जानेमें समर्थ होगी। उसे क्या खबर, कि जापानी फौजने उसे फंसा रखनेके लिये कौशल-जाल रच रखा था और वह आप ही आप आगे बढ़ इस जालमें फंस चुकी थी और अब जबतक युद्ध चलेगा, तबतक

बढ़ने लगा, वैसे वैसे रूसी फौजका मध्यभाग पीछे हटने लगा। जितनी ही रूसी पल्टनें अत्यन्त साहससे अधीर हो जापानी फौजके आगे बढ़ते हुए मध्यभागपर टूट पड़नेके लिये आगे बढ़ती थीं; किन्तु जापानी तोपखानोंके गोलोंकी विषम मारसे कुछ ही कदम आगे बढ़ क्षतिग्रस्त हो पीछे पलट जाती थीं। दिन कोई दश बजेतक जापानी फौजका मध्यभाग रूसी फौजके मध्यभागको बहुत कुछ पीछे हटा ले गया। इसके उपरान्त ही एक ऐसी घटना हुई, जो युद्धके नये इतिहासमें बिलकुल ही अपूर्व कही जा सकती है। हम ऊपर लिख आये हैं, कि रूसी फौजका मध्यभाग रेल-लाइनपर था; या इसी बातको यों कहना चाहिये, कि रूसी फौजके मध्यभागके बीचमें रेल-लाइन थी, जो लियाव-यांग प्रभृतिकी ओरसे आकर जापानी फौजके मध्यभागके बीचसे होती हुई अरथर-बन्दरकी ओर चली गई थी। जिस समय जापानी फौजका मध्यभाग रूसी फौजके मध्यभागको पीछे हटा ला दूरतक ले गया; उस समय दोनों ओरके सिपाहियोंको रेलद्वारा ट्रेन दौड़नेकी गड़गड़ाहट सुनाई दी; इसके बाद ही पर्वतमालाओंके भीतरसे रूसी फौजसे खचाखच भरी एक ट्रेन आती दिखाई दी। धक धक धुआं फेंकता एञ्जिन ट्रेनको ले रूसी फौजके युद्धमें प्रवृत्त मध्यभागके ठीक पीछे पहुंच खड़ा हुआ और रूसी फौज अपने हथियार संभाल ट्रेनसे उतर युद्धमें प्रवृत्त हो गई। ट्रेन युद्धस्थलसे वापस लौट तेलिस्सू रेल-स्टेशनमें जा खड़ी हुई। आधुनिक समयकी इस ट्रेन और प्राचीन-कालके योद्धाओंके रथमें बहुत थोड़ा अन्तर है। ट्रेनको एञ्जिन चलाता है, प्राचीन समयके योद्धाओंके रथ अश्व द्वारा खींचे

जाती थी। लोग कहते हैं, कि जैसे जैसे समय आगे बढ़ता है, वैसे वैसे समयाधीन बातें भी आगे बढ़ती हैं, किन्तु कितने ही लोगोंका यह कहना है, कि समय आगे नहीं बढ़ता, बल्कि पहीयेकी पाटकी तरह घूम घूमकर एक ही जगह रहता है और समयाधीन बातें भी आगे नहीं बढ़तीं, बल्कि एक ही बात बारंबार घूमकर सामने आती है; हां उसके रूपमें थोड़ा बहुत परिवर्तन होता है, जिससे लोग उसे पहचान नहीं सकते। खैर; तात्पर्य रूसी फौजके एकाएक युद्धस्थलमें पहुंचनेसे रूसी फौजके मध्यभागमें कुछ जान आ गई और वह हर्षध्वनि करता आगे बढ़ा; किन्तु जापानी फौजका मध्यभाग अत्यन्त प्रबल था और उसने अपनी वज्र-मुष्टिसे रूसी फौजकी अग्रगति रोक अन्तमें उसे पीछे ढकेल दिया। जापानी फौजका मध्यभाग किसी कदर अपने दाहने भागकी ओर झुकता हुआ आगे बढ़ रहा था; इसलिये रूसी फौजका मध्यभाग अपने बायें भागसे जुदा हो जापानी फौजके दाहने भागके सामने पहुंचनेपर बाध्य हुआ था।

जापानी फौजके मध्यभाग और दाहने भागके युद्धारम्भ करनेके बहुत देर बाद बायें भागने युद्धारम्भ किया। पहले हीं लिख चुके हैं, कि रातोरात जापानी फौजका बायां भाग घूमकर रूसी फौजके दाहने भागके पीछे पहुंच गया और वहांके ऊंचे ऊंचे गिरिशृङ्गपर अपनी बड़ी बड़ी तोपें चढ़ा दी थीं। कुछ दिन चढ़नेपर इन तोपोंसे रूसके दाहने भागपर गोलावृष्टि आरम्भ हुई। रूसियोंने अपनी दुर्बुद्धिताकी वजह अपने दाहने भागमें ही अधिक फौजें जमा कर रखी थीं। विशेषतः

इसी भागके पीछे एक पर्व्वतमालाकी तराईमें कज्जाक और ड्रगून फौज सुरक्षित रखी थी रूसियोंने स्थिर किया था, कि जिस समय जापानी फौजें युद्धक्लान्त होंगी, उस समय इस जबरदस्त फौजको जापानी फौजोंपर धावा करनेकी आज्ञा दी जायेगी और एक ही धावेमें वह फौज जापानियोंको कुचल बिलकुल परास्त कर देगी। किन्तु रूसियोंकी यह मनोकामना मन हीमें रह गई। जापानी फौजके बायें छोरने रूसी फौजको अपनी पसरी हुई भुजाओंके भीतर ले सामने और पीछेसे जब उसपर गोला-वृष्टि आरम्भ की; तब रूसी फौजका बायां भाग बड़ी ही दुर्दशाको प्राप्त हुआ। जापानी श्रापनल गोलोंके फटनेसे रूसी फौजपर लाल लाल गोलियोंकी वृष्टि होने लगी; बहुसंख्यक रूसी एक साथ जमीनपर लोटने लगे। रूसी तोपखाने लाख लाख चेष्टा करके भी जापानी तोपखानोंकी अग्नि-वृष्टि घटा न सके। यह देख रूस-सेनापति ग्राकलनशीने अपनी फौजके दाहने भागमें रक्षित। कज्जाक और ड्रगून फौजको जापानी तोपखानोंपर धावा करनेकी आज्ञा दी। बिगुल बजा; रूसी फौज तलवारें खींच बरछे तान जापानी तोपखाने की ओर आंधीकी तरह झपटी। फौजकी पैरोंकी आवाजसे दिशायें परिपूर्ण हुईं; धूलिका बादल उड़ा। जापानी तोपखानोंने रूसी फौजका आना देख अपनी तोपोंके मुंह फौजकी ओर फेरे और अपने तोपखानोंसे कुछ आगे बढ़ जापानी पलटनें रूसी फौजपर गोलियां बरसाने लगीं। मानशान-युद्धके धावेमें जो हाल जापानी पलटनोंका हुआ था; इस धावेमें वही हाल [illegible] फौजका हुआ। गोलियोंकी वृष्टिसे प्रत्येक पग बहुसंख्यक

सिपाही मरकर गिरने लगे; गोलोंकी वृष्टिसे पल पलपर बहुतेरे रूसी सवार अपने घोड़ोंके साथ चीथड़े होने लगे। जिस राहसे फौज चली, वह राह देखते देखते हताहत सिपाहियों, घोड़ों और सवारोंसे परिपूर्ण हो गई। आहत घोड़ों और सिपाहियोंके चीत्काररवसे पार्वत्य-भूमि बारंबार प्रतिध्वनित होने लगी। गोलोंकी चोटसे उड़े घोड़े और सिपाहियोंकी देहके चीथड़े दूर दूर जा गिरने लगे; इनके गिरनेसे आकाशसे रुधिर-मांसकी वृष्टि होती जान पड़ती थी। नानशान-युद्धके धावेमें जितने जापानी आगे बढ़े थे, वह सब मारे गये थे; उनमें एक भी जीवित नहीं बचा था; किन्तु इस धावेमें यह बात नहीं हुई। कुछ देरतक तो रूसी सिपाही गोला-गोली-वृष्टिकी कोई परवा न कर आगे बढ़ते गये; किन्तु अन्तमें यह आंच उनसे बर-दाश्त नहीं हुई। फौजकी पंक्ति टूट गई। फौजका प्रत्येक सिपाही बड़ी ही बेतरतीबी और घबराहटके साथ पीछे पलट भागा। भागते हुए सिपाही भी जापानी गोली-गोलोंकी चोटसे मारे गये; जो बचे वह नाना ओरसे अपने तोपखानोंके पीछे सुरक्षित स्थानोंमें ठहरे। रूसियोंका यह धावा सिर्फ व्यर्थ ही नहीं हुआ; बल्कि इसमें उनकी बहुत बड़ी क्षति हुई; इस क्षतिके समाचारसे समग्र रूसी सिपाही उदास हो गये।

जापानी फौजके बायें भागका तोपखाना फौजको महीलें मिला तब अपनी सारी शक्ति रूसी फौजके दाहने भागके उड़ा-नेमें व्यय करने लगा। रूसी फौजके दाहने भागपर बड़ा सङ्कट उपस्थित हुआ। उसपर सामने, बगल और पीछे तीन ओरसे एक साथ सहस्र सहस्र आग्नेय गोलोंकी वृष्टि होने लगी। रूसी

जापानी पीछे पीछे मारते दिखाई देते थे। कवाइद नहीं थी, कायदा नहीं था, चोरसे छोरतक भागड़ थी; कहींके रूसी सिपाही जल्द जल्द भाग रहे थे; कहींके धीरे धीरे। कहीं कहींके रूसी थमकर तलवार-सङ्गीन भी चला देते थे, जिसके बदले बड़ी ही बेदरदीसे प्रायः सबके सब काट दिये जाते थे।

इसीतरह भागते भागते अन्तमें रूसी तेलिस्सू नगर अपने पीछे बढ़ते हुए जापानियोंके अधिकारमें छोड़ तेलिस्सूसे पीछेकी सुविशाल पर्व्वतमालाकी तराईमें पहुंचे। इससे आगे पीछे हटनेकी सिर्फ तीन ही राहें यानी तीन पहाड़ी घाटियां थीं। इस जगह पीछा करनेवाली जापानी फौजें रूसियोंसे जुदा हो कुछ पीछे ठहर गईं और घाटियोंके सामने जल्द जल्द तोपें लगाने लगीं। एक ओर रूसी फौजें समदल हो घाटीके सुहानेमें धंसीं; दूसरी ओर सुहानेके सामने लगी जापानी तोपोंकी कल घुमाई गई; बड़ा ही भयङ्कर शब्द हुआ; युद्धस्थल दूरतक पथरी पर्व्वतमालाकी तराई होनेकी वजह बारंबारकी प्रतिध्वनिसे शब्द और भी भयङ्कर हुआ; साथ साथ असंख्य आपनल या शापानल गोले भागते रूसी सिपाहियोंकी भीड़पर फटे और उनसे सहस्र सहस्र गोलियां निकलकर बरसीं। बहुसंख्यक रूसी थककर और सिपाही एक साथ गिरे; कितने ही जिसतरह गिरे, उसीतरह गिरे रहे; कितने ही गिरकर करवटें लेने लगे; इन करवट लेनेवालोंमें कितने ही हाय हाय करने लगे; कितने ही आंखें निकाल उन्मत्तकी तरह भयङ्कर चीत्कार करने लगे। अपने साथियोंकी यह दुर्गति

भागते हुए अन्यान्य रूसी सिपाही अपनी रक्षाके लिये

और भी शीघ्रतापूर्व्वक भागे। किन्तु यमदूत खड़े हँस रहे थे, कि हमसे बचकर कहां? पहली बाढ़के बाद ही जापानी तोपें घाटियोंमें विषम अग्नि वृष्टि करने लगीं। घाटियां रूसी हताहतोंसे प्रायः भर उठीं। इस जगह रूसी फौजको बड़ी क्षति पहुंची। जबतक रूसी सिपाही घाटीमें जापानी तोपोंके सामने रहे, तबतक तोपें दगती रहीं और रूसी सिपाही उड़ते रहे। रूसी सिपाही, तबतक उड़े, जबतक वह घाटोंकी राह इस अग्नि-वृष्टिमें तयकर घाटीके मोड़ सुरक्षित स्थानमें पहुंच न गये। इस स्थलमें जापानियोंने रूसियोंके पीछे फौज भेजी नहीं थी; चड़तीस घण्टेके अविराम श्रमके उपरान्त जापानी फौजको विश्रामकी बड़ी जरूरत थी और पीछा करनेका काम तोपखाना कर ही चुका था।

यूरोपके बहुतेरे लोगोंको भागते हुए रूसियोंके इसतरह उड़नेसे बड़ा ही मनोदुःख हुआ था। टाइमसके संवाददाताने इसे सिर्फ "जापानियोंकी गोलावृष्टिकी विभीषिका" कह टाल दिया। किन्तु मैक्सलके 'रूस-जापान-युद्ध'में लिखा है,—"यह पहली बार प्रधानरूपसे स्थलकी बड़ी बड़ी तोपें पीछा करनेके काममें व्यवहृत हुईं; वर्त्तमानकालके सर्व्वोत्कृष्ट तोपखानोंके जवान इसे नवीन युद्ध-विद्याका एक अच्छा अङ्ग समझते हैं। कभी कभी सुदक्ष गोलन्दाजोंके हाथकी तोपें भागते शत्रुका पीछा करनेवाले रिसालेकी तलवारोंकी अपेक्षा भी अधिक काम देती हैं। कभी कभी भागते हुए सिपाहियोंकी भीड़में कुछ विजयी सिपाही तबतक तलवारें चलाते हैं, जबतक वह कुन्द नहीं पड़ जातीं और इतने आदमी काटते हैं, जितनोंके काटे जानेकी कल-

रता युद्ध-नीतिके कठोर विचारसे भी दिखाई नहीं देगी। किन्तु भागती हुई फौजके लिये इन सबकी अपेक्षा अधिक क्षतिजनक उन तोपोंकी मार होती है ; जो भागते सिपाहियोंसे-भरी राहोंके सामने किसी ऊंचाईपर लगा दी जाती हैं। भगेड़ू कल्पनातीत फुरतीके साथ प्राण ले भागते हैं ; उनमें आशा नामको नहीं रहती , उनकी शारीरिक तथा मानसिक शक्तियां निरुद्योग हो जाती हैं। उस समय पीछा करनेवाले रिसालेकी टापोंके गर्जन, लपकती हुई तलवारोंके आतंक और तने हुए भालोंके निक्षेपणकी अनुपस्थितिसे भगेड़ुओंके मनमें धुंधला धुंधला सन्तोष प्रकट होने लगता है। किन्तु ऐसे समय इन सब विभीषिकाओंसे बड़ी विभीषिका भगेड़ुओंपर आकाशसे टूट पड़ती है। दूर एक धीमी आवाज होती है ; साथ साथ एक गोला आ भगेड़ुओंके शिरपर फटता है और उस फटे हुए आपदस गोलेसे सहस्र सहस्र गोलियां निकल प्रायनाशक जल-बिन्दुकी तरह भगेड़ुओंके शिर या अङ्ग-प्रत्यङ्गपर गिरती हैं। उस समय भगेड़ू तभी बचते हैं, जब लंगड़ाते-कराहते घण्टोंतक कष्ट सहन करते हुए भागते हैं और अन्तमें उस जगह पहुंच जाते हैं, जिस जगह उनके विमर्दित साथी पहले होन जा सिरते हैं।"

इसतरह तेलिस्सूकी लड़ाईमें जापानियोंने पूर्ण विजय प्राप्त की। यालू-युद्ध और नानशान-युद्धमें रूसी सिपाहियोंकी अपेक्षा जापानी सिपाहियोंकी संख्या अधिक थी ; इसलिये कितने ही लोगोंने कहा था, कि संख्याधिक्यकी वजह ही जापानी इन दोनों [illegible]में विजयी हुए। पूर्वोक्त युद्धमें जापानियोंके विजयी होनेका

और एक कारण उनके तोपोंकी अधिकता भी बताया जाता है; किन्तु प्रथमोक्त युद्धमें यह कारण बताया नहीं जाता; उसमें जापानियोंकी अपेक्षा रूसियों हीकी तोपें अधिक थीं। किन्तु इस युद्धमें जापानियोंकी विजयप्राप्तिके कारणोंमें पूर्व्वोक्त दोनो कारणोंका पूर्ण अभाव था। इस युद्धमें कोई पैंतीस हजार जापानी और कोई पैंतीस ही हजार रूसी थे; कोई एक सौ रूसी और कोई एक ही सौ जापानी तोपें थीं और अपने इसी समानसंख्यक बलसे रूसियोंको जापानियोंने सिर्फ पराजित ही नहीं; बल्कि बारंबार अच्छी तरह पददलित भी किया। इस युद्धका फलाफल देख कहना पड़ता है, कि प्रथमोक्त दोनो युद्धमें जापानियोंने रूसियोंके बलकी थाह ली थी; जैसे ही थाह मिल गई, वैसे ही जापानियोंको मालूम हो गया, कि एक जापानी एक रूसीपर बहुत भारी है, वैसे ही जापानी इस तीसरे युद्धमें निःशङ्कचित्तसे समानसंख्यक फौज ले रूसियोंके सामने हो अन्तमें विजयी हुए। इस युद्धमें विजय प्राप्तकर जापानियोंने जगतको दिखा दिया, कि जापानी किसी विशेष कारणवश विजय प्राप्त नहीं करते; बल्कि जापानियोंकी स्वदेशभक्ति, आत्माभिमान और बुद्धिपूर्व्वक आत्मोत्सर्ग ही उनकी विजयप्राप्तिका प्रधान कारण है।

टाइम्सके फौजी संवाददाताने इस युद्ध-जनित क्षति-वृद्धिके सम्बन्धमें बड़ी ही खादगीके साथ संक्षेपमें लिख दिया है,— "रूसी आरथर-बन्दरकी ओर बढ़े और उसी मुसीबतमें फंसे जिसमें फंसनेके उपयुक्त थे। तेलिस्सू-युद्धमें रूसियोंके कोई दश हजार सिपाही हताहत हुए। कितने ही कैदी, कितने ही फौजी झण्डे और बीस तोपें जापानियोंके हाथ लगीं।" रूस-

सेनापति कुरोपाटकिनने इस युद्धकी बहुत ही अधूरी रिपोर्ट प्रकाशित की थी। उन्होंने लिखा था,—"हमारी ओरके तीन हजार दो सौ सिपाही हताहत हुए; किन्तु हताहतोंकी यह संख्या ठीक नहीं।" ठीक कैसे होती? कारण, इसके उपरान्त ही जापान-सेनापति ओकूने प्रकाशित किया,—"एक हजार आठ सौ पचपन रूसियोंकी लाशें हमने युद्धस्थलसे उठा कब्रमें तोपीं; तीन सौ रूसी हमारे हाथ कैद हुए; कोई सात हजार चार सौ रूसी आहत हुए होंगे।" सिवा इनके रूसी सिपाहियोंकी वह लाशें भी हैं, जिन्हें रूसी अपने साथ या रेलगाड़ीमें आहतोंके साथ ले गये। इस युद्धमें जापानको ओरके एक हजारसे भी कम सिपाही हताहत हुए।

एक ओर युद्धकी समाप्तिके उपरान्त विजयी जापानी फौज तेलिस्सू नगरमें प्रवेशकर विश्राम और आमोद-प्रमोदमें प्रवृत्त हुई; दूसरी ओर पराजित रूसी फौज घाटियोंसे निकल केचौ नगरकी ओर भागी। केचौ नगर साइबेरिया-आरथर-बन्दरवाली रेल-लाइनपर था और यह लाइन अबतक रूसियोंके अधिकारमें थी; किन्तु ट्रेनके अभावसे पराजित रूसियोंको यह राह पैदल ही तय करना पड़ी। रात्रिके समय जब रूसी घाटी पार कर रहे थे, तब घोर वृष्टि हुई थी और उससे तदनन्तर ही आहत और श्रान्त-क्लान्त रूसियोंकी यन्त्रणा और भी बढ़ गई थी। युरोपके वैज्ञानिकोंने बताया था, कि इस वृष्टिके कारण भी जापानी ही थे; कारण, उन्होंने घोर गोला-वृष्टिकर वृष्टिके साधन उत्पन्न किये थे। चाहे जिसके कर्म्मफलसे हो; इसमें ...ह नहीं, कि वृष्टि होनेसे भागते हुए, वस्त्रविहीन, आच्छा-

रूनविहीन दुर्द्दशाग्रस्त रूसी और भी सङ्कटमें पड़े। फिर भी ; इससे रूसियोंकी भागनेकी शक्तिमें वैसी कोई कमी नहीं आई। १५ वीं जूनके तीन बजेसे १६ वींके सवेरेतक रूसी फौजें कोई बाईस मीलकी राह तयकर कैचौ नगर पहुंच गईं।

कैचौमें जिस समय रूसी फौजें पहुंचीं, उस समय वह नितान्त दुर्द्दशाग्रस्त थीं। अफसर-सिपाही सभी बदहवास थे। २० वीं जूनको स्वयं कुरोपाटकिन इस पराजित फौजको देखने कैचौ आये। उनके आनेका समाचार पा रूसी फौजोंने अपनी दुर्द्दशाके चिह्न बहुत कुछ मिटा दिये थे। कुरोपाटकिनने पराजित फौजको मैदानमें बुला उसे सन्तोष देनेके लिये उसके ढाई सौ सैनिकोंको 'सेण्ट जार्ज' पदक प्रदान किये और कितनी ही आशापूर्ण बातें कहीं। चलते समय कुरोपाटकिनने पराजित फौजको लक्ष्यकर कहा,—"मैं शीघ्र ही तुमसे फिर मिलूंगा। मैं चाहता हूं कि सुसेरोके साथ जापानियोंसे कुल कसर निकाल ली जाये। तुम यदि ऐसा कर न सकोगे, तो घरसे अपने घर लौट भी न सकोगे।" इसके उपरान्त ट्रेन द्वारा कैचौ परित्याग करनेसे पहले कुरोपाटकिनने पराजित फौजके प्रत्येक उच्चपदस्थ अफसरसे पृथक पृथक मिल बात की और उसे खूब धैर्य तथा सन्तोष प्रदान किया। कुरोपाटकिनका यह कार्य्य फलशून्य कैसे हो सकता था ?

पञ्चदश परिच्छेद।



बल्टीवष्टकका बेड़ा—अरथर-बन्दर।

तेलिसूहकी लड़ाईमें परास्त होकर भी रूसके मनसे अरथर-बन्दरके उद्धारकी कामना न गई। कहते हैं, कि इस युद्धके उपरान्त अरथर-बन्दरके उद्धारकी दूसरी चेष्टाके सम्बन्धमें रूस-सम्राट् जार और रूस-सेनापति कुरोपाटकिनके बीच खूब लिखापढ़ी चली; अरथर-बन्दरवालोंको भी खबर दी गई, कि घबराना नहीं; तुम लोगोंके उद्धारकी दूसरी चेष्टा की जायेगी। यह भी कहा गया,—"तुमलोग अरथर-बन्दरका मुहाना साफ और अपने जहाजोंकी मरम्मतकर स्थलकी ओरसे हम दूसरी चढ़ाईके समय बन्दरसे बाहर निकल जापानी बेड़ेसे टक्कर लेनेके लिये तय्यार हो जाओ।" उसी समय बल्टीवष्टक-बेड़ेको बन्दरसे निकल जापानी सौदागरी या बारबरदारीके जहाजोंको घातमें पा डुबानेकी आज्ञा दी गई।

तेलिस्सु-रणक्षेत्रसे भागे रूस-सेनापति ष्टाकलबर्गके सैन्य अरथर-बन्दरकी ओर बढ़ने या न बढ़ने और अरथर-बन्दरवाले बेड़ेके पूर्वोक्त आज्ञा प्रतिपालन करनेमें यत्न करनेका हाल यथास्थान लिखा जायेगा; इस समय हम बल्टीवष्टकके इसी बेड़ेकी बात लिखना चाहते हैं। जिस समय बल्टीवष्टक-बेड़ेको शिकारकी आज्ञा मिली; उस समय बेड़ा रूस-सेनापति जेनसेनकी अधीनतामें निकल एडमिरल स्क्रडलाफकी अधीनतामें था। पुराड्या। पाठक पूछ

सकते हैं, कि जापानी सौदागरी; और वारवरदारी जहाजोंकी निहत्थे शिकारी जेवेन पकड़े क्यों गये ? बूलडीवरक-बेड़े को जो काम सौंपा गया था, उस कामके लिये जेनसेनकी अपेक्षा उपयुक्त मनुष्य और कौन हो सकता था ? पाठकोंको यह आशङ्का अनुचित नहीं ; जेनसेन अपनी अयोग्यता के लिये नहीं ; बल्कि एक दुर्घटनाके फलसे पकड़े गये थे। दुर्घटनाका संक्षिप्त विवरण इसतरह है,—ब्लडीवरक-बेड़े के चार जहाजोंमें एकका नाम 'बोगाटिर' था। यह चौबीस बड़ी बड़ी तोपोंसे सुसज्जित छ: हजार सात सौ टनका छोटा जङ्गी जहाज था। मई मासमें एक दिन नौ-सेनापति जेनसेन अपने बेड़े के साथ शिकार ढूंढनेकी असफलोद्यम चेष्टाकर ब्लडीवरक वापस आये। उस समय ब्लडी-वरक बन्दरके पेचीले मुहानेमें खूब कुहरा छाया हुआ था; जल-स्थलमें कोई फर्क जान न पड़ता था। कहते हैं, कि इस कुहरेकी वजह बोगाटिरके कप्तानको सामनेकी जमीन दिखाई न दी और उनका जहाज पलमें जमीनपर चढ़ गया। जहाज पीछे हटानेकी चेष्टा व्यर्थ हुई; खूब श्रम करनेपर भी बोगाटिर जहांका तहां रहा। नौ-सेनापति जेनसेनको आशङ्का हुई, कि एक दिन जापानी या जहाजका पता लगा उसे घेरा जा सकते हैं। इस आशङ्कासे आपने जहाजके कुल अस्त्र-शस्त्र सामान तोपादि उतार तारपेडो मार बोगाटिरको डूबा दिया। कोई पांच लाख एटलिङ्गके बोगाटिरका ऐसा ही परिणाम हुआ। इस दुर्घटनाके बाद ही जेनसेन पदच्युत हुए; उनका पदभार एड-मिरल स्क्रडलापको मिला। इसीलिये कहा, कि जिस समय ब्लडीवरक-बेड़ेको शिकारकी आज्ञा मिली, उस समय उसके

तत्त्वावधायक जेनसेनकी जगह स्क्रुडलाफ थे। स्क्रुडलाफ इस कामके लिये सम्पूर्ण उपयुक्त थे।

शिकारकी आज्ञा पानेके उपरान्त १२वीं जूनको प्रातःकाल एडमिरल स्क्रुडलाफ बेड़ेके बाकी तीनों छोटे जङ्गी जहाज—रोजिया, रुरिक और ग्रोमोबायके साथ जापानी अरक्षित जहाजोंके शिकारको निकले। जापान द्वीप-पुञ्जकी मध्यम द्वीप हाण्डो और उसके दक्षिण वालके द्वीप किउशिउके बीच सिमानोसेकी नाम्नी चौड़ी प्रणाली है। १५वीं जूनको प्रातःकाल व्लाडीवष्टक-बेड़ा इस प्रणालीके मुहानेके सामने उत्तरसे पहुंचा। इस मुहानेसे कोई दश कोसके फासिलेपर बेड़ेको दो जहाज दिखाई दिये, जो मुहानेकी ओर जा रहे थे। बेड़ा उन जहाजोंकी ओर झपटा; किन्तु उन्हें पा न सका; वह निर्विघ्न प्रणालीके मुहानेमें पहुंच गये। इसके बाद ही एक तीसरा जहाज प्रणालीकी ओर जाता दिखाई दिया। यह जहाज जापानकी सुप्रसिद्ध 'नियन युसेन कैशा' कम्पनीका इजुमो मारू नामक मुसाफिर जहाज था; चीनसे आ रहा था; जहाजने राहमें कुछ आहत और रुग्न जापानी सिपाही भी चढ़ा लिये थे। रूसी छोटा जङ्गी जहाज 'ग्रोमोबाय' इजुमो मारूके समीप पहुंचा और उसपर कितने ही गोले मारे; दश गोले जहाजको लगे; उसकी गति मन्द हुई; वह डूबने लगा। जहाजके मुसाफिर नावोंमें सवार हो भागनेकी चेष्टा करते हुए पकड़े गये। जो निरे मुसाफिर थे, वह छोड़ दिये गये; जो जापानी थे, वह युद्धके वैदियोंमें मिलाये गये। उधर गोलोंकी चोटसे जर्जर इजुमो मारू डूब गया।

यह पहला-शिकारकर रूसी बेड़ा और आगे बढ़ा। उसे दो जहाज मञ्चूरियाकी ओर जाते दिखाई दिये। इनमें एकका नाम हितैषी मारू था और दूसरेका साधु मारू। दोनो छः छः हजार टनके थे। प्रथमोक्त जहाजमें जापानी फौज और रसद थी और शेषोक्त जहाजमें फौजी तार-विभागके सिपाही, रसद और पोपेवाला पुल बांधनेका सामान। रूसी बेड़े और इन दोनो जहाजोंके बीच जब कोई आठ हजार गजका फासिला था, तब दोनोने दोनोको देखा। रूसी बेड़ेको देख दोनो अरक्षित जहाज बहुत घबराये और फुरतीसे घूम प्रणालीकी ओर भागे। किन्तु प्रणाली वहांसे समीप नहीं; बहुत दूर थी; कोई चार कोसके फासिलेपर। रूसी बेड़ेका रोनिया जहाज साधु मारूकी ओर झपटा और ग्रोमोवाय हितैषी मारूकी ओर। कोई एक हजार गजके फासिलेसे पांच सौ गजके फासिलेतक ग्रोमोवाय हितैषी मारूपर बराबर गोला-वृष्टि करता रहा; इसके बाद महाभयङ्कर आपनल गोले बरसाने लगा। विलायती टाइ-मूसके फौजी संवाददाताने लिखा है—"आपनलकी पहली ही बाढ़में हितैषी मारूके कोई दो सौ आरोही हताहत हुए। फिर कोई एक बजेसे तीन बजेतक ग्रोमोवायने हितैषी मारूपर बहु-संख्यक आपनल गोले बरसाये। जहाजकी दीवारें और डेक गोला-गोली-वृष्टिसे चलनी बन गया; जहाजमें सर्व्वत्र लाशों या जख्मियोंके ढेर दिखाई देने लगे; चारो ओर रुधिर-धारा बहने लगी। गोला वृष्टिकी भयङ्कर यन्त्रणा सहकर भी हितैषी मारूके आरोहियोंने रूसकी वश्यता स्वीकार नहीं की। जो फौज जहाजमें सवार थी, उसके अफसरका नाम सूपी था।

रूसीकी आज्ञासे सिर्फ एक सिपाही जहाजसे फांद हितैषी मालिकके सङ्कटमें फंसनेका हाल किनारे पहुंचानेके लिये सागर पैरता चला; बाकी सब सिपाही अपनी जगह रह-मृत्युकी प्रतीक्षा करने लगे। इस जहाजके कप्तान और उनके दो अधीन अफ-



रूसके नौ-सेनापति—स्क्रडलाफ।

सर अङ्गरेज थे। तीनोंके नाम यथाक्रम थे,—मिस्टर कम्पस, मिस्टर बिशप और मिस्टर गाव। यह तीनों अङ्गरेज अवसर यदि चाहते, तो रूसियोंको आत्मसमर्पणकर आत्मरक्षा कर सकते थे; किन्तु इन्होंने इससे बढ़के अपने स्वामी जापानियोंके लिये प्राणोत्सर्ग

करना ही अपना कर्त्तव्य स्थिर किया। तीनों अन्तिम समयतक हितेषो मारूमें अपनी जगह खड़े और अपना कर्त्तव्य पालन करते रहे। आपनके गोलेकी वृष्टिसे अगणित मनुष्योंको हताहतकर अन्तमें ग्रोमोवायने हितेषो मारूपर कई तारपेडो मारे। गोलोंकी चोटसे जहाज धीरे धीरे डूब रहा था; तारपेडोंकी चोट खा फटकर शीघ्र ही डूब गया। डूबते हुए मनुष्यों और पशुओंके छटपटानेसे सागर-जल आकाशके लिये बड़ा ही चञ्चल हुआ; हताहतोंके रक्तसे जल कुछ देरके लिये लाल दिखाई दिया। हितेषो मारू डूब गया; उसके साथ साथ कोई एक हजार जापानी डूब गये; अपने स्वामी और मित्र जापानियोंके लिये तीनों अङ्गरेज भी डूब गये।

एक ओर ग्रोमोवायने हितेषो मारूका यह हाल किया; दूसरी ओर रोजियाने साधु मारूको जा टोका। रोजियाका सङ्केत देख साधु मारू ठहर गया। इस जहाजमें भी कई जहाजी अफसर अङ्गरेज थे। उनमें एक अफसर रोजियामें गया और वहांसे अपने साथ कितने ही रूसी सिपाही और अफसर साधु मारूमें लाया। एक रूसी अफसरने साधु मारूने क्षितिजमें कहा, कि तुम शीघ्र यह जहाज खाली करो जापान होका था। जहाज डुबा दिया जायेगा। कप्तानने ९ को बल्डीवस्टक-बेड़े के अधिक समय मांगा, तो रूसी अफसरोंका मेला जहाज रूसी "इतना समय दिया जा नहीं सकता क्षितिजमें उपस्थित हुआ था। रक्षाके लिये तुम्हारे जङ्गी जहाज [illegible], इस जहाजने भी उसी-प्रकार-कप्तानमें यह बातें हो रही थीं, कि रोजियाकी खबर अपने रूसी अफसरने जहाजवालोंको पहुंचाया एकसा बेड़ा रूसी

नहीं है, वह एक घण्टेके भीतर जहाजसे चले आयें, एक घण्टेके बाद जहाज डुबाया जायेगा। कोई एक हजार आदमी जहाजमें थे, जिनमें कोई छः सौ आदमी सिपाही नहीं थे। यह आज्ञा सुन यह सब जहाजसे उतर नावोंमें सवार हो गये। कोई चार सौ सिपाही जहाजमें रह गये। इन सबने रूसी अफसरोंसे साफ साफ कह दिया,—"मृत्युका भय हमसे वश्यता स्वीकार करा नहीं सकता।" यह सुन रूसी अफसर अपने जहाजमें लौट गये और निर्द्धारित समयके अतीत होनेपर रोसियाने साधु माह्नको दो तारपेडो मारे। शायद और भी तारपेडो मारे जाते; किन्तु ऐसे समय क्षितिजमें एक काला धब्बा दिखाई दिया; रोसियाने दूरबीनसे देखा, कि यह नन्हासा धब्बा एक जापानी जङ्गी जहाज है। यह देखते ही रोसियाके अफसर सब कुछ भूल आत्मरक्षाका यत्न करने लगे। साधु माह्नको छोड़ रोसिया एक ओर भागा। रोसियाके अफसर अपनी समझमें साधु माह्नको अत्यन्त क्षतिग्रस्त कर चुके थे; किन्तु भगवान्ने साधु माह्नकी रक्षा की थी। दोनो तारपेडोंके बनाये [illegible] बड़े नहीं थे। जैसे ही रोसिया भागा, वैसे ही [illegible] कोई चार सौ जापानी सिपाहियोंने जहाजके नौ-[illegible] और नवजीवन लाभ करनेकी उपलक्षमें

सन्ध्या हो रही थी; सुगभीर सागर-सलिलपर सान्ध्य अन्धकार फैल रहा था; जो कुहरेकी वजह प्रगाढ़से प्रगाढ़तर होता जाता था; इस अन्धकारसे रूसी बेड़ा अपने सौभाग्यका सुफल समझ एक ओर भागा। कोई कोई कहते हैं, कि वलडीवष्टककी ओर भागनेके समय राहमें रूसी बेड़ेने जापानके दो माली जहाज भी डुबाये; किन्तु रूसने स्वयं इसके सम्बन्धमें कुछ नहीं कहा। १६वीं जूनको बेड़ेने अङ्गरेजोंके जहाज एल्लाएटनको पकड़ लिया। कोई साढ़े छः हजार टन बोझा लादे एल्लाएटन जापानसे सिङ्गापुर जाता था; उसे पकड़ रूसियोंने वलडीवष्टक भेज दिया; कहा,—"भूल के मालके सम्बन्धमें फैसला करनेवाली वलडीवष्टककी अदालत इस जहाजके सम्बन्धमें फैसला करेगी।" हमारे राजा अङ्गरेजोंके प्रति रूस चिरकालसे ऐसा ही असाधु व्यवहार करता आया है। वलडीवष्टकका बेड़ा यदहवास हो भागनेके समय भी अङ्गरेज-विद्वेष न भूला।

टाइम्सके फौजी संवाददाताने ठीक ही लिखा है,—"सौभाग्य रूसियोंके प्रति सदय हुआ।" न होता, तो रूसी इस शिकारमें स्वयं शिकार हो जानेसे बच कैसे सकते? रोजियाने क्षितिजमें जिस जङ्गी जहाजको देखा था, वह सचमुच जापान होका था। जापानी नौ-सेनापति कामीमुराको बेड़ेको वलडीवष्टक-बेड़े के आनेका समाचार मिल गया था। उन्हींका भेजा जहाज रूसी बेड़ेको ढूंढता रोजियाके सामने क्षितिजमें उपस्थित हुआ था। रोजियाने जिसतरह इस जहाजको देखा, इस जहाजने भी उसीतरह रोजियाको देखा। जापानी जहाजने रोजियाकी खबर अपने बेड़ेको दी। समाचार पा कामीमुराका समूचा बेड़ा रूसी

बेड़ेकी ओर चला; किन्तु रूसियोंके सौभाग्यवश कुहरे और सान्ध्यअन्धकार दोनोंने मिलकर जापानी बेड़ा और रूसी बेड़े के बीच एक गहरा परदा डाल दिया। जापानी बेड़ा पश्चिम ओर गया; रूसी बेड़ा उत्तरसे भाग २०वीं जूनको निर्विघ्न बलडीवष्टक पहुंच गया। उसकी यह यात्रा सकुशल बीती। इस यात्रामें बलडीवष्टक-बेड़ेने कई जापानी जहाजोंका शिकार किया सही; किन्तु जैसा बड़ा शिकार बेड़ा कर सकता था, वैसा कर नहीं सका। भगवान्ने जापानियोंकी रक्षा की। जिस जगह और जिस समय रूसी बेड़ेने हितैषी मारू और साधु मारूको टोका था, उस समय और उस जगहसे कुछ ही आगे फौजसे लदे तेरह बारबरदारीके जहाज जापानसे युद्धस्थलकी ओर जा रहे थे। रूसी बेड़ा यदि उन्हें पा जाता, तो जापानको बड़ी क्षति पहुं-चाता।

इस शिकारपर रूसियों और उनके मित्रोंने बड़ा आनन्द प्रकाश किया। साथ साथ जापानमें विषम उत्तेजना-स्रोत बहने लगा। जापानियोंने कहा,—"रूसियोंका यह कार्य्य उनकी भीरुताका परिचायक है। रूसी सम्मुख समरमें ठहर नहीं सकते; रूसी जङ्गी जहाज जापानी जङ्गी जहाजोंसे सामना करनेकी हिम्मतकर नहीं सकते; इसीलिये वह इसतरहके कापुरुषोचित कार्य्यमें प्रवृत्त होते हैं।" इसीके साथ साथ सुचतुर अथच भाग्यहीन नौ-सेनापति कमीमुराके प्रति लोगोंने बड़ा क्रोध प्रकाश किया; कहा,—"कमीमुरा जिस पदपर हैं, उस पदके योग्य नहीं। एकबार नहीं; यह दूसरी बार बलडीवष्टक बेड़ेने [illegible]ार किया और कमीमुरा अत्याचार-निवारणका कोई

उपाय कर न सके। ऐसे ही कमीमुरा शीघ्र ही अपना पद परित्याग करनेके लिये बाध्य क्यों न किये जायें?" जापानके साधारण लोगोंने और भी कहा,—"टोगो क्या करते हैं? जिस-तरह उन्होंने स्वरपर-बन्दरका मुहाना बन्द किया; उसीतरह वह व्लडीवष्टकका मुहाना भी क्यों नहीं बन्द करते?" नौ-सेनापति कमीमुरा रूसी बेड़े के पहले ही शिकारसे दुःखित थे; इस दूसरे शिकारसे और भी दुःखित हुए। कहते हैं, कि उस समय कमीमुरा दुःखसे अधीर हो आत्महत्या करनेके लिये प्रस्तुत हुए थे।

इस दूसरे शिकारके उपरान्त रूसियोंकी शिकारकी कामना प्रबलतर हो उठी। शिकार खेलनेके लिये व्लडीवष्टक-बेड़े से तारपेडो-नावोंका एक बेड़ा भेजा गया, जिसने जापान-द्वीपपुञ्जके समीप कितनी ही छोटी छोटी नावें और दो एक बड़े पाली जहाज डुबा निर्विघ्न व्लडीवष्टक प्रत्यागत हुआ।

इससे व्लडीवष्टक-बेड़े की हिम्मत और भी बढ़ गई; एक दिन वह तीसरे बार शिकारके लिये व्लडीवष्ट-कसे बाहर निकला। ३० वीं जूनको प्रातःकाल व्लडी-वष्टक-बेड़ा कोरियाके जेनसान-बन्दर पहुँचा। बेड़ा बन्दर-के बाहर खड़ा हुआ; बेड़े की छः तारपेडो-नावें बन्दरमें गईं। बन्दरमें एक वाष्पबलसे चलनेवाला और एक पाली जहाज खड़ा था; इन दोनोंको डुबा छःओं नावें बन्दरसे निकल अपने बेड़े में मिल गईं। बेड़े ने जेनसान-बन्दरपर गोलन्दाजी आरम्भ की; दोई ही गोले ताक ताककर मारे। बन्दरके पास ही पर्वत है। गोलन्दाजीसे सहसा बन्दरके अधिवासी बन्दर

परित्यागकर इस पर्व्वतके पीछे जा छिपे। इसलिये गोलन्दाजीसे बन्दरके अधिवासियोंको शारीरिक वैसी कोई क्षति नहीं हुई; सिर्फ दो जापानी सिपाही और दो कोरियावासी सामान्यरूपसे आहत हुए। हां बन्दरके मकानोंका अपेक्षाकृत कुछ अधिक नुकसान पहुंचा। कितने ही मकानोंको आग लग गई और कितने ही मकान भूमिसात् हो गये। गोलन्दाजीके उपरान्त ब्लडीवष्टक-बेड़ा जेनसान-बन्दरसे रवाना हुआ।

जेनसान-बन्दरपर इस दूसरे आक्रमणके फलसे जगत्में जापानियोंकी बड़ी निन्दा हुई। लोगोंने कहा,—"इतना कुप्रबन्ध! इतनी असावधानी! माना, कि कमीमुरा ब्लडीवष्टक-बेड़ेके रोकनेमें पूर्ण असमर्थ हैं; किन्तु जेनसान-बन्दरके जापानी अफसरोंने ब्लडीवष्टक-बेड़ेके आक्रमणसे एकबार क्षतिग्रस्त हो भविष्यत्के लिये यह आक्रमण व्यर्थ करनेका कोई सामान क्यों न किया? टीगो यदि बन्दरमें पहरेके लिये तारपेडो-नावें रख नहीं सकते थे, तो बन्दरके अफसरोंने बन्दरके मुहानेपर कुछ बड़ी बड़ी तोपें ही क्यों न लगा दीं। इस दूसरे आक्रमणके दिन बन्दरके मुहानेपर यदि तोपें लगी रहतीं, तो तारपेडो-नावें बन्दरमें घुस जापानी जहाजोंके डुबानेका साहस कैसे करतीं?" कितने ही लोगोंने इसीतरहकी कितनी ही बातें कहीं। जापानियोंकी ओरसे थोड़ीसी असावधानी हुई सही; किन्तु इसके लिये वह अधिक निन्दाभाजन हो नहीं सकते। जान पड़ता है, कि ब्लडीवष्टक-बेड़ेकी पहली चढ़ाईके उपरान्त ही जापान-सरकारने जेनसेनकी ओर अपने मालवरदारीके जहाजोंका भेजना बन्द कर दिया था। ऐसा न होता, तो ब्लडीवष्टक-बेड़ेको

इस दूसरे दौरमें कोई न कोई बारबरदारीका जहाज निश्चय ही मिलता। इसतरह जड़ काट देनेकी वजह ही जापानियोंने जेनसान-बन्दरकी रक्षाका वैसा कोई प्रबन्ध नहीं किया।

जेनसानसे रवाना होनेपर शिकार ढूंढ़ता ब्लडीवष्टक-बेड़ा सुशिमा-प्रणालीकी ओर निकल गया। इस प्रणालीके समीप ही कमीमुराका बेड़ा अवस्थानकर रहा था। झलक देख कमीमुराका बेड़ा रूसी बेड़ेकी ओर झपटा। रूसी बेड़ा पहले होसे चौकन्ना था। जैसे ही कमीमुराका बेड़ा रूसी बेड़ेकी ओर झपटा, वैसे ही रूसी बेड़ा अपनी पूरी शक्तिके साथ ब्लडीवष्टककी ओर भागा। सन्ध्या समय कमीमुराका बेड़ा रूसी बेड़ेके समीप पहुंचा। कमीमुराने अपने बेड़ेके साथकी तारपेडो-नावोंको आज्ञा दी, कि वह रूसी गोलोंकी कोई परवा न कर रूसी बेड़ेके समीप पहुंच उसपर तारपेडो द्वारा आक्रमण करें। छोटी छोटी द्रुतगति तारपेडो-नावें यह आज्ञा पा अपने बेड़ेसे जुदा हो तीरकी तेजीसे रूसी बेड़ेकी ओर झपटीं। रूसी बेड़ेने पहले गोलावृष्टिकर इन नावोंको रोकनेकी चेष्टा की; किन्तु इस चेष्टाका कोई फल नहीं हुआ। जापानियोंने गोलावृष्टिसे डरना सीखा ही नहीं था। रूसी बेड़ेने अपनी पहली चेष्टाका कोई फल न देख दूसरी चेष्टा की। रूसी बेड़ेके कुल जहाज अपनी बाहरकी कुल रोशनियां बुझा सहसापर छाये घोर अन्धकारमें मिल गये। जापानी बेड़ा—जापानी तारपेडो-नावें—रूसी बेड़ेको देख न सकीं। इसतरह रूसी बेड़ेने अपनी प्राणरक्षा की। कमीमुरा रूसी बेड़ेके हाथसे निकल जानेसे हाथ मलते रह गये।

जिस समय रूसका बलडीवष्टक-बेड़ा शिकारमें तत्पर था, उस समय रूसका अरथर-बन्दरवाला बेड़ा क्या कर रहा था? चौंकनेका प्रयोजन नहीं है। आप सोचते होंगे, कि अरथर-बन्दरका बेड़ा ही क्या है, जिसका काम जाननेकी चिन्ता की जाये। आपका यह सोचना अनुचित नहीं; किन्तु अरथर-बन्दरके बेड़ेको बिलकुल नष्ट या निकम्मा समझना भी ठीक नहीं। युद्ध आरम्भ होनेसे पहले अरथर-बन्दरमें रूसका बड़ा ही जबरदस्त बेड़ा था। रूस समझता था, कि यह जबरदस्त बड़ा जापानी बेड़ेको बिलकुल ही नष्ट कर सकेगा; किन्तु ऐसा नहीं हुआ; इसके बदले जापानी बेड़ेने ही रूसी बेड़ेको क्षतिग्रस्त किया। युद्ध आरम्भ होनेके उपरान्त जापानी बेड़े द्वारा अरथर-बन्दरका रूसी बेड़ा क्षतिग्रस्त हुआ था सही, उसके कितने ही जङ्गी जहाज टूटफूट गये थे सही, अरथर-बन्दरका मुहाना बन्द होनेसे बचेबचाये जङ्गी जहाजोंका बन्दरसे बाहर निकलना असम्भव हो गया था सही; फिर भी; अरथर-बन्दरका रूसी बेड़ा पूर्णरूपसे नष्ट हुआ नहीं था; उसमें बहुत कुछ जान बाकी थी।

आपदकालमें आदमी द्विगुण शक्तिसे काम करता है। रूसियोंने जब देखा, कि अरथर-बन्दर भूमिकी ओरसे घिर गया, तब अरथर-बन्दरवाले बेड़ेके अनायास ही जापानियोंके हाथ लगनेके भयसे अरथर-बन्दरके रूसी अफसर सहस सहस चीना मजदूरों द्वारा एक ओर टूटेफूटे जङ्गी जहाजोंकी मरम्मत कराने और दूसरी ओर माइन द्वारा अरथर-बन्दरके मुहानेमें डूबे जापानी जहाजोंको उड़ा मुहानेकी राह साफ करने लगे।

रूसियोंने स्थिर किया, कि एक ओर जब जापानी सिपाही स्थलकी ओरसे अरथर-बन्दरमें प्रवेश करेंगे; तब दूसरी ओर अरथर-बन्दरका बेड़ा जलकी ओरसे अरथर-बन्दर परित्यागकर भागेगा। दिनरात लगकर सहस्र सहस्र चीना कुलियोंने थोड़े ही दिनोंमें टूटेफूटे रूसी जङ्गी जहाजोंकी मरम्मत कर दी। इस मरम्मतका समाचार पा रूसके बड़े लाट अलकसिफने अपने सम्राट्‌को तार द्वारा सूचना दी,—"अरथर-बन्दरके बेड़ेकी मरम्मत हो गई; सिवा जङ्गी जहाज पेट्रोपावलस्कके बाकी कुल जहाज युद्धके लिये तय्यार हैं।" जिस बेड़ेके नष्ट हो जानेका समाचार जगत्‌भरमें घोषित हो चुका था, एकाएक उसी बेड़ेके युद्धार्थ तय्यार होनेका समाचार पा लोगोंको बड़ा ही कौतुक हुआ। इतना ही नहीं; लोगोंका आश्चर्य तब और बढ़ा, जब यह समाचार प्रसिद्ध हुआ, कि बन्दरका मुहाना साफ हो गया; रूसके बड़े बड़े जहाज बन्दरके मुहानेसे आनेजाने लगे। और यह दोनो समाचार सत्य थे; अन्ततः आंशिक-रूपसे निश्चय ही सत्य थे। रूसी जङ्गी जहाज फौलादके घेरेसे हुए किले थे सही; किन्तु जो जापानी तारपेडो उन फौलादी किलोंको लगे, वह और भी भयङ्कर थे। एक एक जापानी तारपेडोने एक एक फौलादी किलेमें इतने बड़े सूराख बना दिये थे, कि उनसे आदमी तो आदमी, अच्छा खासा जवारतक मजेसे निकल जा सकता था। इन सूराखोंपर पलुइ पलुइ धिगली लगा रङ्ग फेर देनेसे कोई टूटाफूटा जङ्गी जहाज युद्धके लिये कहांतक तय्यार हो सकता है, रूसी जङ्गी जहाज कहांतक तय्यार हुआ। और अरथर-बन्दरके मुहानेमें

एक समयमें सिर्फ एक जहाज आनेजाने लायक राह तय्यार हुई ; सो भी कब ; जब समुद्रमें ज्वार आता था, जब मागं-जल पूरसे बढ़ जाता था ।

यह समाचार सतर्क टोगोको यथासमय मिल गया । वह इसके सत्यासत्यकी जांचका सुअवसर ढूंढने लगे । अरथर-बन्दरसे कोई पन्द्रह कोसके फासिलेपर टोगोका बेड़ा ठहरा हुआ था । २३वींको प्रातःकाल बेतारके तार द्वारा अरथर बन्दरके सामनेकी सन्तरी-नावोंने टोगोको समाचार दिया,—"२२वींकी रातसे अरथर-बन्दरके मुहानेसे रूसी जहाज निकल रहे हैं ; कितने ही निकल चुके हैं ; कितने ही निकलनेको हैं ।" समाचार सत्य था । २२वींकी रातसे प्रातःकालतक रूसके तीन बड़े जहाज और चार छोटे बड़े जहाज बन्दरके मुहानेसे बाहर निकल आये थे और बाकी निकल रहे थे । जो बड़े जहाज निकले थे, वह यथासम्भव सौदागरी जहाजोंकी आड़में थे ; और इस-तरह छिपे थे, जिसतरह गन्नेके खेतमें ऊंट छिप सकता है । यह समाचार पा टोगो तुरन्त युद्धके लिये उठ खड़े हुए । कुछ छोटे बड़े जहाजोंको अरथर-बन्दरके मुहानेकी ओर रवाना किया और उनसे कह दिया, कि रूसी बेड़ेको अपने पीछे लगा-कर जहांतक सम्भव हो, वहांतक खुले समुद्रकी ओर निकाल लाओ । टोगो चाहते थे, कि खुले समुद्रमें अरथर बन्दरवाले बेड़ेसे आज युद्ध हो ; बेड़ेकी नवसञ्चित शक्ति आजमाई जाये ।

दिन कोई दो बजे टोगोके भेजे छोटे बड़े जहाज अरथर-के मुहानेपर पहुंचे । वहां पहुंच उन्होंने देखा, कि उस

समयतक रूसी बेड़े के सभी जङ्गी जहाज बन्दरसे बाहर निकल आये थे। सिवा जङ्गी जहाज पेट्रोपावलस्क और कई तारपेडो तथा डिष्ट्रायेर-नावोंके रूसका आरथर-बन्दरवाला समूचा बेड़ा इस समय आरथर-बन्दरके मुहानेपर खड़ा था। बेड़ेमें जङ्गी जहाज जारविच, रेटविजां, पोलटावा, सिवस्तपोल, परसेवीट और पवेदा था ; छोटे जङ्गी जहाजोंमें बयान, पलाडा, डायना, असकोल्ड और नाविक था। सिवा इसके चौदह डिष्ट्रायेर नावें भी थीं। पचीस जलयानोंका यह जबरदस्त बेड़ा सजधजकर युद्धके लिये तय्यार था। निश्चय ही जापानी भी इस बेड़ेको देख आश्चर्यान्वित हुए होंगे।

किन्तु आश्चर्यान्वित होनेपर भी जापानी अपने कामसे नहीं चूके। छोटे जङ्गी जहाजोंको अपने पीछे छोड़ कितनी ही डिष्ट्रायेर-नावें आगे बढ़ीं और उन सबने रूसी डिष्ट्रायेर नावोंको युद्धमें प्रहत्त किया। रूसका छोटा जङ्गी जहाज नाविक भी जापानी डिष्ट्रायेर-नावोंसे भिड़ पड़ा। जापानी डिष्ट्रायेर-नावें समुद्रमें इधरउधर दौड़ती और रूसी नावों तथा जहाजोंपर गोले बरसाती धीरे धीरे पीछे हटने लगीं। जापानी नावोंका पीछे हटना देख समग्र रूसी बेड़े में हलचल पड़ी। जङ्गी जहाज जारविचपर रूसी नौ-सेनापति विरोफ सवार थे ; जहाजोंमें उनका अफसर जारविच था ; उसीके इशारेपर कुल जहाज काम करते थे। जापानी डिष्ट्रायेर-नावोंके पीछे हटनेके साथ साथ जारविच आगे बढ़ा ; उसके इशारेपर अन्यान्य जहाज पीछे पीछे चले। जापानी डिष्ट्रायरोंके साथ साथ जापानी छोटे जङ्गी जहाज भी पीछे हटने लगे। रूसी बेड़ा बड़े उत्साहके साथ जापानी जहा-

एक समयमें सिर्फ एक जहाज आनेजाने लायक राह तय्यार हुई ; सो भी कब ; जब समुद्रमें ज्वार आता था, तब सागर-जल पुरसों बढ़ जाता था ।

यह समाचार सतर्क टोगोको यथासमय मिल गया । वह इसके सत्यासत्यकी जांचका सु-अवसर ढूंढने लगे । आरथर-बन्दरसे कोई पन्द्रह कोसके फासिलेपर टोगोका बेड़ा ठहरा हुआ था । २३वींको प्रातःकाल बेतारके तार द्वारा आरथर बन्दरके सामनेकी सन्तरी-नावोंने टोगोको समाचार दिया,—"२२वींकी रातसे आरथर-बन्दरके मुहानेसे रूसी जहाज निकल रहे हैं ; कितने ही निकल चुके हैं ; कितने ही निकलनेको हैं ।" समाचार सत्य था । २२वींकी रातसे प्रातःकालतक रूसके तीन बड़े जहाज और चार छोटे बड़े जहाज बन्दरके मुहानेसे बाहर निकल आये थे और बाकी निकल रहे थे । जो बड़े जहाज निकले थे, वह यथासम्भव सौदागरी जहाजोंकी आड़में थे ; और इस-तरह छिपे थे, जिसतरह गन्नेके खेतमें ऊंट छिप सकता है । यह समाचार पा टोगो तुरन्त युद्धके लिये उठ खड़े हुए । कुछ छोटे बड़े जहाजोंको आरथर-बन्दरके मुहानेकी ओर रवाना किया और उनसे कह दिया, कि रूसी बेड़ेको अपने पीछे लगा-कर जहांतक सम्भव हो, वहांतक खुले समुद्रकी ओर निकाल लाओ । टोगो चाहते थे, कि खुले समुद्रमें आरथर बन्दरवाले बेड़ेसे आज युद्ध हो ; बेड़ेकी सब सञ्चित शक्ति आजमाई जाये ।

दिन कोई दो बजे टोगोके भेजे छोटे बड़े जहाज आरथर-बन्दरके मुहानेपर पहुंचे । वहां पहुंच उन्होंने देखा, कि उस

समयतक रूसी बेड़े के सभी जङ्गी जहाज बन्दरसे बाहर निकल आये थे। सिवा जङ्गी जहाज पेट्रोपावलस्क और कई तारपेडो तथा डिस्ट्रायेर-नावोंके रूसका आरथर-बन्दरवाला समूचा बेड़ा इस समय आरथर-बन्दरके मुहानेपर खड़ा था। बेड़ेमें जङ्गी जहाज जारविच, रेटविजां, पोलटावा, सिवस्तपोल, परसेवीट और पवेदा था; छोटे जङ्गी जहाजोंमें बयान, पलाडा, डायना, असकोल्ड और नाविक था। सिवा इसके चौदह डिस्ट्रायेर नावें भी थीं। पचीस जलयानोंका यह जबरदस्त बेड़ा सजधजकर युद्धके लिये तय्यार था। निश्चय ही जापानी भी इस बेड़ेको देख आश्चर्यान्वित हुए होंगे।

किन्तु आश्चर्यान्वित होनेपर भी जापानी अपने कामसे नहीं चूके। छोटे जङ्गी जहाजोंको अपने पीछे छोड़ कितनी ही डिस्ट्रायेर-नावें आगे बढ़ीं और उन सबने रूसी डिस्ट्रायेर नावोंको युद्धमें प्रवृत्त किया। रूसका छोटा जङ्गी जहाज नाविक भी जापानी डिस्ट्रायेर-नावोंसे भिड़ पड़ा। जापानी डिस्ट्रायेर-नावें समुद्रमें इधरउधर दौड़ती और रूसी नावों तथा जहाजोंपर गोले बरसाती धीरे धीरे पीछे हटने लगीं। जापानी नावोंका पीछे हटना देख समग्र रूसी बेड़ेमें हलचल पड़ी। जङ्गी जहाज जारविचपर रूसी नौ-सेनापति विशेष सवार थे; जहाजोंमें उसका अफसर जारविच था; उसीके इशारेपर कुल जहाज काम करते थे। जापानी डिस्ट्रायेर-नावोंके पीछे हटनेके साथ साथ जारविच आगे बढ़ा; उसके इशारेपर अन्यान्य जहाज पीछे पीछे चले। जापानी डिस्ट्रायरोंके साथ साथ जापानी छोटे जङ्गी जहाज भी पीछे हटने लगे। रूसी बेड़ा बड़े उल्लासके साथ जापानी जहा-

गोंके पीछे पीछे दौड़ा। दौड़ता दौड़ता रूसी बेड़ा आरथर-बन्दरसे बहुत दूर निकल गया। कोई तीन घण्टे तक यह दौड़ हुई; सन्ध्या छः बज गये; ऐसे समय एकाएक सम्पूर्ण जापानी बेड़ा क्षितिजमें प्रकट हुआ। बेड़ेमें चार अव्वल दरजेके और एक दूसरे दरजेका जङ्गी जहाज था, चार अव्वल दरजेके छोटे जङ्गी जहाज थे, पांच तीसरे दरजेके छोटे जङ्गी जहाज थे और तीस डिष्ट्रायेर-नावें थीं, जो दो भागोंमें विभक्त थीं। तारपेडो नावोंके पास छो डिष्ट्रायेर-नावें थीं। सिवा इनके रूसी बेड़ेको बहकाकर आरथर-बन्दरसे दूर निकाल ले जानेवाला छोटे जङ्गी जहाजों और डिष्ट्रायेर-नावोंका वह छोटा बेड़ा तो था ही।

कितने ही लोग कहते हैं, कि टोगोके बेड़ेको सामने देख रूसी जहाजोंपर लड़ाईके निशान उड़ने लगे; किन्तु जैसे ही टोगोका बेड़ा रूसी बेड़ेके समीप पहुंचा, वैसे ही रूसी बेड़ा अपनी जगह छोड़ आरथर-बन्दरकी ओर भागा। टोगोके बेड़ेने पीछा किया और आरथर-बन्दर समीप देख अपने डिष्ट्रायेर-नावों-के बेड़ेको रूसी बेड़ेपर आक्रमण करनेके लिये आगे भेजा। उस समय सागर-जल स्थिर था और निर्म्मेघ आकाशके सुनि-र्मल चन्द्रकी साफ चांदनी जलपर उसके साथ साथ नाच रही थी। ऐसे समय भागते हुए रूसी बेड़ेके अत्यन्त निकट पहुंच जापानी डिष्ट्रायेर नावोंने युद्ध आरम्भ किया। कहते हैं, कि जापानी डिष्ट्रायेर-नावोंके पहले ही आक्रमणने रूसी बेड़ेमें हलचल डाल दी। बेड़ेका हरेक जहाज जापानी नावोंपर आक्रमण करता फुरतीके साथ आरथर-बन्दरकी ओर

भागने लगा। रूसी गोलोंकी परवा न कर जापानी डिष्ट्रायेर-नावोंने घुस घुसकर रूसी बड़ी जहाजोंपर तारपेडो चलाये। रात कोई साढ़े ग्यारह बजे रूसी जहाज प्रत्येक चण जापानी डिष्ट्रायेर-नावोंके आक्रमणसे परेशान होते अन्तमें अरथर बन्दरके मुहानेके समीप अपने किलेकी तोपोंके आश्रयमें पहुंचे। बन्दरके मुहानेकी राह अत्यन्त सङ्कीर्ण होने और समुद्र-जलकी गहराई यथेष्ट न होनेकी वजह कोई छः घण्टेमें रूसी बेड़ा अरथर बन्दरमें आ सका। जबतक बेड़ा बाहर था, तबतक जापानी डिष्ट्रायेर-नावों द्वारा बारंबार आक्रान्त होता रहा। रूसियोंका कहना है, कि इस आक्रमणसे हमारी ऐसी कोई चति नहीं हुई; किन्तु जापानकी सरकारी रिपोर्टमें निकला,—"इस आक्रमणसे एक बड़ी जहाज डूब गया और दो छोटे बड़ी जहाजोंको बड़ी चोट पहुंची।" जापानी रिपोर्टपर लोगोंने विश्वास किया, कारण, युद्ध सम्बन्धी जापानी रिपोर्ट कभी मिथ्या प्रमाणित हुई नहीं थी। जापानने यह भी स्वीकार किया,—"इस छेड़छाड़में हमारी डिष्ट्रायेर-नाव शिराकुमोको हलकी चोट आई; उसके तीन सिपाही मारे गये और तीन घायल हुए। तार-पेडो-नाव चिड्रायेरके एञ्जिन रूमकी छतपर एक गोला पड़ा; कोई आदमी नहीं मरा। तारपेडो-नाव नम्बर ६४ और ६६ को हलकी हलकी चोट आई। सिवा इसके और कोई नुकसान नहीं हुआ। सिर्फ इतनी ही चति सहकर जापानियोंने अरथर-बन्दरके बेड़ेको नीचा दिखाया। कोई बड़ा जल-युद्ध नहीं हुआ; किन्तु जो हुआ, उसका फल बड़ा ही प्रभावशाली हुआ। जगतने देख लिया; टोगोने भी मालूम कर लिया, कि

आरथर-बन्दरका बेड़ा सिर्फ तैरने और गिनती गिनानेके लिये पुनर्जीवित हुआ है ; सम्मुख समरमें डटकर युद्ध करनेके लिये नहीं। रूसी बेड़ेकी इस दिनकी कारस्तानीका हाल जान एक रूसी अफसरने कहा था,—"बस अब इस बेड़ेके अफसरोंके लिये यही बाकी रह गया है, कि जब जापानी स्थलकी ओरसे आरथर-बन्दरमें दाखिल हों, तब रूसी अपने हाथों अपने जहाजोंको तोड़ पानीमें डुबा दें।"

इसके उपरान्त रूसी नौ सेनापति के निरुद्योग ही बैठ रहने-पर भी जापानी नौ-सेनापति अकर्मण्य नहीं थे। २७ वीं जूनकी रातको आरथर-बन्दरपर टोगोकी और एक चोट पड़ी। अबके १२ नम्बर तारपेडो-नावोंका बेड़ा धीरे धीरे आगे बढ़ बढ़ बन्दरके समीप पहुंचा। सर्च-प्रकाशमें इस बेड़ेको देख इसपर किलेकी तोपें गोले बरसाने लगीं। बेड़ा इस अग्नि-वृष्टिको तुच्छ समझ मुहानेके बाहर खड़े एक बेड़े या छोटे जङ्गी जहाजके समीप पहुंचा और उसपर बेड़ेने कई तारपेडो चलाये। एक तार-पेडो ठीक निशानेपर बैठा ; बड़ा शब्द हुआ ; रूसी जहाज शीघ्र ही डूब गया ; विशालाकार जहाजके एकाएक डूबनेसे सागर-वक्ष देरतक अत्यन्त विक्षुब्ध रहा। इसतरह अपनी साहसिकता दिखा और वीरत्व प्रकाशकर जापानी तारपेडो-नावोंका बेड़ा बन्दरके समीपसे हट सुरक्षित स्थानमें पहुंच गया। जापानी बेड़ेके चौदह सिपाही मारे गये और तीन जखमी हुए।

इसके बाद कुछ दिनोंतक आरथर-बन्दरके सामने कितनी ही छोटी छोटी घटनायें होती रहीं। २८ वीं जूनको एक रूसी

छिद्वयेर-नाव टोगोकी सन्तरी-नावोंकी निगाह बचा आरथर-बन्दरसे भाग सिउचवाङ्ग पहुंचो और वहां तरह तरहके असार समाचार प्रसिद्ध किये। इसके उपरान्त जूनके अन्तिम दो दिनों आरथर-बन्दरपर खूब गोले बरसाये गये। ५ वीं जुलाईको आरथर-बन्दरकी बगल की तालीनवान-खाड़ीमें एक दुर्घटना हुई। जापानका एक साधारण जहाज किसी कामसे खाड़ीसे बाहर जा रहा था; ऐसे समय एक रूसी माइनसे टकरा डूब गया।

अब आगे क्या होगा? क्या वलडीवष्टकका बेड़ा हर बार शिकार खेल निकल जाया करेगा और जापानी नौ-सेनापति कमीमुरा उसके निकल जानेपर हाथ ही मलते रहेंगे? क्या आरथर-बन्दरका बेड़ा धन और समय दोनोंके सहारे सिर्फ इसलिये फिरसे तय्यार हुआ, कि एक ही दिनकी हलकी छेड़-छाड़के बाद आरथर-बन्दरमें घुसकर बैठ जाये? इसका जवाब हम कैसे दें? कारण, शीघ्र ही वलडीवष्टक-बेड़ो कमीमुरा और आरथर-बन्दरवाले बेड़के काम ही इन प्रश्नोंका उत्तर देंगे।



षोड़श परिच्छेद।

ओकूकी अग्रगति—पंक्तिका मेल।

जहाजी बेड़ोंकी बातें बहुत हुईं; अब स्थल-सैन्यका कुछ हाल सुनाना चाहते हैं। स्थल-सैन्यका हाल सुनानेमें सबसे पहले हमें जापान-सेनापति ओकूकी ओर मुड़ना पड़ेगा; क्योंकि उस समय इन ओकू हीकी सैन्यने सबसे पहले कितने ही कार्य्य किये थे।

विजय-पुलकावलीसे पुलकित ओकूकी सैन्यको हमने जापानियोंके नवाधिकृत तेलिस्सू नगरमें छोड़ा था। कोई दो दिनकी थकीमांदी जापानी सैन्यने रातभर तेलिस्सूमें सुखपूर्व्वक विश्राम लिया। दूसरे दिन—यानी १६ वीं जूनको बड़े सवेरे जापानी फौज तेलिस्सूसे निकल अपने साथें फैल गई और फेलवो फेलतो निकटके समुद्रतटतक पहुंच गई। समुद्रपर जापानियोंका अधिकार था; इसलिये कितने ही वारबरदारीके जहाज रसदादि ले समुद्रकिनारे खड़े थे। जापानी फौजके एक छोरने समुद्रकिनारे पहुंच अपने जहाजोंसे रसदादि लिया और शीघ्र ही वह रसद तथा अन्यान्य चीजें जापानी फौजकी समूची लम्बाईमें पहुंच गईं। रसदसे लैस हो १६ वीं जूनको जापानी फौज तेलिस्सूसे आगे बढ़ी। बढ़ती हुई जापानी फौजकी पंक्ति बहुत ही लम्बी थी। जापानी फौजकी पंक्तिका दाहना सिरा तेलिस्सूके समीप था और बायां सिरा समुद्र किनारे।

पहले ही लिखा जा चुका है, कि रूस-सेनापति छाकलबर्ग तेलिस्सू से भाग कैचौ पहुंचे थे। प्रधान सेनापति कुरोपाटकिनने छाकलबर्गकी विध्वस्त और पददलित सेन्यमें और सेन्य मिला छाकलबर्गकी फिर दलपुष्टि कर दी थी। छाकलबर्गने अपनी फौजकी चौकियां बहुत दूरतक फैला दी थीं। कैचौ और तेलिस्सूके बीच सुनयावचेन नामक छोटासा एक नगर है। इस नगरसे भी बहुत आगेतक तेलिस्सूकी ओर रूसी फौजकी चौकियां पड़ी थीं। इसीलिये क्रमश: कैचौकी ओर बढ़ते जापानी गिरदावरीके सवार और रूसी चौकियोंके सिपाहियोंके बीच मारकाट चल पड़ी। ज्यों ज्यों जापानी फौज आगे बढ़ी, त्यों त्यों यह मारकाट बढ़ी।

ओकूकी फौज धीरे धीरे आगे बढ़ती थी; जिस जगह सन्ध्या होती थी उस जगह ठहर जाती थी। खेमे नहीं थे, डेरे नहीं थे; ऊपर आकाश था, नीचे विषम भूमि थी। इसी भूमिपर जापानी फौज पैर फैला देनेसे रातभर सोती थी। जिस जगह फौज सोती थी, उस जगहसे कुछ फासिलेपर रूसियोंकी और जापानियोंकी सन्तरी और सवार खड़े होते थे। थोड़ी थोड़ी दूरके फासिलेपर सन्तरियों और सवारोंकी बड़ी बड़ी चौकियां रहती थीं। मतलब यह, कि जिस जगह जापानी फौज सोती थी, उस जगहके चारों ओरसे दूरतक सवारों और सन्तरियोंका एक लम्बा पहरा तय्यार कर दिया जाता था। इस पहरेके पीछे जापानी फौज बड़े ही सुखसे पैर पसार सोती थी। फौजको अपने सन्तरियों और सवारोंपर इतना विश्वास रहता था, कि फौज सोनेके समय शत्रुके आक्रमण या लड़ाईकी तनिक

भी चिन्ता किया नहीं करती थी। रूसी गिरदावरोंके सवार जापानी फौजकी संख्या आदि जाननेके लिये सन्तरियोंका पहरा तोड़ भीतर घुसनेकी चेष्टा करते थे; किन्तु यह चेष्टा कभी सफल होती नहीं थी। हर रात सन्तरियों और रूसी गिरदावरोंके सवारोंके बीच दस पांच बार तलवारें चल जाती थीं; किन्तु रूसी एकबार भी सन्तरियोंकी पंक्ति भेद जापानी फौजके समीप पहुंच नहीं सकते थे। रात्रि बीतने और सुप्रभात उपस्थित होनेसे जिसतरह अन्धकार दूर होता है; उसीतरह जापानी सन्तरियोंकी पंक्तिके पास मंडलाते रूसी गिरदावरोंके सवार दूर होते और दूर—अति दूर ठहर दूरबीन द्वारा जापानी फौजकी गतिविधि देखते। प्रायः नित्य ही प्रातःकाल उन्हें एक ही दृश्य दिखाई देता। सूर्योदयके साथ साथ एकाएक बिगुल बजता; जापानी सन्तरी बिगुलकी आवाज सुन पंक्ति तोड़ जगह जगह सिमटकर खड़े हो जाते और इसके बाद तुरन्त ही पीछे हट जाते थे। सन्तरियोंके हटते ही पंक्तिबद्ध जापानी फौज खड़ी दिखाई देती थी। फौज सजधज लैस हो आगे बढ़नेके लिये तय्यार रहती थी। आगे बढ़नेकी आज्ञा मिलते ही फौजी बाजे बजने लगते थे; अफसरोंके घोड़े इधर उधर दौड़ने लगते थे और पंक्तिबद्ध जापानी फौजका हरेक सिपाही अपनी जमीनसे टिकी बन्दूकें बायें हाथमें लटका आगे बढ़ाने लगता था। फौजोंके पीछे जगह जगह उन उदयोन्मुखी रविके प्यारे प्रकाशमें उदयोन्मुखी सूर्यसे चिह्नित जापानकी प्यारी पताकायें प्रातःसमीरणमें मन्द मन्द लहराने लगती थीं। बड़ा ही अभिराम दृश्य उपस्थित होता था। किन्तु सुदूरसे देखनेवाले

रूसी सवारोंको यह दृश्य अत्यन्त भयङ्कर जान पड़ता था। जापानी फौजका आगे बढ़ना देख रूसी सवार पीछे भागते थे और अपने पीछेकी चौकियोंको जापानी फौजके आगे बढ़नेका समाचार देते थे।

इसीतरह आगे बढ़ती और रूसी कभी छोटी रूसी चौकियोंको मट्टीमें मिलाती २१वीं जूनको जापानी फौज तेलिस्सू और केपी नगरके मध्यमें अवस्थित सुनयानचेंग नगरके सामने पहुंची। जापानी फौज और नगरके बीच एक भी रूसी सिपाही या सवार नहीं था। जापानियोंको विश्वास था, कि सुनयानचेंग नगरमें युद्ध होगा; इसलिये वह पहले होसे इस युद्धके लिये तय्यार थे; किन्तु नगरके सामने एक भी रूसी सिपाही न देख जापानियोंको बड़ा आश्चर्य हुआ। स्वाभाविकरूपसे जापानी अफसरोंके मनमें यह सन्देह हुआ, कि रूसी नगरमें छिपे बैठे हैं और मैदान साफ दिखा जापानियोंको प्रलोभनमें डाल नगरके समीप बुला फन्देमें फंसा निर्दयतापूर्वक मार डालना चाहते हैं। ऐसा ही विचारकर जापानी अफसरोंने रिसालदारोंके सवारोंको नगरके बगलसे नगरके पीछे भेजा और कई तोपोंके साथ नौ स्क्वाड्रन रिसाला नगरकी ओर रवाना किया। रिसालेको आज्ञा दे दी गई, कि जैसे ही शत्रु दिखाई दे, वैसे ही वह चौड़ी पंक्ति बांध तोपें लगा युद्ध आरम्भ कर दे; सहारेके लिये जापानी पलटनें पहुंचेंगी। रिसाला धीरे धीरे नगरकी ओर चला; पैदल जापानी फौजें नगरसे दूर ठहर रिसालेका बढ़ना देखने लगीं। रिसालेके आगे आगे जापानी रिसालदारोंके सवार थे। इन सवारोंने नगरके अत्यन्त समीप पहुंचकर भी रूसियोंका

कोई निशान न देखा। कई उत्साही सवार घोड़ा उड़ा नगरमें घुस गये; वहाँ उन्हें एक भी रूसी दिखाई न दिया। जापानी अफसरोंको यह समाचार दिया गया। साथ साथ जो सवार नगरके पीछे भेजे गये, उन्होंने भी अफसरोंको समाचार दिया,—"रूसी शायद नगरमें नहीं; कारण रूसी सिपाही नगरसे दक्षिण बेचौकी ओर हट रहे हैं।" वृथा बन्द हो दिया गया। जापानी फौजोंको नगरमें पैठनेकी आज्ञा मिली। आगे आगे रिसाला था; पहले उसीने नगरमें घुस जगह जगह जापानी राजपताकायें उड़ाईं। रिसालेके पीछे पीछे जापानी पलटनें नगरमें घुसीं। 'बेनजई बेनजई'की ध्वनिसे नगर प्रतिध्वनित हुआ। नगरकी प्रधान प्रधान इमारतोंपर—रेल-ष्टेशनपर, तारघरपर, अदालतपर जापानी ध्वजा उड़ने लगी। सुनयाग्चेन नगर चीनसे रूसने लिया और रूससे छीन जापानने स्वाधिकारयुक्त किया। जगत्‌में ऐसा ही लेन-देन हुआ करता है।

सुनयाग्चेनमें कोई दो दिन जापानी फौजने ठहर विश्राम किया। इस अवसरमें जापानी फौजकी चौकियां बराबर आगे बढ़ती रहीं। जापानी और रूसी चौकियोंके बीच हलकी हलकी कई लड़ाइयां हुईं। दो दिनों बाद २२वीं जूनको जापानी फौज सुनयाग्चेन नगरसे बेचौकी ओर बढ़ी। अबकी जापानी फौजका अग्रगमन और ही ढङ्गका था। फौजमें आगे बहुत बड़ा रिसाला था, जो तीन टुकड़ोंमें विभक्त था; रिसालेके पीछे पलटनोंकी कई पंक्तियां थीं; इन पंक्तियोंके भी पीछे रक्षी दल जापानी पलटनें थीं। यह फौज जब आगे बढ़ती थी, तब मनुष्य-सागर लहरें मारता आगे बढ़ता जान पड़ता था। २२वीं

की सन्ध्याको जापानी फौजका बायां भाग मोयशियाट्जु ग्राममें पहुंचा और उसपर अधिकार कर तोपखाने लगा बैठ गया। इससे आगे बढ़ना आसान नहीं था। कारण, मोयशियाट्जुसे कुछ ही फासिलेपर कैचो नगर था और खबर थी, कि मदलबल रूस-सेनापति कुरोपाटकिन कैचो नगर अपने पीछे रख मोयशियाट्जुकी ओर आगे बढ़ मोरचा बांध बैठे हुए हैं। जिस समयका हाल हम लिख रहे हैं, उस समय मञ्चूरियामें रूसी फौजके तीन प्रधान केन्द्र थे। एक लियावयाङ्गमें, दूसरा हैचेङ्गमें और तीसरा कैचोमें। जापान-सेनापति ओकूकी फौज इन तीनोंमें शेषोक्त केन्द्रस्थल कैचोके सामने पहुंच गई।

इसी जगह एक प्रयोजनीय बात सुन लेना चाहिये। फेङ्ग-व्हाङ्गचेङ्गमें बैठे कुरोकी और ताकुशानमें उतरी नोदूकी फौजकी पंक्ति इससे पहले ही एक दूसरेसे मिल गई थी; नोदूकी फौजका बायां सिरा ओकूकी फौजके दाहने सिरेके पास पहुंच गया था सही; किन्तु अबतक इन दोनों सेनापतियोंकी फौजोंके सिरे आपसमें मिले नहीं थे। सर्वप्रधान सेनापति मारशल ओयामा इन दोनों सिरोंको शीघ्र ही जोड़ देनेके लिये अत्यन्त चिन्तित थे। इतने दिनोंके बाद ११वीं जूनको मारशल ओयामाकी आन्तरिक कामना पूर्ण हुई। ओकूने मोयशियाट्जु ग्रामपर अधिकार करके ही अपनी फौजका दाहना भाग और आगे बढ़ा नोदूकी फौजके बायें छोरसे मिला दिया। अब जापानी फौजकी अर्द्धचन्द्राकार बहुत बड़ी पंक्ति तय्यार हुई, जो प्रायः आधे मञ्चूरियाको घेर अवस्थान करने लगी। उस समय जापानी फौजका दाहना सिरा कुरोपाटकिनके सदर मुकाम लियावयाङ्गसे कुछ आगे

सीतोनलिङ्ग घाटीके समीप था और बायां सिरा लियावटुङ्ग-खाड़ीके किनारे। एक सिरा दूसरे सिरेसे सैकड़ों नहीं, तो शताधिक कोसके फासिलेपर था। इससे पहले किसी युद्धमें किसी जातिकी फौजने ऐसी पंक्ति तय्यार की नहीं थी; जापानियोंने पंक्ति तय्यारकर समग्र जगत्के लोगोंको आश्चर्यान्वित किया और रणपण्डितोंको एक नई बात सिखाई। यह पंक्ति तय्यार होनेसे पहले जापानकी तीनों फौजोंका लक्ष्य कोई समझ नहीं सका था; किन्तु इसके उपरान्त ही जान पड़ा, कि वह कुरोकीका यालू नदी पारकर फाङ्गचेङ्गको अधिकारभुक्त कर मोरचे बांध बैठ जाना, वह सेनापति नोजूका चुपके चुपके ताकुशानमें उतर आगे बढ़ना और वह ओकूका अरथर-बन्दरके समीप उतर अरथर बन्दरके घेरेका आयोजनकर बराबर कैचौकी ओर अग्रसर होना, — यह सब—आदिसे अन्ततक—इसलिये हुआ, कि तीनों जापानी फौजें मिलकर एक बहुत बड़ा अर्द्धचन्द्राकार व्यूह तय्यार करें। सुननेसे आश्चर्य होगा, कि युद्ध आरम्भ होनेसे पहले ही मारशल ओयामा इस व्यूहरचनाकी कल्पना कर चुके थे। ओयामाके आज्ञानुसार धीरे धीरे जापानी फौजोंने अपना काम किया,—धीरे धीरे यह व्यूह तय्यार होने लगा। जब यह व्यूह तय्यार हो चुका, तब जगत्ने इसे देखा; क्या ही अपूर्व अलौकिक व्यूह था।

सहस्र सहस्र रूसी तोपें, सहस्र सहस्र रूसी सवार, लक्ष लक्ष रूसी सिपाही इस अर्द्धचन्द्राकार व्यूहके भीतर आ गये। रूस-सेनापति कुरोपाटकिन अगणित छोटी बड़ी लड़ाइयोंके योद्धा थे। लड़ते लड़ते उनकी उम्र ढली थी; लड़ते लड़ते उन्होंने

अपने यौवन और वार्द्धक्यका अनेक अंश बिताया था। कुरोपाटकिन युद्धविद्याके सुपण्डित थे; युद्धविद्याके सम्बन्धमें कुरोपाटकिनने कितनी ही पुस्तकें रची थीं; जो युद्ध-विद्याभिज्ञाथी छात्रोंको पढ़ाई जाती थीं। किन्तु यही कुरोपाटकिन जापानी सैन्यका यह अपूर्व व्यूह देख चौंक पड़े; इससे पहले उन्होंने इस व्यूहकी कल्पनातक भी नहीं की। कुरोपाटकिन समझ गये, कि इस अभूतपूर्व आयोजनके फलसे अभूतपूर्व युद्ध होगा। हुआ भी ऐसा ही। जापानकी इस व्यूहरचनाके उपरान्त सचमुच ही ऐसे युद्ध हुए; जैसे गत शत शत वर्षमें हुए नहीं थे।

सप्तदश परिच्छेद।

सेनापति ओकू और नोजूकी फौजी गति-विधि—अपूर्व्व घोर श्मशानल प्रज्वलित होनेकी तय्यारियां।

बुलावा भी नहीं; महासमारोहपूर्व्वक प्रेरित निमन्त्रण भी नहीं; जिस बातके होनेका समय आता है, वह बात आप ही आप हो जाती है। वर्षाकाल उपस्थित होते ही वृष्टि होती है; शीतकाल आते ही प्राणी शीत अनुभव करते हैं। मञ्चूरियामें जापानियोंका अर्द्धचन्द्र व्यूह तय्यार होते ही एक ही समयमें नाना ओर नाना युद्धज्वालाओंके प्रज्वलित होनेका समय आ उपस्थित हुआ; युद्धज्वाला कैसे प्रज्वलित न होती?

इस अर्द्धचन्द्र व्यूहके दक्षिण भागमें कुरोकीकी फौज थी, मध्यभागमें नोजूकी और वामभागमें ओकूकी। व्यूहमें दाहने रहनेकी वजह पहले कुरोकी हीकी सैन्यकी गतिविधि लिखनेकी इच्छा होती है। सिवा इसके शायद पाठक भी सोच सकते हैं, कि इतने दिनोंका इतना हाल लिखा गया; कुरोकीका क्यों लिखा न गया? वह क्या करते थे? क्या वह इतने दिनोंसे निकम्मे बैठे थे? नहीं; कुरोकी निकम्मे नहीं थे; प्रत्यक्षमें दैसा काम न करके भी वह धीरे धीरे विजयको अवश्यम्भावी और ध्रुव निश्चय बनानेकी तय्यारियां कर रहे थे। कुरोकीका स्वभाव पाठकोंको याद रह सकता है और उनकी युद्ध सम्बन्धीय तय्यारियां भी पाठकोंको सम्भवतः भूल नहीं सकतीं; वह असाधारण पुरुष थे। उन्हें सबसे बड़ी चिन्ता की खबरथी; वह सोचते थे; कि यथास-

मय और यथास्थान रसद पहुंच न सकेगी, तो उनकी फौज युद्धमें कैसे प्रवृत्त होगी। कुरोकीकी फौजकी स्थिति भी उस जगह थी, जिस जगह रसद कठिनतासे पहुंच सकती थी। ओकूकी फौजका बायां छोर समुद्रसे लगा हुआ था; जहाजसे रसद उतरती और उनकी फौजमें बंट जाती थी; नोजूकी फौज जिस जगह थी, उस जगहसे कोरिया-खाड़ीका ताकुशान-बन्दर दूर नहीं था; जहांसे नोजूकी फौजको बराबर रसद मिलती जाती थी; एक कुरोकीकी फौज उस जगह थी, जिस जगहसे समुद्रका किनारा बहुत दूर पड़ता था; इसलिये समुद्रसे यालू नदीमें जहाज आते थे और उन जहाजोंसे रसद उतरती और यालूकिनारेसे इस सुदूरकी मोतीनलिङ्गदर्रा होते कुरोकीकी फौजमें पहुंचती थी। कुरोकीने आगे बढ़नेसे पहले रसदकी राह और उस राहकी रक्षाका बन्दोबस्त किया। यालूकिनारेके उस पार एण्टुङ्ग नगरसे कुरोकीकी फौजतककी सुप्रशस्त शाहराह और भी प्रशस्त तथा दृढ़ करा दी और जगह जगह बड़े छोटे कितने ही पुल बंधवा दिये और एक छोटी पटरीकी रेल एण्टुङ्गसे फेङ्गवाङ्ग नगरतक बिछाना आरम्भ किया। इससे अधिक यह किया, कि राहकी दोनों ओर यथास्थान वैज्ञानिक रीतिसे छोटे छोटे अथच अत्यन्त सुदृढ़ किले बनवा दिये। वर्षाकाल था; इसलिये इन किलेमें जो सुविशाल छावनी बनाई गई, उनकी रक्षाके लिये विशेष प्रबन्ध किया गया। युद्धस्थलमें पड़ी फौजोंकी छावनीका भी प्रबन्ध किया गया। और यह सब प्रबन्ध इतनी सुशृङ्खलताके साथ हुआ, कि उसे देख विदेशी छिद्रान्वेषी रण-पण्डितोंने भी प्रशंसा की। एक दिन कुरोकीकी फौजके यूरोपीय

राजदूत तथा समाचारपत्रोंके संवाददातागण कुरोकीको बनवाई इन सब जगहोंको देखने गये थे। देखकर कितने ही लोगोंने कहा था,—"जिस अवस्थामें जापानी फौज थी, उस अवस्थामें रहनेपर कोई भी युरोपीय फौज इतना कष्ट स्वीकारकर ऐसे सामान तय्यार न करती।"

सिवा इसके इस अवसरमें कुरोकीकी फौजने और भी कितने ही काम किये थे। पीछे हम लिख आये हैं, कि नोजूकी फौज ताकुशानमें उतरी थी और एक दिन उसने आगे बढ़ रूसके शिवयेन नगरपर आक्रमणकर अधिकार कर लिया था। इस अधिकारके उपरान्त इसी शिवयेनमें कुरोकी और नोजूकी फौजका सिरेसे सिरा मिल गया। नोजूकी फौजसे मिलनेके लिये कुरोकीने एक दिन पहले हीसे तय्यारी आरम्भ कर दी थी। यानी ६ठी जूनको ही कुरोकीकी आज्ञासे चार जापानी पलटनें सेमतसे और शिवयेनकी ओर रवाना हुईं; उन्हें आज्ञा मिली, कि वह इन दोनो स्थानोंसे रूसियोंको भगा उनपर कबज़ा कर लें। फेङ्ग्वाङ्गचेङ्गसे कोई पैंतीस मील उत्तर सेमतसे बसती है। ७वीं जूनको जापानी पलटनें सेमतसे पहुंचीं। सेमतसेकी रूसी फौजने जापानी पलटनोंसे हलकासा मुकाबला किया। अल्पकालके लिये गोलियां चलीं। जापानियोंके तीन सिपाही मारे गये और चौबीस जखमी हुए। रूसियोंके तेरह सिपाही मारे गये; पांच सिपाहियोंके साथ दो अफसर कैद कर लिये गये। रूसी फौज सेमतसे छोड़ भाग गई; जापानियोंने उसपर अधिकार कर लिया। सेमतसे बड़ा ही प्रयोजनीय नगर था। यालू-किनारेसे पार्व्वत्य-प्रदेश भेद कुरोपाटकिनके सदर लियावयाङ्ग या

मुकडन प्रभृति नगरोंकी ओर एक राह मोतीनलिङ्ग [illegible] थी और दूसरी इसी सैमचंसे नगरसे। मोतीनलिङ्ग घाटीवाली राह रुक जानेसे इस दूसरी राहसे जापानी फौजें लियावयाङ्ग पहुंच सकती थीं।

पहलेहीसे सब तय हो चुका था; स्थिर हो चुका था, कि यहीं जनकी एक ओरसे ताकुशानकी फौज कमाधिकारभुक्त शिवयेन नगरकी ओर बढ़ेगी और दूसरी ओरसे कुरोकीकी भेजी पलटनें। ऐसा ही हुआ। इस दिन प्रातःकाल दोनो फौजोंने दो ओरसे शिवयेन नगरपर आक्रमण किया। शिवयेनमें हजार दो हजार नहीं; चार हजार रूसी फौज थी; छः तोपें भी थीं। रूसियोंने कुछ देरतक खूब जमकर जापानियोंसे युद्ध किया; किन्तु अन्तमें उन्हें अपना स्थान परित्यागकर भागना पड़ा। नोजू और कुरोकी दोनोकी फौजोंके सम्मिलित बलविक्रमप्रकाशसे यह स्थान जापानियोंके हाथ लगा और दोनो फौजोंने इस नगरमें अवस्थित हो कुरोकी और नोजूकी फौजकी पंक्तियोंको मिला दिया। सैमतसे स्थानकी अपेक्षा शिवयेन कुछ कम उपयोगी नहीं था। सैमतसेसे लियावयाङ्ग प्रभृतिकी ओर राह गई थी, तो शिवयेनसे हैचिङ्ग, हैचौ प्रभृतिकी ओर। इसी राहसे नोजूकी सैन्य-पंक्ति आगे बढ़ी थी और बढ़ती बढ़ती हैचौके समीप कुरोकीकी सैन्यसे मिल गई थी।

जिस समय नोजूकी सैन्य-पंक्ति धीरे धीरे आगे बढ़ ओकूकी फौजसे मिलने जा रही थी, उस समय कुरोकीकी फौजके निरक्षा-दलके सवार सैमतसे स्थानसे फ्रोमाटकिनके सदर लियावयाङ्ग नगरकी ओर बढ़ रहे थे। जितने ही सवार यथाक्रम लियावया-

ङ्गके समीप पहुंचे और वहांकी रूसी फौजकी गतिविधि अच्छी तरह देख उसकी खबर उन्होंने लौटकर सेनापति कुरोकीको दी। सवारोंने कहा,—"लियावयाङ्गमें युद्धकी बड़ी बड़ी तय्यारियां हैं। रूसके सर्व्वप्रधान सेनापति कुरोपाटकिनने जापानी फौजोंकी रुकावटके सामान तय्यार करनेमें अपने मायेका सारा वैज्ञानिक बल खर्च कर दिया है; लियावयाङ्ग नगरकी शहरपनाहपर बड़ी बड़ी तोपें चढ़वा दी हैं। नगरके बाहर वैज्ञानिक ढङ्गके कितने ही दुर्भेद्य किले तय्यार किये हैं।"

कुरोकीको फौज इतने काम करके भी उस समय अपनी जगहसे आगे नहीं बढ़ी। कोई कोई कहते हैं, कि कुरोकीकी फौज अपनी जगह ठहर नोजू और ओकूकी सैन्य-पंक्तिके परस्पर मिल जानेकी प्रतीक्षा कर रही थी। कुरोकीकी फौजके आगे न बढ़नेपर भी रूसी फौजके बड़े बड़े टुकड़े प्रायः ही आगे बढ़ आया करते और कुरोकीकी फौजी चौकियोंसे युद्ध किया करते थे। कुरोकीके साथके विदेशी दूत तथा संवाददातामण्डली इन चौकियोंकी लड़ाई देखनेके लिये नितान्त उत्सुक थी और अपनी यह इच्छा सेनापति कुरोकीसे बारंबार प्रकट किया करती थी। एक दिन कुरोकीने वैदेशिकोंकी यह इच्छा पूर्ण करनेका प्रबन्ध किया। पहले होसे खबर मिल गई थी, कि आज सेमतसेके समीप जापानी चौकियोंपर रूसियोंका आक्रमण होनेको है। कुरोकीने यह समाचार पा युद्धका तमाशा अपनी आंखों देखनेके लिये वैदेशिकोंको एक जबरदस्त शरीररक्षक सैन्यके साथ अपने सदर फेङ्गव्हाङ्गचेङ्गसे पूर्व्वोक्त चौकियोंकी ओर भेज दिया।

प्रथम भाग समाप्त।

रूस-जापान-युद्ध।

(सचित्र।)

द्वितीय भाग।

कलकत्ता,
९४।२ भवानीचरण दत्त स्ट्रीट, हिन्दी-बङ्गवासी एलेक्ट्रो मेशीन प्रेसमें
श्रीनटवर चक्रवर्त्ती द्वारा
मुद्रित और प्रकाशित।

संवत् १९६२।

मूल्य दो रुपये।

জাপানী বিজয়-বৈজয়ন্তী।



২য় ভাগ ১ পৃষ্ঠ।

रूस-जापान-युद्ध।

द्वितीय भाग।

प्रथम परिच्छेद।

घाटियोंपर कब्जा।

१२ वीं जूनको आकाश सुनिर्मल था। युद्ध भूमिमें [illegible] फैली हुई थी। असामयिक [illegible] दिनोंतक मूसल वृष्टि होनेकी वजहसे [illegible] भूमिमें निम्न भागों [illegible] जगह बहुत जल भर गया था; उच्चभागमें जल नहीं था; कीचड़ भी नहीं था; तरी थी, जो तेज धूपमें काफूर हो रही थी। जापानियोंने रूसियोंके पीछे हटते ही वृष्टि-जलसे बचनेके लिये इसी उच्चभागमें अपनी चौकियें प्रतिष्ठित की थीं। [illegible] दूर और मंचूरियाके [illegible] पहाड़ी [illegible] चौकियोंतक पहुंच गई। [illegible] आदि [illegible] योंकी मनोकामना पूर्ण हुई। जापानी [illegible] चौकियोंके अफसरोंको [illegible] कि [illegible] आते हैं। [illegible] हजार आये; [illegible]

व्यूह-रचना की। जिस जगह रूसी फौज थी या जिस मैदानमें हैचो, लियावयाङ्ग, मुकदन प्रभृति नगर थे, उसके पीछे एक समभूमि थी और आगे तथा अगल-बगल बड़े बड़े पर्व्वत थे, जिनके पीछे जापानी फौजोंकी वह विचित्र पंक्ति थी। ओकूकी फौज और हैचोकी समतल भूमिके बीच जो पर्व्वतमाला थी, वह उतनी दुर्लङ्घ्य नहीं थी। घाटी न पानेपर भी जापानी फौजें पर्व्वतमाला पारकर हैचोके मैदानमें पहुंच सकती थीं। ओकू और नोज़ूके सामनेकी पर्व्वतमाला बहुत ऊंची थी; फौज उसे पार कर नहीं सकती थी इस पर्व्वतमालासे हैचो, लिया-वयाङ्ग आदिके समतल भूखण्डमें उतरनेके लिये तीन घाटियां थीं। एक तालिङ्ग घाटी, जिसके समीप ही मोतीनलिङ्गका दुर्गम दर्रा था; दूसरी फेनशुलिङ्ग घाटी और तीसरी तातीनलिङ्ग घाटी। तालिङ्ग घाटीके सामने कुरोकीकी फौज था या जापानी फौजकी लम्बी पंक्तिका दाहना सिरा था। इस घाटीसे बहुत दूर खिवलेन स्थान था जो नोज़ूकी फौजके सामने फेनशुलिङ्ग और तातीनलिङ्ग घाटी थी; इन दोनोंके बीच ज्यादा फासिला नहीं था।

जापानके सर्व्वप्रधान सेनापति फील्ड मारशल ओयामा रूस फौजकी गति-विधि अत्यन्त ध्यानपूर्व्वक देखते थे; उन्होंने कुरोपाटकिनकी नवीन व्यूह-रचनाका समाचार पाते ही जापानी फौजोंको आगे बढ़नेकी आज्ञा दी। कुरोकी और नोजूके आगेकी पर्व्वतमाला अत्यन्त दुर्भेद्य थी; इसलिये आपने पहले इन्हीं दोनों सेनापतियोंकी फौजको आगे बढ़नेकी आज्ञा दी। आपने खयाल किया, कि यदि शीघ्रता की न जायेगी, तो तीनों घाटि-योंकी रूसी फौजें और भी मोरचे बांध अधिक सुदृढ़ हो जायेंगी और उनके मोर्चे पकड़ लेनेपर उन्हें जापानी फौजें सहज ही स्थानच्युत कर न सकेंगी। २६ वीं जूनको एकाएक जापानी फौजें आगे बढ़नेके लिये तय्यार हुईं। रूसियोंने बीचवाली घाटी फेनशुलिङ्ग अपेक्षाकृत अधिक सुदृढ़ कर ली थी। टाइम्सके संवाददाताने लिखा है, कि इस घाटीमें रूसियोंने अर्द्धचन्द्राकार कितने ही किले बना उनपर तोपें चढ़ा दी थीं। किलोंके सामने गहरी गहरी खन्दकें तय्यार की थीं, जिनके बाहरी किनारोंपर नरशरीरवेधक लोहेके काँटोंसे भरे जाल लगा दिये थे। चौदह बटालियन पलटनें और रिसालेकी तीन रेजिमेण्टें इन किलोंमें बैठा दी थीं।

फेनशुलिङ्ग घाटी नोजूकी फौजके सामने थी; उन्हींपर इसे स्वाधिकारभुक्त करनेका भार रखा गया। नोजूने फेनशुलिङ्ग घाटीपर अधिकार करनेके लिये एक फौज तय्यार की, जिसे तीन टुकड़ोंमें बांट दिया। करनल कमाराके अधीन पहला टुकड़ा किया गया और उसे घाटीके पश्चिमकी पर्व्वतमालापर अधिकार करनेकी आज्ञा दी गई। दूसरा टुकड़ा मेजर जनरल कमादाकी

आड़में निकल घाटीके पश्चिमकी पर्व्वतमालाकी छोरकी ओर बढ़ी। दो रूसी बटालियन पलटनें इस जापानी फौजको देख विकल हो इसकी राह रोकने दौड़ीं। युद्ध हुआ। अन्तमें दिन कोई ११ बजे मैकूनी फौज रूसियोंको भगा घाटी और उसमें बने हुए रूसी किलोंके पीछे पर्व्वतमालाके छोरपर पहुंच गई और जगह जगह तोपें लगाने लगी।

२६वींको सेनापति असाहाकी फौजने घाटीके पूर्व्व या बायें बढ़ अपने सामने कोई दो हजार रूसी देखे। दोनों फौजोंके बीच कुछ देरके लिये घोर युद्ध हुआ। रूसी भागे और जापानी फौजोंने छोटी छोटी पहाड़ियोंपर तोपें लगा दीं। २७वींको सबेरे कोई पांच बजे युद्धारम्भ हुआ। घाटीके भीतर रूसी किले अत्यन्त सुदृढ़ थे और उनपर चढ़ी बड़ी बड़ी तोपें भयङ्कर अग्निवृष्टि करती थीं। घाटीके सामने जाना बड़े जोखोंका काम था; इसलिये सेनापति असादाने अपनी फौजका एक टुकड़ा और भी दाहने हटा आगे बढ़ा खुमाफिरा घाटीके पूर्व्व या बायेंकी पर्व्वतमालापर अधिकार कर लिया।

करनल कमाडाकी फौजने, २६वींको आगे बढ़ घाटीके दाहने अवस्थित अपनी मददगार फौजके पीछेसे निकल दिन कोई सात बजे घाटीके ठीक दाहने किनारे पहुंच अपने तोपखाने लगा दिये। इसतरह फैनशुलिङ्ग घाटीपर आक्रमण न करके भी उसे दाहने बायें और किसी कदर पीछेसे जापानी फौजोंने घेर लिया और घाटीकी ओर अपनी तोपोंके मुंह फेर दिये। प्रकृत प्रस्तावसे युद्ध न करके भी जापानियोंने यथार्थमें

किलों का । सुदृढ़ बना रहे थे। रूस सेनापति कुरोपाटकिनको विश्वास था, कि मोतीनलिङ्ग दुर्गपर जापानी अधिकार कर न सकेंगे। तालिङ्ग घाटीपर जापानियोंके अधिकारका समाचार पा कुरोपाटकिनने अपने मनको यह कह सान्त्वना दी होगी, कि एक घाटी गई तो गई, उसको बगलका दुर्भेद्य दुर्ग अभीतक रूसियोंके अधिकारमें है।

जापान-सेनापति कुरोकी भी इस दुर्गकी सुदृढ़ताके सम्बन्धमें अनभिज्ञ नहीं थे। वह जानते थे कि दुर्गपर यदि सामनेसे आक्रमण किया जायेगा, तो जापानी फौजोंको नितान्त विपद्ग्रस्त होना होगा। इसलिये इन्होंने तालिङ्ग घाटीपर अधिकार करनेके उपरान्त [illegible] [illegible] नहीं, बल्कि पर्वतमालाके ऊपरी भागसे एक जबरदस्त फौज मोतीनलिङ्ग दुर्गको ओर रवाना की। दुर्गमें बैठा रूस, फौज दुर्गके सामनेसे आक्रमणमें जापानी फौजके आनेकी प्रतीक्षा कर रहा था; ऐसे समय जापानी फौज एकाएक दुर्गके दाहिने पर्वतपर जाकर प्रकट हुई और तोपें दाग दुर्गमें गोले बरसाने लगी। सामना करना सहज था। जापानी तोपें आकाशमें थीं और रूसी तोपें पातालमें। जापानी तोपोंके गोले दुर्गकी रूसी फौजों और तोपोंको टुकड़े टुकड़े कर रहे थे। रूसी तोपोंके गोले जापानी तोपोंके समीप पहुँच भी नहीं सकते थे। विवश हो रूसी फौजें दुर्ग परित्यागकर पीछे हट गईं। ३० वीं जूनको जापानी फौजने पर्वतसे उतर और दुर्गके सामने पहुँची जापानी फौजने आगे बढ़ दुर्गपर अधिकार कर लिया। इसतरह रूस-सेनापतिका आशास्थल मोतीनलिङ्ग दुर्ग अनायास ही जापानियोंके हाथ लगा। यह

स्थान भी जापानियोंने अपने अस्त्र-बलसे नहीं; बुद्धि-बलसे पाया।

इसतरह तालिङ्ग घाटीके साथ मोतीनलिङ्ग दर्रा और फेनशुलिङ्ग घाटी जापानियोंके हाथ लगी। दर्रेके साथ साथ अन्यान्य दो घाटियोंका पतन देख रूसियोंने तीसरी घाटी तातीनलिङ्गका पहरा आप ही आप उठा लिया। नोजूकी फौजने इस घाटीपर भी अधिकार कर लिया। इन तीनों घाटियोंपर अधिकारकर जापानी गिरदावरीके सवार घाटियोंसे आगेकी सम-तल भूमितक पहुंच गये। अब जापानी फौजें पार्व्वत्य प्रदेश परित्यागकर उस मैदानमें सरलतापूर्व्वक पहुंच सकती थीं, जिसमें रूसाधिकारभुक्त और रूसी सैन्यसे परिपूर्ण केचौ, लियाबयाङ्ग और मुकडनका वह मुकरन नगर अवस्थित था।

वर्षाऋतुमें जापानियोंने इन तीनों घाटियोंपर अधिकार किया था। उन दिनों मैदानपर विश्राम किया जा नहीं सकता था। कुछ देर पहलेका निर्म्मेघ आकाश एकाएक काली काली घटाओंसे आच्छन्न हो जाया करता था, मेघ गर्ज्जन करने लगते थे, चपला चमकने लगती थी और आकाशसे मूसलधार वारिधारा गिरने लगती थी। मञ्चूरियाकी वृष्टि बड़ी ही भयङ्कर होती है। दो हो चार घण्टोंकी वृष्टिसे निम्नस्थल जलसे परिपूर्ण हो जाता है नदी-नाले बढ़ विषम प्लावन उपस्थित होता है। ऐसी ही वर्षाऋतुमें उस मैदानके द्वार पूर्व्वोक्त तीनों घाटियोंपर अधिकार करके भी जापानी फौजें आगे बढ़ जल और कीचड़से भरे मैदानमें निकलनेका साहस कर न सकीं; अपने सुदृढ़ और सुर-क्षित पहाड़में बैठ वर्षाऋतुका वेग रुकनेकी प्रतीक्षा करने लगीं।

जापान-सेनापति ओयामाके सर्व्वप्रधान सेनापति होनेका समाचार हम इस पुस्तकके प्रथम भागमें लिख चुके हैं। आप अबतक जापानमें थे। जापानी फौजें जब तीनों घाटियोंपर अधिकारकर अपने आगे बढ़नेका पथ प्रशस्त कर चुकीं, तब मारशल ओयामाके युद्धस्थलमें पहुंचनेकी तय्यारी हुई। ६वीं जूनको इस सर्व्वप्रधान सेनापतिने मदलबल जापान-राजधानी टोकियोका परित्याग किया। आपके चलनेके दिन जापान-राजधानीने ध्वजा-पताका, तोरण-वन्दनवार प्रभृतिसे सजधजकर नयनाभिराम शोभा धारण की थी।

द्वितीय परिच्छेद

—०○०—

बेड़े की मरम्मत,—छेड़छाड़।

स्थलयुद्ध तो कुछ समयके लिये स्थगित हुआ; अन्ततः वृष्टिका वेग रुकनेतक एक भी प्रयोजनीय जलयुद्ध होनेकी आशा की जा नहीं सकती; ऐसी अवस्थामें आइये, पाठक! हम आपको जलयुद्ध-सम्बन्धीय एक घटनाका प्रयोजनीय हाल सुनायें।

जून मासके चौथे सप्ताह आरथर-बन्दरसे निकाले गये चीनाओं द्वारा एकाएक यह समाचार प्रसिद्ध हुआ कि, आरथर-बन्दरवाले जङ्गी जहाजोंके टूटेफूटे बेड़ेकी शीघ्र शीघ्र मरम्मत हो रही है। चीनाओंने कहा,—"मरम्मत क्या;—मरम्मतका तमाशा हो रहा है। तारपेडोंके आघातसे जहाजोंमें जो बड़े बड़े सूराख हो गये हैं, उन सूराखोंमें बाहरसे लोहेकी चादरें जड़ी जाती हैं और उनपर रङ्ग कर दिया जाता है। दूरसे देखनेमें जहाज दुरुस्त दिखाई देते हैं; किन्तु समीपसे उनकी शोचनीय अवस्था स्पष्ट दिखाई देती है।" इसीके साथ साथ यह भी प्रसिद्ध हुआ,—"जापानियोंने अपने जहाज डुबा आरथर-बन्दरके जिस मुहानेको बन्द किया था; रूसी उन डूबे जापानी जहाजोंको माइन द्वारा उड़ा आरथर-बन्दरका मुहाना एकबार फिर खोल रहे हैं।"

कितने ही लोग इन समाचारोंको सुन मुस्कुराये; कितने ही

लोगोंने बड़ी बेपरवाईके साथ कहा,—"यह सब ध्यान देने योग्य बातें नहीं; इतने थोड़े अवसरमें आर्थर-बन्दरका बेड़ा छूटकर समुद्रमें निकल जापानियोंसे युद्ध करने लायक हो नहीं सकता।" किन्तु नौ-सेनापति टोगो इन समाचारोंसे इतनी उपेक्षा कर नहीं सकते थे। उन्हें विश्वस्त सूत्रसे समाचार मिला था, कि रूसियोंने कई दिनोंतक अविराम श्रम करके आर्थर-बन्दरका मुहाना साफ करनेकी चेष्टा की है। उन्होंने अनुमान किया, कि आर्थर-बन्दरके बेड़ेकी मरम्मत हो गई है; वह बाहर निकलनेके लिये तय्यार है; यदि ऐसा न होता, तो रूसियोंको शीघ्र शीघ्र बन्दरका मुहाना साफ करनेकी ज़रूरत क्या थी? टोगोने आर्थर-बन्दरके मुहानेपर कड़ी नाकेका पहरा बैठा दिया।

२२वीं जूनकी रातको आर्थर-बन्दरके मुहानेपर एकाएक हलचल पड़ी। जापानी नावोंने देखा, कि बन्दरके भीतरसे पहले कितने ही सौदागरोंके जहाज निकले। इनके पीछे पीछे कितने ही बड़े जहाज बन्दरसे निकलकर बाहर

आश्चर्य न होगा? जल-युद्धके इतिहासमें ऐसी घटनायें बहुत नहीं।

टोगोका प्रधान बेड़ा अरथर-बन्दरसे कोई पन्द्रह कोस दूर समुद्रमें लङ्गर डाले पड़ा था। रात कोई दो बजे टोगोको एकाएक समाचार मिला, कि रूसी बेड़ा अरथर-बन्दरसे बाहर निकल रहा है। टोगो यह समाचार सुननेके लिये पहले होसे तय्यार थे। यह समाचार पा उन्हें उतना आश्चर्य नहीं हुआ। धीर-गम्भीर-भावसे टोगोने पहले तारपेडो और डिष्ट्रायेर नावोंका बेड़ा, उसके पीछे छोटे जङ्गी जहाजोंका बेड़ा अरथर-बन्दरकी ओर रवाना किया। अन्तमें कितने ही अव्वल दरजेके छोटे जङ्गी जहाजोंसे परिवृत हो बड़े बड़े जहाज साथ ले टोगो स्वयं घटनास्थलकी ओर चले। टोगोने अनुमान किया, कि जापानी बेड़ेके लिये आज बड़ा ही सुदिन है; रूसी बेड़ा अब बाहर निकला है, तब खुले समुद्रमें आ जापानी बेड़ेको जी खोलकर युद्ध करनेका सुअवसर देगा।

रूसके अन्तिम जहाज अभी बन्दरसे निकलने नहीं पाये थे ऐसे समय टोगोका सेना जङ्गी नावोंका बेड़ा अरथर-बन्दरके सामने पहुंच रूसी बेड़ेकी ओर झपटा। रूसकी भी जङ्गी नावें तय्यार खड़ी थीं, उन सबने आगे बढ़ बीच होमें जापानी नावोंको रोक उनसे युद्ध आरम्भ किया। कुछ देर दोनो ओर तारपेडो और गोले चले। रूसका छोटा जङ्गी जहाज नाविक अपनी नावोंको सहारा देनेके लिये आगे बढ़ा। नाविकको देखकर जापानी नावें पीछे हट गईं। रूसी सिपाहियोंने हर्षनाद

।

इस छोटेसे जल-युद्धके उपरान्त टोगोका भेजा छोटे जङ्गी जहाजोंका बेड़ा आर्थर-बन्दरके सामने पहुँचा। यह बेड़ा दूर खड़ा हो रूसी बेड़े की गति-विधि देखता रहा। टाइम्सके संवाददाताका कहना है, कि टोगोने इस बेड़ेके अफसरोंसे कह दिया था, कि तुमलोग युद्धमें प्रवृत्त न होकर रूसी बेड़ेको अपने पीछे लगा खुले समुद्रमें निकाल लाना। जान पड़ता है, कि टाइम्सके संवाददाताने जो कुछ अनुमान किया था, वह सत्य नहीं था। क्योंकि टोगो अपने बेड़ेके साथ आर्थर-बन्दरके समीप पहुँचकर भी रूसी बेड़ेके सामने न आये; दूर रहे हो रूसी बेड़ेके खुले समुद्रमें आनेकी बाट जोहते रहे।

तीसरे पहर कोई ३ बजे रूसी बेड़ा बलपूर्वक बन्दरसे साफ जापानी छोटे जहाजोंकी ओर झपटा। [illegible] भागे था। जापानी बेड़ा खुले समुद्रकी ओर भागा। रूसी बेड़ेने पीछा किया। सन्ध्या कोई ६ बजे जब रूसी बेड़ा खुले समुद्रमें पहुँचा, तब उसे अकस्मात् दूर सामने बेड़ेके थोड़ेसे फासलेपर टोगोका प्रधान बेड़ा आता दिखाई दिया। [illegible]

बेड़ेकी अपेक्षा रूसी बेड़ा बहुत ही जबरदस्त था। यह कहनेमें अत्युक्ति न होगी, कि जापानी बेड़ेकी अपेक्षा रूसी बेड़ा दूना था या उससे भी अधिक। किन्तु रूसी बेड़ेकी प्रबलतासे तनिक भी विचलित न हो उससे युद्ध करनेके लिये जापानी बेड़ा झपटा।

जापानी बेड़ेकी चाल बहुत तेज थी और उसके कुछ जहाजोंपर लड़ाईके झण्डे फहरा रहे थे। जापानी बेड़ेको देखते ही रूसी जहाजोंने भी लड़ाईके झण्डे चढ़ाये। रूसी बेड़ेपर लड़ाईके झण्डे देख टोगोके हर्षका टिकाना न रहा; उन्होंने खयाल किया, कि आज फैसलेकी लड़ाई हो जायेगी इतने दिनोंके छाये बादल आज ही बरस जायेंगे। टाइमुसके संवाददाता अपने जहाजपर युद्धस्थलके समीप थे और उन्होंने बेतारके तार द्वारा अपने अखबारको समाचार भेजा,—"कुछ ही देरमें भीषण जल-युद्ध आरम्भ होना चाहता है।" प्रत्यक्षमें जो दृश्य दिखाई दिया था, उसे देख सिवा इसके कोई और क्या अनुमान कर सकता था? दोनो बेड़े कवायदके साथ एक दूसरेके समीप हुए। टोगो सागर वक्षपर अपने बेड़े को कौशलके साथ घुमाने-फिराने लगे। टोगोके बेड़े के साथ साथ रूसी बेड़ा भी घूमता-फिरता था। टोगो चाहते थे, कि रूसी बेड़े को मारपर ला उसपर आक्रमण आरम्भ करें, रूसी बेड़ा टोगोका मनोभाव समझता था; इसीलिये जब जब जापानी बेड़ा उसे अपनी मारपर लाता, तब तब वह अपनी स्थिति बदल देता था।

सन्ध्या कोई साढ़े सात बजेतक दोनो बेड़ोंके बीच ऐसे ही दाव-पेच चलते रहे। अन्तमें सान्ध्य अन्धकार सघन होता देख

रूसी बेड़ा भीत हुआ। उसे भागने हीमें अपना कल्याण दिखाई दिया। रूसी जहाजोंको एकाएक भागनेकी आज्ञा मिली और वह सब द्रुतगतिसे आरथर-बन्दरकी ओर भागे। रूसी बेड़ेको भागता देख टोगो हाथ मल पछताने लगे। वह यदि जानते, कि अन्तमें रूसी बेड़ा भागेगा, तो रूसी बेड़ेके समीप पहुंचते ही युद्ध आरम्भ कर देते; उन्हें अपनी असावधानतापर नितान्त दुःख हुआ। रूसी बेड़ेको भागते देख उन्होंने अपने बेड़ेको पीछा करने और तारपीडो नावोंके बेड़ेको आगे बढ़ रूसी बेड़ेपर आक्रमण करनेकी आज्ञा दी। कप्तान असाईकी अधीनतामें जापानी तारपीडो-नावोंका बेड़ा और आगेमें निकल ही रूसी बेड़ेके समीप पहुंच उसपर टूट पड़ा। रूसी बेड़ेके बीच विशृङ्खलता उपस्थित हुई। रूसी बेड़ेके जिस जहाजको जिधरसे राह मिली, वह उधर हीसे आरथर-बन्दरकी ओर भागा। इसी तरह पीछे पड़ी तारपीडो नावोंसे पिंड छुड़ाता रूसी बेड़ा रात कोई ग्यारह बजे आरथर-बन्दरके मुहानेपर पहुंचा। मुहानेपर पहुंचनेपर भी रूसी बेड़ेका पिंड न छूटा। रूसी तोपोंका कोई ख्याल न कर जापानी नावें लगातार रूसी जहाजोंपर आक्रमण करतीं

बेड़ेकी अपेक्षा रूसी बेड़ा बहुत ही जबरदस्त था। यह कहनेमें अत्युक्ति न होगी, कि जापानी बेड़ेकी अपेक्षा रूसी बेड़ा दूना था या उससे भी अधिक। किन्तु रूसी बेड़ेकी प्रबलतासे तनिक भी विचलित न हो उससे युद्ध करनेके लिये जापानी बेड़ा झपटा।

जापानी बेड़ेकी चाल बहुत तेज थी और उसके कुछ जहाजोंपर लड़ाईके झण्डे फहरा रहे थे। जापानी बेड़ेको देखते ही रूसी जहाजोंने भी लड़ाईके झण्डे चढ़ाये। रूसी बेड़ेपर लड़ाईके झण्डे देख टोगोके हर्षका ठिकाना न रहा; उन्होंने ख़याल किया, कि आज फ़ैसलेकी लड़ाई हो जावेगी इतने दिनोंके छाये बादल आज ही बरस जायेंगे। टाइमसके संवाददाता अपने जहाजपर युद्धस्थलके समीप थे और उन्होंने बेतारके तार द्वारा अपने अख़बारको समाचार भेजा,—"कुछ ही देरमें भीषण जल-युद्ध आरम्भ होना चाहता है।" प्रत्यक्षमें जो दृश्य दिखाई दिया था, उसे देख सिवा इसके कोई और क्या अनुमान कर सकता था? दोनो बेड़े क़वाइदके साथ एक दूसरेके समीप हुए। टोगो सागर वक्षपर अपने बेड़ेको कौशलके साथ घुमाने-फिराने लगे। टोगोके बेड़ेके साथ साथ रूसी बेड़ा भी घूमता-फिरता था। टोगो चाहते थे, कि रूसी बेड़ेको मारपर ला उसपर आक्रमण आरम्भ करें, रूसी बेड़ा टोगोका मनोभाव समझता था; इसीलिये जब जब जापानी बेड़ा उसे अपनी मारपर लाता, तब तब वह अपनी स्थिति बदल देता था।

सन्ध्या कोई साढ़े सात बजेतक दोनो बेड़ोंके बीच ऐसे ही पेच चलते रहे। अन्तमें सान्ध्य अन्धकार सघन होता देख

रूसी बेड़ा भीत हुआ। उसे भागने हीमें अपना कल्याण दिखाई दिया। रूसी जहाजोंको एकाएक भागनेकी आज्ञा मिली और वह सब द्रुतगतिसे आरथर-बन्दरकी ओर भागे। रूसी बेड़ेको भागता देख टोगो हाथ मल पछताने लगे। वह यदि जानते, कि अन्तमें रूसी बेड़ा भागेगा, तो रूसी बेड़ेके समीप पहुंचते ही युद्ध आरम्भ कर देते; उन्हें अपनी अनभिज्ञतापर नितान्त दुःख हुआ। रूसी बेड़ेकी भागड़ देख उन्होंने अपने बेड़े को पीछा करने और तारपेडो नावोंके बेड़े को आगे बढ़ रूसी बेड़ पर आक्रमण करनेकी आज्ञा दी। कपतान चमाईकी अधीनतामें जापानी तारपेडो-नावोंका बेड़ा तीन भागोंमें विभक्त हो रूसी बेड़ेके समीप पहुंच उसपर टूट पड़ा। रूसी बेड़ेमें घोर विशृङ्खला उपस्थित हुई। रूसी बेड़ेके जिस जहाजको जिधरसे राह मिली, वह उधर हीसे आरथर-बन्दरकी ओर भागा। बलाकी तरह पीछे पड़ी तारपेडो नावोंसे पिण्ड छुड़ाता रूसी बेड़ा रात कोई ग्यारह बजे आरथर-बन्दरके मुहानेपर पहुंचा। मुहानेपर पहुंचनेपर भी रूसी बेड़ेका पिण्ड न छूटा। रूसी गोलोंकी कोई परवा न कर जापानी नावें बारंबार रूसी जहाजोंपर आक्रमण करती रहीं। शुक्लपक्षकी रजनी थी; निरभ्र आकाशमें चन्द्र सागर-वक्षपर प्रियदर्शन सुशीतल प्रकाश फैला रहे थे; जिस जगह मुहानेके पर्वतोंकी छाया थी, उस जगह सर्च-प्रदीपका उज्ज्वल प्रकाश फैल रहा था; अन्धकार नहीं; चारो ओर उजेला था। इस उजेलेमें जापानी नावोंको साफ साफ देखकर भी उन्हें रूसी गोले भगा नहीं सकते थे। टोगोका प्रधान बेड़ा दूर खड़ा

समाप्त। देख रहा था; उसको जापानी नावें रूसी बेड़ेको विकल किये हुई थीं। अन्तमें जापानी नावों द्वारा बारंबार आक्रान्त हो रूसका एक बड़ा जङ्गी जहाज—शायद 'परसवीट'—डूब गया और डायना तथा अस्कोल्ड दूसरे दरजेके दो जङ्गी जहाज टूटटाट गये। रूसी बेड़ेको इतनी क्षति पहुंचा सन्तुष्ट हो जापानी नावें रूसी जहाजोंसे निकल भागीं और अपने प्रधान बड़ेमें मिल गईं। इस हमलेसे जल-युद्धमें जापानको वैसी कोई क्षति नहीं हुई। डिस्ट्रायेर 'शिराकुमो'की चौड़ीकी कोठरीपर एक गोला पड़ा; कोठरी किसी क़दर टूट गई; तीन सिपाही मारे गये; एक सरजन और दो सिपाही घायल हुए। 'चिदोरी' नामक तारपेडो नावको एञ्जिनकी कोठरीके ऊपर एक गोला पड़ा, सिर्फ कोठरी टूट गई; किसीको किसी तरहका जखम नहीं आया। तारपेडो नाव नम्बर ६४ और ६६को थोड़ा थोड़ा नुकसान पहुंचा। बस जापानी बेड़ेको इतना ही नुकसान पहुंचा; अन्तत: कभी मिथ्या समाचार न देनेवाले एड-मिरल टोगोने अपने बड़ेकी क्षतिका ऐसा ही समाचार प्रकाशित किया। रूसियोंकी ओरसे इस समाचारका कोई प्रतिवाद प्रकाशित किया नहीं गया। रूसियोंने अपनी क्षतिके सम्बन्धमें भी किसी तरहका खण्डन-मण्डन नहीं किया।

जापानी बेड़ा जब अपनी नावोंको एकत्र कर आरथर-बन्दरके सामनेसे हटने लगा, तब उसने देखा; कि बन्दरमें घुसनेके लिये अधीर होकर भी रूसी जङ्गी जहाज शीघ्र शीघ्र बन्दरमें घुस नहीं सकते हैं। एकके बाद दूसरा जहाज धीरे धीरे मुहा-किनारेसे भीतर जाता है। इससे जान पड़ा, कि

मुहानेकी राह पूर्णतया खुली नहीं है; यदि खुलती, तो रूसी जहाज इतनी सावधानी और असुविधाके साथ बन्दरमें न घुसते। अरथर-बन्दरके बेड़ेकी तय्यारीका समाचार पा रूसी अत्यन्त हर्षित हुए थे; लोगोंने रूसकी बड़ी प्रशंसा की थी, लोगोंमें रूसकी प्रतिष्ठा फैल गई थी; किन्तु जैसे ही इस दलकी छेड़छाड़ और उसके फलका समाचार जगत्को मिला, वैसे ही लोगोंके मनसे रूसकी प्रतिष्ठा दूर हो गई; लोगोंने खयाल किया, कि चपलाकी चणस्थायी चमक दिखाई दी यही; किन्तु रूस जिस अन्धकारमें पहले था, उसी अन्धकारमें फिर पतित हुआ।

२७ वीं जूनकी रातको अरथर-बन्दरपर टोगीका और एक आक्रमण हुआ। जापान नौ-सेनापतिने अपने १२ नम्बर तार-पेडो-नावके बेड़ेको अरथर-बन्दरके मुहानेसे भीतर घुस रूसी बेड़े पर आक्रमण करनेकी आज्ञा दी। बेड़ेकी छोटी छोटी नावें सागर-वक्ष विदीर्ण करती बड़ी फुरतीसे अरथर-बन्दरके मुहानेकी ओर दौड़ीं। मुहानेमें नावोंपर सर्च-प्रकाश पड़ा। मुहानेके दोनो किनारेकी लगी तोपें नावोंपर गोले बरसाने लगीं। किन्तु जापानी नावें इस भयङ्कर बाधाको तृणवत् तुच्छ समझ बन्दरमें घुस गईं। बन्दरके भीतर मुहानेके ठीक सामने एक जङ्गी जहाज पहरा दे रहा था। जापानी नावें आगे न बढ़ इसी जहाजको वारंवार तारपेडो द्वारा आक्रान्त करने लगीं। एक तारपेडो जलके भीतर जहाजके पेंदेसे टकराकर फटा। भयङ्कर शब्द उत्थित हुआ; समुद्र-जलकी बहुत बड़ी चादर उड़कर आकाशकी ओर गई और फिर नीचे आई। इसके उपरान्त ही पहरादार जहाज

डूबता दिखाई दिया। देखते देखते पर्व्वत जैसा जहाज जल-गर्भमें समा गया ; इस अवसरमें समग्र आरथर-बन्दरमें खलबली पड़ गई। कितनी ही रूसी जङ्गी नावें जापानी नावोंकी ओर झपटीं। जापानी नावोंने कुछ देरके लिये इनसे जमकर सामना लिया। दोनों पक्षने एक दूसरेपर तारपेडो, गोलों और गोलि-योंकी वृष्टि की। किनारेकी रूसी तोपोंने गोला-वृष्टि रोकी ; गोल-न्दाजोंने खयाल किया, कि जब दोनों दल गुंथ गये हैं, तब हमारे चलाये गोले जिसतरह जापानियोंको क्षति पहुंचा सकते हैं, उसीतरह रूसियोंको भी। थोड़ी ही देरके युद्धके उपरान्त जाप-नियोंके चलाये तारपेडोकी चोटसे रूसकी एक तारपेडो नाव उलट गई। जापानका १२ नम्बर तारपेडो नावोंका बड़ा इतने कामोंसे सन्तुष्ट हो आरथर-बन्दरसे निकल अपने प्रधान बेड़ेमें मिल गया, इस आक्रमणमें जापानके चौदह सिपाही मारे गये और तीन जखमी हुए। रूसियोंके मुकाबिल जापानियोंकी क्षति बिलकुल ही नगण्य थी। नौ-सेनापति टोगोने रूसियोंकी क्षतिका समाचार प्रकाशित कर दिया ; रूसियोंकी ओरसे इस समाचारका प्रतिवाद नहीं निकला। हां आरथर-बन्दरसे भागे किसने ही रूसियोंने २८ वीं जूनको निउच्वाङ्ग पहुंच कहा,— "जापानियोंने रूसी बेड़ेके क्षतिग्रस्त होनेका जो समाचार प्रका-शित किया है, वह सर्व्वथा मिथ्या है। रूसी बेड़ा ज्योंका त्यों है। आरथर-बन्दरमें बहुत रसद होनेकी वजह रूसी और सिपाहियोंमें पूर्ण शान्ति विराज रही है।" रूसकी ओरसे इस गाल-गल्पका भी कोई प्रतिवाद न हुआ।

लड़ाईके अन्तिम कई दिनों टोगोके बेड़ेने आरथर-बन्दरको

समीप पहुंच उसपर घोर गोला-वृष्टि की। समझदारोंने कहा, कि स्थल-पथसे जापानी फौजें आरथर-बन्दरके समीप पहुंचना चाहती हैं; टोगोकी इस गोला-वृष्टिका अर्थ यह है, कि आरथर-बन्दरकी रूसी फौजें गोलोंसे आत्मरक्षाकी चेष्टामें तत्पर रह स्थलपथकी ओरसे बढ़ती हुई जापानी फौजको रोकनेका सविशेष आयोजनकर न सकें।

तृतीय परिच्छेद।



आरथर-बन्दरकी समस्या—विराजका श्रीगणेश—
आरम्भिक युद्ध।

कहिये, पाठक! आरथर-बन्दरके सामनेके उस घोर नानशान-युद्धकी बात याद है न? नानशानमें रूसियोंको परास्तकर जापानियोंके डालनी-बन्दरपर अधिकार करनेकी बात भूल तो नहीं गये हैं? इसी युद्धके फलसे जापानियोंने आरथर-बन्दरको स्थलपथसे घेर लिया था और यही घेरा तोड़नेके लिये आगे बढ़ तेलिस्सूमें रूस-सेनापति श्टाकलबर्ग जापान-सेनापति ओकू द्वारा परास्त हुए थे। श्टाकलबर्गके आगे बढ़नेपर आरथर-बन्दरकी रूसी फौज बड़ी बड़ी आशाओंसे आशान्वित हुई थी; किन्तु तेलिस्सूमें श्टाकलबर्गके परास्त होनेका समाचार पा आरथर-बन्दरको रूसी फौज अत्यन्त हतोत्साह हुई।

पाठकोंको स्मरण रह सकता है, कि ओकूकी फौजमें तीन डिविजन थे,—पहला, तीसरा और चौथा। यह तीनों डिविजन नानशान-युद्धमें शरीक हुए थे। इस युद्धके उपरान्त रूस-सेनापति श्टाकलबर्गके आनेका समाचार पा उनसे तेलिस्सूमें युद्ध करनेके लिये जब ओकू आगे बढ़े, तब तीसरा और चौथा डिविजन अपने साथ ले गये; सिर्फ पहले डिविजनको नानशान और डालनी प्रभृतिकी रक्षाके लिये अपने पीछे छोड़ गये। लोगोंने अनुमान किया था, कि जापान-सेनापति ओकू श्टाकल-

बलको परास्त करनेके उपरान्त अरथर-बन्दरकी ओर वापस आयेंगे और अपने अधीनस्थ तीनो डिविजनोंको एकत्रकर महावेगसे अरथर-बन्दरपर टूट उसे स्वाधिकारभुक्तकर उसपर अपनी जयपताका उड़ावेंगे। किन्तु यह कल्पना कार्य्यमें परिणत हो नहीं सकती थी। पहले तो ओकूपर अरथर-बन्दरपर अधिकार करनेका भार रखा गया ही नहीं था। उन्हें आज्ञा मिली थी, कि वह अरथर-बन्दर अपने पीछे छोड़ आगे बढ़ें और कुरोकीकी बगलके नोजूकी सैन्यपंक्तिसे अपनी सैन्यपंक्ति मिला जापानी फौजका वह अपूर्व अर्द्धचन्द्र तय्यार करें। दूसरे, ओकू अपने तीनो डिविजनका समूचा शक्ति-सामर्थ्य खर्च करके भी अरथर-बन्दरपर एकाएक अधिकार कर नहीं सकते थे। अरथर-बन्दरपर अधिकार करनेका कार्य्य समय-सापेक्ष था; चटपट पूरा कैसे हो जाता? अरथर-बन्दर वैज्ञानिक प्रथाओंसे बने किलों और भयङ्कर आग्नेय अस्त्र-शस्त्रसे सुरक्षित था; सहस्र सहस्र दुर्द्धर्ष साहसी रूसी अरथर-बन्दरकी रक्षाके लिये बैठे थे; ऐसे ही अरथर-बन्दरको चुटकी बजाते स्वाधिकार-भुक्त कर लेना क्या आसान कार्य था?

यही सब सोच-समझ जापानी फील्ड मारशल ओयामाने अरथर बन्दरपर कबजा करनेमें किसी तरहकी त्वरा या उत्सुकता प्रकाश नहीं की। ओकू जब तेलिस्सूकी ओर चले गये, तब ओयामाने ओकूके पीछे छोड़े पहले डिविजनमें ग्यारहवां और छठां डिविजन मिला एक नई फौज तय्यार की। यह दोनो डिविजन जापानमें इस कामके लिये पहले होसे तय्यार बैठे थे।

११वां डिविजन आया और २८वो जूनको छठां डिविजन।

जनी-बन्दर जापानियोंके हाथमें था। यह दोनों डिविजन इसी डालनी बन्दरमें उतरे। इन डिविजनोंके साथ बड़ी बड़ी तोपें माइनें आदि कितने ही सामान भी उतरे। अरथर-बन्दरके सामने जापानके अब फिर तीन डिविजन एकत्र हो गये। हरेक डिविजनमें कोई बीस हजार सिपाही थे, इस हिसाबसे तीनों डिविजनोंके सिपाहियोंकी संख्या कोई साठ हजार थी। जापान-सेनापति नोगीने जापानसे आ इन तीनों डिविजनों या अरथर-बन्दर घेरनेवाली जापानी फौजका सेनापतित्व ग्रहण किया।

जापानी फौजके अरथर-बन्दरकी किलाबन्दीकी ओर बढ़नेसे पहले अपने पाठकोंको हम संक्षेपमें अरथर-बन्दरकी किलाबन्दी की एक झलक दिखा देना चाहते हैं। अरथर-बन्दरकी तीन ओर जो पर्व्वतमाला है; उसीमें यह किलाबन्दी है। पर्व्वतमालापर थोड़ी थोड़ी दूरपर किला है। हरेक किला अर्द्धचन्द्राकार खाई है; मैदानकी ओर किलेका घेरा है, और अरथर-बन्दरकी ओर किलेकी राह। हरेक किलेके सामने अर्द्धचन्द्राकार है। एक किलेकी खाई बगलेके किलेकी खाईसे मिली हुई है और इसी खाईसे एक किलेसे दूसरे किलेमें जानेकी राह है। राह जमीनके भीतर होनेकी वजह शत्रुकी गोला-वृष्टिमें भी सिपाही अनायास ही एक किलेसे दूसरे किलेमें जा सकते थे। हरेक किलेमें ५.६ इञ्चसे ११ इञ्चतककी पेंदेकी ओरसे भरी जानेवाली या ब्रीचलोडिङ्ग तोपें लगी हैं। इन लम्बी लम्बी तोपोंके भरने खाली करने और धोनेकी काररवाई पेंदेकी ओरसे होती है। जिसतरह बन्दूकमें उसके पिछले भागसे कारतूस भरे जाते हैं, तरह इन तोपोंमें पेंदेकी ओरसे 'पाउडिलाफ' नामक बड़े

ही बननी कारतूस भरे जाते हैं। एक जर्मन ग्रन्थकर्ताने इस किलाबन्दीका वर्णन करते हुए लिखा है,—"यह किलाबन्दी सात भागोंमें विभक्त की जा सकती है; किलाबन्दीके तीन भाग जलकी ओर हैं और चार भाग स्थलकी ओर।" हम इतना ही कहना यथेष्ट समझते हैं, कि आरथर-बन्दरके गिर्दकी किलाबन्दीकी कई मालायें हैं, जिनका एक सिरा एक ओरके समुद्र-तटके समीप है और दूसरा सिरा दूसरी ओरके। जापानियोंके और आरथरबन्दरके बीच उस समय ऐसी ही सुदृढ़ और दुर्भेद्य किलाबन्दी थी; पाठक सोच देखें, कि इस किलाबन्दीको भेद आरथर-बन्दरपर अधिकार करना क्या हंसी-खेल था?

जापान-सेनापति नोगीने आरथर-बन्दरके सामने पहुंच किलाबन्दीकी दृढ़ताका पूर्ण ज्ञान प्राप्तकर धीरे धीरे किलाबन्दीकी ओर अग्रसर होना स्थिर किया। २६ वीं जूनको नोगीने अपनी फौजको आगे बढ़नेकी आज्ञा दी। उस समय नोगीके अधीन सिर्फ दो डिविजन फौज; कोई चालीस हजार सिपाही थे; पहले ही लिखा जा चुका है, कि छठां या अन्तिम डिविजन २८ वीं जूनको जहाजसे उतरा; जिस दिन नोगीने अपनी फौजको आगे बढ़नेकी आज्ञा दी, उसके दो दिन बाद।

आरथर-बन्दरकी किलाबन्दीका पश्चिम-भाग; यानी वह भाग जो नानशान-युद्धवाले किनचौकी बगलकी फैली खाड़ीकी ओर पड़ता है, बहुत ही सुदृढ़ है। आरथर-बन्दरसे ले समुद्रतटतक असंख्य किले बने हैं। जैसे तूफानसे विक्षुब्ध खुले समुद्रमें सामने देखनेपर पहले सुदूरव्यापी एक लहर, फिर दूसरी लहर, फिर

तीसरी लहर;—इसीतरह एकके बाद दूसरी इष्टिमय्योदातक लहर ही लहर दिखाई देती है; उसीतरह पूर्व्वोक्त खाड़ीके किनारेसे अरथर-बन्दरकी ओर देखनेपर चितिजतक किला-बन्दियोंकी पंक्ति ही पंक्ति नजर आती है। इसलिये पहले पहल इसी ओरसे अरथर-बन्दरमें घुसनेकी चेष्टा कोई भी समझदार सेनापति कर नहीं सकता। अरथर-बन्दरका मध्यभाग यानी जिस ओरसे साइबेरिया-अरथर-बन्दर-रेल बन्दरमें आई है, उस भागकी किलाबन्दीकी पंक्तियां यदि बहुत अधिक नहीं, तो कम भी नहीं हैं। अरथर-बन्दरके सिर्फ पूर्व्व-भागमें यानी उस भागमें, जो जापानाधिकृत डालनी-बन्दरके सामने समुद्रकिनारे है, किला-बन्दियोंकी संख्या बहुत कम है और इसीलिये बन्दरके पूर्व्वोक्त दोनो पार्श्वों की अपेक्षा यह तीसरा पार्श्व निर्व्वल है। इसी ओरकी भूमिमें 'सूरद जमीन' या दो अगलबगलकी उच्चभूमिके बीच निम्नभूमि भी है; धावा करनेवाली फौजें जिनमें ठहर शत्रुकी गोला-दृष्टिसे बचकर आगे बढ़नेके लिये चणिक विश्राम कर सकती हैं। सेनापति नोगीने इसी ओरसे अपनी फौजको आगे बढ़नेकी आज्ञा दी।

२५ वीं जूनकी रात होको चढ़ाईकी तय्यारी हुई। जापानी तोपखाने डालनी-बन्दरसे आगे बढ़ सियावपिङ्गताव-खाड़ीके पासकी रूसी मोरचोंके सामने लगा दिये गये। तोपखानोंके इर्द गिर्द जापानी फौजें बैठा दी गईं। टोगोके बेड़े का एक अंश सियावपिङ्गताव-खाड़ी और उससे और आगे अरथर बन्दरकी ओर फैल गया। सियावपिङ्गताव-खाड़ी उस समयतक रूसि-योंके अधिकारमें थी,—खाड़ीसे अरथर-बन्दर सिर्फ सात कोस

दूर था। २८ वीं को प्रातःकाल जापानी तोपख़ानों और जापानी जङ्गी जहाजोंने रूसी मोरचोंपर भयङ्कर अग्नि-वृष्टि आरम्भ की। रूसी मोरचे जापानी तोपोंके गोलोंके आघातसे डगमग हिलने लगे। प्रातःकाल जापानी फौजोंने अपनी तोपोंके समीपसे आगे बढ़ रूसी मोरचोंपर आक्रमण किया। इन मोरचोंमें बैठी रूसकी ईस्ट साइबेरियन राइफल्स' नाम्नी फौजोंने पहले गोलीसे फिर तमञ्चों, सङ्गीनों और तलवारोंसे जापानी फौजोंको रोकनेकी चेष्टा की। जापानी फौजें पास पहुंच गईं; सिपाही योद्धेसे योद्धा लड़ाने लगे। कोई तमञ्चेकी गोलीसे ढेर हो गया; किसीका सिर धड़से गायब हुआ और धड़ कुछ देर ठहर अन्तमें भूमिपर गिर छटपटाने लगा, किसीका हाथ कटा; किसीका जबड़ा फटा, देखते देखते मोरचे हताहतोंसे भर गये। बहुतेरे रूसी मारे गये; जापानी सिपाहियोंका विक्रम बढ़ा। ऐसे समय सियावपिङ्गताव-खाड़ीमें कितने ही जापानी सिपाही अपने जहाजोंसे उतरे और युद्धस्थलकी ओर चले। जिन मोरचोंमें युद्ध हो रहा था, सियावपिङ्गताव-खाड़ी उससे पीछे है। लड़ते हुए रूसी सिपाहियोंने जब सुना, कि एक जापानी फौज उनके पश्चाद्भाग सियावपिङ्गताव-खाड़ीकी ओरसे आ रही है, तब उनके छक्के छूट गये; उन्हें भागने हीमें अपना भला दिखाई दिया।

रूसी फौजमें भगदड़ पड़ी। रूसी आगे आगे और मोरचेमें लड़नेवाले जापानी पीछे पीछे। राहमें युद्ध होता चला; रूसी जिस जगह ठहर जाते; जापानी उसी जगह टूट पड़ते और उन्हें मार-काटकर फिर भागनेके लिये वाध्य करते। युद्धमें जितने सिपाही नहीं मरते, उतने भागड़में मारे जाते हैं।

रूसी जो मोरचे छोड़ भागे थे, उनके पीछे तुङ्गवाङ्गताङ्ग नामी पर्व्वतमाला थी इस पर्व्वतमालापर भी रूसी मोरचे थे। जापानियों द्वारा विताड़ित पददलित रूसी सिपाही अपने इन्हीं मोरचोंमें जा घुसे और पलटकर आगे बढ़ते हुए जापानियोंको रोकने लगे। जापानी फौजें रूसियोंको इस दूसरे मोरचेमें पा ठहर गईं। छिटकी हुई जापानी फौजें एकत्र हुईं और सागर-तरङ्ग जिसतरह किसी पत्थरकी दीवारसे टक्कर लेती है; उसी-तरह जापानी फौजोंने झपटकर मोरचेमें बैठी रूसी फौजोंसे टक्कर ली। एकबार फिर तलवार-सङ्गीनकी खूनी लड़ाई आरम्भ हुई; एकबार फिर रुण्ड-मुण्डकी विभीषिकासे युद्धस्थल घोर-दर्शन बना। कुछ देरतक दोनों ओरके सिपाही जी खोलकर लड़े। जयपराजय निर्णय करना कठिन हो गया। कभी रूसी पीछे हटते थे; कभी जापानी। अन्तमें गगनभेदी जयध्वनिकर आंधीकी तरह आगे बढ़ जापानी फौजोंने रूसियोंको पीछे ढकेल दिया। इस दूसरे मोरचेसे भी रूसी फौज भागी। रूसी मोरचोंपर जापानी ध्वजा उड़ने लगी। इस तुङ्गवाङ्गतङ्ग पर्व्वतकी मोरचेसे पत्र घर-बन्दर सिर्फ चार कोस दूर था।

रूसियोंने पहले प्रसिद्ध किया—"जापानियोंने तुङ्गवाङ्गतङ्गके मोरचोंपर बड़े ही वेगसे आक्रमण किया था सही; किन्तु उसका कोई फल नहीं हुआ; रूसी फौजोंने जापानियोंको अत्यन्त क्षतिग्रस्तकर मारकाट पीछे हटा दिया।" इसके बाद ही रूसियोंने मानो अपनी पहली बात भुलाकर यह समाचार निकाल दिया,—"जापानी फौजें तुङ्गवाङ्गतङ्ग पर्व्वतमालापर दृढ़-रूपसे बैठ गई हैं और घेरेकी बड़ी बड़ी तोपें लगा रही हैं।"

यहां जापानियोंका पूर्णरूपसे विध्वस्त हो पीछे हटना और कहां जिस स्थानसे उनके हटनेका समाचार प्रकाशित किया गया था, उसी स्थानमें उनका तोपें लगाना। यह दोनो समाचार एक दूसरेसे कहांतक दूर हैं? युरोपकी सर्व्वप्रधान शक्ति रूसका गुण-वर्णन कहांतक करिये! खैर; रूसने प्रकाशित किया, कि इस २६ वीं जूनकी लड़ाईमें हमारी ओरके सात अफसर और दो सिपाही हताहत हुए। रूसियोंने यह भी प्रकाशित किया,— "जापानियोंकी बहुत क्षति हुई; मोरचेमें लगी रूसकी एक ही माइन फटनेसे कोई पचास सिपाही यमलोक गये।" जापानियोंकी ओरसे इसतरहकी कोई बात प्रकाशित नहीं हुई; साहसीके साथ यह कह दिया गया कि इस युद्धमें कोई एक सौ सिपाही हताहत हु[illegible] रूसियोंके हताहतोंकी ठीक संख्या मालूम नहीं; पचास [illegible] सिपाहियोंकी लाशें मैदानमें मिलीं और बहुसंख्यक कारतूस और बन्दूकके साथ दो कलदार तोपें मोरचोंमें जापानियोंके हाथ लगीं।

रूसी मिथ्या समाचार प्रकाशित करनेमें तनिक भी सङ्कोच करते [illegible] नहीं थे। जुलाईमें अरथर-बन्दरके रूस-सेनापतिने एक [illegible] समाचार निकाला,—"गत १०वीं जुलाईको जापानी फौजें अरथर-बन्दरकी ओर बढ़ीं; घोरयुद्ध हुआ; अन्तमें जापानी फौजें पीछे हटा दी गईं; तीस हजार जापानी सिपाही मारे गये[illegible] लोग रूसी समाचारोंका मर्म्म जानने नहीं थे, वह यह [illegible] जापानियोंके दुर्भाग्य और रूसियोंके सौभाग्यकी [illegible] हुए; किन्तु रूसी समाचारोंका प्रकृत मर्म्म [illegible]पानकी ओरसे इस समाचारका खण्डन-मण्डन

निकालनेकी प्रतीक्षा करने लगे। अन्तमें जापानकी ओरसे इस समाचारका खण्डन प्रकाशित हुआ। कहा गया,—"जिस दिनके युद्धमें जापानियोंकी इतनी क्षति होनेकी बात रूसने प्रकाशित की है, उस दिन एक भी युद्ध नहीं हुआ। हां गिरदावरीके सवारोंमें दो दो हाथ जरूर हुए; पर यह कोई प्रयोजनीय बात नहीं; नित्य ही हो जाते हैं।" रूसने यदि जानसे नहीं, तो शायद प्रमाणाभावसे इस समाचारका प्रतिवाद प्रकाशित नहीं किया।

असलमें १०वीं जुलाईतक जापानियोंने आगे बढ़नेका कोई यत्न नहीं किया। पूर्व ओर जापानी फौजें लुङ्गवाङ्गतङ्ग पर्व्वततक पहुंच जमकर बैठ गई थीं। इस जगहको खूब सुदृढ़ करनेके उपरान्त आगे बढ़ना चाहती थीं। इधर।...में छठां डिविजन जापानसे आ नोगीकी फौजमें मिल गया था। सिपाहियोंकी संख्या बढ़नेसे नोगीने अपनी फौजका टुकड़ा साइबेरिया-अरथर-बन्दर रेलपथसे सटाकर यानी अरथर-बन्दरकी किलाबन्दीके मध्य भागसे अरथर-बन्दरकी ओर अग्रसर होनेके लिये भेज दिया था। अरथर-बन्दरकी किलाबन्दीका ... भाग जिस जगह अवस्थित था, उस जगहसे कुछ आगे शुइशीलिङ्ग नामक पूर्व्वोक्त रेलका ष्टेशन और नगर है। रूसी फौजें अत्यन्त दृढ़भावसे इस नगरपर कबजा किये बैठी थीं। शुइशीलिङ्ग, किलाबन्दीके मध्यभागका फाटक था और रूसी फौजें इस फाटकका पहरा देती थीं। नोगीने अपनी फौजके जिस टुकड़ेको अरथर-बन्दरके मध्यभागपर आक्रमण करनेके लिये भेजा टुकड़ा इसी शुइशीलिङ्ग नगरके सामने पहुंचा। इस

चतुर्थ परिच्छेद।

वोचौपर चढ़ाई—येंचो-पतन—रूसी फौजकी स्थिति।

कुरोकी, ओकू और नोजू यह तीनों जापान-सेनापति यों तो पहले हीसे सर्व्वप्रधान जापान-सेनापति मारशल ओयामाके अधीन थे; किन्तु जबसे मारशल ओयामा जापान परित्यागकर युद्धस्थलमें आये हैं, तबसे इन तीनोंको कदम कदमपर ओयामाके आज्ञानुसार काम करना पड़ता था। ओयामा एक जगह नहीं थे; जहां उनका प्रयोजन होता था, वहीं वह जा पहुंचते थे। ओयामा मानो भविष्यदर्शी थे; उन्हें पहले हीसे मालूम हो जाता था, कि अमुक समयमें अमुक जगह मेरी अवस्थितिका प्रयोजन होगा; कोसों दूर रहनेपर भी ओयामा ठीक समयमें उस जगह जा पहुंचते थे। ओयामा यदि इतने सुसैद न होते; उनके अधीनस्थ वीरपुङ्गव कुरोकी, ओकू और नोजू यदि सदा सतर्क और ओयामाके बारीकसे भी बारीक इशारेको तुरन्त समझ उसके अनुसार कार्य्य न करते; तो एशियाका नन्हासा जापान महाबलपराक्रान्त रूसको क्या परास्त करनेमें सक्षम होता?

जिस दिन ओकू, नोजू और कुरोकीकी फौजने हाथसे हाथ मिलाया, उसी दिन लियावयाङ्ग सुगादन प्रान्तके मैदानमें पड़ी रूसी फौज जापानी फौज द्वारा तीन ओरसे घिर गई। इसके

उपरान्त प्रधान सेनापति ओयामाने जापानी फौजकी इस अर्द्ध-चन्द्राकार पंक्तिको कुछ आगे बढ़ा तथा सङ्कीर्ण कर रूसी फौजको जापानी फौजकी वज्रमुष्टिके भीतर डाल देनेका मनसूबा बांधा। इसी मनसूबेको कार्य्यमें परिणत करनेके लिये ओयामाने कुरोकी और नोजूकी फौजको आगे बढ़ा प्रथम परिच्छेदमें लिखी तीनों घाटियोंपर अधिकार करनेकी आज्ञा दी। घाटियोंपर अधिकार होनेसे जापानी सैन्य-पंक्ति और आगे बढ़ी; रूसी फौजकी गति-विधिका स्थान और भी सङ्कीर्ण हुआ। किन्तु जापानी फौजके सिर्फ दाहने और मध्यभागके आगे बढ़ने होसे जापानी फौज द्वारा बना अर्द्धचन्द्राकार सङ्कीर्ण कैसे हो सकता था? इस कामके लिये अर्द्धचन्द्राकारके वामभागमें अवस्थित सेनापति ओकूकी फौजको भी आगे बढ़नेकी जरूरत थी। मारशल ओयामाने यथासमय ओकूकी फौजको भी आगे बढ़नेकी आज्ञा दी।

प्रथम भागके षोड़श परिच्छेदमें हम यह लिख चुके हैं, कि ओकूकी फौजने तेलिस्सूसे आगे बढ़ सुनयानूचेनपर अधिकार किया और २३वीं जूनको सुनयानचेनसे आगे बढ़ नोजूकी फौजसे हाथ मिला रूस-अधिकृत हैचौ नगरके सामनेतक अपनी चौकियां फैला दीं। प्रायः दो सप्ताहतक ओकूकी फौज आगे नहीं बढ़ी; अपने बायें समुद्रतटसे अपने बारबरदारीके जहाजोंसे रसद तथा युद्धोपकरण ले अपनी समग्र सैन्य-पंक्तिमें पहुंचाती तथा दृढ़ता-पूर्वक अपनी जगह अवस्थान करती रही। कुरोकी आदिकी फौज द्वारा तीनों घाटियोंपर अधिकार हो चुकनेके उपरान्त शायद ५वीं जुलाईको ओकूको मारशल ओयामाने आगे बढ़ हैचियोंके

वैचौ नगरपर अधिकार कर लेनेकी आज्ञा दी। ओकूने उसी समय बड़ी ही लम्बी पंक्तिमें पड़ी अपनी फौजको इस आज्ञाकी सूचना दी। फौजें आगे बढ़नेकी लिये तय्यारियां करने लगीं। स्थिर हुआ, कि कल यानी छठी जुलाईको प्रातःकाल होते आगे बढ़ना आरम्भ करना चाहिये। कोई दो सप्ताहके विश्रामके उपरान्त आगे बढ़नेकी आज्ञा पा ओकूके अधीनस्थ कोई पचास हजार जापानी सिपाहियोंका हृदय आशा और हर्षसे उत्फुल्ल हो उठा।

नहीं जानते, कि उस समय वैचौ तथा उससे आगेके मोर-चोंमें बैठी रूसी फौजकी संख्या कितनी थी। कोई कोई कहते हैं, कि उस समय वहां बीस हजार रूसी सिपाही थे; कोई कोई कहते हैं, कि बीस नहीं; चालीस हजार। बीस हजार हो या चालीस हजार; किन्तु इसमें सन्देह नहीं, कि रूसियोंको प्रायः दो सप्ताहका समय प्राप्त हुआ और इसे सुअवसर समझ वैचौके उस समयके रूस-सेनापति प्रधान सेनापति कुरोपाटकिनके परम-विश्वासपात्र रूस-सेनापति शकराफने जापानियोंका बल-विक्रम जान उन्हें रोकनेके पूरे सामान किये होंगे।

छठी जुलाईको प्रातःकाल एकाएक जापानी चौकियां पीछे हट गईं और जापानी सिपाहियोंका समुद्र कवाइदके साथ—फौजी बाजेके तालके साथ—कदम उठाता वैचौकी ओर बढ़ा। रेलपथके पूर्व्वका भूभाग समतल था; इसलिये जापानी फौजें उसी ओरसे आगे बढ़ीं। कुछ ही दूर आगे बढ़नेपर पूर्व्वसे उत्तर पूर्व्वतक फैली हुई एकचावहोती नामी पर्व्वतमाला दिखाई दी। कोई सोलह सौ रूसी सिपाही कितनी ही तोपोंके साथ

इस पर्व्वतमालाकी चोटीपर बैठ जापानियोंके आनेकी प्रतीक्षा कर रहे थे। जापानी फौजोंको सामने पा उनपर रूसी तोपें गोले बरसाने लगीं। जापानी फौजोंने भी अपनी तोपें लगा रूसी फौजोंपर गोले उतारे। कुछ ही देरकी गोलाबारीके उपरान्त रूसी तोपोंका मुंह बन्द हो गया। इसके उपरान्त जापानी फौजोंका आगे बढ़ना देख रूसी सिपाही पर्व्वत-शिखर परित्यागकर अपनी तोपोंके साथ अपने पीछेकी एक दूसरी पर्व्वत-मालापर जा बैठे। जापानी फौजोंने ६ ठी तारीखकी रात्रि अपने स्थानके जीते स्थानमें बिता सूर्य्योदयके साथ साथ दूसरे रूसी मोरचेपर आक्रमण किया। इसी दिन जापान-सेनापतिने और एक काररवाई की। छः स्काडरन जापानी रिसाला समुद्रतटकी ओर भेज दिया। इस रिसालेको दो आज्ञायें दी गईं; एक यह, कि यह रूसी रिसालेको आगे बढ़नेसे रोके; दूसरे यह, कि यदि सुअवसर मिले, तो वह समुद्रके किनारे किनारे आगे बढ़ और पलटकर रूसी मोरचोंके पीछे पहुंच जाये। जापानी रिसालेने अपनी निर्द्दिष्ट जगह पहुंच पहली आज्ञाका प्रतिपालन किया; यानी रूसी रिसालेको जापान-अधिष्ठित मोरचोंकी ओर बढ़ने न दिया; किन्तु दूसरी आज्ञाका प्रतिपालन कर न सका। कारण, रूसियोंका बहुत बड़ा कज्जाक-रिसाला समुद्रकिनारे मौजूद था और उसने जापानियोंके रिसालेको आगे बढ़ने न दिया। इधर प्रधान जापानी फौजें रूसियोंको पीछे हटाती आगे बढ़ने लगीं। रूसी एक मोरचेसे हटते और उसके पीछेके दूसरे मोरचेपर जा जमते थे; मचल मचलकर पीछे हटते थे। जापानी फौजें शायद और भी फुरतीसे

साथ रूसियोंको मार भगा कैचौके पास पहुंच जातीं; किन्तु क्षोकूको आशङ्का थी, कि जापानी फौजें यदि असावधानीके साथ शीघ्र शीघ्र आगे बढ़ेंगी, तो रूसियोंके फैलाये किसी फन्देमें फंस मारी जायेंगी; इसीलिये उन्होंने अपनी फौजोंको बहुत सावधानीके साथ खूब सतर्क हो धीरे धीरे आगे बढ़नेकी आज्ञा दी थी। इसीतरह तिल तिल भूमिपर अधिकार करती जापानी फौजें ८वीं जुलाईको कैचौके दक्षिण एक पर्व्वतपर पहुंच गईं। कैचौ नगर इस पर्व्वतसे कोई ढाई कोस दूर रह गया। कैचौ नगर और जापानी फौजोंके बीच सिर्फ एक रूसी मोरचा बाकी रह गया।

९वीं जुलाई शनिवारको प्रातःकाल हीसे जापानी तोपें उस एक रूसी मोरचेपर गोले बरसाने लगीं। सवेरे कोई सात बजे एकाएक गोलावृष्टि रुक गई और जापानी फौजें अपनी तोपोंकी बगलसे निकल रूसी मोरचोंकी ओर बढ़ीं। रूसी फौजें जापानियोंका आना देख अपनी जगह ठहर न सकीं; अपने मोरचे छोड़ भागीं। जापानी फौजोंने आगे बढ़ इन मोरचोंपर अधिकार कर लिया। इस अवसरमें भगेले रूसियोंने नगरके समीपके पर्व्वतोंपर अधिकार कर लिया और शायद इसी समयसे कैचौकी कुल रूसी फौजें कैचौ परित्यागकर पीछे हटने लगीं। जापानियोंने कैचौकी बगलके रूसियोंके नवाधिकृत मोरचोंपर आक्रमण किया। दोपहरतक खून युद्ध हुआ। अन्तमें रूसी यह अन्तिम मोरचा भी छोड़ कैचौकी बगलसे पीछे भागे। जापानियोंने रूसियोंके मोरचोंपर अधिकारकर तोपें लगा दीं और भागते हुए रूसियोंपर गोले बरसाये। बहु-

संख्यक रूसी सिपाही गोलोंकी चोटसे उड़े। उस पार्व्वत्य-भूमिमें जापानी गोले ही मोक्षा करनेवाले रिसालेका काम करते थे।

केचौ नगरके उत्तर किसी कदर पीछे और एक पर्व्वतमाला है। भागते हुए रूसियोंने इसपर अधिकारकर जापानियोंपर गोले बरसाये। जापानी समझ गये, कि यह मोरचा केचौके समीपका रूसियोंका अन्तिम मोरचा है। इस मोरचेसे जैसे ही रूसी हटा दिये जायेंगे, वैसे ही केचौ नगरपर जापानियोंका पूर्ण अधिकार हो जायेगा। विलम्ब करनेका समय नहीं था; सूर्य्यदेव अस्ताचलकी ओर झुक पड़े थे। आज सन्ध्यातक यदि केचौपर अधिकार किया न गया; तो केचौ-अधिकारमें और भी एक दिनका विलम्ब होगा। यही सब सोच-समझ दिनभरकी थकीमांदी जापानी फौजोंको विश्राम करनेकी आज्ञा देनेके बदले सेनापति ओकूने रूसके उस अन्तिम मोरचेपर आक्रमण करनेकी आज्ञा दी। पहले जापानी तोपोंने रूसी तोपोंके मुंह बन्द किये; इसके उपरान्त जापानी फौजोंने रूसी मोरचोंपर धावा किया। सहस्र सहस्र सिपाहियोंके मिलित कण्ठसे निकलती हुई ध्वनिसे बड़ा ही भयङ्कर शब्द उत्थित हुआ; सहस्र सहस्र सिपाहियोंके एक साथ दौड़नेसे वहांकी भूमि थरथर कांपी। निराश रूसी सिपाही पहले हीसे भागनेके लिये तय्यार थे; जापानियोंका आगमन देख, अपने मोरचे छोड़ भागे। जापानियोंने सरलता पूर्व्वक एक ओर इस अन्तिम मोरचेपर अधिकार किया; दूसरी ओर केचौ नगरमें पैठारी की।

केचौ नगरकी रूसी फौजें पहले हीसे पीछे हट गई थीं; सिर्फ थोड़ेसे सिपाही अपने पीछे छोड़ उनसे कह गई थीं, कि

जापानियोंके आनेपर जब तुम लोग नगर परित्याग करना, तब जो कुछ सामने पाना, नष्ट कर देना ; अन्ततः रेलष्टेशन तो निश्चय ही नष्ट कर देना। किन्तु जापानियोंके नगरप्रवेश करनेपर प्राणोंकी ममता छोड़ बुद्धि स्थिर रख कोई काम करना कठिन था। वायुवेगसे जापानी रिसाला हर्षध्वनि करता कैची नगरमें फैल गया ; रिसालेके पीछे पीछे जापानी फौजें विजयहर्षसे उन्मत्त हो गगनभेदी ध्वनि करती नगरमें घुसीं। उस समय वह डेढ़ सौ रूसी ष्टेशन तोड़ना तो दूरकी बात रही ; अपना झोला और असबाबतक अपने साथ ले जा न सके ; खुली राह सामने थी प्राणोंकी ममतासे बेसुध हो भागे। सान्ध्य-अन्धकार फैलनेसे पहले ही जापानियोंने रूसके अन्तिम मोरचे और कैची नगर दोनोंपर अधिकार कर लिया। विजयिनी जापान-वाहिनीका उस समयका मनोभाव वर्णन करनेमें कौन सक्षम हो सकता है ?

कोई चार दिनोंके इस युद्धमें चौबीस सिपाही मारे गये और एक सौ उन्नीस जखमी हुए। रूसियोंकी इतनी बड़ी पराजय हुई ; उनकी ओरसे विज्ञापन निकला,—"हमारी ओरके हताहतोंकी संख्या दो सौसे अधिक नहीं।" हलकीसी मारकाटके उपरान्त ही कैची जैसा प्रयोजनीय नगर रूसियोंने जापानियोंको दे दिया। कोसेलूवके रूस-जापान-युद्धमें रूसकी इस पराजयकी बड़ी प्रशंसा की गई है। कहा गया है, कि बहुत बड़ी जापानी फौजके सामनेसे रूसी जिस खूबीसे पीछे हट गये, उसके लिये रूसियोंकी जितनी प्रशंसा की जाये कम है। यह भी कहा यालू नदीकी लड़ाईमें, नानशान-युद्धमें जापानियोंकी बड़ी [illegible] हुई सही ; किन्तु उन दोनों युद्धोंमें जापानियोंने पूर्ण उद्यमके

साथ युद्धकर अन्तमें पूर्ण विजय प्राप्त की; केचा-युद्धमें जापा नियोंका उद्यम भी प्रकाशित नहीं हुआ; जापानियोंने वैसी विजय भी प्राप्त नहीं की। फिर अन्तमें इसी इतिहासमें लिखा है,—कैचौ बड़ा ही प्रयोजनीय स्थान है। रूसियोंने इसे खोकर अपनी बड़ी क्षति की।"

कैचौके पीछे हटनेसे रूसियोंकी और एक बड़ी क्षति हुई। पाठकोंसे यह कहनेका प्रयोजन नहीं, कि ओकूकी फौज जैसे जैसे आगे बढ़ती गई, वैसे ही वैसे वह अपने दाहनेकी नोजूकी सैन्य-पंक्तिसे और भी दृढ़भावसे मिलती गई। मारशल ओयामाने ओकूकी फौजको जिस दिन कैचौपर अधिकार करनेकी आज्ञा दी; उसी दिन उसकी बगलकी नोजूकी फौजको भी आगे बढ़ने और कैचौसे भागे हुए रूसियोंको मारकाट पीछे हटा देनेकी आज्ञा दी। ९वीं जुलाईको सन्ध्यासमय ओकूने रूसियोंको कैचौकी बगलके पार्व्वत्य मोरचेसे हटा कैचौपर दखल कर लिया। इस मोरचेसे भागकर रूसी कैचौके पीछे दूरके एक मोरचेमें जा बैठे। इस मोरचेमें रूसियोंकी थोड़ीसी फौज पहलेसे जमा थी। इस फौजमें दो बटालियन पलटनें और एक तोपखाना था। इस फौजका मुंह कैचौकी ओर था; फौज समझती थी, कि जापानियोंका आक्रमण होगा, तो कैचौ होकी ओरसे होगा। ऐसे समय मारशल ओयामाकी आज्ञानुसार नोजूकी भेजी फौज पर्व्वत्य-भूमिसे निकल एकाएक रूसी फौजके पीछे पहुंच गई। रूसी इस फौजको देख हैरान हुए। घमसामी युद्ध हुआ। अन्तमें रूसी अपना मोरचा छोड़ ताशीचाव नगरकी ओर भागे। इस मोरचेपर अधि-कारकर नोजूकी फौज ओकूकी फौजसे पूर्णरूपसे मिल गई। एक

फौजको रमदमे दूसरी फौजको मदद मिलने लगी। रूसियोंकी ओरसे प्रकाशित हुआ, इन दोनो फौजोंमें कुल कोई एक लाख चालीस हजार सिपाही थे। जापानियोंने अपनी सैन्यकी दृढ़तापर उतना भरोसा नहीं किया। उन्होंने समुद्रतटसे लेकर नोजूकी फौज द्वारा अधिकृत अन्तिम मोरचेतक शीघ्र तय्यार होनेवाली अथच सुदृढ़ किलाबन्दी कर ली; मोरचाबन्दीमें फौजें बैठा दीं, तोपें लगवा दीं; मोरचोंके पीछे ऊंचे ऊंचे मीनार बनवा दिये, जिनपर खड़ा सन्तरी दूर दूरतक निगाह रखने लगा। ओयामा जानते थे, कि वर्षाकाल है; वृष्टि होनेका कोई ठिकाना नहीं; एकाएक अतिरिक्त वृष्टि होनेसे ओकूकी फौज कई सप्ताहतक आगे बढ़ नहीं सकेगी; उसे अपने मोरचों होमें रहना होगा; इसीलिये आपने ओकूकी फौजोंके सामने सुदृढ़ मोरचे तय्यार कर दिये।

उधर साम्फिन पदर्जित पराजित रूसी फौजें बेचैवे भाग ताशीचाव नगरके इर्दगिर्दके मोरचों और छावनियोंमें पहुंची। ताशीचाव नगरमें 'ताशीचाव जङ्कशन' नामक रेल-स्टेशन है। साइबिरियावाला रेलपथ इस स्टेशनसे दो भागोंमें विभक्त हुआ है। इसका एक भाग केची-तेलिस्स् इत्यादिसे होता हुआ आरथर-बन्दरको ओर गया है। दूसरा भाग लियावयाङ्ग-खाड़ीके यङ्गको बन्दरसे चीन-सरकारकी रेलमें मिल गया है। ऐसे ही ताशीचाव नगरके इर्दगिर्द रूसी फौजें एकत्र हो धूमके साथ भयङ्कर युद्धकी तय्यारी करने लगीं। रूसकी तय्यारियोंका हाल सुन लोगोंको मालूम हुआ, कि ... निश्चय ही कोई भयङ्कर युद्ध होनेको है।

पञ्चम परिच्छेद।

रूसियोंके आक्रमण—छोटी छोटी लड़ाइयां।

चोकू और गोकूका साथ छोड़कर अब हम जापानी अर्द्ध-चन्द्राकार सैन्य-पंक्तिके दाहने अवस्थित कूरोकीकी सैन्यमें पहुंचते हैं। तालिङ्ग-घाटी और मोतोनलिङ्ग दर्रेपर अधिकार कर चुकनेके उपरान्त कुरोकी कुछ दिनोंके लिये ; अन्ततः वृष्टिका वेग स्थगित होनेतकके लिये अपनी सैन्य आगे बढ़ाना नहीं चाहते थे। अपनी ओरसे उन्होंने अपने इसी सङ्कल्पके अनुसार कार्य्य किया, किन्तु रूसी अपनी शोचनीय अवस्था समझ स्थिर रह न सके ; बारंबार जापानी फौजोंपर आक्रमण करने लगे। रूसियोंकी यह चञ्चलता स्वाभाविक ही थी। जबतक रूसी और जापानी दोनो फौजें पार्व्वत्य-भूमिमें थीं। पार्व्वत्य-भूमिमें रह मनुष्य वृष्टि-जलसे उतना कष्ट नहीं पाता। जितनी देरतक वृष्टि होती रहती है, उतनी ही देरतक पार्व्वत्य-भूमिमें जल रहता और जैसे ही वृष्टि थमती है, वैसे ही पार्व्वत्य-भूमि साफ-सुथरी हो जाती है ; पार्व्वत्य-भूमिका वृष्टि-जल नाना जल स्रोतोंमें विभक्त हो पार्व्वत्य-भूमिसे बह तराईके मैदानमें पहुंच जाता है। जबतक रूसी और जापानी दोनो फौजें पार्व्वत्य-भूमिमें थीं, तबतक दोनो वृष्टि-जलके कष्टसे बची हुई थीं ; किन्तु जबसे जापानी फौजोंने घाटियोंपर अधिकारकर रूसियोंको पार्व्वत्य-भूमिसे बाहर निकाल मैदानमें पहुंचा दिया था, तबसे

जापानी फौजें आराममें थीं और रूसी फौजें नाना प्रकारके कष्टमें। दृष्टि-जलसे, प्लावनसे, कीचड़से, वनविषयोंसे,—नाना प्रकारसे तराईकी रूसी फौजें अकथनीय यन्त्रणायें भोगने लगी थीं। इन्हीं यन्त्रणाओंसे अधीर हो तथा घाटियोंके हाथसे निकल जानेके दुःखसे उत्तेजित हो रूसी फौजें मैदानसे पार्वत्य भूमिमें चढ़ जापानियोंपर वारंवार आक्रमणकर उन्हें स्थान भ्रष्ट करनेका यत्न करने लगीं। रूसियोंकी इन चेष्टाओंका फलाफल हम आगे प्रकाशित करते हैं।

इसी जगह हम यह भी लिख देना उचित समझते हैं, कि रूसकी प्रायः सभी फौजोंके साथ वैदेशिक समाचारपत्रोंके संवाददाता मौजूद रहते थे; किन्तु अबतक जापानकी किसी भी फौजके साथ कोई भी संवाददाता मौजूद रहता नहीं था या अन्ततः युद्धमें प्रवृत्त होनेवाली जापानी फौजके साथ कोई भी संवाददाता जाने नहीं पाता था। विलायतके जगद्विख्यात अखबार टाइम्सके संवाददाता भी युद्धस्थलमें पहुंचकर युद्धके समय सेनापति कुरोकीके पदर स्थानसे बाहर निकल नहीं सकते थे। इसके लिये वैदेशिक संवाददाताओंने जापान-सेनापतियोंकी निन्दा की थी, जिसका जापान-सेनापतियोंने कोई खयाल किया नहीं था। किन्तु जबसे जापानी फौजोंने घाटियोंपर अधिकार कर लिया, तबसे इन संवाददाताओंको युद्धस्थलमें जानेकी आज्ञा मिल गई थी; विशेषतः जिन कुरोकीकी फौजका हाल हम इस परिच्छेदमें लिखने चले हैं, उनकी फौजमें संवाददाताओंको बड़ी स्वतन्त्रता दे दी गई थी। तभीसे अखबारोंमें युद्धका पूर्ण विव-

प्रकाशित होने लगा पूर्ण विवरणका अर्थ सिर्फ पूर्ण विव-

रण है,—और कुछ नहीं। यह संवाददाता हिविजनोंके सेनापति-योंके साथ रहते और समय समयपर युद्ध अपनी आंखों देखते थे।

प्रथम परिच्छेदमें लिखा जा चुका है, कि जापानी फौज तालिङ्ग-घाटीसे पर्वतके ऊपर ही ऊपर मोतीनलिङ्ग दर्रेके ऊपर पहुंच गई; जिसे देख रूसी सिपाही फुरतीसे दर्रा परित्यागकर भागे रूसी उस समय भागनेको तो भागे, किन्तु कुछ ही समयके उपरान्त मोतीनलिङ्ग दर्रेपर अधिकार करनेके लिये फिर लौटे। मोतीनलिङ्गपर अधिकार करते ही जापानियोंने अपनी चौकियां इस दर्रेसे आगे बैठा दी थीं। जापानी बहुत कुछ निश्चिन्त थे; उन्हें खबर नहीं थी, कि हताश हो भागे हुए रूसी शीघ्र ही चौकियोंपर धावा करेंगे। ४थी जुलाईको अर्द्धनिशाके उपरान्त चारो ओरके छाये हुए गहरे कुहरेमें मोतीनलिङ्गके सामनेकी जापानी चौकियोंमें एकाएक 'रूसी रूसी' का शोर हुआ। चौकीके सिपाही अभी संभलने भी न पाये थे, कि उनपर रूसी आ टूटे। गोलियोंकी लड़ाई नहीं हुई; क्योंकि छाये हुए गहरे कुहरेमें दस पांच हाथ फासिलेकी भी कोई चीज देखना कठिन था। तलवारें; सङ्गीनें और छूरे चलने लगे। जगह जगह लाशोंके ढेर लग गये। रूसी सिपाहियोंकी संख्या बहुत ही अधिक थी। चौकियोंके जापानी सिपाही व्यर्थ प्राणनाश युक्तिसङ्गत न समझ पीछे हटे। चौकीके पीछे चौकीकी मददगार फौज थी। रूसियोंके आनेका समाचार पा यह फौज आगे बढ़ी और चौकीके सिपाहियोंको साथ ले एक जगह ठहर आगे बढ़ते हुए रूसियोंपर वार करने लगी। लड़ाई उलझ गई। रूसी अपनी

संख्याके आधिक्यके बलसे जापानियोंको पीछे हटा मोतीनलिङ्गके समीप पहुंचनेकी चेष्टा करते थे; किन्तु जापानी अपनी जान हथेलीपर रख रूसियोंको एक कदम भी आगे बढ़ने न देते थे। इसी उलझनमें रात बीती; सबेरा हुआ। जापानी दो पलटनें अपनी फौजकी मददको आईं। जिस मैदानमें रूसी थे, उसको दोनों बगल बन था। दोनों जापानी पलटनें इन बनोंमें घुस रूसी फौजपर विषम गोली-वृष्टि करने लगीं। अब भी रूसियों हीकी संख्या अधिक थी; किन्तु उन लोगोंने अनुमान किया, कि बनमें जापानियोंकी जबरदस्त फौज पहुंच गई है। इस अनुमानसे रूसियोंकी हिम्मत टूट गई और वह भागे। भागते समय रूसियोंकी बड़ी क्षति हुई; राह रूसियोंकी लाशोंसे भर गई। इसतरह मुट्ठीभर जापानियोंने सहस्र सहस्र रूसियोंकी मोतीनलिङ्ग-उद्धारकी चेष्टा विफल कर दी।

दूसरे दिन यानी ५वीं जुलाईको नोजू और कुरोकीकी फौजके सन्धिस्थल सेमतसेसे आगे फेनशुलिङ्ग-घाटीके समीप जापानी चौकियोंपर रूसियोंने आक्रमण किया। इस आक्रमणका भी वही उद्देश्य था,—जापानियोंको फेनशुलिङ्ग-घाटीसे पीछे हटा देना। किन्तु इस बार जापानी पहले हीसे सावधान थे। कोई तेरह सौ सवारोंका रिसाला जैसे ही जापानी चौकियोंके सामने पहुंचा, वैसे ही जापानी सिपाही रिसालेपर गोलियां बरसाने लगे; सवारोंने घोड़े और भी तेज किये; चौकी और उनके सिपाहियोंको खाकमें मिला देनेके लिये वायुवेगसे यात्रा की। सवारोंकी मनोकामना समझ जापानी सिपाहियोंकी गोली-वृष्टि और भी तेज हुई। रूसियोंके रिसालेकी अगली पंक्ति टूट गई;

उसके अधिकांश सवार और घोड़े धराशायी हुए। सवारोंके मारे जानेकी वजह कितने ही कोनल घोड़े मैदानमें भयवश सर-पट दौड़ने और अपने रिसालेके घावमें घोर विशृङ्खला उपस्थित करने लगे। रिसालेके अफसरोंने देखा, कि धावा वृथा है; जापानी सिपाही अपने समीप पहुंचनेसे पहले ही रूसी रिसा-लेको भून डालेंगे। रिसालेको लौटनेकी आज्ञा मिली। रिसा-लेके लौटते ही, जो गोलियां अबतक रूसी सवारोंकी छातीपर पड़ती थीं, वह अब उनकी पीठपर पड़ने लगीं। जबतक रि-साला गोलीकी मारके भीतर था, तबतक उसपर अविराम गोली-वृष्टि होती रही। इस धावमें बहुतेरे रूसी मारे गये। जापानी मैदानमें आये ही नहीं, इसलिये उनकी ओरके सिर्फ चार सिपाही मारे गये और तीन जखमी हुए।

इसके उपरान्त नौ दिनतक दोनो ओर शान्ति विराजती रही। १८वीं जुलाईको सेमतङ्के समीप तोन्कोफाके दाहने या कुरोकीकी की फौजके बायें सेमतङ्के आगे फेनशुलिङ्ग-घाटीके समीप रूसियों और जापानियोंके बीच फिर चल गई। इस खण्ड युद्धके सम्बन्धमें दोनो ओरसे दो तरहके समाचार मिले। रूसियोंने कहा, कि जापानी फेनशुलिङ्गके आगे एक टीलेपर अधिकार करना चाहते थे; इसलिये लड़ाई हुई। जापानियोंकी ओरसे कहा गया,—रूसियोंने फेनशुलिङ्ग-घाटीपर अधिकार करनेकी फिर चेष्टा की; इसीसे यह युद्ध हुआ। युद्ध किसीकी ओरसे आरम्भ किया गया हो; इसका परिणाम रूसियोंके हकमें अच्छा नहीं हुआ। कितने ही हताहतोंको मैदानमें छोड़ रूसियोंको पीछे हटना पड़ा। जो लोग मारे गये, उनमें एक कप्तान थे।

जनरल रेननेकम्फ रूसी कज्जाक-रिसालेके अधिनायक थे। युरोपके अखबारोंने आपकी बड़ी प्रशंसा की थी; चित्र और चरित्र दोनो प्रकाशित किये थे। इस खण्ड-युद्धमें यही सेनापति रेननेकाम्फ घोर रूपसे घायल हुए। पांवमें गोली लगी; पांव काट दी गई और शायद इसी जख्मकी वजह शायद आपने इहलोकपरित्याग किया। युरोपमें इस सेनापतिके विनाशसे बड़ा दुःख प्रकाश किया गया।

१७ वीं जुलाईको कई खण्ड-युद्ध हुए, जिनमें एक अच्छा खासा युद्ध कहा जा सकता है। इसीका वर्णन पहले करते हैं। १७ वीं जुलाई रविवारको प्रातःकाल कोई तीन बजे मोतीनलिङ्ग दर्रेके सामने फैली हुई जापानी चौकियोंके सम्मुख रूसियोंका प्रादुर्भाव हुआ। पाठक जानते हैं, कि इन्हीं चौकियोंपर कोई दो सप्ताह पहले ४थी जुलाईको भी रूसियोंका आक्रमण हुआ था। उस बारकी अपेक्षा इस बार रूसी सिपाहियोंकी संख्या और भी अधिक थी। इस बारकी चढ़ाईमें पैदल-सवार मिला-कर कोई चालीस हजार रूसी सिपाही थे, जो चौदह बटा-लियनोंमें विभक्त थे; इनके साथ बारह तोपें थीं। रूस-सेनापति काउलिन्सकीका नाम पाठकोंको स्मरण रह सकता है; आप इससे पहले यालूवाले युद्धमें जापानियोंसे भिड़ चुके थे। यही सेनापति काउलिन्सकी इस फौजके प्रधान सेनापति थे। मोती-नलिङ्गके सामनेकी जापानी चौकियोंकी सम्मुख पा आपने अपनी फौजको तीन भागोंमें विभक्त किया। सबसे बड़े भागको अपने अधीन रख सामनेसे बढ़ाया और दो छोटे छोटे भागोंको दाहने बायें से रवाना किया।

जापानी चौकियोंको पहले हीसे रूसियोंके आनेकी खबर मिल चुकी थी। जापानी चौकियों हीको क्यों,—प्रायः समग्र जापानी फौजको रूसियोंके आनेकी खबर मिल मिल गई थी। जापानी फौजकी चौकियोंतकमें तार लगे थे। चौकियोंने तार द्वारा अपने सर्व्वप्रधान सेनापति कुरोकीको और उन्होंने अपने समग्र अधीनस्थ अफसरोंको रूसियोंके आगमनका समाचार दे दिया था। जापानी चौकियों और उसके पीछेकी मददगार फौजमें दस या पन्द्रह हजारसे अधिक सिपाही नहीं थे। रूसियोंको समीप पा चौकियोंके सिपाही रूसियोंपर गोली बरसाते पीछे हटे और अपनी मददगार फौजोंमें मिल गये। यह सब मिलकर पीछे हटीं और मोतिनलिङ्ग दर्रेसे आगे पश्चिम एक उच्चभूभागपर मोरचे बांध बैठ गईं। रूस-सेनापति कार्थलिन्सकी जापानियोंको थोड़ा पीछे हटा बहुत प्रसन्न हुए; उन्हें विधि सुप्रसन्न दिखाई दिये। जापानी फौजके उच्चभूभागका आश्रय ग्रहण करते ही अपने अपनी तोपें एक टीलेपर लगवा दीं। रूसी तोपें जापानियोंपर गोले बरसाने लगीं इस अवसरमें रूसी फौजके तीनो टुकड़े जापानियोंके अधिष्ठात उच्च भूभागके सामने एकत्र हुए। दिन कोई ६ बजे रूसी फौजोंको जापानियोंपर आक्रमण करनेकी आज्ञा मिली। कोई चालीस हजार रूसी एक साथ 'मार मार' कहते जापानियोंकी ओर झपटे।

पहले ही लिख चुके हैं, कि रूसियोंकी अपेक्षा जापानियोंकी संख्या बहुत ही कम थी। एक जापानीके सामने ३ व ४ रूसी थे। जापान-सेनापतिने रूसियोंकी संख्याधिक्यका हाल जान-

कर भी अपनी फौजको सहारा नहीं दिया। उन्हें विश्वास था, कि एक जापानी दो रूसियोंपर भारी है; शायद वह यह भी देखना चाहते थे, कि एक जापानी तीन रूसियोंसे टक्कर ले सकता है या नहीं। चाहे जिस वजह हो, उच्च-भूभागपर बैठे जापानियोंको वैसी मदद नहीं मिली और वह सब अपने ही भुजबलपर भरोसाकर आगे बढ़ते रूसियोंको रोकनेके लिये तय्यार हुए। जैसे ही रूसी फौजें उच्च भूभागके समीप पहुंचीं, वैसे ही उनपर जापानी फौजोंने गोलियोंकी बौछार आरम्भ की। बाढ़पर बाढ़ पड़ने लगी। विदेशी संवाददाताओंने लिखा है, कि जापानी सिपाही तनिक भी विचलित हुए नहीं थे। शान्तिपूर्व्वक निश्चिन्तमनसे कोई बैठकर, कोई लेटकर, कोई घुटने टेककर रूसियोंपर गोली बरसाता था; जापानी फौजका प्रायः प्रत्येक सिपाही अच्छा निशाना मार सकता था; इधर जापानी सिपाहीकी बन्दूक सर होती थी; उधर आगे बढ़ती हुई रूसी फौजका एक सिपाही जमीनपर लोट जाता था। विदेशी संवाददाताओंने जापानी सिपाहियोंके ऐसे ही ऐसे कितने ही गुण बखाने हैं। बखाननेकी बात ही है। थोड़ेसे जापानी सिपाहियोंने इतनी बड़ी रूसी फौजको आगे बढ़नेसे रोक दिया। रूसी फौजकी जो पंक्ति उस उच्चभूभागके समीप पहुंचती थी, वही खाकमें मिला दी जाती थी। पहले एक बटालियन रूसी फौज जापानियोंके समीप पहुंची। वह गोलियोंकी मारसे चल-भुन पीछे हटी; और आगे बढ़ती, तो शायद वहीं रह जाती; पीछे हट ही न सकती। फिर ...न बटालियन फौज जापानियोंके समीप पहुंची; अन्तमें उसको

भी वही दशा हुई; उसे भी घबराकर भागना पड़ा। प्रातः-काल कोई ६ बजेसे ८ बजेतक तीन घण्टे ऐसा ही युद्ध हुआ। बहुसंख्यक साथियोंके हताहत होनेसे बाकी रूसी सिपाहियोंकी हिम्मत टूट गई। विजयकी कोई आशा न रहने और मददको जापानी फौजके आ पहुंचनेपर भागनेमें भी बाधा उपस्थित होनेके भयसे दिन कोई दश बजे रूस-सेनापति कष्टलिन्स्कीने अपनी फौजको लौटनेकी आज्ञा दी। रूसी फौजके पीठ दिखाते ही पूर्व्वोक्त उच्च भूभागके पीछेसे जापानी रिसाला और पलटनें निकल भागते हुए रूसियोंपर टूट पड़ी। पश्चाद्भागके रूसी जापानियोंसे गुंथ गये; मध्य और आरम्भिक भागके रूसी जल्द जल्द भागने लगे। कोई तीन कोसतक जापानियोंने रूसियोंका पीछा किया। अन्तमें भागनेमें असमर्थ हो चार तोपें ले रूसकी सात बटालियन फौज एक पर्व्वतपर चढ़ गई और रात्रिका अन्धकार फैलनेतक वह स्थानपरित्याग कर पीछे हटनेका साहस कर न सकी।

सिवा इसके इसी दिन तीनों घाटियोंके बीच चार और खण्ड-युद्ध हुए। पहले युद्धमें जापानी शिरदावरोंके सवारोंका एक दल एक रूसी पलटनके सामने आ गया। दोनों ओरसे मददको फौजें पहुंचीं। खूब युद्ध हुआ। अन्तमें दिन कोई एक बजे रूसी परास्त हो भाग गये। दूसरे युद्धमें एक रूसी फौजने एक जापानी चौकीपर आक्रमण किया। अन्तमें रूसी जापानी चौकियोंसे मार भगाये गये। तीसरे युद्धमें भी और एक जापानी चौकीके समीप ऐसा ही घमसान हुआ। इस युद्धमें पहले रूसियोंने बड़ा वीरत्व प्रकाश किया; किन्तु अन्तमें

तीसरेपहर कोई साढ़े चार बजे रूसी फौज जापानी फौजकी मारसे विकल हो बड़ी ही घबराहटके साथ भागी। रूसी अपने हताहत सिपाहीतक युद्धस्थलसे उठा न सके। भागनेके समय इस रूसी फौजके करनलने जापान-सेनापतिके नाम एक चिट्ठी लिख उसे एक मृत रूसी सिपाहीकी छातीपर आलपीन द्वारा खोंस दिया। चिट्ठीमें लिखा था,—"मुझे विश्वास है, कि आप हमारे हताहतोंके प्रति सदय व्यवहार करेंगे।" चौथे युद्धमें जापानियोंकी ओर एक चौकीपर आक्रमण हुआ। जापानी इञ्जीनियर समीप ही राहें बनवा रहे थे; बन्दूकोंकी आवाज सुन वह सब चौकीके सिपाहियोंको सहारा देने पहुंचे। जापानी सिपाही इञ्जीनियरोंको सहारेके लिये आया देख हंस हंस पड़े। हंसी हंसीमें रूसी मार भगाये गये। दिन एक बजे चौकीके सामने एक भी स्वस्थ रूसी सिपाही न रहा। विदेशी संवाददाताओंने इन कई लड़ाइयोंके हताहतोंके सम्बन्धमें जो समाचार दिया, उसका मर्म्म इसतरह है,—"जापानियोंके चार अफसर तेंतालीस सिपाही मारे गये और पन्द्रह अफसर दो सौ छप्पन सिपाही जखमी हुए।" रूसियोंके सम्बन्धमें सिर्फ इतना ही प्रकाशित किया,—'एक सहस्रसे अधिक रूसी सिपाही हताहत हुए।" जापानियोंने प्रकाशित किया, —"दो सौ रूसियोंकी लाशें हमने मैदानसे उठा कब्रमें तोपीं।"

यह कहनेका प्रयोजन नहीं, कि इन कई छोटी छोटी लड़ाइयोंमें जापानियोंने अतुलनीय पराक्रम प्रकाश किया। प्रायः प्रत्येक खण्ड-युद्धमें रूसियोंकी संख्या अधिक थी और जापानियोंकी कम। फिर भी; जापानियोंने रूसियोंसे सिर्फ आत्म-

रक्षा ही नहीं की, बल्कि रूसियोंको पूर्णरूपसे पददलितकर सामनेसे भगा दिया ; किसी किसी युद्धमें रूसियोंको बड़ी ही दुर्दशाके साथ भगाया। अधिक प्रशंसाकी बात यह हुई, कि इन छोटी छोटी लड़ाइयोंमें जापानसे चालनें आई ६वीं डिविजन फौजके सिपाही शरीक हुए थे ; इस डिविजनके प्रायः सभी सिपाही यह पहलेपहल युद्धमें प्रवृत्त हुए थे और इस पहले ही युद्धमें इस शानसे लड़े, कि उनके सम्बन्धमें विदेशी संवाददाताओंके मुंहसे भी कितने ही प्रशंसा-वाक्य निकल गये। इस डिविजनके प्रायः सभी सिपाही नवयुवक, बलिष्ठ और सुन्दर थे ; जापानी जनरल निशि इस डिविजनके तत्त्वावधायक थे। जापान-सम्राट मेकाडोने इस डिविजनके पराक्रमका हाल सुन इसे बधाईका एक तार भेजा था। तारमें लिखा था,—"धन्य ! धन्य !—तुम थोड़े से वीरोंने मिलकर बहुसंख्यक रूसियोंको नीचा दिखा बड़ी ही प्रशंसाका काम किया।"

इसी परिच्छेदमें और एक प्रयोजनीय खण्ड-युद्धका हाल लिखेंगे। यह युद्ध भी उन तीनों घाटियोंके बीच हुआ। अब-तक जिन खण्ड-युद्धोंका वर्णन किया गया, वह उन तीनों घाटियोंमें बायेंकी तातीनलिङ्ग-घाटी और मध्यकी फेनशुलिङ्ग-घाटीसे ले मोतीनलिङ्ग दर्रे तक हुए। कुरोकीकी फौजके दाहने छोरपर अवस्थित दाहनेकी उस तालिङ्ग-घाटीके समीप कोई युद्ध हुआ न उसका वर्णन किया गया। जिसतरह मोतीनलिङ्ग दर्रे और फेनशुलिङ्ग-घाटीकी पुनःप्राप्तिकी रूसियोंने चेष्टा की ; तालिङ्ग घाटीपर पुनराधिकारकी उसतरहकी कोई चेष्टा नहीं की। असलमें तालिङ्ग-घाटीमें जापानियों द्वारा परास्त हो रूसी इन घाटीमें

समीप कहीं ठहरे ही नहीं। रूसी तालिङ्ग-घाटीसे भागनेपर सीधे सिहोयेन नामक स्थानमें पहुंचे। सिहोयेन पार्व्वत्य-भूमिकी तराईमें छोटासा एक नगर है। तराईकी भूमि होनेकी वजह बसतीकी चारों ओर सुरम्य उद्यान और श्यामल खेत हैं। बसतीकी एक ओर तो वही पर्व्वतमालायें हैं, जिनमें घाटियां अवस्थित हैं और दूसरी ओर जहांतक दृष्टि जाती है, वहांतक शस्य श्यामल मैदान ही मैदान दिखाई देते हैं। नगरसे कुछ ही फासिलेपर मैदानकी ओर बरसातकी वजह बढ़ी हुई एक छोटी नदी दिखाई देती है। तालिङ्ग घाटीसे जो शाहराह लियावयाङ्ग सुकदन प्रभृति नगरोंकी ओर गई है, वह इस नगरको चूमती हुई आगे बढ़ी है। नगरकी बगलसे नदी पारकर नगरकी परिक्रमा करती फिर नदी पारकर आगे बढ़ गई है। तालिङ्ग-घाटीसे सुकदन प्रभृतिकी ओर जानेके लिये यही एक राह है। तालिङ्ग-घाटीसे यह नगर आगे या उसके सामने नहीं; बल्कि ठीक बायें अवस्थित है। दुर्गम्य पर्व्वतमालाओंके बीचमें रहनेकी वजह मोतीनलिङ्ग दर्रे और इस नगरके बीच ऐसा कोई सम्बन्ध नहीं; किन्तु यदि कोई राह रहती, तो यह नगर मोतीनलिङ्ग दर्रेके सामने या किसी कदर उत्तर पन्द्रह या बीस मीलके फासिलेपर रह जाता। तालिङ्ग-घाटीसे भाग इसी नगरमें रूसियोंने अपनी छावनी डाली। रूसी जानते थे, कि तालिङ्ग-घाटीसे जापानकी फौज लियावयाङ्ग या सुकदनकी ओर बढ़ेगी और उस ओर बढ़नेसे जापानी फौजको इसी ओरसे जाना होगा। इसीलिये रूसी फौजने इस नगरके समीप जापानियोंको राह रोके पूरे सामानकर सजधज बैठ गई।

नगरसे कुछ आगे बायें नदीकी ओर राहके किनारेसे नदीके किनारेतक मिहोयेन नगरका परदा बनी एक खड़ी पहाड़ी थी। सामनेसे आनेवाली प्राइराहकी जापानी फौजकी गति रोकनेके लिये रूसियोंने इसी पहाड़ीपर उसकी प्रायः सम्पूर्ण लम्बाईमें मोरचाबन्दी की थी। मोरचे इस करीनेसे बनाये थे, कि सामने और बगलके पर्व्वतकी जड़तकके मैदानपर आधिपत्य-विस्तार कर रहे थे; मोरचोंकी तोपोंके गोले दोनों ओरकी सभी जगहोंमें सहज ही पहुंच सकते थे। मोरचेपर बत्तीस बड़ी तोपें चढ़ी थीं और एक लफटण्ट जनरलकी अधीनतामें सात बटालियन फौज काम करनेके लिये तय्यार थी। मोरचोंको सुदृढ़ बनाने और रक्षित रखनेके लिये प्राचीन खाईं आदिका आयोजन होनेके साथ साथ खाईंके आगे-पीछे नवाविष्कृत कंटीले तारके जालके सुतके और उनके बीच जगह जगह भयङ्कर आग्नेय-अस्त्र माइन आदि तोपनेका आयोजन भी किया गया था। सदाकी शान्त उस पार्व्वत्य-जङ्गलकी लहलहाती भूमिकी शान्तिमें घोर विघ्न उपस्थित करनेके इतने सामानकर उनके बीच बैठ रूसी जापानियोंकी राह देखने लगे। राहमें दूर थोड़ीसी भी गर्द उड़नेसे रूसी जासूसोंको जापानी जासूसोंकी भ्रम-मूर्त्ति दिखाई देती थी। बड़ी प्रतीक्षाके उपरान्त अन्तमें १८ वीं जुलाईको रूसी जासूसोंके सामने उनका भूत प्रत्यक्ष हुआ। रूसी जासूसोंने बारंबार देखा; हेड दूरबीन द्वारा सब ओरसे देखा; इस बार असली कोई बात नहीं थी; उनकी आंखोंके सामने एक जापानी जासूस दूरबीन आंखोंपर लगाये खड़ा उन्हीं रूसी जासूसोंको देख रहा था। रूसी जासूसके पीछे पीछे गया

अपने पीछेके जासूसको खबर दी ; उसने अपने पीछेके जासूसको ; इसीतरह चलकर कुछ ही देरमें यह खबर समग्र रूसी फौजमें फैल गई। रूसी सिपाहियोंके जीको धक्का लगा ; उनके चेहरे एक दूसरेसे कहने लगे, कि जापानी आ गये।

जापानी आ गये ; उसी ऊपरवाले कायदेसे उन्हें भी खबर मिल गई, कि सामने पहाड़ोंपर रूसियोंके मोरचे हैं। उस समयतक जापानी सैन्यके अधिनायकोंको रूसियोंके मोरचोंकी दृढ़ताकी पक्की खबर मिली नहीं थी ; इसीलिये अपने नदरमें बैठे वीरवर कुरोकीने जापान समाचार भेजा था, कि सिहोयेनमें बैठ जो रूसी जापानी फौजकी अग्रगति रोकना चाहते हैं, उनकी संख्या अभीतक अज्ञात है।

सिहोयेनसे कुछ फासिलेके ग्रानचूज नामक एक क्षुद्र ग्रामके समीप जापानी फौजने छावनी की और शत्रुकी शक्तिकी थाह लेनेके लिये एक बटालियन फौज रूसी मोरचेकी ओर गिरदावरीके लिये भेजी। उधर रूसियोंने भी इसी कामके लिये अपनी दो बटालियन फौज भेजी। जापानकी एक बटालियन फौजसे रूसकी दो बटालियन फौजका टक्कर हो गया। दोनोंके बीच घोर युद्ध हुआ। दोनो ही ओरके बहुतेरे सिपाही हताहत हुए। लड़ाईका उलझाव देख सन्ध्या कोई साढ़े छः बजे जापान-सेनापतिने रूसियोंसे लड़ती हुई अपनी गिरदावरीकी फौजमें और एक बटालियन फौज मिला दी। रात्रिका अन्धकार फैलते ही रूसी बटालियन युद्ध मौकूफकर पीछे हट गये। जापानी गिरदावरीकी फौजें युद्धस्थल हीमें विश्रामके लिये लेट गईं। फौजकी चारो ओर जबरदस्त पहरा खड़ा किया गया। रूसियोंने रात्रिके अन्ध-

कारने जापानियोंको मार भगानेके लिये उनपर दो वार आक्रमण किया; किन्तु इन दोनो आक्रमणोंका कोई फल नहीं हुआ; थको-मांदी जापानी फौजको उठनेकी जरूरत नहीं हुई; इस फौजकी पहरादार फौजने ही रूसियोंके दोनों आक्रमण व्यर्थ किये।

एक ओर युद्धमें थकी हुई गिरदावरोंकी फौज युद्धस्थलमें लेट विश्राम करती रही; दूसरी ओर जापान-सेनापतिने सवेरेसे प्रभात प्रस्तावके साथ युद्ध करनेके लिये तय्यारी आरम्भ की। सन्ध्या होते अपने पड़ावसे जापानी फौजें निकलने और रूसी मोरचोंके सामने जगह जगह पहुंचने लगीं। एकके पीछे दूसरी—दूसरीके पीछे तीसरी,—इसी तरह बहुसंख्यक जापानी फौजें अपने पड़ावसे निकल पड़ावके बाहर छाये हुए अन्धकारमें छिप जाती थीं। सन्ध्यासे पिछली राततक फौजोंकी रवानगीका काम चलता रहा। रूसी मोरचोंके बायें नदी थी और दाहने मैदान। जापानी फौजका बड़ा अंश इसी दाहने पार्श्वके सामने मैदान और वृक्षोंकी आड़में एकत्र हुआ। इस अंशके सामने धुसके भीतर बड़ी बड़ी तोपें लगाई गईं। और एक धुस तय्यार की गई,—रूसी मोरचोंके मध्य भागके सामने। इस धुसमें भी बड़ी बड़ी तोपें लगा दी गईं। इसतरह सूर्योदयसे कई घण्टे पहले जापानी फौजें युद्धस्थलमें पहुंच यथास्थान युद्धारम्भ करनेके लिये तय्यार हो गईं।

दूसरे दिन १६वीं जुलाईको प्रत्यूषमें कोई पांच बजे एकाएक जापानी तोपोंने गर्जनद्वारा युद्धारम्भ होनेकी घोषणा की। रूसी तोपोंने जवाब दिया। गोलाबारी आरम्भ हुई। सम्पूर्ण

मिद्दोयेन स्वक्षमें घोर अशान्ति उपस्थित हुई। बहुतेरी बड़ी बड़ी तोपोंके एक साथ चलनेसे मिद्दोयेन नगरकी इमारतें हिलने लगीं; शीताधिक्यसे जिसतरह मनुष्यके दांत कटकटाने लगते हैं; मकानोंके हिलनेसे उसी तरह मकानोंके द्वार खिड़कियां आदि शब्द करने लगे। नगरके हाट-बाजार बन्द हुए; त्रस्त व्याकुल अधिवासी मकानोंके द्वार बन्दकर नीचेकी मञ्जिलकी निर्जन कोठरीमें जा छुपे। पशु-पक्षी व्याकुल हो युद्धस्थलसे दूर भागे। हिंस्र पशु भयङ्कर होते हैं सही; किन्तु युद्धमें प्रवृत्त मनुष्य इन पशुओंसे भी अधिक भयङ्कर होते हैं।

प्रातःकाल कोई पांच बजेसे दिन नौ बजेतक चार घण्टे खूब गोलन्दाजी हुई। कितने ही रूसी मोरचोंके सामनेकी धुसबन्दी खाकमें मिल गई। जापानी गोलन्दाजोंका निशाना अचूक था; रूसी गोलन्दाजोंकी नालायकीसे रूसी गोलोंका वैसा असर होता नहीं था। नौ बजते ही जापानी तोपोंकी गोलन्दाजी बहुत ही धीमी हो गई। जापानी फौजोंको आगे बढ़ने की आज्ञा दी गई। बहुत ही धीरे धीरे,—प्रत्येक वृक्ष, प्रत्येक टीले, प्रत्येक झाड़ीका आश्रय लेते जापानी सिपाही रूसी मोरचोंकी ओर बढ़े। पहले ही लिख चुके हैं, कि रूसी मोरचोंके दाहने यानी शाहराहके समीप ही जापानी सिपाहियोंकी संख्या अधिक थी। यह सिपाही तरह तरहकी आड़से, शस्यसे भरे खेतोंके भीतरसे; झुककर, लेटकर, रेंगकर, दौड़कर रूसी मोरचेके दाहने भागकी थोड़ीसी परिक्रमाकर उसके पीछे पहुंच ठहर गये। मोरचेके सामनेकी जापानी फौजें भी इसीतरह धीरे धीरे आगे मोरचोंके समीप पहुंच गईं। मोरचोंमें जैसी हुई रूसी

फौजें जापानियोंपर बाढ़पर बाढ़ चला रही थीं; किन्तु उनकी उन बाढ़ोंसे जापानी फौजोंका आगे बढ़ना रुकता नहीं था। कितने ही जापानी सिपाही हताहत हुए; जो सख्त थे, वह आगे बढ़ते ही गये। दिन नौ बजेसे तीसरेपहर कोई तीन बजे-तक जापानी फौजें इसीतरह आगे बढ़ीं।

तीन बजनेके उपरान्त एकाएक जापानी तोपखाने एकबार फिर रूसी मोरचोंपर ओलेकी तरह गोले बरसाने लगे। विशेषत: रूसी मोरचेके दाहने जो जापानी तोपखाना था, उसने भयङ्कर गोला-वृष्टि आरम्भ की। रूसी समझते थे, कि इस ओर सामनेसे आक्रमण होगा; उन्हें खबर नहीं थी, कि उनके पीछे जो शस्य-श्यामल खेत हैं, वह जापानी सिपाहियोंसे भरे हुए हैं। रूसी सामनेसे आते जापानी गोलोंकी क्षतिसे बचनेके उपाय कर रहे थे; ऐसे समय रूसियोंके पीछे खेतोंमें एकाएक बिगुल बजने लगे; रूसियोंने पलटकर देखा, कि बिगुलकी ध्वनि होते ही सहस्र सहस्र जापानी खेतोंमें उठ खड़े हुए और पलक झपकते 'बेनज बनजई' के निनादसे दिशायें प्रतिध्वनित करते रूसी मोर-चोंकी ओर झपटे। इसी समय रूसियोंको उलझनमें डालनेके लिये;जो जापानी फौज जिस जगह पहुंच गई थी, वह उस जग-हसे उठ रूसी मोरचोंकी ओर झपटी। रूसियोंकी गोलियोंकी कोई परवा न कर मरती मारती जापानी फौजने रूसी फौजके दाहनेके मोरचेमें घुस रूसियोंको भगा उसपर कब्जा कर लिया। रूसी मोरचेपर जापानी ध्वजा उड़ती देख अन्यान्य स्थानोंकी जापानी फौजोंकी छाती गजभरकी हुई;अग्नि-दृष्टिको तृणवत् तुच्छ समझ-कर मोरचोंके फौजें समीप पहुंच गईं। पहले ही लिख चुके हैं,

कि रूसी मोरचे पहाड़ीपर थे और वह पहाड़ी बिलकुल खड़ी थी। मोरचोंके पीछे पहुंचनेवाली जापानी फौज आसानीसे मोरचोंमें घुस गई सही; किन्तु सामनेकी फौजें उस आसानीसे मोरचोंमें घुस नहीं सकीं। इस कामके लिये पहले हीसे लम्बी लम्बी सीढ़ियां तय्यार थीं। जापानी फौजें पहाड़पर सीढ़ियां लगा ऊपर चढ़ने लगीं। इस जगह बहुतेरे सिपाही मारे गये। जो सिपाही सीढ़ीके ऊपरी भागमें पहुंचता वही मरकर नीचे गिरता। किन्तु यह बाधा भी बहुत देरतक न टिकी। एक जापानीके मरनेसे अगणित जापानी उत्साह-पूर्व्वक ऊपर चढ़ते थे। देखते देखते रूसी मोरचों अनेक स्थानोंमें जापानियोंका अधिकार हो गया। जापानी ध्वजायें उड़ने लगीं। अब काम आसान हो गया; जापानी सिपाही अपने अधिकृत मोरचोंमें घुस शीघ्र शीघ्र दाहने-बायें फैलने और रूसियोंको स्थानभ्रष्ट करने लगे।

जापानियोंकी इस विजय-प्राप्तिसे रूसियोंको हिम्मत छूट गई। घिर जानेके भयसे एकाएक कुल रूसी फौजें अपने मोरचे छोड़ सिहोयेन नगरकी बगलसे लानपिङ्गकी ओर भागीं। अब जापानियोंकी बारी आई। जापानी रूसियोंपर बारंबार टूटने और उन्हें खण्ड खण्ड करने लगे। गोलोंसे, तपञ्चोंसे, सङ्गीनोंसे, तलवारसे, छुरेसे,—बहुतेरे रूसी मारे गये। कहीं कहीं जापानी रिसाले या पलटनें बहुतेरे भगेले रूसियोंको व्यूह बांध घेर लेतीं और खण्ड खण्ड कर डालतीं। भगेले रूसियोंकी चाल और भी तेज हुई और रात्रिका अन्धकार फैलनेसे पहले ही रूसी फौज भागकर सिहोयेन नगरसे बहुत दूर निकल गई। इस युद्धमें

जापानकी ओरसे दो अफसर सत्तर सिपाही मारे गये और सोलह अफसर चार सौ बत्तीस सिपाही आहत हुए। रूसियोंकी ओरसे कोई रिपोर्ट नहीं निकली। जापानियोंने कहा, कि हमें रूसियोंकी एक सौ इकतीस लाशें मैदानमें मिलीं। विदेशी संवाददाताओंने केवल इतना ही कहा,—"इस युद्धमें एक हजारसे अधिक रूसी सिपाही हताहत हुए होंगे।" बस,—इसी समाचारसे सबको सन्तोष करना होगा।

रूसियोंकी क्षतिका हाल खुले या न खुले; किन्तु यह बात किसीसे छिपी नहीं, कि इस मोरचेपर अधिकारकर जापानियोंने अपनी आगे बढ़नेकी राह और भी सुप्रशस्त कर ली।

षष्ठ परिच्छेद।

ताशीचावमें रूसी—जापानियोंका आगे बढ़ना—
ताशीचाव-युद्ध—नियुचुाङ्गमें जापानी।

पाठक! एकबार फिर ओकूकी फौजकी ओर लौटिये। ओकू की फौज कहां है?—उसी केचौ नगरके पास, जिसके पतनका हाल आप चतुर्थ परिच्छेदमें पढ़ चुके हैं। आपको याद होगा, कि केचौपर अधिकार करनेके उपरान्त जापानियोंकी फौज केचौके सामने बहुत ही लम्बा मोरचा बांध बैठ गई थी। इस परिच्छेदमें यह देखिये, कि इसके बाद इस फौजने, आगे बढ़ क्या कार-रवाई की।

केचौसे आगे ताशीचाव नगर है। केचौसे भागकर रूसी फौजें इसी नगरके पास पहुंच जमा हुई और भयङ्कर युद्धकी तय्या-रियोंमें प्रवृत्त हुईं। तेलिस्सू, सुगय वचेन, केचौ आदि नगरोंकी तरह ताशीचाव नगर भी लियावटुङ्ग-खाड़ीसे बहुत दूर नहीं और जिसतरह उन नगरोंमें उनके नामके रेल-ष्टेशन हैं; उसी-तरह ताशीचाव नगरमें भी इसी नामका रेल-ष्टेशन है। यह कहनेका प्रयोजन नहीं, कि ताशीचावसे आगे रेल-पथपर जापानियोंका अधिकार है और ताशीचावसे पीछे यानी लिया-वयाङ्ग, मुकदन प्रभृतिकी ओरके रेलपथपर जापानियोंका अधि-कार। रेलपथके एक भागसे जिसतरह रूसी लाभ उठा रहे थे; रेलपथके दूसरे भागसे उसी तरह जापानी लाभान्वित हो रहे थे। युद्धके समय रेल बड़े काम आती है।

ताशीचाव स्थानका रूसी मोरचा बड़ी सुविधाका था। ताशीचाव नगरकी बगलमें कई छोटे-बड़े पर्व्वत हैं और एक लम्बी पर्व्वत-माला है, जो ताशीचाव नगरके बायें लियावटुङ्ग-खाड़ीके किनारे-तक फैली हुई है। इस पर्व्वतमालाके सामने एक खुला मैदान है; उस मैदानमें ऐसा कोई भी ऊंचा स्थान नहीं, जिसपर तोपखाना लगा इस पर्व्वतमालापर लगे रूसी तोपखानोंका जवाब दिया जा सके। रूसियोंने ताशीचावसे लौटते ही इस पर्व्वतमालापर तथा इसके आगे-पीछे बगल-बाज़के अन्यान्य छोटे-बड़े पर्व्वतोंपर मोरचे बना तोपखाने लगा दिये और फौजें बैठा दीं। ताशीचावके मोरचोंमें बैठाये गये रूसियोंकी संख्या कोई एक लाख थी और बड़ी बड़ी तोपोंकी संख्या कोई एक सौ। रूस-सेनापति जारूबाइकपर ताशीचाव-रक्षाका भार अर्पित किया गया। जिस समय जापानकी ओरसे रूसी फौज और तोपोंकी यह संख्या प्रकाशित की गई, उस समय विदेशी [illegible]ओंने शोर किया था, कि जापानियोंकी बताई यह [illegible] है; किन्तु पीछे उन्हीं संवाददाताओंने प्रकाशित कि हमने जिस समय वह बातें लिखी थीं, उस [illegible] सिपाहियोंकी संख्या इतनी नहीं थी; इसके उप-[illegible] शीघ्र शीघ्र ताशीचावमें और भी सैन्य संग्रह

[illegible] और इसका न्यायान्याय निर्णय करनेके लिये [illegible] करनेकी इतनी ज़रूरत नहीं। हम इतना [illegible] सकते हैं, कि रूसी सैन्योंमें जापानी सैन्यको [illegible] परिचय बहुत अच्छी तरह पा चुके थे और रूसी

जापानी फ़ौजको ताशीचावमें रोकनेके लिये रूसियोंने थोड़ा आयोजन किया न होगा। ताशीचावको बगलमें रूसियोंने जो मोरचे तय्यार किये थे; एक तो वह प्राकृतिक बनावकी वजह अत्यन्त सुदृढ़ थे; दूसरे रूसियोंकी जबरदस्त फ़ौज और तोपोंने उन मोरचोंको और भी दुर्भेद्य बना दिया था। ओकू अपने जासूसों द्वारा इन रूसी मोरचोंका सविस्तार समाचार पा चुके थे और वह जानते थे, कि अबकी मञ्जिल कठिन है। ओकूने ताशीचावके रूसी मोरचोंका हाल सुन सम्भवतः नानशान-युद्धकी याद की होगी; नानशान-पर्व्वतमालाके मोरचे जैसे दुर्भेद्य थे, इस ताशीचावकी पर्व्वतमालाके मोरचे भी प्रायः वैसे ही दुर्भेद्य थे; फिर भी सरना या इन मोरचेको स्वाधिकारभुक्त करना ही होगा। मारशल ओयामाकी आज्ञा हो चुकी है; जापान-सम्राट्की, समग्र जापानकी, समग्र जगत्की आंखें ओकूकी ओर लग चुकी हैं। ऐसे समय क्या ओकू रूसी मोरचेकी दृढ़ता देख पश्चात्पद हो सकते थे?

ताशीचावपर आक्रमण करनेकी कुल तय्यारियां की गईं। पहले नोजूकी फ़ौजके बायें ओरको आगे बढ़नेकी आज्ञा दी गई। ताशीचाव और उसके सामनेकी पर्व्वतमालाके बायें तोम्कुचान नामक स्थान है। तोम्कुचानमें रूसियोंकी एक जोरदार फ़ौज थी। ओकूकी फ़ौजके अग्रगमनसे पहले नोजूकी फ़ौजने आगे बढ़ तोम्कुचानकी रूसी फ़ौजपर आक्रमण किया। कुछ देर युद्ध हुआ। चौदह रूसी मारे गये और तीन गिरफ्तार हुए। अन्तमें रूसी स्थानच्युत हो भाग गये। तोम्कुचान-जापानियोंका अधिकार हो गया। इसतरह लड़े ही

प्रकृतरूपमें ताशीचाव युद्ध आरम्भ हुआ। रूसियोंने उस समय नोगूकी फौजको इस विषयका उतना खयाल नहीं किया; किन्तु जब प्रकृत प्रस्तावसे युद्ध आरम्भ हुआ, तब रूस-सेनापतिने देखा, कि तोम्पूसानको पराधवसे उपेक्षाकर उन्होंने अच्छा काम नहीं किया; तोम्पूसानसे आगे बढ़ नोगूकी फौज ताशीचावके रूसी मोरचोंके ठीक पीछे पहुंच सकती थी।

२३वीं जुलाईको प्रातःकाल ओकूकी सैन्य आगे बढ़ी। इस सैन्यका बायां भाग यानी सागरतटकी ओरका भाग अपनी जगह रहा; दाहना भाग आगे बढ़ा। ताशीचाव नगरके सामने अन्यान्य पर्व्वतोंमें दीवार जैसी तापिङ्गलिङ्ग नाम्नी पर्व्वतमाला है। रूसी फौजें इस पर्व्वतमालापर और भी सुदृढ़ मोरचे बांध बैठी थीं। विशेषतः पर्व्वतमालाका जो दक्षिण भाग ताशीचाव नगरके समीप था, उस भागको रूसियोंने बहुत ही सुदृढ़ बना लिया था। माइन, कांटोंके तार, खन्दक आदि किसी चीजकी भी कमी नहीं थी। इस भागके सामने वनाच्छादित मैदान था। मैदानमें जगह जगह रूसी चौकियां थीं। २३वीं को दिनभर जापानी फौजें इन चौकियोंसे रूसियोंको मारकाटकर पीछे हटाती और पूर्व्वोक्त सुदृढ़ मोरचोंकी ओर आगे बढ़ती रहीं। रात्रि उपस्थित होने पर जापानी फौजोंने खुले मैदानमें डेरा डाला।

२४वीं जुलाईको प्रातःकालसे जापानी फौजें फिर आगे बढ़ीं। दूरसे दिखाई देनेवाली तापिङ्गलिङ्ग पर्व्वतमाला क्रमशः नजदीक हुई—और भी समीप हुई। दिनके ८ बजे जापानी फौजें एकदम निकल आकर उस मैदानमें प्रवेश करने लगीं, जिनसे

दूसरे किनारे तापिङ्गलिङ्ग पर्वतमाला है। जैसे ही जापानी फौजें मैदानमें पहुंचीं, वैसे ही उनपर तापिङ्गलिङ्गके रूसी तोपखाने गोले बरसाने लगे। जापानी फौजोंका आगे बढ़ना कठिन हो गया। मैदानमें टीलों या उच्चभूखण्डका जहांतक आश्रय पा सकीं, वहांतक जापानी फौजें आगे बढ़ीं; वहांसे आगे बढ़ना मानो मृत्यु-मुखमें पैर देना था। सूर्य्यदेव निर्म्मेघ गगनमें चमक रहे थे; मोरचेमें बैठे रूसी मैदानका कोना कोना अच्छी तरह देख रहे थे; जिस मैदानमें जिस जगह जापानी सिपाहियोंका समूह देखते, उसी जगह बड़े बड़े गोलोंकी बौछार करते। जापानियोंके पास भी बड़ी बड़ी तोपें थीं और उन तोपोंके बड़े बड़े गोले बहुत ही भयङ्कर थे; किन्तु उस मैदानमें या उसके आसपास तापिङ्गलिङ्ग पर्व्वतमालाके सुरक्षित जापानी तोपखाना लगानेके लिये एक भी ऊंचा पर्व्वत नहीं था। जापानियोंका बड़ी मुश्किलसे सामना था। रूसी गोलोंकी कोई परवा न कर मैदानमें निकल धुस तय्यारकर जापानियोने अपनी तोपें लगा दीं सही; किन्तु उनसे वैसा सुफल उत्पन्न नहीं हुआ। सुफल हो कैसे सकता था? पर्व्वतमालाके शिखरपर बड़ी बड़ी चट्टानोंके पीछे लगी रूसी तोपोंको नीचेके खुले मैदानमें लगी जापानी तोपें क्षतिग्रस्त कैसे कर सकती थीं? साहससे, पुरुषार्थसे, उद्यमसे उतने ही काम होते हैं, जितने हो सकते हैं; जो काम किसी अवस्था और किसी रूपसे हो नहीं सकते, वह काम कैसे हो सकते हैं?

फिर भी; जापानी तोपोंने रूसी तोपखानोंपर यथाशक्य खूब बरसाये और दोपहर बाद जापानी फौजोंने अपना आग्रद-

स्थान परित्यागकर मैदानमें निकल तापिङ्गशिङ्ग पर्व्वतमालापर धावा किया। पहले ही लिख चुके हैं, कि तापिङ्गशिङ्ग पर्व्वत-मालापार रूसकी एक सौ बड़ी बड़ी तोपें लगी थीं। जापानियोंका अग्रसर होना देख यह सब कलदार तोपें च्या च्याके उपरान्त आगे बढ़ती हुई जापानी फौजों-पर गोले बरसाने लगीं। कोई क्रम नहीं था—नियम नहीं था—जहांतक जो तोप जहांतक शीघ्र गोलावृष्टि कर सकती थी; वह तोप वहांतक शीघ्र गोले बरसाने लगी। सम्मुखे मैदानमें गोलोंके टुकड़े बरसने लगे। बिना फटे गोलोंके ज-मीनपर गिरनेसे भूगर्भ छिन्नभिन्न हो आकाशकी ओर उड़ जाता और धूलि बनकर रणभूमिपर बरसता। छिन्नभिन्न भूखण्डके साथ साथ कितने ही सिपाही भी उड़ जाते और धूलिमय मांस-पिण्डमें परिणत हो धरातलमें गिरते। साथ साथ लगातार भयङ्कर शब्द होता; एक बिजली—दो बिजली—दश-बीस बिजली नहीं; असंख्य बिजलियोंकी अविराम कड़कड़ाहटसे जैसी एक अविश्रान्त विकट ज्ञानशून्य बनानेवाली महाध्वनि हो सकती है; रूसियोंकी उस अविराम गोलावृष्टिसे प्रायः वैसी ही महाध्वनिसे दिशायें परिपूर्ण हो रही थीं। उस भीषण गोलावृष्टिमें—उस भयङ्कर महाध्वनिमें; आत्मममता-शून्य जापानी पलटनें हुङ्कार करती स्थान स्थानमें महावेगसे रूसी मोरचोंकी ओर दौड़ीं। बहुसंख्यक सिपाहियोंके हताहत होनेपर भी उनकी अग्रगतिमें कोई फर्क न आया; कोई फौज पर्व्वतके तलदेशमें पहुंची; कोई तलदेश पीछे छोड़ पर्व्वतमालापर चढ़ रूसी मोरचेके समीप पहुंची। कोई रूसी मोरचोंसे भिड़

दूसरे किनारे तापिङ्गलिङ्ग पर्व्वतमाला है। जैसे ही जापानी फौजें मैदानमें पहुंचीं, वैसे ही उनपर तापिङ्गलिङ्गके रूसी तोपखाने गोले बरसाने लगे। जापानी फौजोंका आगे बढ़ना कठिन हो गया। मैदानमें टीलों या उच्चभूखण्डका जहांतक आश्रय पा सकीं, वहांतक जापानी फौजें आगे बढ़ीं; वहांसे आगे बढ़ना मानो मृत्यु मुखमें पैर देना था। सूर्य्यदेव निर्म्मेघ गगनमें चमक रहे थे; मोरचेमें बैठे रूसी मैदानका कोना कोना अच्छी तरह देख रहे थे; जिस मैदानमें जिस जगह जापानी सिपाहियोंका समूह देखते, उसी जगह बड़े बड़े गोलोंकी बौछार करते। जापानियोंके पास भी बड़ी बड़ी तोपें थीं और उन तोपोंके बड़े बड़े गोले बहुत ही भयङ्कर थे; किन्तु उस मैदानमें या उसके आसपास तापिङ्गलिङ्ग पर्व्वतमालाके मुकाबिल जापानी तोपखाना लगानेके लिये एक भी ऊंचा पर्व्वत नहीं था। जापानियोंका बड़ी मुश्किलसे सामना था। रूसी गोलोंकी कोई परवा न कर मैदानमें निकल धुस तय्यारकर जापानियोंने अपनी तोपें लगा दीं सही; किन्तु उनसे वैसा सुफल उत्पन्न नहीं हुआ। सुफल हो कैसे सकता था? पर्व्वतमालाके शिखरपर बड़ी बड़ी चट्टानोंके पीछे लगी रूसी तोपोंको नीचेके खुले मैदानमें लगी जापानी तोपें क्षतिग्रस्त कैसे कर सकती थीं? साहससे, पुरुषार्थसे, उद्यमसे उतने ही काम होते हैं, जितने हो सकते हैं; जो काम किसी अवस्था और किसी रूपसे हो नहीं सकते, वह काम कैसे हो सकते हैं?

फिर भी; जापानी तोपोंने रूसी तोपखानोंपर यथाशक्य खूब गोले बरसाये और दोपहर बाद जापानी फौजोंने अपना आश्रय-

स्थान परित्यागकर मैदानमें निकल तापिङ्गलिङ्ग पर्व्वतमालापर धावा किया। पहले ही लिख चुके हैं, कि तापिङ्गलिङ्ग पर्व्वत-मालापर रूसकी एक सौ बड़ी बड़ी तोपें लगी थीं। जापानियोंका अग्रसर होना देख यह सब कलदार तोपें स्वयं चलके उपरान्त आगे बढ़ती हुई जापानी फौजों-पर गोले बरसाने लगीं। कोई क्रम नहीं था—नियम नहीं था—रूसकी जो तोप जहांतक शीघ्र गोलावृष्टि कर सकती थी; वह तोप वहांतक शीघ्र गोले बरसाने लगी। सब्जे मैदानमें गोलोंके टुकड़े बरसने लगे। बिना फटे गोलोंके ज-मीनपर गिरनेसे भूगर्भ छिन्नभिन्न हो आकाशकी ओर उड़ जाता और धूलि बनकर रणभूमिपर बरसता। छिन्नभिन्न भूखण्डके साथ साथ कितने ही सिपाही भी उड़ जाते और धूलिमय मांस-पिण्डमें परिणत हो धरातलमें गिरते। साथ साथ लगातार भयङ्कर शब्द होता; एक बिजली—दो बिजली—दश-बीस बिजली नहीं; बहुसंख्य बिजलियोंकी अविराम कड़कड़ाहटसे जैसी एक अविश्रान्त विकट ज्ञानशून्य बनानेवाली महाध्वनि हो सकती है; रूसियोंकी उस अविराम गोलावृष्टिसे प्रायः वैसी ही महाध्वनिसे दिशायें परिपूर्ण हो रही थीं। उस भीषण गोलावृष्टिमें—उस भयङ्कर महाध्वनिमें; आत्ममता-शून्य जापानी पलटनें युद्धनाद करती स्थान स्थानमें महावेगसे रूसी मोरचोंकी ओर दौड़ीं। बहुसंख्यक सिपाहियोंके हताहत होनेपर भी उनकी अग्रगतिमें कोई फर्क न आया; कोई फौज पर्व्वतके तलदेशमें पहुंची; कोई तलदेश पीछे छोड़ पर्व्वतमालापर चढ़ रूसी मोरचेके समीप पहुंची। कोई रूसी मोरचोंसे भिड़

अपने बचे हुए अंशको शीघ्र शीघ्र नष्ट करने लगी। इतना ही श्रम—इतना ही पराक्रम अलौकिक था—अद्भुत था। जापान-सेनापति ओकू दूर अपने स्थानके बीच खड़े दूरबीन द्वारा अपनी सैन्यको यह साहसिकता देख रहे थे; उन्होंने भी इसे यथेष्ट पाया; खयाल किया, कि आगे और भी क्षति है; लाभ नहीं। आपने आगे गई फौजोंको लौटने और दूसरी रक्षित फौजोंको आगे बढ़नेकी आज्ञा दी। दूसरी फौजें भी सागरतरङ्गवत् अग्रसर हो पहाड़से टक्कर ले लौटनेके लिये आदिष्ट हुईं; उनके लौटनेसे पहले और रक्षित फौजें आगे बढ़ीं; और बढ़ीं; फिर बढ़ीं। फिर तो फौजोंके आगे बढ़ने और पीछे हटनेका तांता लग गया।

विलायतके 'डेलीमेल' अखबारके रिपोर्टर इव्हल साहब रूसी फौजके साथ थे। युद्धस्थलसे ढाई कोस पीछे एक चीना मीनारपर बैठ दूरबीन द्वारा आप इस युद्धके एक अंशका दृश्य देख रहे थे। इस युद्धका दृश्य देख आपने इसका जो वर्णन उस समय प्रकाशित किया था, उसका मर्म्मानुवाद इसतरह है,—

"जापानी गोलन्दाजी जोरदार नहीं थी; दोपहरतक किसी तरह जारी रहकर समाप्त हो गई। जापानी सिपाही आगे बढ़े; ऐसे समय ताशीचावके पूर्व और एक रूसी तोपखाना प्रकट हुआ; अन्यान्य तोपखानोंकी तरह यह तोपखाना भी जापानी फौजोंपर गोलावृष्टि करने लगा। सफेद धुएं और उसके बीचकी लाल चमकसे रूसी आपनल गोलोंका फटना स्पष्ट दिखाई देता था।

"रूसी मोरचोंके सामने बारंबार धुएंकी लम्बी पंक्ति दिखाई

देती थी ; यह पंक्ति शनैः शनैः रूसी मोरचोंके समीप होती जाती थी। जापानी फौजें आगे बढ़ रही थीं और हरेक कदमपर रूसी मोरचोंपर गोलियां बरसाती आती थीं; जापानी सिपाहियोंकी छूटती बन्दूकों हीसे यह धुआं तय्यार होता था। अन्तमें यह पंक्ति रूसी मोरचोंके सामने एक जगह ठहर गई और शीघ्र शीघ्र दाहने-बांये फैलकर इसने वारंवार प्रकट और अन्तर्द्धान होनेवाले धुएंका एक विशाल अर्द्धचन्द्राकार तय्यार कर दिया।

"जापनियोंको यह गति देख रूसियोंको नये स्थानोंमें तोपखाना लगानेका प्रयोजन हुआ। रूसियोंने शीघ्र शीघ्र एक नया मोरचा तय्यारकर उसमें दस बड़ी बड़ी तोपें लगा दीं। श्यामल तृण तथा लता-गुल्मादिसे हरितवर्ण इस नये रूसी मोरचेमें रूसकी दसों भूरे रङ्गकी तोपें स्पष्ट दिखाई देती थीं।

"इसके उपरान्त एक ओरसे जापानी फौजोंने धावा किया; दूसरी ओरसे अन्यान्य तोपखानोंके साथ साथ इस नये तोपखानेने भी जापानी फौजोंपर विकट गोलावृष्टि आरम्भ की। इसके उपरान्त ही धूलि और धुएंसे रणभूमि आच्छन्न हो गई; मेरी आंखोंके सामनेसे रणभूमि अन्तर्हित हुई। कुछ देरतक धूलि और धुआं अपनी जगह रहा; मुझे कुछ भी दिखाई न दिया। अन्तमें परदा हटा; तेज वायुके झोंकोंने धुआं और धूलि दोनोंको रणस्थलपरसे दूर हटा दिया; युद्धस्थल स्पष्ट दिखाई देने लगा। अब और ही दृश्य दिखाई देता था। जापानी फौजें पीछे हट रही थीं; उनकी श्रेणी भङ्ग हो गई थी।"

घोर संग्राम आरम्भ हुआ। जापानी फौजोंसे मैदान भर उठा। कितनी ही फौजें आगे बढ़ती थीं; कितनी ही पीछे हटती थीं। एक ओरके आक्रमणसे लौट न पानी फौजें दूसरी ओर आक्रमण करतीं, उस ओरके भी आक्रमणमें अकृतकार्य्य होनेपर तीसरी ओर आक्रमण करतीं; इसीतरह दिनभर जापानी फौज आक्रमणका ढब बदलती रहीं। रूसी मोरचोंका मध्यभाग चेन-कियाकी नामक पर्व्वतखण्डपर था। दिनभरमें चार बार जापानी फौजें इस पर्व्वतपर चढ़ रूसी मोरचोंमें बैठे रूसी सिपाहियोंसे भिड़ गईं। एकबार तो यहांतक हुआ, कि इस पर्व्वतपर जापानी फौजोंने अपनी ध्वजातक गाड़ दी और मोरचे बांधनेकी तय्यारी की। किन्तु जापानी तोपोंकी निस्तब्धता और रूसी तोपोंकी विषम गोलवृष्टिके सामने जापानी फौजोंकी किसी कार-रवाईका कोई फल न हुआ; जापानी फौजोंका प्रत्येक आक्रमण व्यर्थ हुआ। धीरे धीरे सूर्य्यदेव अस्ताचलगामी हुए; युद्धस्थलने विकट मूर्त्ति धारण की। सन्ध्या होनेपर जापान-सेनापति ओकूने अपनी ओरसे युद्ध रोकनेकी आज्ञा दी। जापानी फौजें रुकीं; कुछ देरके उपरान्त रूसी तोपोंकी वह दिनभरकी चलती हुई भीषण गोलन्दाजी रुकी। रणस्थलमें अपेक्षाकृत शान्ति उप-स्थित होनेपर भी दोनों ओरके सिपाहियोंके मस्तकमें बहुत देरतक अशान्ति फैली रही; वेगपूर्व्वक चलती हुई वायुकी ध्वनि भी उनके माथेमें दिनभरकी उसी विषम गोलन्दाजीका भयङ्कर शब्द उत्थित करती थी।

जापान-सेनापति ओकू अब क्या करें? जापानी फौजोंके अमानुषिक पराक्रम प्रकाश करनेपर भी उनपर विजय-लक्ष्मी

सुप्रसन्न न हुईं ; जापानी फौजोंके लाख लाख यत्न करनेपर भी रूसी मोरचोंका पतन न हुआ ? यही सब देख सेनापति ओकू सोचने लगे, कि अब क्या किया जाये ? वह जानते थे, कि आजके युद्धमें अपने तोपखानोंका सहारा न पानेका वजह ही जापानी फौजें कृतकार्य्य हो नहीं सकीं और बिना जापानी तोपखानोंके साहाय्यके जापानी फौजें विजयी हो न सकेंगी। किन्तु जापानी तोपखाने किस जगह लगाये जावें ? तापिङ्गलिङ्गके सामने एक भी ऊंचा स्थान नहीं था ; बारह घण्टेके उपरान्त फिर प्रातःकाल उपस्थित होगा ; इस समयतक ऊंचो धुस तय्यारकर जापानी तोपखानोंका लगाना एक तो बड़ा ही असम्भवप्राय काम था ; दूसरे उस कामके होनेपर भी सुफलकी वैसी प्रत्याशा की जा नहीं सकती थी।

तब क्या किया जाये ? जिन जापानी फौजोंकी अग्रगति अबतक अप्रतिहत प्रमाणित हुई थी ; जो जापानी फौजें समय समयपर अपनेसे तिगुनी रूसी फौजको भी नीचा दिखा चुकी थीं ; जो जापानी फौजें सिर्फ एक दिनके युद्धमें नानशान जैसी दुर्गम्य और दुरारोह पर्व्वतमालापर अधिकार कर चुकी थीं ; उन्हीं जापानी फौजोंको क्या इस तापिङ्गचाव-युद्धमें रूसियों द्वारा परास्त हो पीछे हटना होगा ? कुरोकी, नोगी प्रभृति सेनापतियोंको छोड़ क्या जापान-कुल-कज्जल बननेका कलङ्क ओकू हीके माथे लगेगा ? धीर वीर सुचतुर ओकू, अपनी सैन्यकी दुर्दशा ; अपनी निन्दाके ध्यानसे अत्यन्त व्यथित हुए। वीरवरको ऐसे कलङ्कपूर्ण जीवनकी अपेक्षा मृत्यु भी भली जान पड़ी। अधीर और व्याकुल हो जापान-सेनापतिने विजय प्राप्तिकी एक युक्ति

निकाली। यह युक्ति न भी आशाप्रद थी, वो ही नैराश्यपूर्ण भी थी ; इस युक्तिके पूर्ण होनेसे एक ओर यदि जापानी फौजें विजय पा सकती थीं, तो दूसरी ओर युक्तिके विफल होनेसे कल्पनातीत दुर्दशामें भी फंस सकती थीं।

ओकूने स्थिर किया, कि दिनके युद्धमें तोपखानेका बड़ा प्रयोजन है ; किन्तु रात्रिके युद्धमें तोपखानेका तनिक भी प्रयोजन नहीं। इसलिये रात्रि होका युद्ध जापानी फौजोंके लिये मङ्गलजनक है। वह जानते थे, कि रात्रिका युद्ध नाना विभीषिकाओंका आकर है। रात्रिके युद्धमें बड़ी सावधानीका प्रयोजन है। शत्रुको पहलेसे इस युद्धका समाचार मिलना न चाहिये ; युद्ध-यात्राके समय किसीको किसी तरहकी बातचीत करना न चाहिये ; शत्रुको चौकियोंके सिपाहियों और राहके सन्तरियोंका उनकी ओरसे बन्दूक दागनेसे पहले उनके पास पहुंच उन्हें बन्दूकके बदले—तलवार या सङ्गीनसे समाप्त करना चाहिये ; इतनी व्यवस्थाओंके सफल होनेका पूर्ण विश्वास करनेके उपरान्त नैश-युद्धके लिये प्रस्तुत होना चाहिये। ओकू यह भी जानते थे, कि रात्रिके घोर अन्धकारमें शत्रु-मित्रमें किसी तरहका अलगाव नहीं रहता ; भाई भाईको नष्ट कर सकता है। किन्तु यह अन्तिम असुविधा बहुत बड़ी असुविधा होनेपर भी जापानी फौजोंके लिये नगण्य थी। जापानी फौजोंके प्रत्येक सिपाहीको जिसतरह अन्यान्य साज-सामान दिये जाते हैं ; उसीतरह एक एक कम्पास भी दिया जाता है। इस कम्पासकी दिक् बतानेवाली सूईके ऊपर जो चन्द्राकार शीशा था, उसपर अन्धारमें प्रकाश उत्पन्न करनेवाला 'फासफोरस' नामक

द्रव्य विशेष लगा था और इसके फलसे घोर अन्धकारमें भी जापानी सिपाही दिक्भ्रष्ट हो नहीं सकते थे : सेनापति ओकूने स्थिर किया कि प्रत्येक फौजके आक्रमण करनेका ढङ्ग इस ढङ्गसे स्थिर किया जाये, जिससे एक जापानी फौजकी टक्कर दूसरी जापानी फौजसे हो न सके। अपने नैशयुद्धकी अन्यान्य बाधाओंके भी दूर करनेकी व्यवस्था की। यह करना दोषकी बात नहीं; यह निष्काम होनेका अवश्यम्भावी फल न्हण युद्धमें पतित होना भी कोई दोषकी बातकी नहीं; खूब सोच-विचारके उपरान्त अन्तमें ओकूने नैशयुद्धमें प्रवृत्त होना ही स्थिर किया।

सिपाहियोंको समाचार दिया नहीं गया; ओकूने अपने अधीनस्थ ऊंचे अफसरोंसे अपनी यह मनोकामना प्रकट की। सन्ध्याकी कालिमा प्रगाढ़ होनेसे पहले ही जापानी अफसरोंको नैशयुद्धकी सूचना मिल गई और उन लोगोंने उसी समय इस युद्धकी तय्यारी आरम्भ की। अफवाह है, कि ओकूके अधीनस्थ कितने ही अफसरोंने इस युद्धपर घोर आपत्ति प्रकाश की; अपनी आपत्तिकी पुष्टिके लिये अन्यान्य युक्तिके साथ साथ एक यह युक्ति भी उपस्थित की, कि दिनभर युद्धके करनेके उपरान्त जापानी फौजें खूब थक गई हैं और उनके विश्रामलाभ बिना किये उन्हें युद्धमें प्रवृत्त करना कभी युक्तिसङ्गत नहीं। इसपर ओकूने उत्तर दिया,—"यदि जापानी फौजें श्रान्त-क्लान्त हैं, तो रूसी फौजें कम श्रान्त-क्लान्त नहीं; रूसियोंकी क्लान्तिकी वजह जापानी फौजोंको अधिक त्रस्त करना न होगा।" किसीकी कोई बाधा न टिकी; पूरी वेग और अत्यन्त त्वरापूर्व्वक नैशयुद्धकी तय्यारी चली।

२४वीं जुलाईको रात कोई साढ़े सात बजे दाहने भागकी जापानी फ़ौजोंको एकाएक इस युद्ध-यात्राका समाचार दिया गया। किसी और देशके सिपाही होते, तो शायद इस दो या ढाई घण्टोंके विश्रामके उपरान्त इस नई और अतीव अशङ्काजनक यात्राका समाचार सुन असन्तुष्ट होते; गुप्त प्रकट भावसे अपने अफ़सरोंको उलटी-सीधी बातें सुनाते; किन्तु जापानी सिपाही वैसे नहीं थे। आज दिनभरकी लड़ाईके फलसे अंकूकी फ़ौजका प्रत्येक जापानी सिपाही उदास हो गया था; ग्लानिसे, दुःखसे, क्षोभसे हरेक स्वदेशभक्त जापानी सिपाही की छाती फट रही थी। युद्ध समाप्त होनेपर शरीरि-वेदना दूर हो गई थी सही; किन्तु मानसिक वेदना बहुत ही बढ़ गई थी, जो उस शारीरिक वेदनाकी अपेक्षा कहीं भयङ्कर थी। जापानी सिपाही विजयप्राप्तिकी कोई भी युक्ति निकाल नहीं सके थे। ऐसे समय जब उन्होंने इस युद्ध-यात्राका समाचार पाया, तब उनके हर्षकी सीमा न रही। उनके चेहरे आनन्दसे उज्ज्वल हो उठे; जिन रूसियोंने आज दिनके युद्धमें उनके बहुतेरे भाई जापानियोंको मारा था; उन्हीं रूसियोंसे एकबार फिर भिड़ स्वदेशका मुखोज्ज्वल करनेका; आज दिनके युद्धके संशोधनका समय उपयुक्त आया। जिन सिपाहियोंके हृदयमें इतना स्वदेशानुराग था; इतना आत्ममर्य्यादाका विचार था; वह जापानी सिपाही कौनसा असम्भव सम्भव कर नहीं सकते थे?

हथियारोंसे लैस हो रात कोई आठ बजे जापानी सिपाहियोंने रूसी मोरचेके मध्यभाग चेनकियाकी गिरिश्रृङ्ग ओर बायें भागकी ओर यात्रा की। दिनके आक्रमणमें फ़ौजें बिगुलकी आवाज-

पर, फौजी बाजेके तालपर हथियार खड़खड़ाती, पदशब्द करती पंक्ति बांध आगे बढ़ती हैं; किन्तु रात्रिके आक्रमणमें यह सब कुछ नहीं होता। बिगुल और बेण्ड तो दूर रहा; किसी सिपाहीको न्द्रस्वरमें भी बातचीत करनेकी आज्ञा दी नहीं जाती। सिपाहियोंकी पंक्ति भी नहीं बंधती। रात्रियुद्धका साधारण नियम यह है, कि आक्रमण करनेवाली सैन्य दो स्थान निर्दिष्ट करती है। एक स्थानमें कम्पसे चलकर सिपाही एकत्र होते हैं और अङ्गरेजोंमें इस स्थानको point of assem ly कहते हैं। इस स्थानमें सिपाहियोंको और आगे बढ़ एकत्र होनेके लिये दूसरा स्थान बताया जाता है; इस दूसरे स्थानका नाम अङ्गरेजोंमें point of deployment है। इस दूसरे स्थानसे आक्रान्त होनेवाली शत्रुकी फौजें अधिक दूर नहीं रहतीं। आक्रमण करनेवाली सैन्यके सिपाही छोटे छोटे दलोंमें विभक्त हो जब उस दूसरे स्थानमें पहुंच जाते हैं, तब उनके प्रति शत्रुपर आक्रमण करनेके लिये एक विशेष सङ्केत किया जाता है। रात्रि-युद्धका साधारण नियम ऐसा ही है, किन्तु ओकूने अपनी सैन्यके लिये एक नया नियम बना दिया। आपने आज्ञा दी, कि पहले स्थानमें सैन्य-समावेशका प्रयोजन नहीं; सिपाही पड़ावसे निकल चौकियों और सन्तरियोंको मारकाट सीधे पूर्व्वोक्त दूसरे स्थान point of assembly में एकत्र हों और वहां सङ्केत पाते ही शत्रु पर टूट पड़ें।

रात्रिकी घटना थी। उस वनमें, पर्व्वतमें, घोर अन्धकारमें प्रतिहिंसाके अन्तर्दाहसे जलते हुए जापानी सिपाहियोंने आगे बढ़नेके समय रूसी सन्तरियों और रूसी चौकियोंकी जो दुर्दशा

की होगी, उसका वर्णन सिवा उन भुक्तभोगी, रूसियों या जापानियोंके दूसरा कोई कैसे कर सकता है? हां इतना अवश्य ही कहा जा सकता है, कि जगह जगह अन्धकारमें खड़े रूसी सन्तरियोंके समीप जापानी सिपाही बैठकर, लोटकर, वृक्षोंकी आड़ पकड़कर पहुंचे होंगे। वनकी उस समयकी वह शान्ति शंकायुक्त किसी कदर भङ्ग हुई होगी। हलके आक्रमणका शब्द हुआ होगा; किसी बोझके भूमिपर गिरनेका शब्द हुआ होगा; हाथ पैर पटकनेका शब्द हुआ होगा; अन्तमें फिर वही पूर्व्ववत् भीषण शान्तिका विस्तार हुआ होगा। उस समय उस वनमें कितनी भयङ्कर शान्ति छाई थी? यह बातें हम इस प्रमाणपर निर्भर हो कहते हैं, कि जापानियोंकी यह यात्रा निर्व्विघ्न थी। एक भी रूसी सन्तरी अपनी सैन्यको जापानियोंके आगमनकी सूचना दे न सका या बन्दूक आदि चलानेका अवसर पा न सका। सब विघ्न-बाधायें व्यतिक्रमकर जापानी फौजें रात कोई दश बजे रूसी मोरचेके अतीव सुदृढ़ मध्य-भाग चेनकियाकी ओर बायें पार्श्वके सामने निर्दिष्ट स्थान या point of deployment के सामने जा पहुंचीं।

जापानी फौजोंके निर्दिष्ट स्थानमें समवेत होते ही रात कोई दश बजे प्रधान सेनापति ओकूकी आज्ञासे एक हवाई दागी गई। हवाई आकाशमें जा फटी; उसके चमकीले गुल नैश-गगनमें खिल गये। जापानी फौजके प्रति युद्धारम्भका यही सङ्केत था। हवाईके आग्नेय फूल अभी बुझने भी न पाये थे, कि जमीन कांपी, पर्व्वत कांपा—स्थावर-जङ्गम सभी कांपे; सहस्र सहस्र ... सिपाही बन्दूकों पर सङ्गीन चढ़ा वज्रनिर्घोषकी तरह

छूटनेवाले आग्नेय-अस्त्रोंका व्यवहार नहीं था; तलवारें थीं; सङ्गीनें थीं; छुरे थे; किरचें थीं,—महासमरका अन्तिम फैसला जिन शस्त्रोंके व्यवहारसे हुआ करता है, उन्होंका व्यवहार होने लगा। दमभरमें जगह जगह हताहतोंके ढेर लग गये। कहीं कोई किसी भयङ्कर जख्मसे घायल हो मरते हुए पशुकी तरह चीत्कार करने लगा; कहीं कोई रीढ़ टूट जानेकी वजह हिलनेमें बिलकुल ही असमर्थ हो पड़ा पड़ा अपनी दुर्द्दशापर अश्रुपात करने लगा। किसीका हाथ उड़ गया; किसीका पैर कट गया; किसीका भण्डारा खुल गया, आंतें बाहर निकलने लगीं। हताहतोंके ढेरसे उत्तप्त रक्तधारा बह चट्टानोंको भिगाती, पर्व्वतके तलदेशकी ओर दौड़ी। जापानी मानो अपनी दिनभरकी क्षतिका प्रतिशोध ले रहे थे। दिनभर लाख लाख चेष्टा करके भी रूसियोंका सान्निध्य प्राप्त कर नहीं सके थे; इस समय उस दिनभरकी हृदयस्थ युद्ध-कामना प्रकाश कर रहे थे।

जापानियोंके कोहेकी आंच असह्य थी। रूसी अपने मोरचे छोड़ पर्व्वतमालासे उतर भागे। रूसियोंकी भागड़का विशेष विवरण हमें नहीं मिला; इसलिये प्रकाशित नहीं हुआ। 'कैसल्स'ने दिनभरका पूर्ण विवरण लिखकर रात्रि युद्धमें जिस जगहसे जापानियोंका आक्रमण हुआ है, उस जगहसे आगेके युद्ध-विवरणपर परदा छोड़ दिया है; कुछ लिखा ही नहीं। टाइम्सके संवाददाताने सिर्फ इतना लिखा है,—"रात कोई दश बजे जापानी फौजोंने रूसी मोरचोंपर आक्रमणकर प्रातःकाल कोई तीन बजेतक अधिकार कर लिया।" और भी लिखा है,—"इसी रात जापानियोंके दूसरे दलने रूसियोंके मध्यभाग चेनकियाको प्रभृति

अधिवासी बड़े ही सङ्कटमें थे। निर्दय रूसियोंने जापानियोंकी विजयप्राप्तिका समाचार पाते ही रात होते ताशीचाव नगर और रेल-ष्टेशनको आग लगा दी थी। रेल-ष्टेशन पूर्णरूपसे भस्म हो चुका था ; नगरका एक अंश जल रहा था और नगरके चीना अधिवासी भीत-त्रस्त हो प्राणरक्षाके लिये इधर उधर भाग रहे थे। जापानियोंने नगर प्रवेश करते ही प्रजाको धैर्य दिया और यथासम्भव शीघ्र आग बुझा नगरमें शान्ति स्थापन की। कल रात्रि पर्य्यन्त ताशीचावकी जिन सरकारी इमारतोंपर रूसी ध्वजा उड़ती थी, आज उन्हीं इमारतोंपर जापानी ध्वजा उड़ने लगी। युद्धका फल ऐसा ही होता है ; देखते देखते कल्पनातीत परिवर्त्तन हो जाता है।

दोनो ओरसे मिलाकर कुल कोई ढाई लाख सिपाही इस युद्धमें प्रवृत्त हुए थे। विदेशी संवाददाताओंने या स्वयं रूस-सरकारने रूसी फौजकी क्षतिका वैसा कोई समाचार प्रकाशित नहीं किया। रूसकी ओरके विदेशी संवाददाताओं तथा रूस-सरकारने तो रात्रि-युद्धका भी समाचार प्रकाशित नहीं किया। रूस-सरकारकी ओरसे सिर्फ इतना समाचार मिला,—"प्रधान सेनापति कुरोपाटकिनने दाहने यङ्कौ-बन्दरकी ओरसे और बायें सोम्लुशानके गोलू-अधिकृत स्थानसे ताशीचावपर जापानियोंका आक्रमण होनेकी आशङ्कासे रूसी फौजको ताशीचाव परित्यागकर पीछे लौटनेकी आज्ञा दी। जापानियोंने रूसी मोरचोंको खाली पा अत्यन्त आश्चर्य्य प्रकाश किया।" देखा, पाठक ! युरोपकी प्रथम श्रेणीकी शक्ति रूसके समाचार देनेका यह ऐसा ही दस्तूर है।

और उसके साथियोंके इस युद्धके हलाहतोंका समाचार

प्रकाशित न करनेपर भी जापानियोंने अपने हताहतोंका समाचार प्रकाशित कर दिया। उनकी ओरसे निकला—"इस युद्धमें हमारे एक सौ छियालीस पुरुष मारे गये, जिनमें दश अफसर थे और नौ सौ पचीस सिपाही आहत हुए, जिनमें सैंतालीस अफसर थे; रात्रियुद्ध होनेसे अधिक अफसर आहत हुए।" जापानियोंने रूसी फौजके बहुसंख्यक सिपाही और अफसर गिरफ्तार कर लिये थे। गिरफ्तार अफसरोंमें एकने प्रकट किया,—"इस युद्धमें रूसकी ओरके कोई दो हजार पुरुष हताहत हुए। सिवा इनके रूस-सेनापति सेकालाफ और करटाटोनिच आहत हुए हैं।" यह समाचार एक रूसी अफसरने दिया था। रूसकी इतनी बड़ी पराजयकी क्षति लोगोंकी अटकल और कल्पनापर आजतक छूटी हुई है। इसी युद्धके फलसे रूसियोंको जापानके क्रम क्रमसे सङ्कुचित होनेवाले अर्द्धचन्द्राकार सैन्य-व्यूहके दबावसे पीछे हट निउच्वाङ्गसे कुछ ही दूर आगेके हैचिङ्ग नगर और उसके आसपासकी छोटी पहाड़ियोंका आश्रय लेना पड़ा था। हैचिङ्ग-युद्ध और अभूतपूर्व रणकौशल-जनित अर्द्धचन्द्राकार जापन-सैन्य-व्यूहके क्रमिक सङ्कोचका हाल हम आगे चलकर स्वतन्त्र परिच्छेदमें लिखेंगे; इस समय पाठक ताशीचाव-युद्धकी एक आनुसङ्गिक घटना सुन लें; जो कम प्रयोजनीय नहीं।

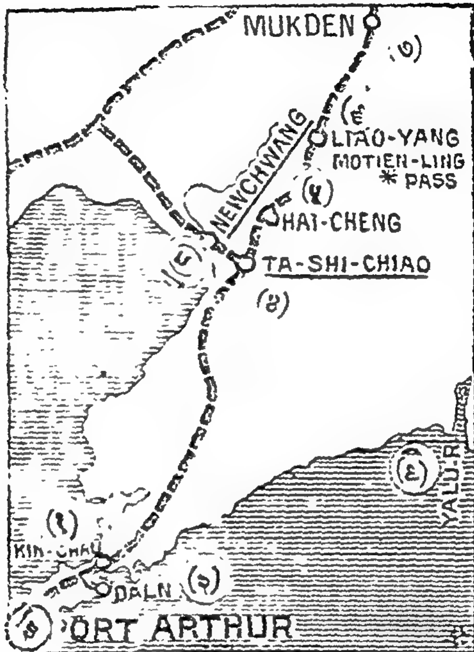
यङ्गको उर्फ निउच्वाङ्ग-बन्दरका नाम हमारे किसी पाठकको यदि याद आये, तो आ सकता है; क्योंकि इस पुस्तकके प्रथम भागके किसी परिच्छेदमें इसका नामोल्लेख हो चुका है। जिन दिनों ताकुशान स्थानमें सेनापति नोजूकी सैन्य जहाजसे उतरी थी, उन्हीं दिनों जापानके कई जङ्गी जहाजोंने पत्थर-बन्दरकी

परिक्रमाकर इस निउच्वाङ्ग बन्दरके समीप जापानी सैन्य आ उतारी थी। यह जापानी फौज किनारे उतर कुछ दूरतक यङ्ग-कौकी बगलमें बढ़ी, जिससे बन्दरस्थ नगरमें बड़ी हलचल पड़ गई थी; निउच्वाङ्गकी रूसी फौज भाग खड़ी हुई थीं। उस समय वहां कुछ ही देर ठहर जापानी फौज अपने जहाजोंसे वापस गई थीं और इस फौजके जानेका समाचार सुन भागी हुई रूसी फौज बन्दरमें लौट आई थी। उस समय इतना ही हुआ था; इसलिये इतना ही समाचार इस पुस्तकके प्रथम भागके एक परिच्छेदमें दिया गया।

जैसे भारतमें कलकत्ता, बम्बई, मन्द्राज, करांची प्रभृति समुद्र-तटके व्यवसाय-केन्द्र हैं, उसी तरह लम्बी लियावटुङ्ग-खाड़ीके बायें छोरपर अवस्थित यह निउच्वाङ्ग-बन्दर है। बन्दरकी बगलमें लियावहो-नदी और लियावटुङ्ग-खाड़ीका सङ्गमस्थल है। लियावहो नदीके चौड़े दहानेके इसपार रूसका निउच्वाङ्ग-बन्दर है और उसपार चीनकी कोई बसती। मानो लियाव हो नदी ही रूसके मञ्चूरियाको चीनके चीन-साम्राज्यसे जुदा करती थी; उसके इसपार रूसका राज्य था और उसपार चीनका। यथा-स्थान लिख चुके हैं, कि ताशीचाव, साइबिरिया-अरथर-बन्दर रेल-पथका जङ्क्शन स्टेशन था; इस जङ्क्शनसे एक शाखा रेल-पथ चल इसी निउच्वाङ्ग तक आया था; यहां इसपार रूसके निउ-च्वाङ्गमें रूसियोंके रेलपथका छोर था और उसपार चीनकी उस बसतीमें चीनके रेलपथका। एक रेलपथसे दूसरे रेल-पथमें आनेवालोंको लियावहो नदी नाव द्वारा पार करना पड़ती थी।

उन दिनों रूसके इस निउच्वाङ्ग-बन्दरमें व्यवसाय बड़े जोरों-

युद्धक्षेत्रका मानचित्र।



(१) किनचौ; (२) डालनी-बन्दर; (३) घरघर-बन्दर; (४) ताशीचाव (५) है-चिङ्ग; (६) लियाव्यांग; (७) मुकदन; (८) निउच्वाङ्ग-बन्दर; (९) यालू नदीका मुहाना।

२य भाग ८० पृष्ठ।

पर था; व्यवसाय प्रधान सभी जातियां बन्दरमें जमी बैठी थीं। इसका प्रधान व्यवसाय—चीना बोड़के आटेकी मोटी रोटी थी। इसके व्यवसायी लियावहो नदीकी तटस्थ बस्तियोंसे बोड़के दाने खरीद सैकड़ों नावों द्वारा निउच्वाङ्ग लाते और वहां कलों द्वारा दाने पिसवा उनकी 'केक' नाम्नी एक तरहकी खमीरी मीठी रोटी बनवा रेल द्वारा, जहाज द्वारा दक्षिण-चीन, जापान और कोरिआ भेजते। नावों द्वारा चमड़ा, फर और लकड़ भी लाते; किन्तु इनसे उतना लाभ उठा न सकते। वस्त्रका बाजार हमारे राजा अङ्गरेजोंके हाथ था। जर्मनी और अमेरिका यह दोनों शक्तियां भी अपने अपने व्यवसाय फैला डटी बैठी थीं; इसतरह विविध जातियों और विविध द्रव्योंका व्यवसाय-केन्द्र होनेकी वजह निउच्वाङ्ग नाना जातिके अधिवासियोंसे; प्रधानतः चीना जातिके अधिवासियोंसे परिपूर्ण हो बड़ा ही रौनकदार बना हुआ था। इस बीसवीं शताब्दिकी सभी सजावटोंसे निउच्वाङ्ग सुसज्जित था। रेल थी, तार था, राहें थीं, मकान थे, बड़े बड़े बाजार थे, युरोपीय तथा अमेरिकन जातियोंकी अद्भुत दुकानें थीं,—दूसरी ओर मिउनिसिपल्टिी थी, पुलिस थी, अदालत थी, बङ्क था, कल-कारखाने थे;—कहांतक गिनायें—समझ लीजिये, कि निउच्वाङ्गमें सब कुछ था।

ताशीचाव-युद्धसे पहले जापान-सेनापति ओकूकी फौज जिस कैचौ नगरमें अवस्थित थी, उसके और उसकी बगलकी खाड़ीके बीचसे यदि कोई सीधी पंक्ति खींची जाती, तो उस पंक्तिका सिरा पहले निउच्वाङ्ग-बन्दरके सामने और पीछे पूर्व्वोक्त युद्धस्थल ताशीचाव नगरके सामने पहुंचती। ऐसी स्थितिमें जापानी फौजें यदि चाहतीं,

तो ताशीचाव-युद्धसे पहले निउच्वाङ्ग-बन्दरपर अधिकार कर लेते; किन्तु उन्होंने ऐसा नहीं किया। ओकूकी सैन्यका वह भाग, जो सैन्यके मध्यभागसे समुद्रतटतक फैल अपने जहाजोंसे रसदादि लेता हुआ आगे बढ़ रहा था; निउच्वाङ्गसे कुछ इधर ठहर अपने दाहने अंशको आगे बढ़ ताशीचावके-युद्धमें प्रवृत्त होने दे और उस युद्धका फल प्रकट होनेतक अपनी जगह बैठा रहा।

ताशीचाव-युद्ध और जापानी फौजके बायें भागके आगे बढ़ निउच्वाङ्गसे कुछ फासिलेपर ठहरनेका हाल निउच्वाङ्गके अधिवासियोंसे छिपा नहीं था। हमवरम तार द्वारा समाचार आते, जो समाचारपत्रों द्वारा या अन्यान्य उपायों द्वारा लोगोंको मालूम हो जाते।

२४वीं जुलाईको जापानी सैन्यपंक्ति निउच्वाङ्ग छोड़ ताशीचावकी ओर बढ़ी; २४वीं होसे ताशीचावकी घनी बस्तीमें उदासी छा गई। २५वींको दिन कोई नौ या दश बजेसे ताशीचाव-युद्ध आरम्भ हुआ। निउच्वाङ्गके रूसी बड़ी बेचैनीसे युद्धके फलाफलकी प्रतीक्षा करते थे। २५वींको दिनभर युद्धस्थलसे जो समाचार मिला, रूसियोंके लिये वह परमआनन्दका समाचार था। किन्तु इसी दिन रात दश बजेके उपरान्त एकाएक जब जापानियों द्वारा रात्रि-युद्ध आरम्भ होनेका समाचार मिला, तब निउच्वाङ्गके रूसियोंके छक्के छूट गये। उधर प्रधान सेनापति कुरोपाटकिनको जैसे ही ताशीचावमें रात्रि-युद्ध आरम्भ होनेका समाचार मिला, वैसे ही उन्होंने निउच्वाङ्गके रूसियोंको कैद होनेसे बचानेके लिये यथासम्भव शीघ्र निउच्वाङ्ग परित्यागकर पीछे हटनेकी आज्ञा दी। २५वीं को अर्द्धनिशासे पहले एक

ओर ताम्रीचावमें घोर युद्ध चल रहा था; रात्रिके सन्नाटेमें युद्धका कोलाहल दूर दूरतक पहुंच रहा था—निडच्वाङ्गतक पहुंच रहा था; दूसरी ओर निडचवाङ्गके रूसी निडच्वाङ्ग परित्याग करनेकी तय्यारी कर रहे थे। चीना महल्लोंसे सटा हुआ निडच्वाङ्गके रावा रूसियोंका स्वतन्त्र महल्ला था। दुकानदार, कारखानादार, जहाजी क्लार्क, सरकारी कर्म्मचारी, गैर सरकारी कर्म्मचारी,—सभी तरहके बहुत बहुत रूसियोंका इस महल्लेमें निवास था। रूसी स्त्रियां थीं, रूसी शिशु-कन्यायें थीं,—रूसी घर बना निडच्वाङ्गमें रहते थे। २५वीं जुलाईको प्रायः अर्द्ध-निशाके समय महल्लेके समस्त रूसियोंको जिस समय शीघ्र ही नगर परित्याग करनेकी आज्ञा मिली, उस समय उनमें खलबली पड़ गई।

गाड़ियोंपर, पशुओंपर, कुलियोंपर,—नाना वाहन नाना यानपर रूसियोंका माल-असबाब लदने लगा। कहीं दीवारगीर दीवारसे तोड़ जुदा किये जाने लगे; कहीं झाड़-फानूस छतसे उतारे जाने लगे। कोई किसीको सहारेके लिये बुलाने लगा; कोई किसीको सहारा देने लगा। रूसी महल्लेमें इतनी हलचल देख पड़ोसी चीना तमाशा देखनेके लिये रूसी महल्लेमें आ जमा हुए। उन्होंने देखा, कि इतने दिनोंका बसा हुआ रूसी महल्ला पुटलियोंमें उजड़ गया; लहलहेके कुल रूसी जब एक जगह एकत्र हो चुके, तब कुछ रूसियोंने आगे बढ़ रूसी महल्लेके मकानोंको आग लगा दी। रूसी महल्ला जलने लगा साथ साथ पड़ोसका चीना महल्ला भी जलने लगा। जो चीना आग बुझानेकी चेष्टा करते थे, वह रूसियों द्वारा दण्ड पाते थे। इतना ही

नहीं; भागते हुए रूसियोंने चीनाओंपर शायद भयङ्कर अत्याचार किये थे; निउच्वाङ्गके विदेशियोंतकने दो चार शब्दोंमें रूसियोंके इस कामकी निन्दा की है। इसतरह निउच्वाङ्गके रूसी महल्लेकी समाप्ति रात चौथीको हो गई; रात होतेही नगरके रूसी हाकिमोंकी मण्डली और पुलिस रफूचक्कर हो गई। प्रातःकाल सूर्योदयसे पहले निउच्वाङ्गके समीपके किलोंकी रूसी फौज छः तोपोंके साथ एक ओर भागी। भागनेके समय निउच्वाङ्ग रेल-ष्टेशनको आग लगाती गई, किन्तु इस आगसे कोई क्षति नहीं हुई। जैसे ही आग लगा रूसी फौज घटनास्थलसे हटी, वैसे ही अवसरकी प्रतीक्षा करते हुए चीनाओंने झपटकर ष्टेशनकी आग बुझा दी।

२६वींको प्रातःकाल निउच्वाङ्ग बहुत कुछ वीरान दिखाई दिया। रूसी महल्ले और उसके समीपके चीना महल्लेकी आग बुझकर भी अभी पूर्णरूपसे बुझी नहीं थी। ष्टेशन झुलसा हुआ था। बाजार-हाट बन्द थे; दुकानोंपर मोटे मोटे ताले चढ़े थे। कानिष्टबल नहीं थे, थाना नहीं था, थानादार नहीं थे,—फौजदारी अदालत नहीं थी, दीवानी, अदालत नहीं थी, चुङ्गीघर नहीं था,—सिर्फ एक मकानपर रूसी ध्वजा उड़ती थी, जिसमें एक मुलकी अफसर बैठ जापानियोंके आने और उनके हाथ कुछ प्रयोजनीय कागज दे चले जानेके लिये बैठे थे। नगर अनाथ था, हरेक अपना अपना रक्षक था। नगरकी ऐसी अवस्थामें जो कुछ होता है, वही होने लगा। कहींसे 'मार मार' की आवाज आने लगी; कहींसे 'खून खून' का शोर होने लगा।

जगहसे मार-पीट या भागने-पीछा करनेकी आवाजें,

छाने लगीं। नगरके बदमाशोंने सुअवसर पा अपना कार्य आरम्भ किया।

रूसी चले गये थे; किन्तु अङ्गरेज, जर्म्मन, अमेरिकन, फ्रांस्वीसी प्रभृति अबतक नगरमें मौजूद थे। नगरके चीना अधिवासी इन विदेशियोंको उतना पसन्द करते नहीं थे। विदेशी भी यह बात जानते थे। उनके मनमें भय उत्पन्न हुआ। बन्दरमें विदेशियोंका एक भी गनबोट नहीं था; होता तो, वह उससे सहारा लेते; ऐसी अवस्थामें वह सब साहाय्यार्थ जापानी फौजोंके आगमनकी प्रतीक्षा करने लगे। दिन आठ बजा, नौ बजा, दश बजा,—दोपहर हो गई, तो भी जापानी फौज निउचवाङ्गमें न आई। अब क्या किया जाये? विदेशी सोचने लगे, कि आज यदि जापानी निउचवाङ्गमें न आये, तो रात्रिके समय उन्हें चीनाओंके हाथों अकल्पनीय दुर्दशा भोगना होगी। इस सङ्कटके समय समग्र विदेशी पुरुषोंने मिलकर पहरेका काम आरम्भ किया। विदेशी आप अपने महल्लेकी रक्षा करने लगे। दिन ढलनेपर भी जापानियोंको न देख उत्पाती चीनाओंके हर्षका ठिकाना न रहा; रात्रिके आगमनतक लूटकी उत्कण्ठा संवरण करनेमें अक्षम हो कितने ही चीना लुटेरोंने नगरमें घुस दुकान तोड़ माल लूटना आरम्भ किया। इस समाचारसे अधीर हो विदेशी पहरादार चीना लुटेरोंको मार भगानेका आयोजन करने लगे; ऐसे समय समग्र नगरमें 'जापानी जापानी' का शोर हुआ।

गिनतीके जापानी सवार निउचवाङ्ग आये। उन्हें देख नगरके एक मकानपर जो रूसी ध्वजा उड़ती थी, वह उतार दी गई; उसके बदले फ्रान्स-सरकारकी तिरंगी ध्वजा चढ़ा दी

गई। इस गिनतीके सवारोंने निउच्वाङ्गमें कुछ कोई काम न किया, घने मकानोंमें सिर्फ दूर दूर खड़े रहे। सन्ध्या कोई साढ़े पांच बजे एकाएक घोड़ोंके टापोंकी आवाजें आने लगीं; रिसाला आता जान पड़ा। देखते देखते कोई डेढ़ सौ जापानी सवारोंने नगरप्रवेश किया। जापानी सवारोंके वह घोड़े, उनकी वह चमकीली वरदियां उनके वह शानदार हथियार, उनकी वह गम्भीर मूर्त्ति, उनका थमी हुई रानपटरीके साथ वह तनकर बैठना; निउच्वाङ्गके अधिवासियोंको बहुत ही पसन्द आया। चीना जापानियोंके जाति-भाई ही थे; भय शुङ्का—कुल आशङ्कायें मनसे निकाल अपने अपने मकानोंसे निकल इन नवागत जापानी सवारोंको नाना रूप और नाना भावसे अभ्यर्थना करने लगे; चीनाओंके कण्ठसे निकली हर्षध्वनि द्वारा बारंबार निउच्वाङ्ग नगर प्रतिध्वनित होने लगा। चीनाओंके साथ साथ विदेशियोंने भी जापानी रिसालेका स्वागत किया।

जापानी रिसालेके प्रधान अफसरसे नगरके प्रतिष्ठित पुरुषों और गण्य-मान्य विदेशियोंने भेंट की। विदेशियोंने पूछा, कि आप अब क्या करना चाहते हैं? अफसरने प्रत्युत्तरमें कहा,— "मैं एक रिसालेके साथ हूं; बड़े अफसरकी आज्ञा पा इतने सवार साथ ले नगरमें चला आया हूं। नगरमें कुछ देर ठहर कर, नगरकी अवस्था अपनी आंखों देख ताशीचाव पहुंच अपने सेनापतिको नगरका समाचार दूंगा।" यह सुन विदेशियोंने सोचा; हे राम! इतनी प्रतीक्षाके उपरान्त इतने सुव्यवसरपर रिसाला आया भी, तो शीघ्र ही लौटनेके लिये; रात कैसे कटेगी? विदेशियोंने जापानी अफसरसे अपनी आशङ्का

प्रकट की। जापानी अफसरने कुछ सोच-विचार रातभर नगरमें रहना स्थिर किया।

इस बातचीतके उपरान्त जापानी रिसाला नगरमें गश्त लगाने निकला। जिस ओरसे निकला, उसी ओरके अधिवासियोंने हर्ष-ध्वनि, पुष्पवृष्टि या अन्यान्य हर्ष-सूचक चिह्नों द्वारा जापानी रिसालेका स्वागत किया। जापानियोंने नगर-परिक्रमा करनेके साथ साथ कुल सरकारी इमारतों, कुल किलों आदिका विशेषरूपसे निरीक्षण कर अन्तमें विदेशियोंके महल्लेमें लौट एक बड़ी इमारतमें डेरा डाला। जिस मकानमें जापानियोंका डेरा पड़ा, उसके समीप होके एक मकानमें अपने देश-भाई युरोपियनोंमें छिपा एक रूसी सिपाही बैठा था। जापानी सवार इस रूसीको देखते ही इसके पास पहुंचे। जापानियोंको देख मानो अत्यन्त गर्म हो रूसी सिपाही अपने शिरकी टोपी उतार उससे अपने चेहरेपर हवा करने लगा। इसपर एक जापानीने मुस्कुराकर अपना हस्तो पङ्खा निकाल रूसीको दिया। पङ्खे पर जापानकी राज-पताका चिह्नित थी। यह पताका देख खूब नाराज हो रूसी पङ्खा तोड़ डालनेकी इच्छासे उससे अपनेको प्रबल वेगसे हवा करने लगा। रूसीके इर्दगिर्द बैठे लोग खिलखिलाकर हंस पड़े; किन्तु जिस जापानीका पङ्खा था, उसका आकार एकाएक गम्भीर हो गया और उसने अघोर हो भरा हुआ तमञ्चा निकाल उस रूसीके शिरके सामने कर दिया। अब पङ्खा कैसे तोड़ा जा सकता था? जिन प्राणोंकी ममताके लिये रूसी फौज परित्याग की गई, वही प्राण क्या एक सड़े से पङ्खेके लिये गंवाये जा सकते थे? रूसी कैद किया और पहरेमें रखा गया। इसी रात कितने

ही विदेशियोंने मिलकर एक झगड़ेकी बात निकाली। जापानी अफसरसे कहा,—"रूसकी कुल सरकारी इमारतोंपर फ्रान्सीसी झण्डा चढ़ा दिया गया है; यह सब इमारतें अब फ्रान्सकी हैं; इनपर जापानका अधिकार हो नहीं सकता।" सुचतुर और बुद्धिमान् जापानी अफसरने मुस्कुराकर सिर्फ गरदनके इशारेसे यह बात स्वीकारकर झगड़ा मिटा दिया।" विदेशियोंको झगड़ा बढ़ानेका तनिक भी अवसर न दिया।

दूसरे दिन प्रातःकाल एक लफटनण्टकी अधीनतामें थोड़ेसे सवारोंको नगरमें छोड़ जापानी रिसाला अपने नवाधिकृत स्थान ताशीचावकी ओर चला गया। दूसरे दिन जापानियोंकी एक बटालियन पैदल फौज आ पहुंची। इस फौजके साथ साथ जापानी मुल्की हाकिम मेजर तकायामा थे। आपने नगरप्रवेश करते ही रूसकी सरकारी इमारतोंपर अधिकारकर नगरवासियोंके नाम एक विज्ञापन निकाला। विज्ञापनमें लिखा था,—"आजसे निउच्वाङ्ग नगरपर जापानियोंका अधिकार हुआ; नगरवासियोंकी धन-प्राण-रक्षा जापानियों द्वारा होगी।" रूसी मुल्की अफसर जापानी मुल्की अफसरके हाथ कागज-पत्र दे नगरसे चले गये। अन्यान्य नगरोंमें कागज-पत्र देनेके लिये रूसी मुल्की अफसर छोड़े नहीं गये थे; निउच्वाङ्गमें शायद इसलिये छोड़े गये, कि कहीं जापानी मुल्की अफसर विदेशियोंसे अतिरिक्त कर या महसूलादि ग्रहणकर उन्हें कष्ट न दें।

जापानी फौज एक दिन नगरके निकटस्थ किलोंमें रही। इस अवसरमें थोड़ेसे फौजी सिपाही ले जापानियोंने नगरके पहरेका प्रबन्ध कर लिया। इसके उपरान्त जापानी फौज नगर परित्याग-

कर आगे बढ़ गई। इधर कुछ ही दिनोंमें जापानी फ़ौजी अफ़स-रोंने नगरमें पूर्ववत् शान्ति स्थापित कर दी। रूसियोंके किये अत्याचार आदिके कुल चिह्न मिटा दिये। रूसी सरकारी इमारतोंपर जापानियोंका क़ब्ज़ा हो गया; किसीने किसी तरहकी विघ्न-बाधा उपस्थित नहीं की। झगड़ेकी सिर्फ़ एक बात रह गई। रूसने मञ्चूरिया-ग्रास करनेके उपरान्त अपनी स्वार्थ-सिद्धिके लिये 'रूसो-चाइनीज़बैङ्क' नामक एक बैङ्क खोला था। रूसने इसकी शाखायें समग्र मञ्चूरियामें खोल दी थीं। मञ्चूरिया तो मञ्चूरिया, —भारतके इस कलकत्ता और बम्बई नगरमें भी इस बैङ्ककी शाखायें स्थापित कर दीं, जो आजतक मौजूद हैं। इस बैङ्ककी ऐसी ही एक शाखा निउच्वाङ्गमें भी थी। यह शाखा कोई पन्द्रह लाख रुपये निउच्वाङ्गवासी चीनाओंको क़र्ज़ दे चुकी थी; ऐसे समय जापानियोंके आगमनका समाचार प्रकाशित हुआ। बैङ्कके रूसी अफ़सर और कोई उपाय न देख बैङ्क फ़्रान्सीसियोंके नाम लिख रफ़ूचक्कर हुए। निउच्वाङ्गमें अवस्थित जापानी फ़ौजी अफ़-सरोंने जब बैङ्कको शत्रुका माल बता उसपर अधिकार करनेकी चेष्टा की, तब फ़्रान्सीसियोंने जापानियोंके इस कामपर घोर आ-पत्ति की। किन्तु यह आपत्ति टिक न सकी; अन्तमें धर्मकी जय हुई; बैङ्कको फ़्रान्सीसी ध्वजा उतर गई और जापानी पताका फहराने लगी।

एक ओर निउच्वाङ्गमें जापानियोंका सिक्का जमा; दूसरी ओर कितने ही विदेशी जङ्गी जहाज़ निउच्वाङ्ग-बन्दरकी ओर चले; किन्तु उनके बन्दरमें पहुंचनेसे पहले ही निउच्वाङ्गमें मारशल ओयामाका दस्तख़ती एक विज्ञापन प्रकाशित हुआ।

विज्ञापनमें लिखा था,—"जबतक दूसरा आज्ञापत्र न निकले, तबतक किसी विदेशीका कोई जङ्गी जहाज निउच्वाङ्ग-बन्दरमें आने न पाये।" इस आज्ञा-प्रचारसे विदेशियोंमें बड़ा असन्तोष फैला; किन्तु उपाय क्या था; प्रबलप्रताप जापनियोंकी आज्ञाका निरादर कैसे किया जा सकता था? १ली अगस्तको जापानका एक बड़ा जङ्गी जहाज, एक छोटा जङ्गी जहाज और तीन गनबोट निउच्वाङ्ग-बन्दर पहुंच गये। सिवा इनके रेल द्वारा, जहाज द्वारा बहुतसे व्यवसायी अपने माल-असबाबके साथ निउच्वाङ्गके बाजारोंमें पहुंच गये। इतना हो चुकनेपर मारशल ओयामाने विदेशियोंके जहाजोंको बन्दरमें आनेकी परवा-नगी दी। यह आज्ञा पाते ही बन्दर विदेशियोंके जहाजोंसे परिपूर्ण हुआ; बाजारमें विदेशी मालका ढेर लगने लगा। खरीद-फरोख्त चल पड़ी। कुछ ही दिनोंमें निउच्वाङ्गका व्यवसाय पूर्ववत् चलने लगा। एक राजाका राज्य गया; दूसरेका आया। आंधी निकल गई; संसार अपने काममें लगा। आंधी निकल जाते ही, तूफान शान्त होते ही संसार इसीतरह अपने काममें लग जाया करता है।

सप्तम परिच्छेद ।



रूस और विदेशियोंके जङ्गी जहाज—
मसक्का, नाइट कमाण्डर, हिसपङ्ग इत्यादि ।

क्रमागत युद्ध-घटनाओंके वर्णनमें उलझकर इस युद्धकी कितनी ही सामयिक बातें हम लिख नहीं सके ; जानबूझकर छोड़ आये । किन्तु अब उन्हें छोड़ना भला जान नहीं पड़ता, क्योंकि जिन घटनाओंका वर्णन हम छोड़ आये हैं, वह पीछेकी हैं और अब हम जैसे जैसे आगे बढ़ते जायेंगे, वैसे वैसे वह घटनायें और भी पीछे होती जायेंगी । भूमिका देख व्यग्र होनेका प्रयोजन नहीं ; कुल बातें एक साथ हम लिख भी नहीं सकते और कुल बातें एक साथ आप पढ़ भी नहीं सकते । धैर्य्यसे काम बनता ; त्वरासे बिगड़ता है ;—हम धीरे धीरे कुल घटनायें लिखे देते हैं ; आप धीरे धीरे उन्हें पढ़ लीजिये ।

इस युद्धके वर्णनमें रूसके दो जङ्गी जहाजोंके बेड़ेका जिक्र आया है । एक आरथर-बन्दरके बेड़ेका और दूसरा बलडीव-स्तकके बेड़ेका । किन्तु रूसके इन्हीं दोनो बेड़ोंको रूसकी पूरी जल-शक्ति समझना न चाहिये । जो रूस-साम्राज्य आधे युरोप और आधे एशियामें विस्तृत है, उसकी बल-शक्ति इतनी ही कैसे हो सकती है ? सिवा पूर्व्वोक्त दोनो बेड़ोंके उस समय रूसके दो बेड़े और थे । एक बेड़ा रूसके बालटिक-सागरमें था ; बालटिक-बेड़ा कहलाता था ; दूसरा बेड़ा कृष्ण-सागरमें था । प्रथमोक्त

बेड़े की अपेक्षा पूर्वोक्त बेड़ा छोटा था; बल्लमटेर-बेड़ा कह-लाता था। इस बल्लमटेर बेड़े का होना न होना बराबर था। कारण, रूस के डारडनेलेस-मुहानेसे ही यह बेड़ा खुले समुद्रमें आ सकता था और रूसने जगत्‌के सम्मुख बहुत दिनों पहलेसे यह बात स्वीकार कर ली थी, कि शान्तिके समय यह बेड़ा कृष्ण-सागरसे निकल सकता था; किन्तु युद्ध-विग्रहके समय नहीं। इसलिये वर्त्तमान नियमानुसार वर्त्तमान युद्धके समय यह बेड़ा तो बेड़ा,—इसका एक जहाज भी कृष्णसागरसे निकल नहीं सकता था। रूसी बेड़ा यदि निकलना भी चाहता, तो रूसके डारड-नेलेसमें बैठे रूसी सिपाही उसे आगे बढ़ने न देते।

किन्तु युरोपकी सर्व्वप्रधान शक्ति रूस सभी बातोंमें बड़ी है। एक दिन कृष्णसागर-बेड़े के दो छोटे जङ्गी जहाजोंको दो आज्ञापत्र मिले। दोनो आज्ञापत्रोंके साथ एक एक बन्द लिफाफा था। आज्ञापत्रमें लिखा था,—"दोनो जहाजोंके कपतान अपने सिपाहियोंके साथ अपने जहाजोंका रूप-रङ्ग बदल उन्हें डारड-नेलेस-मुहानेसे निकाल रूम-राजधानी कुस्तुनतुनिया पहुंचायें और वहां इस आज्ञापत्रके साथके दोनो लिफाफे खोल उनमें बन्द कागजमें लिखे विषयसे अवगत हों।" दोनो जहाजोंमें एकका नाम था पिटरबर्ग और दूसरेका स्मोलेंस्क। रूस-सर-कारके आज्ञानुसार कार्य्य आरम्भ हुआ। दोनो जङ्गी जहाजोंने तोपें आदि छिपा सौदागरीके जहाजोंकी मूर्त्ति धारण की और वह डारडेनेलेसमें बैठे रूसी सिपाहियोंकी आंखोंमें खाक झोंक कुस्तुनतुनिया नगरके किनारे पहुंच गये। वहां दोनो जहाजोंके ...ों बन्द लिफाफे खोले। लिफाफोंके भीतरके कागजोंमें

लिखा था,—"दोनो जहाज दूसरे दरजेके छोटे जङ्गी जहाज बनाये गये और दोनो जहाजोंके अफसरोंको अमुक अमुक पद प्रदान किया गया।" इसके उपरान्त दोनो जहाजोंके अफसरोंको लिखा गया था, कि तुम दोनो रक्त-सागरमें पहुंच युरोपसे एशिया जाते हुए जहाजोंको गिरफतारकर उनकी तलाशी लो; जिस जहाजने जापान जाते हुए युद्धोपकरण दिखाई दें, उस जहाजको पकड़ जब्त कर लो।

दोनो जहाज कुस्तुनतुनिया परित्यागकर रक्त-सागरकी ओर चले। ६वीं जूनको दोनो रक्त-सागरके छोरपर स्वेज नहर पहुंच गये और युरोप तथा एशियाके बीच आनेजानेवाले युरोपीय जहाजोंके आगमनकी प्रतीक्षा करने लगे। १८वीं जनको दोनोंने जर्म्मनीका 'प्रिन्स हेनरिक' जहाज गिरफतार किया और उसकी खूब तलाशी ले उसे छोड़ दिया।

१३वीं जुलाईको और एक गिरफतारी हुई। इसबार जापानियोंके मित्र अङ्गरेजोंके जहाजोंकी बारी आई। अङ्गरेजोंकी पिस "पेनिनसुलर एण्ड ओरियण्टल कम्पनी" या पी० एण्ड ओ० कम्पनीके जहाज विलायत और भारतके बीच डाकादि पहुंचाया करते हैं, जिसके जहाज कलकत्ते और सुदूर पूर्व्वके बीच चला करते हैं; उसी कम्पनीका मलक्का नामक जहाज मुसाफिर और माल ले लण्डनसे चीन और जापान जा रहा था। १३वीं जुलाईको दिन कोई साढ़े दश बजे स्वेजसे आगे पेरिम टापूसे कोई सत्तर मील उत्तर रूसके दोनो जहाजोंको मलक्का मिला। दोनो जहाजोंने सङ्केत द्वारा मलक्काको ठहरा दिया। कितने ही जहाजी सिपाहियोंके साथ एक रूसी अफसर मलक्कामें

पहुंचे। आपने युद्ध-सामग्रीका अनुसन्धान किया; न मिलनेपर मुसाफिरोंसे पूंछताछ की। अङ्गरेजोंकी ओरसे तो यहांतक प्रकाशित हुआ है, कि रूसी अफसरने मलक्काके कप्तान ब्रोट साहबको युद्ध-सामग्रीका पता बता देनेके लिये कोई तीस सहस्र रूपये पारितोषिक देना स्थिर किया था; किन्तु इन बातोंका कोई फल नहीं हुआ। मलक्काके कप्तानने स्पष्ट कह दिया, कि इस जहाजमें कोई युद्ध-सामग्री नहीं; जो विस्फोरक पदार्थ मौजूद हैं; वह सरकारी हैं; विक्रीके या जापानके लिये नहीं। कप्तानकी बातें सुन रूसी अफसर सन्तुष्ट होनेके बदले क्रुद्ध हुए। आपने अपने जहाजमें लौट चालीस सिपाहियोंको मलक्का जहाजमें भेज दिया। इन सिपाहियोंने जहाजपर अधिकार कर लिया और जहाजपर उड़ती हुई ब्रटिश पताका फाड़ उसकी जगह रूस-पताका उड़ा दी। २०वीं जुलाईको दोनो रूसी जहाजोंके पहरेमें मलक्का सईद-बन्दर पहुंचाया गया और वहां मिश्र-सरकारके पहरेमें रोक दिया गया। मलक्काकी गिरफतारीके समाचारसे समग्र जगत्‌के अङ्गरेजोंमें खलबली पड़ गई। अङ्गरेजोंका भूमध्य-सागरका बेड़ा सजने लगा; इस बेड़ेके नितान्त शीघ्रगामी 'टेरिबुल' और 'पाकमपुल' नामक दो दूसरे दरजेके जङ्गी जहाज रक्तसागरकी ओर दौड़े।

मलक्काकी गिरफतारीपर अङ्गरेजोंने जैसा क्रोध प्रकाश किया था, उससे रूस और अङ्गरेजोंके बीच युद्ध छिड़ जानेकी आशङ्का उपस्थित हुई थी; किन्तु ऐसा हो नहीं सकता था। युरोपकी शक्तियां अपना हानि-लाभ खूब समझती हैं; बिना ~ट उपस्थित हुए घरमें युद्ध आरम्भ नहीं करतीं। युद्धके

समय अङ्गरेजोंने जापानका पक्ष ग्रहण किया था और फ्रान्सी-सियोंने रूसका। अङ्गरेज यदि रूससे भिड़ जाते, तो रूसकी ओरसे फ्रान्स अङ्गरेजोंसे भिड जाता; इसतरह एक एशियाई और तीन युरोपीय शक्तियां इस संग्राममें शरीक हो जातीं; अधिक क्षति युरोपीय शक्तियों हीकी होती; इन्हीं सब कारणोंसे युद्ध आरम्भ नहीं हुआ। फिर; रूसी भी मान गये। ब्रटिश सरकारने जब मलक्काके सम्बन्धमें रूस-सरकारसे लिखा-पढ़ी की, तब रूस-सरकारने प्रत्युत्तरमें कहा,—"मलक्काके कप्तानने अपने जहाजकी तलाशी करानेसे इनकार किया था; इसीलिये वह गिरफ्तार कर लिया गया। शीघ्र ही मलक्काकी तलाशी होगी और इसके उपरान्त उस जहाजका फैसला होगा।" २७वीं जुलाईको मलक्का फ्रान्सीसियोंके अलजीर बन्दरमें पहुंचाया गया। वहां एक ब्रटिश अफसरके सामने उस जहाजकी तलाशी हुई। तलाशीमें वैसी कोई चीज न निकली। मलक्का छोड़ दिया गया; उस समयका वह झगड़ा मिटा।

दोनो रूसी जहाजों द्वारा युरोपीय जहाजोंकी इसतरह रोक-टोक होनेसे जर्मनी और इङ्गलैण्ड दोनोंने रूसको खूब लाल आंखें दिखाईं। इसके फलसे रूस-सरकारने अपने दोनों जहाजोंको क्रूजरसे फिर सौदागरोंका जहाज बना दिया और वादा लिया, कि भविष्यत्में और कोई जहाज कृष्णसागरसे चोरी चोरी निकाला न जायेगा। शायद ब्रटिश सरकारने रूसके इस वादेका उतना विश्वास नहीं किया; इसीलिये उसने अपना दश हजार टनका छोटा जङ्गी जहाज लङ्काशरो डार्डेनेलस-मुहानेपर भेज दिया। कहते हैं, कि खूब पक्का वादा करनेपर भी एक दिन रूसके कृष्ण-

सागरकी ओर कितने ही जहाज खुले समुद्रमें निकलनेके लिये डारडेनेलिस-मुहानेतक गये; किन्तु वहां अङ्गरेजोंको बड़ा बेड़ा खड़ा पा दुम दबा लौट गये।

एक ओर यह हुआ, दूसरी ओर रूसी ब्लाडीवष्टक-बेड़े द्वारा कितने ही जहाज पकड़े, जब्त किये और डुबाये गये। नाइट कमाण्डर और हिपसङ्ग नामक जहाज डुबाया गया, अलःनान पकड़ा और ब्लडीवष्टककी फौजी अदालत द्वारा जब्त कर लिया गया। सिवा इनके छोटे मोटे और भी कितने ही जहाज धरे पकड़े गये। वारंवार परास्त हो रूस मानो झल्ला उठा था; विशेषतः जापानके पक्षपाती अपने चिरशत्रु अङ्गरेजोंसे और भी चिढ़ा था और उनके जहाजोंपर तीव्र दृष्टि रखता था। उन्हीं दिनों रूस रूस-सरकारने कितनी ही चीजोंकी एक फिहरिस्त प्रकाशितकर कहा, कि जिस जहाजमें इस फिहरिस्तके अनुसार चीजें मिलेंगी, वह जहाज जब्त कर लिया जायेगा। इस फिहरिस्तमें ऐसी चीजोंका भी नाम लिख लिख दिया गया था, जो युद्धोपकरण समझी जा नहीं सकती थी; जैसे रूई, सूखे बिसकुट। इङ्गलण्डमें, जर्मनीमें रूसकी इस फिहरिस्तकी खूब आलोचना की गई; इससे आगे और कुछ न हुआ। रूससे कोई क्या पूछता और पूछनेपर भी पूछनेवालेकी उस बातको कौन सुनता?

अष्टम परिच्छेद।

आर्थर-बन्दर—आक्रमण और आत्मरक्षा—
जल-युद्धका शेषावस्था—'वूलुफ़ हिल' पर्व्व-
तका पतन—अन्यान्य घटनायें।

आर्थर-बन्दरकी ओर क्या हो रहा है? गत षष्ठ परिच्छेदमें जिस समयतकका आर्थर-बन्दरके घेरेका पिछले लिख आये हैं, उस समयसे आगे कितने ही दिनोंका घेरेका प्रकृत वर्णन लिखना कठिन है। कारण, रूसकी ओरसे घेरेका जो हाल उस समय समयपर प्रकाशित हुआ, उसे पूर्णतया सत्य मान लेनेकी प्रवृत्ति नहीं होती। रूसकी ओरसे जब जब जापानियोंके आक्रमणका विवरण प्रकाशित हुआ, तब तब यही कहा गया, कि जापानियोंने अपनी पूरी शक्तिसे आर्थर-बन्दरपर आक्रमण किया; घोर युद्ध हुआ; अन्तमें जापानी सख़्त क्षतिग्रस्त होनेसे पीछे हट गये। रूसियोंने जिस पैमानेसे जापानियोंकी क्षतिका हाल प्रकाशित किया था, उस पैमानेसे यदि जापानियोंकी क्षति हुई होती, तो कबके बहुत पहले रूसी फौजें किलाबन्दियोंसे निकल किलाबन्दीका घेरा करनेवाली जापानी फौजोंपर टूट उन्हें टुकड़े टुकड़े कर डालतीं; या जापानी फौजें ही अपनेको निर्बल पा आर्थर-बन्दरका घेरा परित्यागकर कहीं और जा आश्रय लेतीं। किन्तु इन दोनों बातोंमें एक भी

नहीं हुई ; रूसी फौजें अपनी किलाबन्दियोंसे नहीं निकलीं और जापानी फौजें अपनी जगहसे पीछे नहीं हटीं। पीछे हटना दूर रहा, वह क्रम क्रमसे आगे ही बढ़ती गईं। ऐसी दशामें रूसकी ओरसे प्रकाशित उन समाचारोंका विश्वास कैसे किया जा सकता है ?

बाकी रहा जापान। जापानकी ओरसे इन कई दिनोंका कुछ भी युद्ध-विवरण प्रकाशित नहीं हुआ। असलमें डालनी-बन्दरसे आगे बढ़ आरथर-बन्दरकी बाहरी किलाबन्दीका घेरा आरम्भ होनेके उपरान्त कोई छः सप्ताहतक जापानकी ओरसे एक भी सरकारी समाचार प्रकाशित नहीं हुआ। जापान-राजधानी टोकियोमें सरकारने विशेषरूपसे घोषणा प्रचारित कर दी थी, कि आरथर-बन्दर-सम्बन्धीय समाचार अखबारोंमें निकलने न पावे ; जो अखबार प्रामाणिक या अप्रमाणिक किसी तरह भी प्राप्त यह समाचार प्रकाशित करेगा, राजद्वारसे उसे दण्ड दिया जायेगा। उन दिनों जापानके यकोहामा-बन्दरसे एक अङ्गरेजी अखबार निकलता था। २६वीं जूनके जिस युद्धका वर्णन हम अपने पिछले किसी परिच्छेदमें प्रकाशित कर चुके हैं, यकोहामाके इस अङ्गरेजी समाचारपत्रके सम्पादकने विश्वस्त रूपसे वह समाचार पा अपने पत्रमें प्रकाशित कर दिया। इससे सम्पादकपर आफत आ गई ; वह अदालत घसीटे गये ; सरकारी आज्ञा भङ्ग करनेका उनपर अपराध लगाया गया। नियमित रूपसे विचार होनेपर उन सम्पादकको जुर्माना हुआ। अदालतने अपने फैसलेमें सम्पादकसे साफ साफ कह दिया, कि यहला ...ध है ; इसलिये थड़ु ...की अवस्था की गई ; फिर ऐसा

अपराध करनेसे गुरु दण्ड दिया जावेगा। इस एक ही समाचारसे स्पष्ट प्रकट होता है, कि उस समय जापान-सरकार चारथर-बन्दरके घेरेका समाचार छिपानेमें कहांतक यत्नतत्पर थी। इस-तरह जापान-सरकारकी ओरसे घेरेका कोई समाचार न मिल-नेकी वजह ही उन सारे समयका घेरेका प्रकृत वर्णन न लिखना कठिन है। फिर भी, जो बातें पत्रमें प्रकाशित हुईं या जो बातें उस समयके चारथर-बन्दरके भगेड़ुओं द्वारा मालूम हुईं, उनका सारांश हम आगे प्रकाशित करेंगे। इस समय पाठक स्थल-युद्धका हाल पढ़नेकी उत्कण्ठा संवरणकर यह देखें, कि घेरेके प्रारम्भिककालमें चारथर-बन्दरके रक्षागेको और सागरवक्षपर क्या होता रहा। स्थानका अभाव और विषयकी अनुपयोगिताकी वजह हम सारे दिनोंका जल-युद्ध रोज-नामचेकी तरह लिखे जाते हैं।

१०वीं जुलाईको बयान, डायना, पलाडा और नाविक यह चारों जहाज दो गनबोट और सात डिस्ट्रायर नावोंके साथ बन्द-रसे बाहर निकल बन्दरकी बगलके जापान-अधिकृत स्थानोंकी ओर चले। तीसरेपहर एक जगह एकाएक कई जापानी जङ्गी नावोंने एक बेड़ेने आगे बढ़ रूसी बेड़ेपर आक्रमण किया। जापानी जङ्गी नावोंको देखते ही रूसी बेड़ा पीछे हटा और यथासम्भव शीघ्र चारथर-बन्दरके सामने पहुंच बन्दरमें घुस गया। उसी दिन रात्रिके समय जापानी तारपेडो-नावें चारथर-बन्दरमें घुस रूसी जहाजोंपर तारपेडो चलाकर वापस आईं। जापानियोंकी ओरसे इस रातके आक्रमणका फलाफल प्रकाशित नहीं हुआ; रूसियोंकी ओरसे कहा गया, कि जापानी

नावोंने आक्रमण किया सही; किन्तु उनका कोई फल नहीं हुआ।

१४वीं फरवरीको रातको जापानी जङ्गी नाव आसागिरि और हयासरीकी तरह एक जापानी जङ्गी नाव बड़ो ही फुरतीसे आरथर-बन्दरमें घुसने चली; किन्तु बन्दरकी तोपों और बन्दरस्थ रूसी जहाजोंकी तोपोंने गोले बरसा उसे राह छोड़ लौटनेपर वाध्य किया। इसी रात एक जापानी जङ्गी नावने एक रूसी नाव गिरफ्तार की, जो रूसी डाकके चुपके चुपके आरथर-बन्दरसे युद्धस्थलकी सीमासे बाहर चीफूको ओर जा रही थी। रूसी डाक देख जापानियोंको आरथर-बन्दरकी सब तथा स्थल-सैन्यका बहुतसा हाल मालूम हुआ।

२४वीं जुलाईको रूसी डिष्ट्रायेर नाव 'लफ्टनराट बुरूकफ' आरथर-बन्दरसे निकल गिरदावरी करने लगी। ऐसे समय समुद्र-पर कुहरा छा गया; हाथको हाथ सूझना कठिन हो गया। उस कुहरेमें 'बुरूकफ'को कुछ जङ्गी नावें दिखाई दीं। दुर्भाग्यवश यह नावें जापानी निकलीं। जापानी जङ्गी नावोंने बुरूकफपर आक्रमण किया। बुरूकफ भागो; किन्तु भागकर जा कहां सकती थी? एक जापानी तारपेडोने बुरूकफके प्रायः दो टुकड़े किये और वह क्षणभरमें अपने सिपाहियों और साज-सामानके साथ समुद्र-गर्भमें समा गई।

२६वीं जुलाईको रूसके जङ्गी जहाज मयान, अस्कोल, पलादा और नाविक कितने ही गनबोटोंको साथ ले जापान-अधिकृत सागरतटपर आक्रमण करनेके लिये निकले। जापानके पुराने ढङ्गके जङ्गी जहाज चिनयेनने तोप दूरके दरजेके जङ्गी जहाजोंके

साथ रूसी जहाजोंका सामना किया; कुछ हो देरकी लड़ाईके बाद रूसी जङ्गी जहाज़ आरथर-बन्दर वापस गये। दूसरे दिन यही रूसी जहाज पलदार फिर बन्दरसे बाहर निकले और जापानी जङ्गी जहाजोंको सामने अस्थिर हो आरथर-बन्दर लौट गये।

इसके उपरान्त जलपर और दो एक खण्ड-युद्ध हुए। इनमें एक उल्लेखयोग्य इसतरह है,—एक दिन प्रातःकाल कोई चार बजे जापानी डिष्ट्रायेर-नावें योबोरी और अकिबोनो यह दोनों आरथर-बन्दरके समीप गिरदावरी कर रही थीं। ऐसे समय आरथर-बन्दरसे चौदह रूसी डिष्ट्रायेर-नावोंने निकल तीन भागोंमें विभक्त हो इन दोनों जापानी नावोंको घेर लिया। दोनों नावोंने घिर जानेपर जिस साहसिकताके साथ युद्ध किया, उसकी प्रशंसा विदेशी संवाददाताओंके मुंहसे भी निकल गई है। जापानी नावें इस वेगसे चारो ओर गोले बरसाने लगीं, कि रूसी नावें कोई पांच हजार गजके फासिलेपर रह गईं; इससे अधिक जापानी नावोंकी ओर अग्रसर हो न सकीं। दो ओरका आक्रमण संभाल जापानी नावोंने तीसरी ओरकी रूसी नावोंपर भीमवेगसे आक्रमण किया। इस आक्रमणका वेग संभालनेमें असमर्थ हो उस ओरकी नावें छत्रभङ्ग हो आरथर-बन्दरकी ओर भागीं। इस अवसरमें जापानियोंकी डिष्ट्रायर-नाव इकाजुची अपनी दोनों नावोंके पास पहुंची। अब एक ओर जापानकी यह तीन नावें थीं और दूसरी ओर रूसकी ग्यारह डिष्ट्रायर नावें। जापानी नावोंकी अपेक्षा रूसी नावें प्रायः चौगुनी थीं, किन्तु तमाशा देखिये, कि यह तीनों नावें अब

आत्मरक्षा परित्यागकर रूसी नावोंपर आक्रमण करनेके लिये दौड़ीं। रूसी नावें इन जापानी नावोंकी अपूर्व साहसिकता देख स्थिर रह न सकीं ; घबराकर अरथर-बन्दरकी ओर भागीं। इससे प्रमाणित हुआ, कि आत्मोत्सर्गका माहात्म्य बड़ा ही जबरदस्त होता है ; जान हथेलीपर रखनेकी वजह हो ; मृत्युको तृणवत् तुच्छ समझनेकी वजह ही पूर्व्वोक्त तीन नावें चौदह रूसी नावोंसे सामनाकर अन्तमें उन्हें भगानेमें सक्षम हुईं। जुलाईके अन्ततकका अरथर-बन्दरके जल-युद्धका ऐसा ही संक्षिप्त विवरण है। अब यह देखिये, कि इस अवसरमें अथर-बन्दरके समीप स्थलमें रूसियों और जापानियोंके बीच क्या हुआ।

पहले ही लिख चुके हैं, कि अरथर-बन्दरके घेरेके आरम्भिक कालमें जापान-सरकारने बन्दरके समीपके स्थल-युद्धका कोई वर्णन निकलने नहीं दिया ; ऐसी अवस्थामें उन दिनों वहां जो युद्ध हुआ, उसका प्रकृत विवरण लिखना कठिन है। हां समय समयपर जो सुनी-सुनाई या कही-कहाई बातें—या रूस-सरकारकी ओरसे निकली एकरूखी रिपोर्टसे जो कुछ निकला है, उसीको हम नीचे संक्षेपमें लिखे देते हैं। अधूरा वर्णन होनेपर भी यह पढ़ने लायक है ; क्योंकि इसे समझकर पढ़ लेनेसे आगेका युद्धवर्णन पढ़ समझनेमें सुविधा होगी।

गत परिच्छेदमें अरथर-बन्दर घेरनेवाली जापानी फौजको हमने जिस अवस्थामें छोड़ा था, वह अवस्था याद है ? याद है, कि अरथर-बन्दर घेरनेवाली जापानी फौज दो भागोंमें विभक्त हो आगे बढ़ी थी ? और क्या यह भी याद है, कि एक भागने ...-बन्दरसे सागरतटकी राहसे अग्रसर हो रूसियोंसे ...कर

उनकी मिन्हौतसुई लिपेपर अधिकार किया था और दूसरा भाग-रेल-लाइनके किनारे किनारे आगे बढ़ आरथर-बन्दरकी किलाब-न्दीके मध्यभाग शुइशिपिङ्गके सामने पहुंच गया था ; यह ; इसके बाहरपूरे समाचारोंका मिलना बन्द हो गया।

जापानके प्रधान सेनापति मारशल ओयामाने युद्धस्थलमें यों तो प्रयोजनानुसार अपनी फौजके हरेक भागमें जाना और उसकी स्थिति स्वचक्षुसे देखना आरम्भ किया था ; किन्तु अपने हेडक्वार्टर या सदरके लिये आरथर-बन्दरके समीपका डालनी-बन्दर पसन्द किया। डालनीके एक खूबसूरत बाजारमें रूसियोंका एक मनोहर रङ्गालय था ; इसी रङ्गालयमें सदलबल प्रधान सेनापतिने डेरा किया था। आरथर-बन्दरकी दुर्भेद्य किलाबन्दियोंको स्वचक्षुसे देख उनपर अधिकार करनेकी युक्ति बतानेके लिये ही शायद ओयामा मञ्चूरियाके युद्धस्थलसे किसी कदर दूर इस डालनी-बन्दरमें ठहरे थे। यहां ठहरकर आपने पहला काम शायद यही किया, कि कुछ दिनोंके लिये युद्धका समाचार प्रकाशित करना बन्द कर दिया। प्रधान सेनापतिका नाम प्रकट न करनेपर भी पाठकोंको यह समझ रखना होगा, कि आरथर-बन्दरके आरम्भिक प्रायः प्रत्येक युद्धमें मारशल ओयामा मौजूद रहते थे और उनकी आज्ञाके सामने जापानी फौजें आरथर-बन्दरपर चढ़ाई करती थीं। किन्तु हमारी इस बातसे यह समझना न चाहिये, कि आरथर-बन्दर घेरनेवाली सेनाके प्रधान सेनापति नोगी कुछ करते ही नहीं थे या उनके तत्त्वावधानमें इस घेरेका कोई युद्धकार्य होता ही नहीं था। हमारा कहना सिर्फ यह है, कि इस घेरेके आरम्भिक युद्धमें मारशल ओ-

वाला प्रधान अफसर थे और नोगी उनके अधीन अफसर। मार-शल ओयामा बड़ीकी कमानो थे और नोगी बड़ीके नीचके प्रधान पहिया।

अरथर-बन्दरकी किलाबन्दीकी मध्यभागकी सुरक्षित किन्तु वन चीसे कोई आधकोस दक्षिण दो सौ फुट ऊंची एक पहाड़ी है। इस पहाड़ीपर किसी चीना देवताका एक सुविशाल मन्दिर है। चीनाओंने इन्हीं देवताका नाम पर्व्वतके नामके साथ मिला दिया था; किन्तु रूसियोंने यह नाम खातिरमें न ला इस पर्व्वतको 'वूल्फ हिल' या भेड़िया-पहाड़ी नाम प्रदान किया था। जिस समयका हाल हम लिखते हैं, उस समय यह पहाड़ी रूसियोंकी थी; इसलिये इस पहाड़ीका उन्हींका रखा नाम हम भी स्वीकार करते हैं। इस वूल्फ पहाड़ीपर अरथर-बन्दरकी किलावन्दीके मध्यभागका किनारा था। रूसी इस जगह दृढ़तापूर्व्वक जमे बैठे थे; उन्होंने स्थिर कर लिया था, कि या तो इस जगहकी रक्षा होगी, या इस जगहसे हमारी लाश उठेगी।

जापानी फौजोंके वल्फ पहाड़ीके सामने पहुंचनेके उपरान्त दोनो फौजें आमनेसामने रहकर भी एकाएक युद्धमें प्रवृत्त न हुईं। ४ थो जुलाईसे ६ वीं जुलाईतक सिर्फ हलकी हलकी लड़ाइयां हुईं; किन्तु उल्लेखयोग्य एक भी लड़ाई न हुई। ६वीं जुलाईके उपरान्त उस अञ्चलमें घोर वृष्टि हुई; कीचेदी जापानी फौजोंको वृष्टि-जलसे भांति भांतिकी असुविधायें हुईं; सबसे बड़ी असुविधा यह हुई, कि वृष्टि-जल उछलने या बहकर और नीचे निकल

जर्मनतक जापानियोंको कुछ दिनोंके लिये अपना आक्रमण स्थ-गित रखना पड़ा।

१२वीं जुलाईको एकाएक रूसकी ओरसे समाचार मिला,—'जापानी फौजने आगे बढ़ आर्थर-बन्दरसे कोई डेढ़ या दो मील दूरके एक टीलेपर अधिकार कर लिया। जापानी फ़ौज अपने इस नवाधिकृत किलेमें अभी अच्छी तरह जमकर बैठने न पाई थी; ऐसे समय उसपर रूसी फौजने आक्रमण किया। जापानी फौज किला परित्यागकर पीछे हटी; उसके पीछे हटते समय उसे अन्य स्थानसे रूसी फौजने टुकड़े टुकड़े उड़ा दिया।' नहीं जानते, कि वह कौनसी जापानी फौज थी और किस किलेपर उसने अधिकार किया था? फिर भी; अनुमानसे जान पड़ता है, कि वूल्फ़ किलेके सामनेवाली नहीं थी; बल्कि समुद्रतटकी जापानी फौजने शायद आगे बढ़नेकी चेष्टा की थी और उस चेष्टामें या तो वह अकृतकार्य हुई; या रूसियोंके बल-विक्रमकी थाह ले तुरन्त पीछे हट गई।

इसके उपरान्त समुद्रतटकी जापानी सेनाकी गतिविधिका समाचार रूसकी ओरसे प्रकाशित नहीं हुआ। समाचार प्रकाशित न होनेपर भी उस ओरकी चलती हुई तोपोंकी आवाजें दूर दूरतक पहुँच और युद्ध होनेकी सूचना देती थीं। कुछ चीना-ओंने सूचना दी थी,—"१६ और १७वीं और १८वीं जुलाईको घोर युद्ध हुआ; कोई चार सौ घायल रूसी सिपाही रस्सी द्वारा खींची जानेवाली डिब्बा तथा अन्यान्य गाड़ियों द्वारा आर्थर-बन्दर पहुँचाये गये।' किन्तु इन्हीं लोगोंकी दिखी हो नहीं; जो लोग इस पहाड़की जमीनपर थे और तोप-बन्दूककी आवाजें

वाला प्रधान अफसर थे और नोगी उनके अधीन अफसर। मारशल ओयामा फौजोंकी कमानमें थे और नोगी फौजके बीचके प्रधान पहिया।

आरथर-बन्दरकी किलावन्दीकी मध्यभागकी सुदृढ़ शिबिरसे पीछे कोई आधकोस दक्षिण दो सौ फुट ऊंची एक पहाड़ी है। इस पहाड़ीपर किसी चीना देवताका एक सुविशाल मन्दिर है। चीनावोंने इन्हीं देवताका नाम पर्व्वतके नामके साथ मिला दिया था; किन्तु रूसियोंने यह नाम खातिरमें न ला इस पर्व्वतको 'वूल्फ हिल' या भेड़िया-पहाड़ी नाम प्रदान किया था। जिस समयका हाल हम लिखते हैं, उस समय यह पहाड़ी रूसियोंकी थी; इसलिये इस पहाड़ीका उन्होंका रखा नाम हम भी स्वीकार करते हैं। इस वूल्फ पहाड़ीपर आरथर-बन्दरकी किलावन्दीके मध्यभागका किनारा था। रूसी इस जगह दृढ़तापूर्व्वक जमे बैठे थे; उन्होंने स्थिर कर लिया था, कि या तो इस जगहकी रक्षा होगी, या इस जगहसे हमारी लाश उठेगी।

जापानी फौजोंके वूल्फ पहाड़ीके सामने पहुंचनेके उपरान्त दोनो फौजें आमनेसामने रहकर भी एकाएक युद्धमें प्रवृत्त न हुईं। ४ थी जुलाईसे ६ वीं जुलाईतक सिर्फ हलकी हलकी लड़ाइयां हुईं; किन्तु उल्लेखयोग्य एक भी लड़ाई न हुई। ६वीं जुलाईके उपरान्त उस अञ्चलमें घोर वृष्टि हुई; पीछेकी जापानी फौजोंको वृष्टि-जलसे भांति भांतिकी असुविधायें हुईं; सबसे बड़ी असुविधा यह हुई, कि वृष्टि-जल रुकने या बहकर और नीचे निकल

कारण उस जापानियोंको कुछ दिनोंके लिये अपना आक्रमण स्थगित रखना पड़ा।

१२वीं जुलाईको एसोसिएटेड प्रेसको पोर्टसे समाचार मिला,—'जापानी फौजने आगे बढ़ पोर्ट-आर्थरसे कोई डाई मील दूर दो कोस दूरके एक किलेपर अधिकार कर लिया। जापानी फौज अपने इस नवाधिकृत किलेमें अभी अच्छी तरह जमकर बैठने न पाई थी; ऐसे समय उसपर रूसी फौजने आक्रमण किया। जापानी फौज किला परित्यागकर पीछे हटी; उसके पीछे हटते समय उसे अश्वारोहियोंसे रूसी फौजने टुकड़े टुकड़े उड़ा दिया।' नहीं जानते, कि यह कितनी जापानी फौज थी और किस किलेपर इसने अधिकार किया था; फिर भी; अनुमानसे जान पड़ता है, कि कुछ किलोंके मारनेवाली नहीं थी: बल्कि समुद्रतटकी जापानी फौजने शायद आगे बढ़नेकी चेष्टा की थी और उस चेष्टामें या तो उसे असफलता हुई; या रूसियोंके वज्र-विक्रमकी धाकसे तुरन्त पीछे हट गई।

इसके उपरान्त बहुत समयतक जापानी फौजकी गतिविधिका समाचार पोर्टसे प्रकाशित नहीं हुआ। समाचार प्रकाशित न होनेपर भी उस ओरकी चलती हुई तोपोंकी आवाजें दूर दूरतक पहुंचकर घोर युद्ध होनेकी सूचना देती थीं। कुछ लोगोंने कल्पना की थी,—"इस ओर १७वीं और १८वीं जुलाईको घोर युद्ध हुआ; कोई चार सौ जापानी रूसी किलेकी सहद मारा खींचे जानेवाली [illegible] पोर्ट-आर्थर पहुंचाये गये।" किंतु इसकी कोई खबर ही नहीं; जो लोग इस तरहकी [illegible] और पोर्ट-आर्थरकी [illegible]

सुन सकते थे, उनका कहना है, कि जुलाई मासभर इस अञ्चलमें घोर युद्ध होता रहा। ४थी जुलाईसे २१वीं जुलाईतक इस ओरकी जापानी फौजने जो कारवाईकी, बहिर्जगत्को इससे अधिक उसका और कोई समाचार न मिला।

वूल्फ हिलके सामनेकी जापानी फौजकी कारवाईका समाचार इतना तिमिराच्छन्न नहीं; क्योंकि स्वार्थमें व्याघात उपस्थित होनेके भयसे उस ओरकी कारवाईका, एकतरफा विवरण रूसियोंने प्रकाशित कर दिया था। दृष्टि-जलसे लाभ पाते ही उस ओरकी जापानी फौजने कमर कस आगे बढ़नेकी तय्यारी की। २५वींको तीसरे पहर एकाएक जापानी तोपोंने वूल्फ पहाड़ीकी कोई पन्द्रह मील लम्बी किलाबन्दीपर गोला-वृष्टि आरम्भ की। यह गोला-वृष्टि बड़ी ही भयङ्कर थी। शायद घेरेकी बड़ी बड़ी तोपें मोरचाबन्दीके सामने पहुंच गई थीं और उन्होंने यह गोला-वृष्टि आरम्भ की थी। हमारी बात नहीं; रूसके मुखपत्र स्वयं 'नवक्रय'ने प्रकाशित किया था,—"जापानी गोलावृष्टि बड़ी ही सख्त थी; रूसी तोपखाने जापानी तोपोंके लक्ष्यस्थल थे और उनपर जापानी गोले ओलेकी तरह बरसते थे। रूसी तोपखानोंके सामनेकी धुस सुरमा बनकर उड़ गई थी; रूसी तोपखानेके सिपाहियोंकी धज्जियां उड़ गई थीं।"

शायद इसी दिन सन्ध्या समय जापानी फौजने वूल्फ पहाड़ीपर दो एक बार चढ़ाई की; किन्तु उसका कोई फल न हुआ। रातको फिर चढ़ाई होनेकी आशङ्कासे ही रूसियोंके कथनानुसार उनकी फौज मोरचोंमें रातभर युद्धके लिये तय्यार बैठी रही। ... कोई युद्ध नहीं हुआ। दूसरे दिन २६वीं को जापानी

फौजने फिर चढ़ाई की। इस आक्रमणका भी कोई फल नहीं हुआ। २६वीं की रातको जिस जगह जापानी फौज पहुंच चुकी थी, उस जगह खुले मैदानमें रातभर पड़ी रही।

२७वीं जुलाईको प्रातःकाल फिर घोर युद्ध आरम्भ हुआ। सूर्योदयसे पहले ही जापानी तोपोंके मुंह खुल गये। समग्र रूसी मोरचेपर; विशेषतः रूसी मोरचेके दाहने भागपर विषम गोला-वृष्टि हुई। पहाड़ोंके पीछे रूसकी रक्षित फौज थी; जापानी गोले पहाड़ी पारकर उस रक्षित फौजपर गिरने और उसे ध्वंस करने लगे। रूसियों हीकी ओरसे समाचार प्रकाशित हुआ है,—"जापानकी भयङ्कर गोला-वृष्टिने रूसी तोपोंके मुंह बन्द कर दिये; फिर भी, कितनी ही रूसी पलटनें छोटी छोटी फायदार तोपें ले मोरचोंमें छिपी पड़ी रहीं; जापानी गोलोंसे उनकी उतनी क्षति नहीं हुई।"

दिन कोई नौ बजे जापानी गोलन्दाजी धीमी हुई और जापानी फौजें अपनी पूरी लम्बाईमें—यानी कोई पन्द्रह मीलकी लम्बाईमें—हर्षध्वनि करती आगे बढ़ीं। रूसी मोरचोंके समीप बन्दूक-तमञ्चेकी भयङ्कर लड़ाई हुई। वहाँकी शरीर झुलसानेवाली धूपमें यह आमने-सामनेका युद्ध निश्चय ही दोनों ही पक्षके लिये अत्यन्त भयङ्कर प्रमाणित हुआ होगा। किन्तु इस विपदमें आक्रमणकारी और आक्रान्त दोनों ही तनिक भी विचलित नहीं हुए। एक ओरसे रूसी मोरचोंसे अग्नि-वृष्टि हो रही थी; दूसरी ओरसे जापानी फौज बराबर बढ़कर रूसी मोरचोंकी ओर बढ़ रही थी। रूसियोंने लिखा है, कि उस समय बड़ा ही भीषण द्वन्द्व हो रहा था; कितनी ही तोपें और हजार हजार

गन्दूकें लगातार दग रही थीं। बढ़ती हुई, जापानी फ़ौजें जब ठहर जाती थी,तब समस्त रूसी सिपाही समस्वरसे हर्षध्वनि करते थे ; मानो जापानियोंके क्षणिक विश्राम होको वह अपनी विजयप्राप्ति समझते थे। विश्रामलाभके उपरान्त ही जापानी फ़ौज फिर आगे बढ़ती थी। रूसियोंकी ओरसे प्रकाशित हुआ है,— "बढ़ती हुई जापानी फ़ौजने अन्तमें रूसी मोरचेके कितने ही भागपर अधिकार कर लिया ; ऐसे समय रक्षित रूसी फ़ौजने जापानियोंपर टूट उन्हें उनके नवाधिकृत मोरचोंसे मार भगाया। २७वींको दिनभर घोर युद्धमें प्रवृत्त रहकर भी जापानी फ़ौज रूसी मोरचोंपर अधिकार कर न सकी। इस दिन कोई सत्तर हज़ार जापानी सिपाही इस युद्धमें शरीक हुए थे।"

२८वीं और २९वीं जूलाईको जापानी फ़ौजोंने यूलफ़ पहाड़ीपर चढ़ाई नहीं की ; दोनों दिन पहाड़ीपर सिर्फ़ गोले बरसते रहे और इस गोलावृष्टिके फलसे रूसी सिपाहियोंका बचावसाया आश्रयस्थल भी सुरङ्गा बन गया। ३०वीं जुलाईको प्रातःकाल कोई चार बजेसे जापानी फ़ौजने एकबार फिर यूलफ़ पहाड़ीपर धावा किया। रूसी तय्यार बैठे थे ; जैसे ही जापानी रूसी मोरचोंके समीप पहुंच तीन भागोंमें विभक्त हो उनकी ओर झपटे, वैसे ही रूसी तलवारें खींच और बन्दूकोंपर सङ्गीनें चढ़ा जापानियोंको रोकनेके लिये आगे बढ़े। घोर युद्ध हुआ ; कभी जापानी रूसियोंको पीछे हटाते थे और कभी रूसी जापानियोंको। युद्धक्षेत्र हताहतोंसे भर उठा। रूसियों और विदेशी तमाशाइयोंने आक्रान्त रूसी फ़ौजकी वीरत्वकी बड़ी ही प्रशंसा की है। कहा है, कि यूलफ़ पहाड़ीके रूसी

सिपाही शस्त्रपरिचालनमें बड़े ही पटु थे; उन्होंने अपनी इस पटुताकी बदौलत असंख्य जापानियोंको मार डाला; रूसी रिपोर्टके अनुसार जापानी सिपाही और भी कितने ही तरहसे मारे गये। रूसियोंने कहा था,—"मोरचोंके आगे जगह माइनें गड़ी थीं; जापानी सिपाहियोंके इन माइनोंपर पहुंचते ही वह रूसियों द्वारा फोड़ दी जाती थीं। माइनोंके फटनेसे भयङ्कर दृश्य उपस्थित होते थे। माइन जब फटती थी, मानो आग्नेय गिरि एकाएक फटता था और अपने साथ बहुत बड़े भूखण्ड तथा उस भूखण्डपरके पत्थर, मनुष्य इत्यादिको आकाशकी ओर उड़ा ले जाता था। आकाश लाल हो जाता था और वह पार्वत्य भूमि थर थर कांपने लगती थी।" रूसियोंकी ओरसे प्रकाशित हुआ है,—"इस दिनकी लड़ाईमें आधी बटालियन जापानी फौज मारी गई।" किन्तु इतनी बातें बनाकर भी अन्तमें रूसियोंको स्वीकार करना पड़ा है,—"जापानी फौजका एक टुकड़ा चक्कर काट रूसी मोरचेके वामभागके पीछे पहुंच गया उसने इस भागपर आगे और पीछे दोनों ओरसे आक्रमणकर उसमें अधिकार कर लिया। इस भागपर जापानियोंका अधिकार होते ही रूसी फौज पीछे हटने लगी। जापानियोंने सहजमें रूसी मोरचेको दखल कर लिया।" रूसियोंने यह भी कहा है, कि हमारे सिपाही सुभीतेके साथ पीछे हटे; अपनी तोपें अपने साथ लाये; जगह जगह तोपें स्थापितकर उन्होंने पीछा करने वाली जापानी फौजपर गोले चलाये। १७ वीं, १८ वीं और १९ वीं के तड़के रूसियोंने प्रकाशित किया,—"हमारी ओरके पन्द्रह सौ सिपाही और [illegible]

अफसर हताहत हुए।" ३० वीं जुलाईके युद्ध के सम्बन्धमें सिर्फ इतना ही लिखा,—"हमारी फौजको उतनी क्षति नहीं हुई।" इस युद्धके उपरान्त जापान-सरकारका मौन भी टूटा; उसने प्रकाशित किया,—"वूल्फ पहाड़ोंकी लड़ाईमें हमारी ओरके पांच अफसर मारे गये और इकतालीस जखमी हुए।" हताहत सिपाहियोंका कोई समाचार प्रकाशित किया नहीं गया।

यह कहनेका प्रयोजन नहीं, कि इस युद्धके फलसे जापानियोंने अर्द्धचन्द्राकार आरथर-बन्दरकी किलाबन्दीके मध्य भाग या ठीक छातीपर अधिकार कर लिया। इस अधिकार-प्राप्तिसे जापानियोंको जो हर्ष हुआ होगा, उसका वर्णन कौन कर सकता है?

नवम परिच्छेद ।



तीनों जापानी फौजोंकी। समवेत अग्रगमन—ट्युलि-ङ्ग और यङ्गजुलिङ्गका पतन—तोम्चशानपर अधि-कार, केलर-वध लियावयाङ्गकी ओर।

तालिङ्ग पर्स आगे बढ़ १८ वीं जुलाईको कुरोकीकी सैन्यके बायें भाग द्वारा लड़ाईसे उस सियोयेन नगरपर अधिकार होने-की बात हम पहले लिख चुके हैं। इस अधिकार-प्राप्तिके उपरान्त कई दिनोंतक सेनापति कुरोकीकी सैन्यने उल्ले-खयोग्य कोई कारवाई नहीं की; वह अपनी जगह मुस्तैद हो बैठ रूसियोंके होते हुए छोटे-मोटे आक्रमणोंको रोक अपने गिरदावरीके सवारोंको रूसी गिरदावरीके सवारोंसे हाथ लड़ाती रही। कुरोकी मानो अपने बायेंकी नोदू और उनके भी बायेंकी ओकूकी सैन्यकी गति-विधिके फलाफलकी प्रतीक्षा करते रहे।

जापानके सारे सेनापतियोंके मातहत सारी फौजोंमें कुरो-कीकी फौज सर्वप्रधान फौज समझी जाती थी—जापानके छिटके हुए सैन्यसमूहकी सम्मिलित शक्तिका केंद्रस्थानी मुकुट। शान्तिके समय भी युद्धके लिये सदा प्रस्तुत रहनेवाली जापानकी गार्ड फौज कुरोकी हीकी अधीनतामें थी। सिवा इसके कुरोकीके अधीन और भी जो फौजें थीं, वह खूब शिक्षित थीं;

उन फौजोंके सिपाही पुराने सिपाही थे। कुरोकीकी फौजका यह बल विक्रम जानकर ही रूस-सेनापति कुरोपाटकिनने इस सैन्यके सामने रूसकी एक जबरदस्त फौज नियुक्त कर दी थी। जो रूसी फौज कुरोकीके सामने थी, वह भरती या रूसके सुदूर-व्यापी साम्राज्य मध्य एशिया प्रभृति स्थानोंकी नहीं; बल्कि खास युरोपकी पुरानी फौज थी। कुरोकीके मुकाबिलेके प्रायः कुल रूसी सिपाही युरोपियन थे और एक उच्चवंशीय सुप्रसिद्ध सुविज्ञ बहुदर्शी राजपुरुष सेनापति केलर इस रूसी फौजके प्रधान अफसर। इसतरह कुरोकीकी जबरदस्त फौजके सामने सेनापति केलरकी जबरदस्त फौज लोहेकी दीवार बनकर खड़ी थी; खड़ी क्या थी कभी कभी आगे बढ़ विपक्षको कुचल डालनेकी चेष्टा करती थी। कहते हैं, कि उस समय इस रूसी फौजमें कोई साठ हजार रूसी सिपाही थे और जैसे जैसे युरोपसे रूसी फौजको मदद मिल रही थी, वैसे वैसे इन युरोपीय सैन्यकी पुष्टि और बलवृद्धिकी जा रही थी। सेनापति कुरोकी इस रूसी फौजकी क्रमोन्नति देख डरते थे, कि किसी दिन उनकी फौजपर टूट उसे विषम क्षतिग्रस्त न करे। वह चाहते थे, कि यथासम्भव शीघ्र आगे बढ़ रूसी सैन्यपर आक्रमणकर उसकी मिलितशक्तिको चूर्ण कर डालना चाहिये। किन्तु उनके चाहनेसे क्या होता है,—प्रधान सेनापति ओयामाकी आज्ञा यही थी, कि कुरोकीकी सैन्य तबतक कोई काररवाई न करे, जबतक उसकी बगलके नोजू और ओकूकी सैन्य आगे बढ़ न चुके।

अन्तमें नोजू और कुरोकी दोनोंकी सैन्य आगे बढ़ीं। पाठकोंको मालूम है, कि ओकूकी सैन्यने आगे बढ़ ताशीचाव

और उसको बगलके निउच्वाङ्ग-बन्दरपर अधिकार कर लिया और नोजूकी सैन्यने आगे बढ़ ताशीकावसे कुछ मील पीछेके एक स्थानपर विजय-निशान ऊंचा किया। तीनो फौजोंके आगे बढ़नेसे तीनो फौजें बहुत कुछ मैदानमें उतर आईं और आपसमें एक दूसरेके समीप हो गईं। इन सैन्यके बीच जो अर्द्ध-चन्द्राकार भूभाग था, वह मानो और नज़दीकी हुआ; उस भूभागमें अवस्थित रूसी सैन्यको अपने सामने तीनो ओर क्रम क्रमसे घिरती हुई जापानी सैन्यकी दुर्भेद्य दीवार दिखाई दी।

जापानी तीनो बड़ी फौजोंके बहुत कुछ सफल हो जानेपर अब प्रयोजन इस बातका उपस्थित हुआ, कि यह तीनों सैन्य एक साथ कारवाई करें; जबतक तीनो फौजोंके बीच फासिला था, तब-तककी बात जुदा थी; अब तीनो सैन्य मिल एक हो गई थीं और इसीलिये तीनो एक साथ एक काममें प्रवृत्त होनेके लिये बाध्य थीं। तीनो फौजोंके एक साथ एक ही काममें प्रवृत्त होनेका फल बड़ा ही अद्भुत था और उस फल-प्राप्तिकी आशासे ही प्रधान सेनापति ओयामा तीनो फौजोंको क्रम क्रमसे आगे बढ़ा उन्हें इस अवस्थामें ला खड़ा किया था। इसलिये तीनो फौजोंका सम्मिलित काम जापानके लिये अत्यन्त लाभदायक था और इतने दिनोंके उपरान्त यह सुअवसर पा प्रधान सेनापति ओयामाने अत्यन्त हर्षपूर्वक तीनो फौजोंको एक साथ कारवाई करनेकी आज्ञा दी।

इसीलिये पीछेसे १० वीं जुलाईसे रातको लड़ाइयां लगा-तार होने लगीं। इस बाहुल्यको पर्वतमालाके [illegible] [illegible] और भी जारी [illegible] गई थीं [illegible]

चल बहुत कुछ समीप हो गई थीं। सेनापति कुरोकीने इन्हीं दोनो राहोंसे अपनी फौजको आगे बढ़ानेकी तय्यारी की। एक राह सुदूर वामभागके उसी सिहोयेन नगरके आगे गई थी, वहांकी जापानी सैन्यको आगे बढ़नेकी आज्ञा मिली। सिहोयेनसे कई कोस आगे यूशु लङ्कू नामक स्थान है। रूसी फौज सिहोयेनसे भाग इसी स्थानमें एकत्र हुई थी और वहां दुर्भेद्य किलाबन्दी बना सिहोयेनकी जापानी फौजके आगे बढ़नेकी प्रतीक्षा कर रही थी। ३० वीं जुलाईकी सन्ध्याको सिहोयेनकी जापानी फौज आगे बढ़ यूशुलिङ्कूपर आक्रमण करनेके लिये तय्यार होने लगी। इधर मोतीनलिङ्ग दर्रे से कुछ आगे लियावयाङ्गकी राहके किनारे रूस-अधिकृत याङ्गजुलिङ्ग नामक दुर्भेद्य स्थान था; इसी रात मोतीन-लिङ्गकी भी जापानी फौज याङ्गजुलिङ्गकी ओर अग्रसर होनेके लिये प्रस्तुत हुई। कुरोकीने खयाल किया, कि इन दोनो स्थानोंपर अधिकार होते ही इनके बीच और मोतीनलिङ्गके बायें की जापानी सैन्य-पंक्ति, रूसी सैन्य-पंक्तिको सहज ही मार भगा आगे बढ़नेमें समर्थ होगी।

रात होते कुरोकीकी अग्रगामी सैन्यने रूस-अधिकृत स्थानोंके सामने पहुंच पर्व्वतों या पहाड़ियोंपर तोपें लगा दीं। ३१ वीं जुलाईको प्रातःकाल होते यूशुलिङ्कू और याङ्गजुलिङ्गके सामने घोर समरानल प्रज्वलित हुआ। पहले सिहोयेनसे आगे बढ़ रूसियोंके यूशुलिङ्कूपर आक्रमण करनेवाली जापानी सैन्यका हाल सुनिये। इस ओर विदेशी संवाददाता नहीं थे; इसलिये इस ओरके युद्ध-विवरणकी उत्कण्ठा संवरणकर दोनो ओरकी मिली संक्षिप्त सरकारी रिपोर्टोंसे घटनाओंपर सन्तोष करना

होगा। मिश्चेनको जापानी फौजोंने दिन कोई आठ बजे पूशु-लिङ्ग्के सामने पहुंच रूसी फौजपर आक्रमण आरम्भ किया। पहले तोपों द्वारा आक्रमण किया, इसके बाद फौजों द्वारा। जापानी फौजें पूशुलिङ्ग्के सामने न बढ़ अपने दाहनेसे आगे बढ़ पूशु-लिङ्ग्के किसी कदर पीछे पहुंच गईं। जापानी फौजोंके इस आक्रमणमें रूसियोंने घोर बाधा उपस्थित की; घोर युद्ध हुआ; इस जगह पांच हजारसे अधिक रूसी सिपाही मारे गये। तीसरेपहर एकाएक रूसी मोरचेपर लाल ध्वजा उड़ने लगी; इसका मत-लब यह था, कि युद्ध कुछ देरके लिये स्थगित हो, रूसी अपने हताहतोंको युद्धस्थलसे उठाना चाहते हैं। लाल ध्वजा देखते ही जापानी तोपों-बन्दूकोंके मुंह एकाएक मानो मन्त्र-बलसे बन्द हो गये; जो जापानी फौज जिस जगह पहुंची थी, वह वहीं ठहर गई। जापानी सिपाहियोंके सामने पड़े रूसी सिपाही अपने हता-हतोंको उठा ले गये; जापानियोंने रूसियोंसे किसी तरहकी छेड़छाड़ नहीं की। कुछ देर बाद रूसी मोरचोंकी लाल ध्वजा एकाएक उतार दी गई; युद्ध चल पड़ा। सन्ध्यातक घोर युद्ध होता रहा।

इस दिनके युद्धमें यद्यपि जापानी फौजें पूर्णरूपसे विजयी नहीं हुईं, तथापि उन्होंने अपनी विजय-प्राप्तिका पथ प्रशस्त कर लिया। दिनभरके युद्धके पश्चात् रूसी फौजें परेशान हो गई थीं; उनके छक्के छूट गये थे। दूसरे दिन प्रातःकाल फिरसे फिर युद्ध आरम्भ हुआ। आज रूसियोंमें उतना दम नहीं था। जिस ओर जापानी फौज झुक पड़ती थी, उस ओरकी रूसी फौज आक्रमण सहती हुई अन्तमें हारकर पीछे हटती

थी। दोपहरसे पहले ही समस्त रूसी फौजकी जड़ हिल गई और दो पहरको जिस समय समग्र जापानी फौजने मिलकर रूसी फौजपर धावा किया, उस समय समस्त रूसी फौजके पैर उखड़ गये और वह बड़ी ही घबराहट और विश्रृङ्खलाके साथ लियावयाङ्गकी ओर जानेवाली राहसे भागी। जापान-सरकारकी ओरसे प्रकाशित हुआ,—"कोई चार मीलतक रूसी सिपाही आगे आगे भागते और जापानी सिपाही पीछे पीछे मारते गये।" अन्तमें रूसी फौजें लियावयाङ्गकी राहके आन-पिङ्ग नगरकी ओर भागीं जापानी फौजें अपने नवाधिकृत स्थानोंमें ठहर विजयका स्वर्गीय आनन्द उपभोग करने लगीं।

यूशुलिङ्गजूके युद्धका संक्षिप्त विवरण ऐसा ही है। अब मोतीनलिङ्गसे आगे याङ्गजुलिङ्गका युद्ध-विवरण देखिये। युशु-लिङ्गजूके युद्धकी अपेक्षा यह युद्ध भयङ्कर था। इसमें दोनो ओरके सिपाहियोंकी संख्या भी अधिक थी और दोनो ओरके सेनापति युद्धस्थलमें अवस्थानकर अपनी फौजें लड़ा रहे थे। रूसकी ओरके सेनापति काउण्ट केलर वहीं थे,—जापानकी ओरके सेनापति कुरोकी वहीं थे। ३०वींकी रातको जो जापानी तोपें याङ्गजुलिङ्गके सामने लगाई गई थीं, वह बहुत ही छोटी छोटी थीं; पहाड़ोंके उस दुर्गम्य चढ़ाव-उतारमें जापानी बड़ी बड़ी तोपें रूसी मोरचोंके सामने पहुंचाई जा नहीं सकी थीं, जो छोटी छोटी तोपें पहुंचाई गई थीं उनके लिये भी प्रचुर परिमाणसे गोले पहुंचाये जा नहीं सके थे; गोलोंसे भरी गाड़ियां उस राहसे जा नहीं सकती थीं; हाथों द्वारा जितने गोले पहुंचाये जा सके, उतने ही पहुंचाये गये। दूसरी ओर

रूसी मोरचोंमें बहुत बड़ी बड़ी कलदार तोपें थीं और सामान्य गोलोंकी जौन कहे,—भीषण आपनल गोलोंसे रूसी मेगजीन टलाटल भरा था। इ२वीं जुलाईको प्रातःकाल कोई सात बजेसे युद्धारम्भ हुआ। जापानी फौजोंको आज्ञा मिली,—"फौजका दाहना और मध्यभाग सुविधानुसार क्रम क्रमसे आगे बढ़े; बायाँ भाग रूसी मोरचोंको तोड़ वाङ्गजुलिङ्गके पीछे पहुंच जानेका यत्न करे।" दोपहरतक तोपोंकी लड़ाई हुई। जापानी तोपें कलदार नहीं थीं; फिर भी, जापानी गोलन्दाज अपनी क्षिप्रहस्तताकी बदौलत बड़ी ही फुरतीके साथ गोलन्दाजी करते थे। प्रातःकालसे दोपहरतक रूसी मोरचोंपर जापानी तोपोंसे एक हजारसे अधिक गोले बरसे। रूसियोंकी ओरसे आपनल गोले चलते थे; जापानियोंकी ओरसे साम्रल गोले चलते थे; कभी कभी आपनल गोले भी चल जाते थे। दोपहर ढल चुकनेपर जापानी गोलन्दाजी शिथिल पड़ी; जापानी फौजोंको रूसी मोरचोंपर आक्रमण करनेकी आज्ञा मिली। आक्रमणके समय विदेशी संवाददाता युद्धस्थलमें उपस्थित रह स्वचक्षुसे युद्ध देख रहे थे। अन्यान्य संवाददाताओंके साथ विलायती अखबार 'टाइम्स'के संवाददाता भी जापानियोंकी फौजमें थे। आपने अपनी आंखों देख इस युद्धका जो विवरण प्रकाशित किया है, उसका मर्मांश इस तरह है,—

"तीसरे पहरसे कुछ पहले हमारे पासकी जापानी फौजोंको आक्रमण करनेकी आज्ञा मिली। रूसियोंके मोरचे दुर्भेद्य होनेपर भी जापानी फौजें आज्ञा पाते ही उत्साहपूर्वक आगे बढ़ीं। सामने ही एक छोटीसी पहाड़ी थी, जिसपर रूसी

तोपें लगी हुई थीं। कितनी ही तोपें इसतरह छिपा रखी गई थीं, कि उन्हें जापानी फौजें आगे बढ़नेसे पहले देख न सकी थीं। जापानी फौजोंके आगे बढ़ते ही पहाड़ोंकी गुप्त-प्रकट सभी तोपें गोले बरसाने लगीं। तोपोंके ईर्दगिर्द रूसी पलटनें बैठी थीं, वह सब जापानी फौजोंपर गोलियां बरसाने लगीं।

"बड़ी ही गर्मी पड़ रही थी। एक तो मौसमकी गर्मी ; दूसरे गोले-गोली और श्रमकी गर्मी ; जापानी सिपाही पसीने पसीने हो गये। जिस समय जापानी सिपाही धावा मारते पहाड़ोंके तलदेशमें पहुंचे, उस समय वह सब नितान्त क्लान्त हो गये थे। पहाड़ोंपरसे गोले और गोलियोंका प्रचण्ड तूफान बह रहा था ; उस तूफानमें पड़ मनुष्य तो मनुष्य बड़े बड़े वृक्ष भी खण्ड खण्ड हो जहांतहां गिर रहे थे। बड़ा ही भयङ्कर स्थान था, फिर भी, जापानी सिपाही पहाड़ोंके तलदेशमें आश्रय ढूंढ बैठ गये ; जिस जगह पहुंचे थे, उस जगहपर अधिकारकर बैठ गये। जिस जगह जापानी सिपाही बैठे, उस जगह खुले मैदानमें एक सुनिर्मल जलस्रोत बह रहा था। एक ओर भीषण युद्ध चल रहा था अगणित मनुष्य मर रहे थे ; दूसरी ओर यह जल-स्रोत अपने हरे-हरे किनारोंके बीच चलता, हंसता बह रहा था। खुले मैदानके इस जलस्रोतके समीप जानेमें मृत्यु सुनिश्चित जानकर भी तृषासे विक्षिप्त कितने ही जापानी सिपाही लोभ संवरण करनेमें अक्षम हो दौड़कर जलस्रोतकिनारे पहुंचे। रूसियोंकी गोलियां बरसने लगीं। कितने ही जापानी सिपाही जाते समय मारे गये ; कितने ही वह सुशीतल अथच घातक जल पीते पीते मारे गये ; फिर कितने ही जल पी निर्विघ्न लौट

भी आये। सेनापति कुरोकीसे अपने सिपाहियोंकी इतनी दुर्दशा देखी न गई; उन्हें अपने पहाड़ोंसे तकदीरसे वापस बुला लिया। इस आवागमनमें कोई तीन चार जापानी सिपाही हता-हत हुए। सैन्यके लफटनगट शिमालाव मारे गये। दूसरे लफ-टनट कियोक्का भी मारे गये। कियोकाको एक बार कातिल गोली लगी; दूसरी ओर उनके मुंहसे निकला,—'जय! जापान-सम्राट् मिकाडोकी जय।' बस; कियोकाकी निर्जीव देह जमीन-पर ढेर हो गई।

"हमारी फौजके बायेंका ऐसा ही हाल हुआ। मध्यभाग कहींका तहीं ठहर अपने दोनों बाजुओंके कार्यके फलाफलकी प्रतीक्षा कर रहा था। बायां भाग प्रातःकाल होते धीरे धीरे आगे बढ़ रूसी याङ्गजुलिङ्गके पीछे पहुंचनेका यत्न कर रहा था। इस ओरके रूसी तोपखाने बड़े ही जबरदस्त थे; जापानी तोपखानोंपर गोले बरसानेके साथ साथ उस वनाच्छादित भूभागपर अविराम गोलावृष्टि कर रहे थे, जिससे होकर जापानी फौजें आगे बढ़ रही थीं। रूसी गोलोंकी चोटसे बड़े बड़े दर-ख्त तत्क्षणात् टूट टूटकर वन-भूमिपर बिछ रहे थे। उससे आगे एक घाटी थी; इस घाटी द्वारा ही जापानी फौजका बायां भाग याङ्गजुलिङ्गके पीछे पहुंच सकता था। किन्तु इस घाटीसे निक-लना आसान नहीं था; घाटीके सामने एक ऊंचे पर्वतपर रूसियोंकी तोपें लगी थीं। दूसरा उपाय न रहनेसे लाचार कोई पांच बजे जापानी फौजका बायां भाग इस घाटीमें घुस पड़ा। रूसी तोपें जापानी सिपाहियोंको उड़ाने लगीं; इधर जापानी सिपाही अपने साथियोंकी दुरवस्थाकी कोई परवा न कर बराबर

आगे बढ़ते गये। अन्तमें जापानी सिपाही घाटीके सामनेके पर्व्वतके नीचे पहुंच गये। रूसी तोपखनोंकी बगलके बैठे रूसी सिपाही पर्व्वतसे उतर जापानी सिपाहियोंसे युद्ध करने लगे; भयङ्कर मार-काट आरम्भ हुई।

"जापान-सेनापति कुरोकीने अपने बायें भागके किसी कदर कृतकार्य्य होनेका समाचार पाते ही अपने दाहने भाग और मध्य भागको आगे बढ़ने की आज्ञा दी। ऊपर ऊपर जापानी तोपोंके गोले चले; उन गोलोंके नीचे नीचे जापानी फौजें चलीं। अब रूसी मोरचोंकी जड़ हिलती दिखाई दी। रूसी बन्दूकोंकी बाढ़ शिथिल पड़ती दिखाई दी; रूसी तोपोंके गोले ठण्डे पड़ते दिखाई दिये। बात यह हुई, कि रूसियोंने जब सुना, कि उनके पश्चाद्भागमें जापानी फौज पहुंच गई, तब उनके छक्के छूट गये। रूसी अफसर डरे; कि कहीं रूसी फौजोंकी पीछे हटनेकी राह रुक न जाये। रूसी मोरचोंकी तोपें शीघ्र शीघ्र हटाई जाने लगीं। मध्यभागके एक पर्व्वतके तोपखानेसे रूसी तोपें हटाई जा रही थीं; ऐसे समय एक जापानी गोलेने एक रूसी तोप खींच ले जानेवाले गोलन्दाजोंको उड़ा दिया; उनके हाथसे छूट वह तोप सैकड़ों फुटकी ऊंचाईसे लुढ़क-पुढ़क नीचे आ गिरी। इतनी ऊंचाईसे गिरनेकी वजह इस तोपका मुंह भूमिमें घुस गया। मैंने झपटकर इस तोपके समीप पहुंच देखा, कि इसके पेटमें एक गोला भरा हुआ था; रूसी तोपें इतनी घबराहटसे हटाई गईं, कि उनमें भरे हुए गोले भी निकाले नहीं गये। इसके उपरान्त ही और एक तोप इसीतरह पर्व्वतसे लुढ़कती-लुढ़कती आ जमीनपर गिर टूटफूट गई। जैसे जैसे जापानी फौजें

आगे बढ़ीं, त्यों वैसे रूसी फौजें पीछे हटीं। रूसी तोपें इस घबराहटसे हटाई गईं, कि उनमें भरे हुए गोले भी निकाले जा नहीं सके। इसके उपरान्त ही और एक तोप इसीतरह पर्वतपर लुढ़कती-पुढ़कती आ जमीनपर गिर टूटफूट गई। जैसे जैसे जापानी फौजें आगे बढ़ीं, वैसे वैसे रूसी फौजें पीछे हटीं। रूसी फौजें इस घबराहटसे पीछे हटीं, कि अनेक गोली-गोले आदि युद्धोपकरण अपने पीछे मोरचोंमें छोड़ गईं।"

अन्यान्य स्थानोंकी रूसी फौजें पीछे हट गईं; सिर्फ थोड़े-से मोरचोंके रूसी सिपाही डटे रहे; अन्तमें जब सब जो था तो टुकड़े टुकड़े उड़ा दिये गये या किसी तरह भाग गये। सन्ध्याके धुंधलकेमें जापानी फौजके दाहने भागने कुछ रूसी मोरचोंपर अधिकार कर लिया। मध्यभागने रूसी मोरचोंके आगे बढ़ याङ्गजुलिङ्ग नामक क्षुद्र पार्वत्य नगरपर अधिकार कर लिया और बायें भागने घाटीके बायें की रूसी पहाड़ोंपर अधिकारकर भागते हुए रूसियोंका कुछ दूरतक पीछा किया। रूसी फौज याङ्गजुलिङ्गसे भाग रातोरात लियावयाङ्गकी तरफ ताङ्गहोयेन नगर पहुंची।

इसुलिङ्गसे भागी रूसी फौज आनपिङ्ग पहुंची और याङ्गजुलिङ्गसे भागी रूसी फौज ताङ्गहोयेन। इन दोनों ही नगरोंसे लियावयाङ्गको सीधी राह गई थी। इन दोनों नगरोंके बीच बहुत कम फासिला था; एक नगरसे दूसरे नगरतक सुन्दर सड़क थी। दोनों स्थलोंपर रूसी फौजोंके पहुंचते पहुंचते जापान पहुंच गये दूसरेकी तरफ [illegible]

होगा। इन दोनो जगहोंकी रूसी फौजके पीछे हटते ही दूरतक फैली रूसी सैन्य-पंक्ति आप ही आप पीछे हट गई।

युयुलिङ्ग और याङ्गजुलिङ्गके युद्धमें दोनो ओरके बहुतेरे सिपाही काम आये। सेनापति कुरोकीकी फौजके चालीस अफसर और नौ सौ सिपाही हताहत हुए। रूसकी ओरके हताहतोंकी ठीक संख्या प्रकाशित नहीं हुई; फिर भी, कितने ही लोगोंका ख्याल है, कि इन दोनो लड़ाइयोंमें रूसके दो हजार से अधिक सिपाही हताहत हुए। सिवा इसके साठ रूसी अफसर और एक सौ उनचास रूसी सिपाही जापानियोंके हाथ कैद हुए; दो तोपें और पांच सौ बन्दूकें जापानियोंके मोरचोंमें मिलीं। सिवा इन बड़ी क्षतियोंके रूसकी और एक बड़ी क्षति हुई। हम पहले ही लिख चुके हैं, कि इस अञ्चलमें रूसकी युरोपीय फौज थी और इस फौजके प्रधान अफसर सेनापतिसे काउण्ट केलर थे। काउण्ट केलर सन् १८५० ई० में जर्मनीके एक ऊंचे घरानेमें उत्पन्न हुए थे; अष्ट्रिया, फ्रान्स और रूस आदि देशोंके कितने ही उच्चवंशोंसे आपका सम्बन्ध था। सिवा इसके आप कितनी ही लड़ाइयोंमें शरीक हुए थे। रूस-रूम युद्धमें शरीक हो आपने अपना रण-कौशल दिखा बड़ी सुख्याति पाई थी। रूस-सेनापति यही काउण्ट केलर इस याङ्गजुलिङ्गकी लड़ाईमें मारे गये। इनकी मृत्युका वर्णन इस प्रकार है,—कुरोकीकी फौजका बांया भाग जिस समय पूर्व्वोक्त घाटीमें घुस रूसी मोरचोंके पीछे पहुंच जानेका यत्न कर रहा था, उस समय केलर घाटीके साम-नेके पर्व्वतपर थे। घाटीमें घुसनेवाली जापानी फौजोंके साथ जो जितनी तोपें थीं, वह घाटीके दूसरे छोरसे घाटीके साम-

नेके रूसी पर्व्वतपर गोले उतार रही थीं। सेनापति केलर इस पर्व्वतपर लगे रूसी तोपखानेको देख रहे थे और गोलन्दाजोंको तोपें मारकर जमानेका आदेश दे रहे थे। समय समय-पर जापानी गोले इस पर्व्वतके रूसी तोपखानेपर आ पड़ते थे। केलरके साथी अफसरोंने केलरको समझाया, कि इस जगह जापानी गोले आते हैं; आप यहांसे शीघ्र हट जाइये; किन्तु भावीकी प्रबलतासे केलरने अपने साथी अफसरोंके इस सदुपदेशपर कर्णपात नहीं किया। केलर दो तोपोंके बीच खड़े हो गोलन्दाजोंको कुछ समझा रहे थे; ऐसे समय जापानी तोपका चलाया हुआ एक आपनल गोला उनसे तीन कदमके फासिलेपर गिर भयङ्कर शब्दसे फट पड़ा। गोलेके एक टुकड़ेने केलरको दूर फेंक दिया। गोलेके दो टुकड़े उनके शिरपर लगे और तीन टुकड़े उनकी छातीपर। सिवा इनके गोलेमें भरी इकतीस गोलियां केलरकी देहके भिन्न भिन्न अंशमें भिद गईं। केलरके गिरते ही उनके साथका एक अफसर झपटकर उन्हें भूमिसे उठाने लगा। केलरने अफसरको रोक सिर्फ इतना ही कहा,— "मेरे बचानेके लिये श्रम करनेकी आवश्यकता नहीं; मेरा अब चलाचलाव है।" यह कह कुछ मिनट जीवित रह उन्होंने [illegible] इहलोक परित्याग किया। केलरके मरते ही उनके अधीन अफसरने उनका स्थान ग्रहणकर युद्ध-परिचालनका भार ग्रहण किया। केलरकी मृत्युसे काम नहीं रुका सही, किन्तु उनका मृत्यु-समाचार सुन रूसी फौज और भी हतोत्साह हो गई। केलरकी मृत्युपर समग्र यूरोपमें शोक प्रकाश किया गया।

बस ; इस समय सेनापति कुरोकीकी सैन्यका सिर्फ इतना ही हाल लिखना यथेष्ट है। पाठकोंको अब हमारे साथ कुरोकीकी बगलके सेनापति नोजूकी सैन्यकी ओर मुड़कर देखना चाहिये, कि जिस समय कुरोकीकी सैन्य पूर्व्वोक्त दोनो स्थानोंमें युद्ध कर रही थी ; उस समय नोजूकी सैन्य क्या कर रही थी।

पाठकोंको स्मरण होगा, कि ओकूकी सैन्यके ताशीचावकी ओर बढ़नेसे पहले नोजूकी सैन्यने आगे बढ़ तोमूशानपर अधिकार कर लिया था। तोमूशानसे पीछे हट रूसी फौजने तोमूशानसे कोई डेढ़ कोस उत्तर तोमूशान और हैचिङ्गके बीच कोई डेढ़ कोस लम्बी हुङ्गयावलिङ्ग नाम्नी एक पहाड़ीपर मोरचे बांध अपनी छावनी डाल दी थी। ३० वीं जुलाईको नोजूकी सैन्यको आगे बढ़ इस रूसी मोरचेपर अधिकार कर लेनेकी आज्ञा मिली और इसी दिन वह आगे बढ़ रूसी मोरचेके सामने फैल गई ; बल्कि रूसी मोरचेके दाहनेसे चक्कर काट किसी कदर रूसी फौजके पीछे पहुंच गई।

३१ वीं जुलाईको प्रातःकालसे युद्धारम्भ हुआ। इस युद्धसे फलसे जान पड़ता है, कि युद्ध बड़ा ही भयङ्कर हुआ होगा ; किन्तु दुःखकी बात है, कि टाइम्सके संवाददाता और केसेल दोनोंने इसका यथोचित वर्णन प्रकाशित नहीं किया। हमारा दोष नहीं ; हमको जो कुछ मिला, जोड़-बटोर उसे ही हम लिखे देते हैं।

इस रूसी फौजके प्रधान अफसर हमारे पूर्व्वपरिचित -बन्दरवाले वही अलकासिफ आपने जब देखा,

कि जापानी फौज, पर्वतके सामने पहुंच गई और उसका एक भाग पहाड़ काट रूसी मोरचेके दाहने किसी कदर पीछे पहुंच गया, तब आपने अन्यान्य स्थानोंको खूब सुदृढ़ बनाके बाद अपने दाहने छत्तीस तोपें लगवा दीं। प्रातःकाल जब जापानी फौजें आगे बढ़ीं, तब रूसियोंने घोर बाधा उपस्थित की। जापानियोंने जब रूसी मोरचेके दाहने तोपोंका आधिक्य देखा, तब उस ओर अपनी भी बहुतसी तोपें ला कर पहाड़ोंपर लगा दीं। दोनों ओरकी तोपोंसे गोले चलने लगे। रूसियोंको जापानकी यह गोलन्दाजी अत्यन्त दुःखद बोध हुई; उनका एक बड़ा दल पहाड़ोंकी जापानी तोपोंपर अधिकार करने चला। ज्यादा दूर आगे जा न सका; राह होसे उसे जापानी फौजोंने मारकाट वापस लौटा दिया। इसके उपरान्त इस ओर रूसियोंकी ओरसे ऐसी कोई चेष्टा नहीं हुई; जापानी गोले बार-बार रूसी तोपखानोंपर पड़ गोलन्दाजों और तोपोंकी धज्जियां उड़ाते रहे। रूसी मोरचोंके सामनेकी जापानी फौज रूसी गोलोंकी परवा न कर छोटे छोटे टीलोंकी आड़ पकड़ रूसी पहाड़ोंकी ओर बढ़ती ही गई और फिर कोई एक [illegible] रूसी मोरचोंके अत्यन्त समीप पहुंच अपने मोरचे बांध लिये। सिवा इसके जापानी फौजका दाहना भाग पहाड़ काट रूसी फौजके बायें पहुंच गया। इस ओरके भी रूसियोंने एकबार जापानी फौजपर आक्रमण चढ़ाई की। इस ओर रूसियोंको बड़ी ही क्षति उठा पीछे पलटना पड़ा। इधर यह हो रहा था और उधर तीसरे पहर कोई तीन बजे जापानी फौजके बायें भागने रूसी फौजके दाहने भागको रूसी [illegible] हुई

बन्दपर आगे बढ़ रूसी मोरचोंके पीछे एक ऊंचे स्थानपर कब्जा कर लिया। इस दिन बस इतनी ही कारवाई हुई। सन्ध्योपरान्त रूसी और जापानी दोनों फौजें रात्रिके विश्रामके लिये अपने अपने मोरचोंमें ठहर गईं।

जापानियोंने खयाल किया था, कि प्रातःकाल फिर युद्ध होगा; किन्तु रूसी प्रातःकाल युद्ध करनेके लिये तय्यार नहीं थे। उनके मोरचेके सामने तो जापानी फौज थी ही; दाहने-बायें भी पहुंच गई थी। रूसियोंको भय हुआ, कि रातोरात जापानी फौजें रूसी मोरचेको चारों ओरसे घेर लेंगी; ऐसी अवस्थामें रूसी फौज हैचिङ्गकी ओर भाग न सकेगी। इस आशङ्कासे विकल हो रूसी फौज रात ही को मोरचे छोड़ हैचिङ्गकी ओर भागी। प्रातःकाल जापानी फौजने खाली रूसी मोरचेपर सहज ही अधिकार कर लिया। इस युद्धमें जापानियोंकी ओरसे १६४ सिपाही मारे गये और ६६ घायल हुए। रूसियोंको बड़ी क्षति हुई। इस क्षतिका अन्दाजा एक इसी बातसे हो सकता है, कि रूसी सिपाहियोंकी कोई सात सौ लाशें जापानियोंने युद्धस्थलसे उठा उठवायीं। सिवा इसके जापानियोंके हाथ छः रूसी तोपें और बहुतेरी बन्दूकें लगीं। जो गोला-गोली और रसद मिला, उसका ठीक हिसाब नहीं। इस तरह हुङ्ग्याबलिङ्गपर अधिकारकर नोजूकी सैन्यने अपनी अग्रगामिनी सैन्य आगे बहुत दूरतक फैला दी।

कुरोकी, और नोजूकी फौजकी कारवाई देख चुके; अब नोजूकी बगलके ओकूकी फौजकी कारवाई देखिये। जिस समय कुरोकी नोजूको आगे बढ़नेकी आज्ञा मिली थी, उसी समय ओकू-

की फौजको भी। ओकूकी सैन्य-पंक्ति बड़ी ही लम्बी थी; इसीलिये आगे बढ़नेमें कुछ देर हुई। १ली अगस्तको ओकूकी फौज पांच कालमोंमें विभक्त हो हैचिङ्गकी ओर रवाना हुई। लोगोंने ख़याल किया था, कि रूस-सेनापति कुरोपाटकिनके मदद लियावयाङ्ग नगरसे आगे यही एक नगर रह गया है; लियावयाङ्ग नगरकी रक्षाके लिये कुरोपाटकिन इस हैचिङ्ग नगरकी रक्षामें कोई बात उठा न रखेंगे। किन्तु समय उपस्थित होनेपर यह ख़याल निर्मूल कल्पना प्रमाणित हुआ। सेनापति ओकूकी अधीनतामें १ली अगस्तको जो फौज हैचिङ्गकी ओर रवाना हुई थी, वह ३री अगस्तको निर्विघ्न हैचिङ्गमें दाखिल हो गई। इतना ही नहीं;—इस नगरसे कुछ दूर पुराना निउच्वाङ्ग नामक नगर है। ओकूकी फौजके अग्रगामी टुकड़ेने इस पुराने निउच्वाङ्ग नगरपर भी अधिकार कर लिया।

इसतरह कुरोपाटकिनके सदर स्थल सैन्यके प्रधान पड़ाव लियावयाङ्ग नगरपर तीन ओरसे जापानी फौजें बादल बनकर उमड़ आईं। कुरोकी दाहनेसे, नोद् मध्यसे और ओकू बाँयेंसे लियावयाङ्गपर टूट पड़नेको अवसर देखने लगे। लाख लाख रूसी सिपाही जिस लियावयाङ्ग नगरकी रक्षाके लिये और लाख ही लाख जापानी सिपाही जिस लियावयाङ्गको छीन लेनेके लिये तय्यार हुए थे, उस लियावयाङ्ग नगरके भावी भीषण युद्धकी कल्पना मात्रसे हृदयमें घोर आतङ्कका उद्रेक होता है।

इसी नगरके निकट निकट स्थानोंमें लड़ाइयोंका सिलसिला अबतक एक सामनेकी लड़ाईका इन्तज़ाम हुआ; इसलिये यदि कहें, तो इससे पहले कई रूसोंको पहले भागना पड़ा और इसके



दशम परिच्छेद।

आरथर-बन्दरका रूसी बेड़ा—व्लाडीवष्टककी ओर—
राहमें घोर जल-युद्ध—पलायन—रूसी
बेड़े का परित्याग।

आरथर-बन्दरके आस-पासका वर्णन पिछलेमें हम कर दिखा चुके हैं, कि एक ओर स्थलोंके आगे जापानी फौजने ताह मर्क-लपर अधिकार कर लिया था और दूसरी ओर एक दूसरी जापानी फौजने रेलवेके स्टेशन आगे बढ़े कूणशिपर कब्जा जमा लिया था। इसमें सन्देह, नहीं कि जापान-अधिकृत इन दोनों स्थानोंसे आरथर-बन्दर बहुत दूर था, [illegible]पर भी, आवश्यकता पड़नेपर भयङ्कर तोपों द्वारा पूर्वोक्त [illegible] स्थानोंसे जापानी लोग आरथर-बन्दरपर गोले बरसा सकते थे। जापानी शक्ति या हठवश परित्याग करनेवाले [illegible] नहीं; उनके पूर्वोक्त दोनों स्थानोंपर अधिकार करते ही वहां अभी नहीं कोई ऐसा आरथर-बन्दरपर गोले बरसानेकी व्यवस्था हो। जापानी तोपखानोंसे आरथर-बन्दर दिखाई नहीं देता था सही; किन्तु जब उनकी तोपोंसे आकाशकी ओर गोले फेंक उन्हें आरथर-बन्दरमें सफलतापूर्वक गिराने लगी। आरथर-बन्दरपर प्रातःकालसे सन्ध्यातक अविराम गोले पड़ने लगे। रूसी जङ्गी जहाजोंका बन्दरमें रहना कठिन हो गया। रूसी जङ्गी जहाजोंके प्रधान नौ-सेनापति एडमिरल



दशम परिच्छेद।

आर्थर-बन्दरका दूसरा घेरा—इटलीदर्गकी ओर—राहमें और जल-युद्ध—पलायन—घेरेका परिणाम।

आर्थर-बन्दरके आस-पासका वर्णन लिखनेमें हम यह दिखा चुके हैं, कि एक ओर जापानियोंके आगे जापानी फौजने नान-शान-पर अधिकार कर लिया था और दूसरी ओर एक दूसरी जापानी फौजने रेलपथके सटकर आगे बढ़ फू-चाउ-तक अपना अड्डा जमा लिया था। इसमें सन्देह, नहीं कि जापान-अधिकृत इन दोनों स्थानोंसे आर्थर-बन्दर बहुत दूर था; फिर भी, आर्थरकी पहाड़ियोंपर अवस्थित भयङ्कर तोपें द्वारा पूर्वोक्त इन स्थानोंसे जापानी फौजें आर्थर-बन्दरपर गोले बरसा सकती थीं। जापानी शान्तिका इस प्रकार परित्याग करनेवाले [illegible] नहीं; उनके पूर्वोक्त दोनों स्थानोंपर अधिकार करते ही वहां बड़ी बड़ी तोपें लगा आर्थर-बन्दरपर गोले बरसानेकी व्यवस्था की। जापानी गोलन्दाजोंको आर्थर-बन्दर दिखाई नहीं देता था सही; किन्तु वह अपनी तोपोंके आवाजकी ओर गोले फेंक उन्हें आर्थर-बन्दरमें यथास्थान गिराने लगे। आर्थर-बन्दरपर प्रातःकालसे सन्ध्यातक अविराम गोले पड़ने लगे। रूसी जहाजोंका बन्दरमें रहना कठिन हो गया। रूसी बड़े जहाजोंके प्रधान नौ-सेनापति एडमिरल

विटोफ्टने सूचना दी, कि उस दिन रेटविज़ां जहाज़के कप्तान ग्रेनस्लोविच एक जापानी गोलेकी चोटसे आहत हुए और बन्दरमें जापानी गोलोंकी जैसी अविराम दृष्टि हो रही है, उससे हम यहां कुशलपूर्व्वक रह न सकेंगे।

जान पड़ता है, कि जापानी गोलोंकी चोटसे घबराकर ही आरथर-बन्दरके रूसी जङ्गी जहाजोंने बन्दर छोड़ ब्लडीवष्टक भागना स्थिर किया। ६ वीं जुलाईको रातको भागनेकी कुल तय्यारियां हुईं। १० वीं जुलाईको दिन कोई साढ़े आठ बजे आरथरबन्दरके मुहानेसे रूसी जङ्गी जहाजोंका बेड़ा बाहर निकलता दिखाई दिया। सबसे आगे सागर-गर्भमें पड़ी माइनोंको हटानेवाली नावोंका बेड़ा था। आरथर-बन्दरके मुहानेपर रूसी और जापानी शत शत माइनें पड़ी थीं; इनमें हरेक माइन एक विशाल जङ्गी जहाज उड़ानेके लिये यथेष्ट थी; इसीलिये रूसी बेड़ेके आगे आगे माइन साफ करनेवाली नावोंका बेड़ा चला। इस बेड़ेके पीछे पलाडा, डायना और नाविक यह तीन अव्वल दरजेके छोटे जङ्गी जहाज थे; रियर एडमिरल रेटजेनस्टीन इन जहाजोंके अधिनायक थे। इस बेड़ेके पीछे सिवस्तपोल, पोलटावा और अस्कोल्ड दूसरे दरजेके छोटे जङ्गी जहाज थे; रियर एडमिरल उखटोम्स्की इन जहाजोंके अफसर थे। इसके भी पीछे सारविच, रेटविजां, पवेदा और परसवीट यह चारों अव्वल दरजेके जङ्गी जहाज थे। सारविच जहाजपर नौ-सेनापति विटोफ्टका निशान उड़ रहा था; आप ही इस समूचे रूसी बेड़ेके प्रधान नौ-सेनापति थे। इन जहाजोंकी बगलमें 'मङ्गोलिया' जहाज था; इसपर लाल सलीब चिह्नित ध्वजा उड़

रही थी; य... इस बातकी सूचना दे रही थी, कि यह जहाज़ ... है; इससे लड़ाई-भिड़ाईमें कोई काम नहीं ... बेड़ेकी बगलमें कितनी ही छोटी नावें थीं, जो माइन साफ करनेवाले बेड़ेको निश्चिन्त बन्दरमें वापस लानेके लिये आगे बढ़ रही थीं। इस बेड़ेमें आरथर-बन्दरके सभी बड़े जहाज थे, सिर्फ वह जहाज और नावें बन्दरमें रह गई थीं, जो बहुत ही टूट-फूट, बेकार खुले समुद्रमें जाने लायक नहीं थीं।

आरथर-बन्दरके मुहानेपर जापानी छोटी नावोंका पहरा था। इन नावोंने बेतारके तार द्वारा आरथर-बन्दरसे कुछ फासिलेपर 'एलियट ग्रूप' नामक द्वीपपुञ्जमें ठहरे जापानी बेड़ेको खबर दी,—"रूसी बेड़ा आरथर-बन्दरसे बाहर निकल रहा है।" जापानी-सेनापति टोगोको यह समाचार सुन अत्यन्त हर्ष हुआ। उन्होंने ख्याल किया, कि दिनके प्रकाशमें रूसी बेड़ा खुल्लमखुल्ला युद्धके लिये निकला है और आज युद्ध हो जानेसे रोज रोजके छाये बादल बरस जायेंगे। टोगोने शीघ्र शीघ्र अपने बेड़ेको युद्धके लिये तय्यार किया और वह अपनी पहरादार छोटी नावोंपर रूसी बेड़ेकी गतिविधिका समाचार देनेका भार डालकर अपने बेड़ेको आप ले एलियट द्वीपपुञ्ज परित्यागकर खुले समुद्रमें निकल पड़े। वह चाहते थे, कि रूसी बेड़ा, जब खुले समुद्रमें पहुँच जावे, तब युद्ध हो; नहीं तो बन्दरके नज़दीक युद्ध होनेसे पहलेकी कई बारकी तरह इस बार भी रूसी बेड़ा हारकर फिर आरथर-बन्दरके

जङ्गी गावोंके पहरेमें बन्दर वापस ... बेड़े के कुछ आगेबढ़ते ही प्रधान सेनापति विटोफ्ट ... जारविच-पर क्रम क्रमसे कई तरहकी झण्डियां उड़ीं, ... अर्थ था,— "व्लाडीवष्टक चलो।" यह सङ्केत देख रूसी जहाजी सिपाहियोंके मनमें जो आनन्द उत्पन्न हुआ होगा, वह सहज ही अनुमेय है। आरथर-बन्दरमें रूसी जहाजी सिपाही बहुतेरे स्वतन्त्र रहकर भी असलमें कैद थे। व्लाडीवष्टक चलनेकी सूचना पा उन्होंने अनुमान किया होगा, कि कैदसे छुटकारा मिला,—राहमें बच गये, तो व्लाडीवष्टक पहुंच प्रकृत स्वतन्त्रताका आनन्द उपभोग करेंगे।

रूसी बेड़ा चला; सागर-वक्ष विदीर्ण करता—विक्षुब्ध ऊर्मि-मालाके तुमुल रवसे दिशायें परिपूर्ण करता रूसी बेड़ा व्लाडीवष्टककी ओर चला। पहले बेड़े की चाल धीमी थी; दोपहरको बहुत तेज हो गई। रूसी बेड़ा आरथर-बन्दरके दक्षिण कोई पचीस मीलके फासिलेपर पहुंचा होगा; ऐसे समय उसे क्षितिजमें टोगोका बेड़ा दिखाई दिया। जिस ओर रूसी बेड़ा जा रहा था; उसी ओर जापानी बेड़ा भी जा रहा था; मानो जापानी बेड़ा बहुत फासिलेपर रूसी बेड़े की समान्तराल रेखामें दौड़ रहा था। जापानी बेड़ा रूसी बेड़े के बराबर दौड़ भी रहा था और क्रम क्रमसे रूसी बेड़े के समीप भी होता जाता था। दिन कोई साढ़े बारह बजे जब जापानी बेड़ा रूसी बेड़े के और भी समीप हुआ, तब रूसी बेड़े ने देखा, कि इस बेड़े में मिकासा, आसाही, शिकिशिमा, फूजी और यासिमा नामक पांच अव्वल दरजेके जहाज हैं और इनके साथ साथ निशीं और कासुगा

जगहसे दूर भागने लगे। अहो! स्वार्थपरवश मानव जीवके संघर्षका क्या ही भयङ्कर फल होता है?

दोनो बेड़े अपनी पूरी शक्तिके साथ आगे दौड़ रहे थे साथ साथ एक दूसरेपर गोला-वृष्टि भी कर रहे थे। दौड़ते हुए जहाजसे ठीक निशानेपर गोले मारना आसान काम नहीं; इसके लिये अच्छी शिक्षा और अच्छे अभ्यासका प्रयोजन है। रूसी गोलन्दाजोंको चलते तो चलते; स्थिर जहाजपर भी गोले उतारनेका अभ्यास नहीं था। रूस-सम्राट्की नौकरी थी; जिस ओर कदम जाते थे, उसी ओर कमरें झुकती थीं; गरदनें अवनत होती थीं; धाक बंधी हुई थी,—जारके जहाजी गोलन्दाजोंको श्रम साध्य समय सापेक्ष उस सिद्धिको वश करनेकी जरूरत ही क्या थी? दूसरी ओर इसका ठीक उलटा हाल था। जापानी जहाजी गोलन्दाजोंके शिरपर न तो रूस-सम्राट् जैसा कोई सम्राट् ही था—न तो जगत्में उतना आदर-सम्मान ही था—न तो बंधी हुई धाक ही थी,—उनकी चारो ओर अन्धकार था,—उन्हें अपने उज्ज्वल पथकी इमारत अपने हाथों तय्यार करना थी; इसीलिये वह शिरका पसीना पैरों बहा आहार-निद्रा परित्यागकर अच्छी गोलन्दाजी सीखनेके लिये बाध्य हुए थे। पददलनेके महाकष्टसे बचनेके लिये एशियाकी एक क्षुद्र शक्तिके जहाजी सिपाहियोंको अपने काममें सुदक्ष बननेके लिये जितने श्रमका प्रयोजन है, जापानी सिपाहियोंने वह श्रम स्वीकार किया था। इसीलिये वह आज उसका सुन्दर सुमिष्ट फल भोगनेमें सक्षम हुए थे।

दोनो बेड़ोंकी जहाजी शक्ति प्रायः समान थी। या यह कहभी अत्युक्ति न होगी, कि रूसी बेड़े की शक्ति कुछ अधिक

थी ; क्योंकि प्रायः कुल रूसी जङ्गी जहाज अत्यन्त मजबूत और अत्यन्त सुदृढ़ थे। जहाजोंकी शक्तिमें दोनो बेड़ोंके समान रह-नेपर भी एक बातमें दोनोंके बीच बड़ा भारी अन्तर था। रूसी गोलन्दाजोंके गोले ठीक ठीक निशानेपर पड़ते नहीं थे और उधर जापानी गोले बराबर ठीक निशानेपर बैठ रहे थे। एक तो गत छः मासके भीतर जल-युद्धमें गोलन्दाजी करनेसे जापानी गोल-न्दाजोंके हाथ मंज गये थे ; दूसरे गोलन्दाजोंकी वैज्ञानिक शिक्षा पानेकी वजह जापानी गोलन्दाज रूसी जहाजोंके [illegible]। प्रति-मासका नाप इस हिसाबसे गोले चलाते थे, कि वह ठीक निशाने पर बैठते थे। कोई [illegible] ऐसा भी गोलन्दाजी नहीं ; जिससे जापानी बेड़ेकी उतनी क्षति नहीं हुई ; रूसी [illegible] जितने ही जहाजोंके और आदमियोंकी जगह जगहसे [illegible]

इसीके पङ्क्ति जहाजोंकी बगलमें चले गये ; यानी एक ओर जापानी बेड़ा हुआ ; बीचमें रूसी बड़े पङ्क्ति जहाज और उसकी दूसरी बगल उसके छोटे पङ्क्ति जहाज हो लिये।

कोई डेढ़ घण्टे तक ऐसी ही रूपमें रूसी और जापानी बेड़े समुद्र-वक्षपर दौड़ते रहे। सन्ध्या कोई पाँच बजे जापानी बेड़ा दौड़ता दौड़ता एकबार फिर रूसी बेड़े के समीप खिसकने लगा। अबके रूसी बेड़े की ओरसे श्रीगणेश हुआ। जैसे ही जापानी बेड़ा समीप आया, वैसे ही रूसी बेड़े की तोपोंके मुंह खुल गये ; ध्वनि और उसकी प्रतिध्वनि और उस प्रतिध्वनिकी भी कितनी ही प्रतिध्वनियोंसे आकाश गूंज उठा। अबके रूसी तोपोंने अद्भुतकर्म्मा जापान-नौ-सेनापति टोगोके निशानके जहाज मिकासाको ताक लिया था ; कुल रूसी तोपोंके मुंह मिकासाकी ओर थे और उसपर और उसकी चारों ओर रूसी गोले ओलेकी तरह गिर रहे थे। शायद और कोई नौ-सेनापति होता, तो घबराकर अपने जहाजकी स्थिति बदलता ; किन्तु टोगो अद्भुत पराक्रमशाली योद्धा थे ; उन्होंने इन गोलोंकी ओर निगाह भी न फेर अपना काम आरम्भ किया। अपने अन्यान्य जहाजोंको गोले बरसानेकी आज्ञा दे मिकासा द्वारा भी गोले बरसाने लगे। दौड़ते हुए रूसी जहाजोंके रुख फिर गये ; अबतक पश्चिमकी ओर थे ; अब दक्षिण-पूर्व हो गये। जापानी बेड़ेने भी इसी ओर अपना रुख फेर लिया। इस बार जापानी बेड़ेसे रूसी बेड़ेपर अत्यन्त भीषण गोला-वृष्टि होने लगी। विलम्ब नहीं था,—विश्राम नहीं था—सीधे ठीक निशानेपर जाते गोले थे और उनका अद्भुत भयङ्कर गर्ज्जन था। रूसी

जहाजोंपर और भी भयङ्कर गोला-वृष्टि करनेकी आज्ञा दी। जापानी जहाजोंने दौड़ते दौड़ते, दौड़ते हुए रूसी जहाजोंके और भी समीप पहुंच कोई साढ़े तीन हजार गजके फासिलेसे रूसी जहाजोंपर अत्यन्त भयङ्कर गोला-वृष्टि की। कोई आध घण्टे-तक यह गोला-वृष्टि हुई। खबर है, कि यह कई घण्टोंकी गोला-वृष्टिका वैसा फल नहीं हुआ, जैसा इस आध घण्टे की गोला-वृष्टिका फल हुआ। एकके बाद दूसरा, रूसका हरेक बड़ा जङ्गी जहाज क्षतिग्रस्त हुआ ; उसकी हरेक तोपका मुंह बन्द हो गया। अन्यान्य जङ्गी जहाजोंकी अपेक्षा रूसी जहाजो रेटविजां बड़ा ही हठो था। खूब क्षतिग्रस्त होनेपर भी उसकी तो बराबर गोले बरसाती रहीं। यह देख टोगोने अपने जहाजोंको इशारा किया, कि रेटविजांपर समवेत-भावसे गोला-वृष्टि की जावे। ऐसा ही हुआ। रेटविजांपर अच्छी गोला-वृष्टि हो गई। इस गोला-वृष्टिके फलसे रेटविजांकी प्रायः समस्त तोपोंके मुंह बन्द हो गये ; सिर्फ दो तोपें रह गईं, जो धीरे धीरे गोला-वृष्टिकर मानो अपने दुर्भाग्यका रोना रोने लगीं।

अब रूसी बेड़ेका ब्लडीवष्टककी ओर बढ़ना रुक गया। प्रधान सेनापति विटोफ्टकी मृत्यु हो जानेपर रियर एडमिरल उख-टौस्कीने बड़े जङ्गी जहाजोंका परिचालना-भार अपने ऊपर लिया और छोटे जङ्गी जहाजोंकी परिचालनाका भार रियर एडमिरल रीछेनसोनपर पड़ा। यह दोनो ही नौ-सेनापति ब्लडीवष्टककी ओर अग्रसर होना असम्भव समझ आरथर-बन्दरकी ओर भागने-पर तय्यार हुए। इस भागड़का फल क्रम क्रमसे लिखते हैं।

पहले नौ-सेनापति रोजेनवीनके अधीनस्थ जहाजोंकी आगका हाल सुनिये। उनके बड़े जङ्गी जहाजोंकी तोपोंका मुंह बन्द होते ही नौ-सेनापति रोजेनवीन कुछ छोटे जङ्गी जहाजोंको अपने साथ ले फुरतीसे आरथर-बन्दरकी ओर लौटे। रोजेनवीन अस्को-लुड नामक छोटे जङ्गी जहाजपर थे और वही जहाज छोटे जङ्गी जहाजोंके बेड़ेका निशानवाला जहाज बन अन्यान्य छोटे जङ्गी जहाजोंके आगे आगे चला। नाविक, कलाश, रायना प्रभृति जहाज उसके पीछे थे। इन जहाजोंका आरथर-बन्दरकी ओर भागना देख इनकी ओर जापानी छोटे जङ्गी जहाजोंका बेड़ा झपटा। रूसी छोटे जहाजोंपर जापानी छोटे जहाजोंके गोले बरसने लगे। उस अंधेरी रातमें जापानी छोटे जहाजों द्वारा आक्रान्त हो, रूसी छोटे जहाजोंकी पंक्ति टूट गई। इसके पीछे जो जहाज जिधर राह मिली, वह उधर ही भागा। इन छोटे जहाजोंके इस भागनेका फल हम दूसरे परिच्छेदमें लिखेंगे। इस समय पाठक इतना ही सुन रखें, कि रूसी छोटे जङ्गी जहाजोंमें [illegible] अकेला आरथर-बन्दर वापस पहुंच न सका; शेष जहाज

उतनी सुविधा नहीं थी। फिर भी, उस टूटे-फूटे मस्तूलपर किसी तरह झण्डे चढ़ा इतना प्रकट कर दिया गया,—"मेरे पीछे पीछे आओ।" यह सूचना दे परसवीट आरथर-बन्दरकी ओर भागा; उसके पीछे पीछे अन्यान्य जहाज चले। उस समय रात्रिका अन्धकार चारों ओर फैल रहा था। उस फैलते हुए अन्धकारका आश्रय ले जापानी पञ्ची नावें रूसी बड़े जहाजोंपर टूटीं। चारों ओर तारपीडो चलने लगे; रूसी जहाज और भी चकित-ग्रस्त तथा अधीर हो इधर उधर भागने लगे। कोई शृङ्खला या नियम स्थिर न रहा; जिसे जिधरसे राह मिली, वह उधर होके आरथर-बन्दरकी ओर भागा। कुछ जहाज दूसरे दिन प्रातः-कालतक आरथर-बन्दर पहुंचे; कुछ जहाज अन्यान्य स्थानोंमें पहुंचे।

इस दिनके इस जल-युद्धका फलाफल दूसरे परिच्छेदमें प्रकट किया जायेगा।

कमीसुराके लिये इससे बढ़कर लज्जाका विषय क्या और भी कोई हो सकता था ; देशमें—विदेशमें कमीसुरा कलङ्कित हुए थे ; सभी ओरसे लोगोंने कहा था,—"कमीसुरा जिस पदपर बैठाये गये हैं, उस पदके उपयुक्त नहीं।" स्वात्माभिमानी मर्यादा-प्रिय कमीसुरा अपनी यह निन्दा और अपनी इतनी बड़ी भूल इस जीवनमें क्या कभी भूल सकते थे ? खबर है, कि दुःखसे रोषसे क्षोभसे कमीसुराने पहले आत्महत्या करना स्थिर किया था ; पीछे आत्मनाशके बदले शत्रु नाश करना ही स्थिर किया। जिस तरह साधक सिद्धिके लिये साधनामें तत्पर होते हैं ; भगवद्भक्त साधुगण भवसागर उतरनेके लिये तपस्यामें तत्पर होते हैं ; ब्लडीवष्टक बन्दरके सामने अपना पहरा खड़ाकर कमीसुरा उसी-तरह शत्रु रूसके बेड़ेके ब्लडीवष्टकसे निकलनेकी प्रतीक्षा करने लगे। मनकी बलवती कामनाके प्रभावसे जैसे जैसे समय बीतता गया, वैसे वैसे कमीसुराका प्रतीक्षा करनेका हौसला बढ़ता गया।

जगत्‌में ऐसी कोई बात नहीं, जिसकी समाप्ति न हो ; कोई धैर्य्यधर उस समाप्तिकी प्रतीक्षा करनेवाला चाहिये। प्रतीक्षा करनेसे एक दिन जब इतने बड़े इस विश्व-ब्रह्माण्डकी समाप्ति हो सकती है, तब रूसी बेड़े के बारंबार शिकार खेल निकल भागनेके सौभाग्यकी समाप्ति कैसे नहीं हो सकती ? कमीसुराकी तरह कोई प्रतीक्षा करनेवाला चाहिये।

१०वीं अगस्तके जल-युद्धका समाचार कमीसुराको मिल चुका था। उन्हें यह समाचार भी मिल चुका था, कि इस युद्धमें ...जान हो बहुतेरे रूसी छोटे जहाज यरथर-बन्दर पहुंच

जापानी सारे जहाज रूसी जहाजोंकी अपेक्षा अधिक द्रुत-गामी थे। इसतरह शक्ति-सामर्थ्यमें रूसी बेड़ा जापानी बेड़ेकी अपेक्षा छोटा होकर भी बढ़-चढ़कर था।

रूसी बेड़ा क्रमशः धीरे धीरे कोरियाके आगे बढ़ रहा था। उसे विश्वास था, कि जापानी उसकी गति-विधि देख नहीं रहे हैं और वह प्रातःकालके धुंधलेमें जापानियोंकी निगाह बचा प्रातःकालका पूर्ण प्रकाश फैलनेसे पहले ही अपने पथमें निकल जायेगा। क्रम क्रमसे प्रत्यूषका धुंधलका दूर हुआ; क्रम क्रमसे दूरके पदार्थ उतने साफ दिखाई देने लगे। ऐसे समय रूसी जहाजोंके अफसरोंने जब सुशीमाद्वीपकी ओर निगाहकी, तब उन्हें दूर कितने ही जहाज दिखाई दिये। शीघ्र शीघ्र दूरबीनें लगाई गयीं। दूरबीनोंसे जो दृश्य दिखाई दिया, उससे रूसी अफ-सरोंका कलेजा मुंहको आ गया। उन्होंने देखा, कि जापानियोंका बेड़ा सुशीमाद्वीप और रूसी जहाजोंके बीचमें रह रूसी जहा-जोंकी ओर अग्रसर हो रहा था। अब क्या किया जाये? एक ओर अनन्त सागर-जल लहरें मार रहा है; दूसरी ओर साक्षात् कालरूप धरकर जापानी बेड़ा चला आ रहा था; रात भी नहीं थी; दिन था,—रूसी बेड़ा आत्मरक्षाका अब कौनसा उपाय करे?

रूसी बेड़ेमें यदि साहस होता, तो वह इस अवसरको सु-अवसर समझ लड़ाईके लिये तय्यार होता। किन्तु जो बेड़ा सदा निरस्त्र जहाजोंको सताने हीमें अपना बल-विक्रम प्रकाश किया करता था, उसमें साहस या तेज कहां था? सदा दुर्बल हीको सतानेवालेमें बल विक्रम कैसा? जापानी बेड़ेको सामने पा रूसी जिसतरह सदा कांपा करता था, उसीतरह इस बार भी

पीछे रह प्राय: एक सीधी पंक्तिमें अग्रसर हो रहे थे। नवयुद्ध-विद्यामें अमीम यश कमानेके टग्-ल कमीमुरा अपनी युद्ध-शिक्षाके साथ साथ अपने बुद्धिबलसे भी काम ले रहे थे। उन्होंने अपने बेड़ेको रूसी बेड़ेके उस पार्श्वमें रखा, जिस पार्श्वमें रहनेसे उदयोन्मुखी सूर्य्य जापानी बेड़ेके पीछे पड़ते थे और रूसी बेड़ेके सम्मुख। जापानी बेड़ा अपनी इस स्थितिकी वजह रूसी बेड़ेको अच्छी तरह देख सकता था और रूसी बेड़ा अपनी आंखोंके सामने ही बाल-रविकी रक्ताभ रश्मियोंकी चकाचौंधकी वजह जापानी बेड़ेको अच्छी तरह देख नहीं सकता था; या इसी बातको यों कहिये, कि जापानी बेड़ेके ऊंचे शिखरोंपर उड़ती हुई रक्ताभ तरुण-भास्कर-चिह्नित राजपताकाओंकी ज्योतिने अपने सामनेसे उदय होते हुए उन दिनकरकी सुनहरी प्रभामें तुल एक ऐसा मधुर अथच शत्रु-कुलके लिये घोर अशुभ प्रभा फैला दिया था, जिसे देख रूसियोंकी आंखें झुक झुक जाती थीं।

तीन मिनटमें जापानी बेड़ेने अपनी नई व्यूह-रचनाकर ठीक पांच बजके तेईस मिनटपर युद्धका श्रीगणेश किया,—एक जापानी बड़ी तोपकी कल घुमाई गई; तोपमें रखे कारतूसनुमा गोलेकी बहुत बड़ी टोपीपर आघात हुआ; बिजलीसी चमक गई; एक ओर तोपके मुंहसे सफेद धुआं उड़ा; दूसरी ओर दो या ढाई मनका गोला रूसी बेड़ेपर पड़ा; सागर-जल डोला—दिशायें कांपीं—आवाज हुई,—धना ना ना ना। युद्ध आरम्भ हुआ। दोनों ओरकी तोपोंके मुंह खुल गये। जापानी गोलन्दाज अपना दिखाने लगे। एक गोलन्दाजने निशाना ताक तोप छोड़ी;

यह देख रूसी जहाज ध्वजाहक जिनो करर अपने दाहने मुड़े और हवाकी पर लगा भागने। किन्तु भागकर जा कहां सकते थे? बरसते हुए जापानी गोले और तेजीसे बरसने लगे रूसी जहाजोंकी धज्जियां उड़ने लगीं। एक गोलेने। चिमनी उड़ा दी; दूसरेने तोप तोड़ दी, तीसरेने डेक तोड़ दिया; चौथेने डेकके किनारेका गुतका तोड़ दिया; इसीतरह जितने गोले गये, उतनी क्षति हुई; जहाजके पार्श्वमें जड़ी फौलादी चादरें तो गोलोंसे छिद छिदकर निरी चलनी बन गई थीं। ऐसी दशामें रूसी बेड़ा जा कहां सकता था? रूसी बेड़ा एक ओर मुड़कर अभी कोई पांच मिनट भागा होगा; ऐसे समय रूसी जहाज स्वरिकको चाल धीमी हुई; उसने सङ्केत द्वारा प्रकट किया;— "चलानेवाली चरखी ठीक काम नहीं करती।" रूस-नौसेनापति हेसेनने सङ्केत द्वारा आज्ञा दी,—"तब अपने दक्षिणोंके सहारे जहाज चला हमारे साथ रहो।" स्वरिकने इस बातका कोई उत्तर नहीं दिया; कुछ तो जापानी गोलोंकी मार और कुछ अपनी आसन्न विपदसे वह बिलकुल ही घबराया हुआ था। अपनी बिगड़ीको शीघ्र शीघ्र बना और जापानियोंपर जल्द जल्द गोले मार रहा था।

जापानी बेड़ा रूसी बेड़ेको निगाहपर चढ़ाये था और उसके प्रत्येक जहाजको गति-विधिको बड़े गौरसे देख रहा था। स्वरिककी दुरवस्था देखते ही जापानी बेड़ेके हर्षका ठिकाना न रहा। उसने धीमी चालसे आगे बढ़ते स्वरिकसे साढ़े चार और साढ़े पांच हजार गजके फासिलेपर पहुंच उसपर भीषण गोला-वृष्टि आरम्भ की। आगे आगे भागते हुए रूसी जहाज र नया

आग लग गई। रूरिकसे पहले एकाएक धुंआं उठा; इसके उप-रान्त ज्वाला निकलने लगी; रूरिक धांय धांय जलने लगा। अब रूरिकका आगे बढ़ना रुका; जिसतरह कोई आहत हिंस जन्तु अपनी अगली टांगोंपर उठ अपनी चारो ओर घूमता है,इसी तरह रूरिक अग्रगमन परित्यागपूर्व्वक थोड़ेसे जलमें चक्कर लगाने लगा; इससे प्रमाणित हुआ,कि रूरिकके कल-पुरजे बिलकुल ही खराब हो गये। उसने सङ्केतसे कहा,—"मैं आगे बढ़ नहीं सकता।" बाकी दोनो रूसी जहाज रोसिया और ग्रोमोबाय जापानी गोलोंकी मारसे घबरा उठे थे; शीघ्र ही वहांसे भागना चाहते थे। रूरिकका यह अन्तिम वाक्य देख रूरिकको आशा परित्यागकर रूसके दोनो जहाज चक्कर काट व्लडीवष्टकको ओर बेतहाशा भागे। यह दोनो जहाज यदि उस समय न भागते, तो कुछ ही देर बाद रूरिकके साथ वहांके वहां रह जाते। फिर भी इन दोनो जहाजोंको भी धज्जियां उड़ गई थीं और इनमें भी आग लग गई थी। भागनेके समय वायुके झोंकोसे दोनो जहाजोंकी लगी आग भड़क उठी; दोनोसे धुंएंके बादल उठते दिखाई दिये; उस धुंएंके बादलसे लपलपाती हुई लाल लाल अग्नि-शिखा दिखाई दी।

रोसिया और ग्रोमोबायका भागना देख कमोसुराने नवागत जापानी जहाज नानिवा और तकाचिहोके हाथ रूरिकको सौंप अपने बेड़ेको पूर्व्वोक्त रूसी जहाजोंका पीछा करनेकी आज्ञा दी। हारदका ५ [illegible] मिग त बड़ा जहाजोंकी दौड़ आरम्भ हुई। आगे रहा। उसने शीघ्र [illegible] अपना पूरी तेजीसे भाग साढ़े पांच हजार गज [illegible] जहाज अपनी पूरी तेजीसे उस वृद्धि आरम्भ की।

दौड़ एकको भी हाथसे गंवाना बुद्धिमत्ता न समझ हमारा बेड़ा रूसी जहाजोंका पीछा न कर लौट पड़ा ।

अब यह देखिये, कि इस अवसरमें रूरिककी क्या दशा हुई। अमीसुरके चले जानेपर जापानी जहाज नानी और तकाचिहो रूरिकपर बराबर गोले बरसाते रहे ; रूरिक भी अपनी तोपों द्वारा उन दोनो जापानी जहाजोंको जवाब देता रहा। अन्तमें रूरिक-की शोचनीय अवस्था देख जापानी जहाजोंने अपनी तोपोंके मुंह बन्द कर दिये। रूरिककी आग तेज हो भीतरसे बाहर पहुंची। रूरिकके छिद्रोंसे, रूरिकके डेकसे अग्नि-शिखा निकलने लगी और रूरिक धीरे धीरे सागर-सलिलमें समाने लगा। जहाजके रूसी सिपाही उतावले हो इधर-उधर दौड़ने लगे। उन्होंने तख्तोंको जोड़-बटोर बड़े बड़े बेड़े तय्यार किये ; उनपर अपने आहतोंको उनमें बैठा डूबते हुए जहाजसे उतार उन्हें समुद्रपर तैरा दिया। इसके उपरान्त रूसी सिपाही नावोंमें सवार हो डूबते हुए जहाजसे दूर भागने लगे। क्रम क्रमसे रूरिक नीचे चला। एकाएक रूरिकके अगले भागने पानीमें शिर छिपाया ; साथ साथ पिछला भाग पानीसे उठ शून्यमें खड़ा हो गया। एक क्षण-तक रूरिक मानो इसी अवस्थामें रहा ; इसके उपरान्त रूरिकका अगला भाग शीघ्र शीघ्र जलमें धसने लगा ; देखते देखते मध्यभाग डूबा ; अन्तमें पिछला, यानी पतवारवाला भाग भी जलमें समा गया। जलती आगके जलमें पड़नेसे जैसा शब्द होता है, उस ग्यारह हजार टनके विराट् जहाजके जलमें घुसनेसे वैसा ही शब्द हुआ। जहाज डूब गया; सब समाप्त हुआ। ऊपर धुंआं छा गया ; वह भी वायुके झोंकोंसे दूर हो गया।

क्षाकृट जख्मी थे; सिवा इनके एक पादरी और तीन वारण्ट अफसर थे। रूरिकके कपतान तथा कितने ही सिपाही युद्धमें मर चुके थे; उनकी रक्षाका कोई उपाय नहीं था। देखा, पाठक! एक ओरको वह निर्दयता और दूसरी ओरको यह मनुष्यता,—एक ओरका वह क्रूर नृशंस भाव और दूसरी ओरका यह दयापूर्ण प्रशंसनीय व्यवहार।

एक ओर जिस समय यह हो रहा था, दूसरी ओर उसी समय रूसके बाकी बचे दोनो जहाज रोसिया और ग्रोमोबाय व्लाडीवष्टक-बन्दरमें दाखिल हो रहे थे। दोनो जहाजोंकी बड़ी ही दुर्दशा हो चुकी थी। दोनो जहाजोंके प्राय: आधे अफसर और एक चौथाई सिपाही हताहत हो चुके थे। सिवा इसके रोसियाके पेंदेमें जलके भीतर ग्यारह छिद्र और ग्रोमोबायमें छ: छिद्र हो चुके थे। जापानी बेड़े के लौट जानेपर दोनो जहाजोंने अपने इन छिद्रोंकी मरम्मत करली थी; मरम्मत की न जाती, तो दोनो जहाज बन्दर लौट न सकते।

दोनो जहाज जिस समय बन्दर लौटे, उस समय बन्दरमें कितने ही तमाशाई एकत्र हुए। तमाशाइयोंको तीनके बदले दो ही जहाज दिखाई दिये और वह दो जहाज भी बड़ी ही हीनावस्थामें। दर्शकोंमें एकने दोनो जहाजोंके सम्बन्धमें लिखा था,—"दोनो जहाजोंकी चिमनियां, मस्तूल, ऊपरी मञ्जिल, किनारे इत्यादि गोलोंसे बिगड़ गये थे। फौलादी चादरोंके टूकड़े उड़ गये थे। दोनो जहाजोंने राहमें अपनी अपनी ...मत कर ली थी; बड़ी बड़ी थिगलियां साफ दिखाई देती थीं। ...नके ऊपरी भागमें कहीं कहीं इतने बड़े छिद्र बन गये थे,

द्वादश परिच्छेद।

—∞—

१० वीं अगस्तके जल-युद्धका परिणाम—रूसी जहाजोंका आत्म-समर्पण।

गतपूर्व्व परिच्छेदमें हम १० वीं अगस्तका जल-युद्ध और आरथर-बन्दरके रूसी बेड़के विध्वस्त हो भागनेका समाचार दे चुके हैं। इन जहाजोंकी भागड़का फलाफल एक लम्बी कहानी है; इसीलिये उसके लिये हमें इस एक स्वतन्त्र परिच्छेदकी अवतारणा करना पड़ी।

हमने लिखा था, कि कितने ही रूसी जहाज भागकर ११ वीं अगस्तको आरथर-बन्दर वापस पहुंचे। इन जहाजोंके नाम यह हैं,—रेसवीट, पवेदा, सिवस्तपोल, रेट-विजां, पोलटावा और पलादा। इनमें पूर्व्वोक्त ञ्जल जहाज अव्वल दरजेके जङ्गी जहाज थे; सिर्फ प्रोषोक्त एक दूसरे दरजेका जङ्गी जहाज था। कितना बड़ा रूसी बेड़ा व्लडीवष्टक जानेके लिये आरथर-बन्दरसे निकला था और कितना छोटा होकर आरथर-बन्दर वापस आया। कितने छोटे जङ्गी जहाज बन्दरसे बाहर निकले थे, उनमें सिर्फ एक बन्दर वापस आया।

बाकी जहाज कहां गये? आरथर-बन्दरके समीप युद्ध-सीमासे बाहर चीफू, कियावचौ, शङ्घाई और सैगोंचे नामक चीनके राज्यमें ...-अधिकृत जो चार बन्दर हैं; युद्धविमुख हो रूसी जहाज

द्वादश परिच्छेद।



१० वीं अगस्तके जल-युद्धका परिणाम—रूसी जहाजोंका आत्म-समर्पण।

गतपूर्व परिच्छेदमें हम १० वीं अगस्तका जल-युद्ध और अरथर-बन्दरके रूसी बेड़ेके विध्वस्त हो भागनेका समाचार दे चुके हैं। इन जहाजोंकी भागड़का फलाफल एक लम्बी कहानी है; इसीलिये उसके लिये हमें इस एक स्वतन्त्र परिच्छेदकी अवतारणा करना पड़ी।

हमने लिखा था, कि जितने ही रूसी जहाज भागकर ११ वीं अगस्तको अरथर-बन्दर वापस पहुंचे। इन जहाजोंके नाम यह हैं,—रेसवीट, पवेदा, सिबस्तपोल, रेटविजां, पोलटावा और पलादा। इनमें पूर्व्वोक्त पांच जहाज अव्वल दरजेके जङ्गी जहाज थे; सिर्फ पीछोक्त एक दूसरे दरजेका जङ्गी जहाज था। जितना बड़ा रूसी बेड़ा ब्लडीवष्टक जानेके लिये अरथर-बन्दरसे निकला था और जितना छोटा होकर अरथर-बन्दर वापस आया। जितने छोटे जङ्गी जहाज बन्दरसे बाहर निकले थे, उनमें सिर्फ एक बन्दर वापस आया।

बाकी जहाज कहां गये? अरथर-बन्दरके समीप युद्ध-सीमासे बाहर चीफू, कियावचो, शङ्घाई और सैगोवे नामक चीनके राज्यमें ...ी-अधिकृत जो चार बन्दर हैं; युद्धविमुख हो रूसी जहाज

उन्हीं चारो बन्दरोंमें पहुंचे। बहुतेरे लोग किसी कामको लघुरूपमें आरम्भ करना ही श्रेयः बताते हैं; इसलिये आगे हुए रूसी जहाजोंका परिणाम यदि हम लघुरूपमें दिखाना आरम्भ करें तो हर्ज क्या है?

आरथर-बन्दरसे कोई चालीस कोस दक्षिण पेचिली खाड़ीमें चीनका चीफू बन्दर है। बन्दरमें कोई पचास हजार चीना नर-नारियोंका निवास है; सिवा चीना अधिवासियोंके चीफूमें,—रूसी हैं, जापानी हैं, अङ्गरेज हैं जर्मन हैं, भिन्न भिन्न जातियां हैं। कहनेको चीफू चीनके अधीन है, किन्तु जिस जगह इतनी वैदेशिक शक्तियोंका डेरा है, उस जगह चीन बेचारेका उतना अधिकार नहीं; मसल है,—जिसकी लाठी, उसकी भैंस। अन्यान्य बन्दरोंकी अपेक्षा यह चीफू-बन्दर आरथर-बन्दरके बहुत समीप है; इसीलिये समय समयपर रूसी नावें आरथर-बन्दरसे चीफू और चीफूसे आरथर-बन्दर पहुंच जाया करती थीं। चीफूमें जिस-तरह अन्यान्य वैदेशिक शक्तियोंके कानसल हैं, उसीतरह रूसका भी कानसल है। आरथर-बन्दरका घेरा आरम्भ होते ही इन कान-सल महाशयने अपने मकानमें बेतारके तारका एक यन्त्र खड़ा कर लिया और मौसम साफ होनेपर इस बेतारके तारके यन्त्र द्वारा आरथर-बन्दरके रूसी अफसरोंसे बातचीत करना आरम्भ किया। चीफूके रूसी कानसलके मकानमें बेतारके तारका यन्त्र खड़ा होनेसे जापान-सरकारने शिकायत की थी,—"यह बात अन्तर्जातीय नियमके विरुद्ध है।" किन्तु जापानकी विरोधा विरोधकी बात किसीने न सुनी; कौन सुनता है?

खैर ; गत १०वीं अगस्तके जल-युद्धमें परास्त हो जब रूसी बेड़ा घबराकर भागा, तब रूसी बेड़े के नायकी एक डिष्ट्रायेर नाव 'रेष्टिटेलनो' भागती-भटकती हुई चीफू-बन्दरकी ओर भागी। राहमें इस नावको असाहियो और कसुमी नामी जापानी डिष्ट्रा-येर नावोंने देख पीछा किया। रेष्टिटेलनी शीघ्रतापूर्व्वक भाग चीफू-बन्दरमें घुस गई। युद्ध-सम्बन्धीय आन्तर्जातीय नियम यह है, कि जो जङ्गी जहाज या नाव युद्ध-सीमासे बाहरके किसी बन्दर या स्थानमें पहुंच जायेगी, उस बन्दर या स्थानका अधिकारी उस जङ्गी नाव या जहाजको उसी समय निरस्त्र कर देगा। किन्तु युद्ध-सीमासे बाहरके चीफू-बन्दरमें घुसकर भी रेष्टिटेलनीने युद्ध-नियमका पालन नहीं किया; उसने अपना निशान भी नहीं उतारा ; अपनी तोपें भी नहीं उतारीं ; उसके सिपाही, आदिने अपने हथियार परित्याग नहीं किये। दोनों जापानी डिष्ट्रायेर नावें बन्दरके मुहानेपर ठहर रूसी नावको देखती रहीं। दोनों नावोंके अफसरोंने देखा, कि रूसी जहाज निरस्त्र की नहीं गई; उसे निरस्त्र करनेका भार चीन-सरकारपर था ; किन्तु चीन-सरकार जोर-जबरदस्ती दिखा रूस-सरकारको छेड़नेकी हिम्मत कर नहीं सकती थी। यह सब देख और समझ ११ वीं अगस्तको अर्द्धनिशासे कुछ पहले बन्दरमें चारों ओर सन्नाटा फैल जानेपर जापानी नावोंसे एक नाव बन्दरके भीतर भेजी गई। इस नावमें जापानी लफटनण्ट तिराशिमाके अधीन कितने ही सशस्त्र जापानी सिपाही और एक दुभाषिया था। चुपके चुपके जापानी लफटनण्ट रेष्टिटेलनीके समीप पहुंच सम्हलकर उसपर चढ़ गये। रूसी नायके लफटनण्ट रश्चकुस्की

जापानी लफटनण्टके सामने आये। दुभाषियाकी मारफत दोनोंमें बातचीत हुई।

रूसी लफ०। आप यहां किस लिये आये हैं?

जापानी लफ०। यह कहनेके लिये, कि आप या तो आत्मसमर्पण कीजिये या बन्दरका आश्रय छोड़ खुले समुद्रमें निकलिये।

रूसी लफ०। मैं इस समय आपका सामना करनेमें असमर्थ हूं; किन्तु यह बात याद रखिये, कि इस बातमें खुद आपने अन्तर्जातीय नियम भङ्ग किया; सभ्यजनोचित व्यवहारकी मर्य्यादा भङ्ग की।

ऐसे समय रूसी लफटनण्टने अपने अधीनस्थ अफसरको विस्फोरक द्रव्य द्वारा जहाज उड़ा देनेकी आज्ञा दी। यह आज्ञा गुप्तभावसे दी गई; जापानी लफटनण्ट इस आज्ञाका मर्म्म समझ न सके। अपने उन अधीनस्थ कर्म्मचारियोंको अवसर देनेके लिये रूसी लफटनण्टने जापानी लफटनण्टसे अन्तर्जातीय नियमकी बात छेड़ झगड़ना आरम्भ किया। जापानी लफटनण्टने झगड़ा समाप्त करनेके लिये; रूसी लफटनण्टके प्रश्नका उत्तर देनेसे साफ इनकार कर दिया और कहा,—"इस बातसे क्या वास्ता,—आप यदि आत्मसमर्पण कर देंगे, तो आपकी प्राणरक्षा की जावेगी।"

रूसी लफटनण्टने इस बातका प्रत्युत्तर देनेके बदले जापानी लफटनण्टको नावसे ढकेल दिया। जापानी लफटनण्ट इस आक्रमणके लिये तय्यार नहीं थे; दोनों तो रूसपरका छोता। झका खा एक नावमें गिरे पड़े; किन्तु पानी पकड़े उन्होंने रूसी

लफटएटकी गरदन पकड़ ली और उन्हें भी अपने साथ साथ ले चले। दोनो समुद्र-जलमें गिरे। जापानी लफटएट रूसी लफ्टएटको छोड़ अपनी नावमें जा चढ़े; रूसी लफटएट पैरते हुए अपनी नावकी ओर चले; किन्तु उस समय नावमें घोर उपद्रव हो रहा था। दोनो लफटनएटोंके जलमें गिरते ही दोनो ओरके सिपाही अस्त्र-शस्त्र संभाल एक दूसरेसे भिड़ गये थे। तलवार, लपन्चे, बन्दूक, सङ्गीनकी लड़ाई चल रही थी और बड़ा शोर हो रहा था। बन्दरके बाहर और भीतर दोनो जापानी जङ्गी नावें अपना सर्च प्रकाश रेग्रिटेलनीपर डाल रही थीं, जिससे अर्द्धनिशाके घोर अन्धकारके बदले रूसी जङ्गी नावपर दिन जैसा प्रकाश फैला हुआ था। शोर सुन बन्दरके सहस सहस लोग यह युद्ध देख रहे थे। ऐसे समय रूसी लफटएट जब अपने नावके समीप पहुंच उसपर चढ़ने लगे, तब एक गोली आ उनके पैरमें लगी; वह फिर पानीमें गिर गये। आपने फिर नावपर चढ़नेकी हिम्मत न की; पैरते हुए किनारे चले; राहमें चीनकी एक सरकारी नावने आपकी रक्षा की।

इधर रूसी नावपर मारकाटका बाजार खूब गर्म्म हुआ। रूसी मारे और दबाये जाने लगे। अपनेको विवश पा अन्तमें रूसियोंने विस्फोरक पदार्थमें आग लगा दी; उद्देश्य यह था कि थोड़े से बचेबचाये रूसियोंके साथ कुछ विजयी जापानी उड़ जावें; नाव भी उड़ जावे। किन्तु जगदीश्वरको ऐसी इच्छा नहीं थी। विस्फोरक पदार्थ उतना जोरदार नहीं था; उससे जापानी सिपाही भी नहीं उड़े; नाव भी नहीं उड़ी; नावमें सिर्फ आग लग गई, जो अल्प कालमें बुझा दी गई। यह बार भी

खाली गया। जापानी सिपाहियोंने रूसियोंको मार-काट नावपर अधिकार कर लिया और उसपर अपनी ध्वजा चढ़ा उसे बन्दरसे बाहर निकाल अपनी दोनों नावोंके साथ लिया दिया। जापानी नावें इस रूसी नावको साथ ले अपने बेड़े की ओर चली गईं।

इस घटनापर बड़ा शोर हुआ। रूसने युरोपकी वृहत् शक्तियोंसे शिकायत की,—"जापानने अन्तर्जातीय नियम पद-दलित किया; युद्ध-सीमाके बाहरके चीफू-बन्दरसे हमारी जङ्गी नाव पकड़ ले गया।" रूसकी शिकायत थी; सुनी कैसे न जाती? समग्र युरोपमें जापान-सरकारपर घृणा प्रकाश की जाने लगी। फ्रान्स, जर्मनी, अष्ट्रिया प्रभृति युरोपकी शक्तियां जापानको शासित इत्यादि बताने लगीं। यहांतक कहें,—जापानके परम मित्र हमारे राजा एडवर्ड भी जापानके इस कार्य्यसे असन्तुष्ट हुए; साफ साफ तो नहीं; किन्तु कहर घुमा-फिराकर जो कहना था भी कहा,—"हां अपने इस एक कामसे जापानने अन्तर्जातीय नियमकी मर्यादा भङ्ग की है।" जापानको इसीकी आवश्यकता हुई, कि युरोपकी शक्तियोंके कोपमें पड़ कहीं यह खिलता हुआ फूल मुरझा न जावे। ऐसे समय जापान बोला। अत्यन्त गम्भीरतापूर्वक निजभुजपर भरोसाकर जापान बोला,—"चीफूमें जिस चीन-सरकारका अधिकार है, वह चीन-सरकार अकेला है; अपने स्वत्वोंकी रक्षा कर नहीं सकती; अन्तर्जातीय नियमोंका ठीक ठीक प्रतिपालन कर नहीं सकती। चीनकी स्वतन्त्र है-सियत शक्तियां भी चीनको अन्तर्जातीय नियम अक्षुण्ण रखनेमें समझमें किसी तरहका सहारा नहीं देतीं। चीफूमें रूसी अन-सरने अन्तर्जातीय नियमके विरुद्ध अपने जहाजमें बेतारका तार

पागा रखा है; अबतक किसीने उस तारकी ओर ध्यान नहीं दिया। इसीतरह रूसी जङ्गी नाव रेशिटलनी जब बन्दरमें गई, तब अन्तर्जातीय नियमके अनुसार उसे किसीने निरस्त्र नहीं किया। ऐसी अवस्थामें जापानी सिपाहियोंने बन्दरमें घुस अन्तर्जातीय नियम भङ्ग करनेवाली रूसी नाव रेशिटेलनीको यदि गिरफ्तार कर लिया, तो क्या बुरा काम किया?" ऐसी ही जापान-सरकारकी विज्ञप्ति प्रकाशित होनेपर युरोपकी शक्तियां चुप हुईं; झगड़ा तय हुआ।

पाठकोंको स्मरण होगा, कि १० वीं अगस्तवाले जल-युद्धमें रूसका जारविच निशानका जहाज था और अविराम गोला-वृष्टिके फलसे जारविचपर नौ-सेनापति विटोफ् मारे गये थे और जारविचको चलानेवाली चरखी बिगड़ गई थी। रात्रिके अन्धकारमें जारविच युद्ध-विमुख हो भागा; उसके साथ साथ तीन डिष्ट्रायर जापानी नावोंने इन जहाजोंका पीछा किया। रूसी जहाज और नावें सब बचते-भागते ११ वीं अगस्तको कियावचौ-बन्दर पहुंच गये। यह कियावचौ-बन्दर उर्फ सिङ्गताउ-बन्दर चीनके शानटुङ्ग-प्रदेश और कियावचौ-खाड़ीमें है। निर्बल चीनके अनेक बन्दरोंपर अनेक विदेशियोंका अधिकार है। इस कियावचौ-बन्दरपर जर्म्मनोंका अधिकार है। अङ्गरेजोंके अधिकारयुक्त चीनके वेईहैवेमें जिसतरह सदा जङ्गी जहाज रहते हैं, उसीतरह जर्म्मनोंके कियावचौ-बन्दरमें जर्म्मनोंके भी जङ्गी जहाज आदि रहते हैं। कियावचौमें जर्म्मनोंके एक गवरनर भी रहते हैं, जो बड़े दबदबेके साथ अपने अधीनस्थ चीनका शासन-कार्य करते हैं;

ऐसे ही कियावचौ-बन्दरमें तीन डिस्ट्रायर नावोंके साथ रूसका जारविच जहाज पहुंचा। जर्म्मनी चीनकी तरह निर्बल नहीं; जर्म्मन अफसरोंने जारविचके अफसरोंको सूचना दी, कि तुम लोगोंको अपने जहाजोंको वाजिब मरम्मत कर लेनेके उपरान्त चौबीस घण्टोंमें या तो बन्दर परित्याग करना चाहिये या निरस्त्र होना चाहिये। जापानी नावें बन्दके बाहर खड़ी थीं; मानो रूसी जहाजोंके बाहर निकलनेकी राह देख रही थीं। रूसी जहाजोंने बाहर निकलना विपदसङ्कुल देख जर्म्मन अफसरोंकी दूसरी बात स्वीकार की; अपने जहाजोंको निरस्त्र करना मञ्जूर किया। बड़ी-छोटी सब तरहकी तोपें रूसी जहाजोंसे उतार ली गईं; गोला आदि उतार लिये गये; यह सब सामान जर्म्मनोंकी मेगजीनमें जमा कर दिया गया। बाकी रहे रूसके सिपाही और उनके अफसर; इन सबसे हथियार ले लिये गये और यह सब वर्त्तमान युद्धकी समाप्तितक उस बन्दरमें नजरबन्द किये गये। एक ओर जर्म्मन अफसरोंने यह किया और दूसरी ओर जर्म्मनीका एक छोटा जङ्गी जहाज बन्दरके मुहानेपर जा खड़ा हुआ। इस जहाजके अफसरने दूर खड़े जापानी नावोंके अफसरोंको सूचना दी, कि चीफूकी तरह इस बन्दरमें भी रात्रिमें यदि जापानी घुसेंगे, तो उनपर गोला-वृष्टि की जावेगी। जापानी अफसरोंको यह सूचना भी दी गई, कि बन्दरमें आये रूसी जहाज निरस्त्र बना दिये गये हैं। जापानियोंको शायद इस कथनसे सन्तोष नहीं हुआ; उनकी एक नाव बन्दरमें जा अपनी आंखों निरस्त्र रूसी जहाजोंको देख आई। इसके उपरान्त बन्दरके बाहर खड़ी नावें अपने बेड़ेकी ओर चली गईं।

चीफू और केंटोंका हाल देख लिया अब बाकी दो बन्दरोंका हाल देखिये। इन दोनो बन्दरोंका हाल लिखनेसे पहले इतना और सुन लीजिये कि १० वीं अगस्तके युद्धसे भागो रूसी डिष्ट्रायेर नाव 'बरनी' अङ्गरेज-अधिष्ठित बन्दर वीहैवीकी ओर चली। राहमें समुद्रतटकी चट्टानोंमें फंस गई। यह देख नावके लफट-नण्टने विस्फोरक द्रव्य द्वारा नाव उड़ा दी और आपने साथियों सहित पैदल वीहैवी पहुंच अङ्गरेजोंके हाथ आत्म-समर्पण किया।

एक ओर यह हुआ; दूसरी ओर रूसका दूसरे दरजेका जहाज असकोल्ड डिष्ट्रायेर नाव ग्रोसोवायके साथ १२वीं अगस्तको अङ्गरेज-रक्षित बन्दर शङ्घाई पहुंचा। जापानी जहाज भी उनके पीछे पीछे पहुंचे और उन्होंने बन्दरके मुहानेपर ठहर लङ्गर डाल दिया। इन दोनो जहाजोंके सम्बन्धमें बड़ा झगड़ा चला। दोनो जहाज एक अङ्गरेजी डकमें घुस अपनी मरम्मत कराने लगे। अङ्गरेज चुप थे। जापानने चीनसे कहा, कि इन दोनो जहाजोंको शीघ्र ही या तो निरस्त्र करो या बन्दरसे निकालो। चीनके यह कहनेपर रूसने जवाब दिया,—"हमारे जहाज निरस्त्र न होंगे; अट्ठाईस दिनोंमें अस्कोल्डकी मरम्मत हो जायेगी और अट्ठारह दिनोंमें ग्रोसोवायकी। इसके उपरान्त यह दोनो बन्दर परित्यागकर खुले समुद्रमें चले जायेंगे।" रूसका यह उत्तर सुन जापानने चीनसे कहा,—"इतने दिनोंतक दोनोंका बन्दरमें रहना अन्तर्जातीय नियमके विरुद्ध है; अन्तर्जातीय नियम यह है, कि जहाज सिर्फ अपनी वाजिब मरम्मत करा लें; अपनी लड़नेकी शक्ति किसी तरह न बढ़ावें; अर्था-

तक, कि अपनी टूटी-फूटी धुंआं निकालनेकी चिमनीतक दुरुस्त न करावें। रूसी जहाज अगर ठीक हो गए तो निरस्त्र हों या बन्दरसे निकलें।" रूस अपने जहाजोंको निरस्त्र भी करना नहीं चाहता था; निकलना भी नहीं चाहता था; जापान इन्हीं बातोंपर जोर देता था; बेचारा चीन दोनों पक्षकी रज़ामन्दीका यत्न कर रहा था। अन्तमें बात बहुत बढ़ गई। जापान बन्दरमें कुछ दोनों जहाजोंको गिरफ्तार कर लेनेके लिये तय्यार हुआ। जापानकी यह तय्यारी देख रूस-सम्राट् जारने अपने दोनों जहाजोंको निरस्त्र होने और वहांके सिपाहियोंको चीनके भिन्न भिन्न बन्दरोंमें नजरबन्द हो जानेकी आज्ञा दे दी। ऐसा ही हुआ; झगड़ा मिटा।

इसी जल-युद्धमें भागा हुआ रूसका छोटा जङ्गी जहाज डायना सैगोन-बन्दर पहुंचा। सैगोन-बन्दरमें फ्रान्सीसियोंका अधिकार है। डायना जहाज बहुत कुछ टूटफूट गया था और इसके तीन सिपाही तथा दस अफसर मारे जा चुके थे। डायना जहाजके पीछे पीछे कितनी ही जापानी डिस्ट्रायर नावें आ सैगोन-बन्दरके मुहानेपर खड़ी हुईं। लोगोंने खयाल किया था, कि इस जहाजके सम्बन्धमें भी झगड़ा खड़ा होगा; किन्तु ऐसा नहीं हुआ। जारकी आज्ञासे सैगोनमें डायना निरस्त्र कर दिया गया। सैगोनके जापानी कन्सलने स्वयं अपनी आंखों निरस्त्र डायनाको देख जापान-राजधानी टोकियो खबर दी। इस खबरसे जापान-सरकारको सन्तोष हुआ; उसने सैगोन-बन्दरके मुहानेसे अपनी नावोंका पहरा हटा लिया।

१०वीं अगस्तवाले जल-युद्धमें और कई रूसी जहाज भागे थे,

उनमें अब सिर्फ एक जहाजकी कहानी बाकी रह गई है। इस जहाजका नाम नाविक था। नाविक आकार और भारमें सिर्फ तीन हजार तीन सौ टनका होनेपर भी चालमें रूसके कुल बड़ी जहाजोंमें अव्वल था। उसमें अट्ठारह हजार घोड़ेकी शक्तिके इञ्जिन थे; घण्टे पीछे कोई साढ़े बारह कोस चलता था और एकबार कोयला भर लेनेसे कोई साढ़े चार सौ कोसकी यात्रा निर्विघ्न तय किया करता था। यही नाविक १०वीं अगस्तको जापानी जहाजोंके सामनेसे भाग व्लाडीवष्टककी ओर चला।

व्लाडीवष्टककी ओर जानेकी दो राहें थीं; एक तो वही, जिससे रूसी बेड़ा जा रहा था और जापानी बेड़े द्वारा बाधा पा आगे जा न सका। दूसरी राह चक्करदार थी; जापान द्वीपपुञ्जके पश्चाद्भागसे। नाविकने अपनी द्रुतगति और कोयलेके भाण्डारपर भरोसाकर व्लाडीवष्टक जानेके लिये यह दूसरी राह ग्रहण की। व्लाडीवष्टक जानेसे पहले एकबार वह जर्मनीके कियावचौ-बन्दर गया; वहां कोयलाभर तौर-धीरसे व्लाडीवष्टककी ओर रवाना हुआ। इस राहसे व्लाडीवष्टक बहुत दूर था। समग्र जापान द्वीपपुञ्जकी परिक्रमा करनेके उपरान्त जहाज व्लाडीवष्टक पहुंच सकता था। जापान द्वीप-पुञ्जकी परिक्रमा करनेमें नाविकका कोयला प्राय: समाप्त हो गया। अब क्या किया जाये? जापान द्वीपपुञ्जके छोरपर व्लाडीवष्टकसे किसी कदर आगे उजाड़ सखेलियन द्वीप है। द्वीपपर रूसका अधिकार है। द्वीपमें थोड़े से मङ्गोल आदि रहते हैं; सिवा इनके उस समय कोई पांच हजार

द्वीपान्तरित रूसी कैदी थे। द्वीपमें कोयलेकी खानि है; यह सब रूसी कैदी उसी खानिमें मजदूरी किया करते थे। द्वीपके बीचमें जापान द्वीपपुञ्जकी ओर सखेलियनका कोर्साकोव्स-नामक बन्दर है। नाविकने स्थिर किया, कि इस बन्दरमें कोयला लाद सखेलियन टापू और जापान द्वीपपुञ्जके बीचकी सोमा उर्फ लापेरोज-प्रणालीसे निकल ब्लाडीवष्टक चलना चाहिये। २०वीं अगस्तको नाविक जहाज़ कोर्साकोव्स-बन्दर पहुंचा और उसी दिन तीसरे पहरतक प्रचुर कोयला लाद तीसरे पहर कोई चार बजे बन्दरसे निकलनेपर तय्यार हुआ। नाविक बन्दरसे निकलनेकी तय्यारी कर रहा था; उसके एञ्जिनोंको वाष्प तय्यार हो चुकी थी; ऐसे समय उस बन्दरके बाहर एक जहाज़ दिखाई दिया; यह जहाज़ जापानका था।

टोगो रूसी बेड़ेके कुछ जहाजोंको जानते थे। १०वीं अगस्तके युद्धके उपरान्त रूसी बेड़ेके कुछ जहाजोंका पता पाकर भी जब उन्हें नाविकका पता नहीं लगा, तब उन्होंने अनुमान किया, कि नाविक जापान द्वीपपुञ्जकी परिक्रमा करता हुआ ब्लाडीवष्टककी ओर जा रहा है। यह विचार आपने अपने तीसरे दरजेके दो जङ्गी जहाज़ सुशिमा और चिटोसको नाविककी ओर रवाना किया। दोनों जहाज़ दरजेमें नाविकसे छोटे होनेपर भी बहुसंख्यक तोपोंसे सुसज्जित थे। दोनोंपर बेतारके तारके यन्त्र लगे थे। दोनों जैसे जैसे आगे बढ़ते गये, वैसे वैसे उन्हें नाविकका पता मिलता गया। दोनों जहाज़ एक दूसरेसे बहुत फासिलेसे आगे बढ़ते थे। [illegible]

कि नाविक किसी ओरसे भागने न पाये। २०वीं अगस्तको तीसरे पहर शुश्रिमा सखेलियनके कोरसाकोव्स-बन्दरके सामने पहुंचा; वहां उसे उसका अभीष्ट जहाज दिखाई दिया। उसने देखा, कि नाविक कोरसाकोव्स-बन्दरसे निकल भागनेकी तय्यारी कर रहा है। ऐसे समय नाविककी भी निगाह शुश्रिमापर पड़ी।

उधर शुश्रिमा नाविकको देख बन्दरके मुहानेपर इसतरह डटकर खड़ा हुआ, कि नाविकको बाहर निकलनेको राह न मिले; इसीके साथ साथ अपने बेतारके तार द्वारा अपने साथी जहाज चिटोसको शीघ्र अपने पास बुलाया; इधर शुश्रिमाको देखकर भी नाविक उतना भीत नहीं हुआ; वह अपनी शक्तिपर भरोसाकर बन्दरसे निकल भागनेके लिये तय्यार हुआ। नाविक बड़ा था, शुश्रिमा छोटा। नाविकमें बड़ी बड़ी तोपें थीं, शुश्रिमामें छोटी छोटी। सिवा इसके नाविक कई लड़ाइयां लड़ चुका था; शुश्रिमा सिर्फ पहरेके काममें नियुक्त था। ऐसे ही शुश्रिमासे नाविकके भीत होनेका कारण क्या था?

लड़ाईका निशान उड़ाता तोपोंमें गोले भर बड़े दम्भके साथ नाविक शुश्रिमाकी ओर चला। शुश्रिमा भी राह रोकनेके लिये तय्यार हुआ। जैसे ही नाविक समीप आया, वैसे ही शुश्रिमाकी तोपें नाविकपर गोले बरसाने लगीं। नाविकने भी गोला-वृष्टि आरम्भ की। दोनों ओरसे गोला-वृष्टि आरम्भ होनेपर भी नाविक आगे बढ़ता ही गया। उसे ... था, कि शुश्रिमाको पछिमकर यह बुसोलीवस्ककी ओर

निकल जायेगा। नाविकने छोटा होनेपर भी शुशिमा इतना नहीं चाहता था। उसके अफसरोंने खयाल किया, कि इतने दिनों बाद यह युद्धका अवसर प्राप्त हुआ है; इसमें ऐसा वीरत्व प्रकाश करना चाहिये, जिससे स्वदेशका मुखोज्ज्वल हो और शत्रुकी छातीपर चोट लगे। शुशिमाके अफसर पहले, तो उच्च-स्वरसे अपने मातहत कर्मचारियोंको युद्धकी आज्ञायें देते रहे; अन्तमें अत्युत्साहसे अधिक चिल्लानेकी वजह उनका गला बैठ गया और वह बोल न सकनेकी वजह खड़िया मट्टीसे जहाजके तख्तेपर अपनी आज्ञायें लिखने लगे। शुशिमाने विकट मूर्ति धारण की और उसकी वह भयङ्कर मूर्ति देख नाविककी पश्चाद्गति स्थगित हुई; वह जहां था, वहीं ठहर शुशिमापर गोले बरसाने लगा। जापानी गोलोंकी चोट बहुत ही जबरदस्त थी। नाविकके पेंदेमें जलके भीतर तीन छिद्र हुए और जलके बाहर दो छिद्र। सिवा इसके नाविकके कितने ही एञ्जिन टूट गये; नाविककी जहाज चलानेकी ताकत निकम्मी हो गई। कोई पौन घण्टे के युद्धमें नाविककी ऐसी ही दुर्दशा हुई। सन्ध्या कोई पांच बजे नाविक भागकर बन्दरके भीतर किनारे चला गया। इस युद्धमें शुशिमा भी क्षतिग्रस्त हुआ था सही; किन्तु उसकी क्षति अतीव सामान्य थी; युद्ध समाप्त होते ही जहाजकी मरम्मत हो गई। इस युद्धकी समाप्तिके उपरान्त शुशिमा फिर अपनी जगह यानी बन्दरके मुहानेपर लङ्गर डाल खड़ा हुआ और बेतारके तार द्वारा उसने एड-मिरल चितोजको शीघ्र आनेके लिये कहा।

२० तारीखकी रात बीत गई। रात रहते चितोज शिघ्रगामी मुहाने पहुंच गया। रातमें जहाज बन्दरके मुहानेपर ठहर नाविक-

उसी निकलनेकी प्रतीक्षा करते रहे। किन्तु नाविक निकलनेको था न निकला। प्रातःकाल शुक्रिमा अपनी जगह ठहरा रहा; चितोष बन्दरके भीतर घुसा। चारो ओर सन्नाटा छाया हुआ था। उस समूहके बन्दरमें जहाज नहीं था; आदमी नहीं थे; चपचाप नहीं था; घाघार नहीं थे। बन्दरके किनारे दो चार सौ मकान थे, जिनके अधिवासी कल सन्ध्याको युद्धारम्भ होते ही अपने अपने सामान बन्दकर भाग गये थे। बन्दरमें किनारेसे लगा नाविक था। रूसियोंने नाविकको मरम्मत नहीं की थी; इस लिये रात होते कर छिद्रसे जलमें डूब गया था। उसका एक अंश जलके भीतर था और दूसरा अंश बाहर। उसके अधिकांश जहाजी सिपाही अपना माल-असबाब ले किनारे पहुंच गये थे, जो बाकी थे, वह चितो-षका बन्दर-प्रवेश देखते ही नाविकको छोड़ किनारे पहुंच गये। चितोषके अफसरने हिरदयसे यह सब बातें देख विचार किया,—"रूसियोंने चालाकी की है। छिछलेमें जहाज डुबा हमें धोखा देनेकी चेष्टा की है; जैसे ही हम बढ़ेंगे, चले जायेंगे, वैसे ही रूसी, सम्भवतः जल निकाल उसे फेरा बन्दरसे निकाल ले जायेंगे।" यह विचारकर डूबे हुए नाविकपर गोलावृष्टि होनेकी आज्ञा दी। इसपर छर्रे पड़ने लगे; डूबे हुए नाविकपर चितो-षके गोलोंकी मार पड़ने लगी। गोलोंकी मारसे नाविकका जो भाग जलसे बाहर था; उसका चकनाचूर निकल गया। नाविकके खंड खंड टुकड़े जलमें गिर लहरोंपर नाचने लगे। चितोषके अफसरको जब नाविकके पूर्णतया नष्ट हो चुकनेका विश्वास हो गया, तब उन्होंने चितोषको; बन्दरसे बाहर निकलनेकी आज्ञा दी। चितोष बन्दरसे बाहर निकला और अपने साथी जहाज

शुशिमाको साथ ले अपनी कारस्वाईकी तरह [illegible] चले प्रधान बेड़े की ओर :

इस तरह इस नाविक काण्डकी समाप्ति हुई।

त्रयोदश परिच्छेद।

लियावयाङ्ग महासमर—तय्यारियां।

कई अङ्गरेजी उपन्यासोंमें एक लौह-निर्म्मित यन्त्रणा-गृहका हाल पढ़ा है। इस यन्त्रणा-गृहका वर्णन इसतरह है,—छोटोसी एक कोठरी है,जिसकी दीवारें छत और फर्श सब लोहेके हैं और जिसके बाहर एक कल है। कल चलानेसे यह कोठरी हर तरफसे घटने लगती है; घटती घटती एक आदमीके मुश्किलसे पड़े रहने लायक एक सन्दूक या जनाजेका रूप धारण करती है। कोठरीमें जो कैदी कैद किया जाता है, वह उसी लोहेके सन्दूकमें पड़ा रहता है और वायुके अभावसे, आहारके अभावसे, उठने-बैठनेमें बिलकुल असमर्थ हो तड़प तड़पकर मर जाता है। कितना विकट यन्त्रणा-गृह है।

लियावयाङ्गमें बैठे रूस-सेनापतिके लिये उनके इर्द-गिर्दकी जापानी फौजोंकी पंक्ति उपन्यास-वर्णित मानो वही यन्त्रणा-गृह बन गई थी। धीरे धीरे सिमटती जाती और अपने बीचके कुरोपाटकिनकी गति-विधिका स्थान दिन दिन सङ्कीर्णसे सङ्कीर्णतर करती जाती थी। नकशेमें देखिये। कहां वह सुदूरका आर्थर-बन्दर, ताकुशान और फेङ्गवाङ्गचेङ्ग और कहां यह मध्य-मञ्चूरियाका लियावयाङ्ग? लियावयाङ्ग और ओकू, नोजू और कुरोकीकी सैन्यके पहले पड़ावके पूर्व्वोक्त तीनो स्थानोंके बीच कितना फासिला है? इस समय ओकूकी सैन्य लियावयाङ्ग नगरके

दाहने नोडूकी सामने और कुरोकीके बायें थी। ओकूकी सैन्यका मध्यभाग पेपिङ्गसे आगे पुराने निउचवाङ्ग नगरको दरकर लियावयाङ्ग नगरकी ओर बढ़ गया था। पुराने निउच्वाङ्ग नगरसे लियावयाङ्ग कोई छः कोस पश्चिम था। इस फौजके दोनों बाजू दूर दूरतक फैले हुए थे; बायां बाजू निउच्वाङ्ग-बन्दरके सीमापर था और दाहना तोफखानेकी बगलमें। तोफखानेमें सेनापति नोडूकी सैन्यका मध्यभाग था। इस सैन्यका बायां बाजू ओकूकी सैन्यके दाहने बाजूसे मिला था और दाहना बाजू दाहने कुरोकीकी सैन्यके बायें बाजूसे। कुरोकीकी सैन्यकी स्थिति शायद पाठकोंको भूली न होगी। उनकी सैन्यका दाहना बाजू अभी हुशुलिङ्ग स्थानमें और मध्य अभी यङ्गजुलिङ्गमें था। मध्यभागका बायां बाजू अपनी बगलके पार्श्व-स्थलमें नोडूकी सैन्यके दाहने बाजूसे मिला हुआ था।

शोर होता नहीं था; पहले ही समाचारपत्रोंमें बड़े बड़े कामोंके सब्द वे प्रकाश किये जाते नहीं थे; फिर भी, जापान चुपचाप जो काम कर रहा था, वह प्रसिद्धिमें कायम था और बहुत ही ऊंचे दरजेका था। निउचवाङ्ग-बन्दरसे पुराने निउच्वाङ्ग नगरतक लियाव नदीका जो छोर है, उसपर जापानने पूर्ण अधिकार कर लिया था और छोटे छोटे स्टीमर रसदसे भरी नावोंकी पंक्ति खींचकर पुराने निउच्वाङ्ग पहुंचा दिया करते थे; ओकूकी सैन्य-पंक्तिमें हाथों हाथ रसद बंट जाती थी। बिना इसके ओकूकी सैन्यका मध्यभाग सिद्ध करबर-बस्त-हुमरन रेलवेके पास पास आगे बढ़ रहा था, परन्तु न सिर्फ अधिकार ही कायम नहीं करता था; लेकिन उसे सब दे

लिये बिगाड़ता और अपने लिये तय्यार करता आता था। यानी रूसकी रेल चौड़ी पटरीकी थी; जापान उसे उठा अपनी छोटी पटरीकी लाइन बिछाता आता था। अरथर-बन्दरसे हैचिङ्गतकका रेल-पथ जापानके अधिकारमें था,—अरथर-बन्दरसे हैचिङ्गतक जापानने चौड़ी पटरीके बदले छोटी पटरीकी लाइन बिछा दी थी। इस छोटी लाइनकी गाड़ियां, एञ्जिन, पलटाफारम आदि सभी छोटे थे। जापानसे मंगाये और काममें लाये गये थे। इससे दो लाभ थे,—प्रथमतः, जापान यदि परास्त हो पीछे हटता, तो रूसी उस लाइनसे एकाएक कोई काम ले न सकते; द्वितीयतः, युद्धके उपरान्त जापान उस छोटी लाइनको अपनी बता उसपर हर तरहका दावा कर सकता था। खैर; इस समय इस लाइनका जिक्र इस लिये छेड़ा गया, कि जापान अपनी इसी लाइन द्वारा ओकूकी सैन्यके मध्यभागमें रसद पहुंचाता था; वहांसे रसद हाथोंहाथ ओकूकी सैन्यके दाहने बाजू और उससे भी आगे नोजूकी सैन्यके बायें बाजूतक पहुंचा दी जाती थी। नोजूकी सैन्यकी रसद समुद्रतटके ताकुशान स्थानसे भी आती थी। कुरोकीकी सैन्यकी रसद बहुत घूमफिरकर आती थी। फिर भी, रसद पहुंचनेकी सुव्यवस्था बिना किये कुरोकी आगे बढ़े नहीं थे। कुरोकीने अपने पीछे एक तो कोरिया-राजधानी सिउलसे यालू नदीके किनारेवाले उस वीजू नगरतक रेल बिछवा दी थी; दूसरे वीजू नगरके सामने यालू नदीके दूसरे किनारेके पास ... लसे अपनी फौजके पीछेतक रेल तय्यार करा दी थी। ... दो राहें खुल गई थीं। सिउलसे भी आती थी और ... था। ऐसी ही सुव्यवस्थाके फलसे इतनी फैली

अपनी सैन्य-पंक्तिको रसदादिका तनिक भी अभाव होता नहीं था।

इस बार कुछ कहने-सुननेकी जगह नहीं थी। युद्ध आरम्भ हुए छः महीनेसे अधिक बीत चुके थे। इस अवसरमें रूसी सिपाहियों और रसदादिसे भरी सहस्र सहस्र ट्रेनें रूससे मञ्चूरिया पहुंच चुकी थीं। रूसको सिपाहियोंकी कमी नहीं थी; गोली-गोलादि युद्धोपकरणकी कमी नहीं थी; रसदकी कमी नहीं थी। सिवा इसके अबतक यह कहा जाता था, कि कुरोपाटकिनको अपनी सैन्य एकत्र करनेका अवसर नहीं मिला; इसीलिये वह पीछे हटनेपर बाध्य हुए। किन्तु इस लियावयाङ्गमें करनेके लिये यह बात भी न रही; कुरोपाटकिनकी प्रायः सब सैन्य चारों ओरसे सिमटकर एकत्र हो गई थी। लियावयाङ्ग और उसकी चारों ओर मोरचे थे तोपें और रूसी सिपाहियोंकी छावनियां ही छावनियां दिखाई देती थीं। लियावयाङ्गसे आगे जापानी सैन्य-पंक्तिके सामने रूसी सैन्य-पंक्ति कोई बीस कोसकी लम्बाईमें फैली हुई थी। रूसी सैन्यके दो दरजे थे; एक बाहरी, दूसरा भीतरी। बाहरी दरजा ही जापानी सैन्यके सामने था। इस दरजेमें यों तो बहुतेरे छोटे-बड़े मोरचे थे; किन्तु प्रधान मोरचे तीन थे। रूसियोंके यह तीनों मोरचे अत्यन्त सुदृढ़ थे। इनका परिचय दाहनेसे लीजिये। सबसे दाहने छोरपर ओकूकी फौजके बायें बाजूके ठीक सामने 'आनशान-शान' नामक पहला मोरचा था। इस जगह पहाड़ियोंकी [illegible] भूमिमें एक लम्बा और ऊंचा पहाड़ था, जिसपर रूसियोंकी असंख्य सैन्य और भयङ्कर तोपें थीं। दूसरा [illegible]

मोरचा जापानी सैन्य-पंक्तिकी अर्द्धचन्द्राकार रेखाके ठीक मध्य-स्थलके सामने कौफेङ्गपू स्थानमें था; इसके सामने जापानी सैन्य-पंक्तिकी रेखामें जो स्थल था, वह नोजू और कुरोकीकी सैन्यका सन्धि-स्थल था। तीसरा सुदृढ़ मोरचा रूसी फौजके बायें छोरके सामने जापानी सैन्य-पंक्तिके दाहने छोर यानी कुरोकीकी फौजके सामने श्रानपिङ्गमें था। विश्वविख्यात कुरोकीकी सैन्यका प्रसार रोकनेके लिये रूसियोंने अपने इस मोरचेको अधिक सुदृढ़ बनाया था। इस मोरचेमें एक सौ बीस तोपें थीं और रूसकी युरोपियन प्रधान-स्थानीय फौजोंके कोई सत्तर या पचहत्तर हजार चुने हुए सिपाही। लियाओयाङ्गके गिर्दके पहले या बाहरी दरजेके रूसी मोरचोंकी ऐसी ही अवस्था थी।

रूसी मोरचेका दूसरा दरजा पहले दरजेके पीछे लियाओयाङ्ग नगरके अत्यन्त समीप था। इस दूसरे दरजेमें वैज्ञानिक ढङ्गसे बने हुए बहुसंख्यक तोपोंके मोरचे और किले थे। अन्तर्वर्त्ती भारतवर्षमें आपलोग जैसे किले देखते हैं, रूसियोंके यह वैज्ञानिक ढङ्गसे बने किले वैसे नहीं थे। आप जो किले देखते हैं, उनकी ऊंची ऊंची दीवारें और उन दीवारोंमें निकले बड़े विशालाकार बुर्ज बहुत फासिलेसे दिखाई देते हैं; यह वैज्ञानिक किले यहांतक नीचे थे, कि दूर तो दूर, नजदीकसे भी साफ दिखाई देते नहीं थे। समझानेके लिये हम एक किलेकी सूरत लिखते हैं; किसी ऊंची जगहसे देखिये, तो आपको नीचेका यह किला इस रूपमें दिखाई देगा,—सहस्र सहस्र फुट गम्भीरताके एक गोल
१४ किनारे चक्राकार मोटीसी एक रेखा है। यह रेखा क्या

है? यह रेखा और कुछ नहीं,—असंख्य छोटे छोटे कुंओं एक माला है। इन कुंओंमें जल नहीं है; म्रत्यु है। इन कुंओंकी गहराई चार-पांच हाथसे अधिक नहीं। हरेक कुंएंका मुंह गोल है और वह जैसे जैसे गहरा होता गया है, वैसे सङ्कीर्ण होता गया है; यहांतक, कि जिस जगह इस कुंएंकी समाप्ति होती है, उस जगह कुंएंमें सिर्फ एक छोटासा छिद्र रह जाता है। इस छिद्रमें कोई चार फुट लम्बी नोकदार बरछी ऊपर मुंह किये गड़ी है। कुंएंकी यह गावदुम या अङ्गरेजी वर्ण V जैसी बनावट इसलिये है कि जब आदमी कुंएंमें गिरे, तब उसका ऊर्द्धाङ्ग और निम्नाङ्ग दोनों कुंएंके गावदुम पार्श्वसे टकराकर ऊपर हो जाये; देहका मध्यभाग यानी कमर नीचे जाये, जो बरछी द्वारा आसानीसे बिंध जाये। ऐसे ही कुओंकी चार लड़योंकी विशाल मोटी मालासे यह रेखा तय्यार हुई है। यानी एक लम्बी पंक्तिमें ऐसे चार कुएं खोद, उनकी बगलमें वैसे ही और चार कुएं खोद,—इसीतरह बराबर चार चार कुंएं बना इस क्रमसे यह माला बढ़ाई और पूरी की गई है। इन कुंओंके बीच पहले तो इतनी जगह नहीं और जो जगह है, सो उसमें टट्टरे गाड़ खारदार तारोंके जाल लगा दिये गये हैं। कुंओंकी इस मालासे आगे थोड़ीसी खुली भूमि है, उससे आगे बड़े बड़े लोहेके खूंटोंके सहारे खारदार तारोंका जाल है; इस जालके आगे फिर वैसी ही चार चार कुंओंकी बनी एक माला है। इस मालाके आगे थोड़ा अन्तर है और अन्तरके बीच बड़ी बड़ी बहुसंख्यक तोपोंसे खड़ा किला। किला इस तरह बना है, कि जिसमें सब मालकी भूमि और किलेका आंगन तय्यार किया इस

है, जिसके बीचमें गोलोंको बेअसर करनेवाली मोट उसी भूगर्भस्थ खिपाहियोंके रहनेकी कोठरिया आंगनकी चारो ओर छोर-पर बिना खुद हुई जमीनकी दीवार ; जिसमें मारें बनी और तोपें लगी हैं। जमीनके भीतर ही भीतर किलेका आंगन भी है, उसकी चारो ओरकी दीवारें भी भीतर ही हैं; बाहर कुछ भी नहीं; फिर भी, यह किला आगके समयके उन ऊंचे किलोंसे शतगुण अधिक दुर्भेद्य है। रूसी मोरचेका दूसरा दरजा ऐसे ही ऐसे बहु-संख्यक किलों द्वारा संगठित हुआ था। इन दोनो दरजोंके बीचकी भूमि रूसी सिपाहियोंसे ठसाठस भरी थी। इन दोनो दरजोंके बीच अगणित सिपाहियोंसे परिवेष्टित और परिरक्षित रूस-सैन्यके विधाता सर्व्वप्रधान सेनापतिका सदर लियावयाङ्ग नगर था।

दोनो ओरकी यथार्थ सैन्य-संख्याका हिसाब मालूम न होने-पर भी फौजी संवाददाताओंने स्वचक्षुसे देख एक आनुमानिक हिसाब प्रकाशित किया है। केसेल तथा और भी कितने ही संवाददाताओंकी बताई इस संख्यामें पक्षपातकी बू आती है। इन सबने रूसियोंकी सैन्य-संख्या कम और जापानियोंकी अधिक बताई है। केसेलने जापानियोंकी सैन्य-संख्या अधिक बता मानो आंसू पोंछनेके लिये अन्तमें कहा है,—"जापानियोंकी सैन्यसंख्या अधिक थी सही; किन्तु उसके मुकाबिल रूसियोंके अपने चुने सुदृढ़ मोरचोंको देखते हुए जापानियोंकी सैन्य-सम्बन्धीय यह श्रेष्ठता गिनतीमें लाई जा नहीं सकती।" इसतरह जखम भी हुआ; मरहम भी हुआ। किन्तु लियाओयाङ्गका यह युद्ध स्व-चक्षुसे देखनेवाले सभी संवाददाता रूसके पक्षपाती नहीं थे। कितने ही संवाददाता ऐसे भी थे, जिन्होंने रूसियोंका पक्ष

न जापानियोंका ; जो बात उन्हें दिखाई दी, उसे उन्होंने ठीक-ठीक कागजपर लिख जगत्‌के सामने रख दिया। विशेष : विलायतके सर्वविख्यात टाइम्सके संवाददाताने अपने ढङ्गसे और भी स्पष्टताके साथ लिखा है,—"रूसकी सैन्य-संख्या जापानकी सैन्य-संख्याकी अपेक्षा कम नहीं ; बल्कि कुछ अधिक ही थी।" ऐसीही बात हुई ; इसे साफ जाहिर होगा। जापानियोंकी सैन्य-संख्या क्या थी ? कुरोकी, नोदू और ओकू,—इन तीनों सेनापतियोंके अधीन साठ साठ हजार सिपाही थे ; यानी तीनों सेनापतियोंके अधीनस्थ सिपाहियोंकी सम्मिलित संख्या थी,—एक लाख अस्सी हजार। सिवा इसके प्रत्येक सैन्यके साथ रक्षित फौज भी थी। इस रक्षित फौजको भी जोड़ देनेसे जापानी सिपाहियोंकी संख्या कोई दो या सवा दो लाख थी। इस हिसाबसे रूसी सिपाहियोंकी संख्या कोई ढाई या पौने तीन लाख थी। सिवा सिपाहियोंके कोई छः सौ तोपें रूसियोंकी ओर थीं और कोई छः सौ तोपें जापानियोंकी ओर। [illegible] बादशाह-ज़ारके लिये कोई पौने छः लाख [illegible]र हुए थे और कोई बारह सौ तोपें [illegible] इनके लिये तय्यार की गई थीं।

पाठक जानते हैं, कि मारशल ओयामाने शाहो-नदीके समीप हुनहो-नदीमें अपना डेरा स्थापित किया था। उन्होंने विचार [illegible] था, कि शाहो-नदीका युद्ध शीघ्र ही समाप्त हो जायेगा [illegible] इस ओरका काम समाप्त करनेके उपरान्त पोर्ट-आर्थर-बन्दर [illegible] घेरनेवाली फौजोंको लेकर कोई एक लाख सिपाही [illegible] उत्तरकी ओर युद्धक्षेत्रमें उपस्थित होंगे। किन्तु ऐसा [illegible] ; पोर्ट-आर्थरका पतन जल्द नहीं हुआ ;

चतुर्द्दश परिच्छेद।

लियावयाङ्ग महायुद्ध,—आदि-पर्व्व।

पिछले परिच्छेदोंमें हम जापानी फौजोंको जिन जगहों छोड़ आये हैं; आशा है, कि पाठकोंको वह जगहें भूली न होंगी। सेनापति कुरोकीको सैन्यको हमने यूशूलिङ्गजू और याङ्गजुलिङ्गमें छोड़ा था, नोजकी सैन्यको तोम्हुशानमें और ओकूको सैन्यको हैचिङ्ग तथा नये निउच्वाङ्गमें। गत अन्तिम बार इन तीनों सेनापतियोंकी सैन्य जब सम्मिलितभावसे आगे बढ़ी थी, तब कुरोकी और नोजूकी सैन्य-पंक्तिके अग्रगमनके उपरान्त सबके अन्तमें ओकूको सैन्य-पंक्तिने ३ री अगस्तको आगे बढ़ हैचिङ्ग और पुराने निउच्वाङ्ग नगरपर अधिकार किया था।

इस ३ री अगस्तके बादसे कोई दो सप्ताहतक जापानी और उसके सामनेकी रूसी,—इन दोनों फौजोंमें घोर युद्धकी तय्यारियां हुईं, किन्तु कोई युद्ध नहीं हुआ; घटायें घिरीं, किन्तु वृष्टि नहीं हुई। वृष्टि न होनेके कई कारण थे। एक कारण यह था, कि किसी घोर युद्धसे पहले सैन्यसमावेश-सम्बन्धीय जिन अवश्य-प्रयोजनीय उपकरणोंके संग्रहका प्रयोजन होता है, उभयपक्ष उन उपकरणोंका संग्रह करनेके लिये बाध्य हुए थे। दूसरा कारण यह था, कि इस अगस्त मासके दूसरे सप्ताहके अन्त और तीसरे सप्ताहके आरम्भसे रणस्थलपर एकाएक काली काली घटायें घिर आईं

जापान-सेनापति।



युद्धविशारद ष्योकू।

२य भाग १८३ पृष्ठ।

और लगातार कोई चार दिनोंतक बराबर बरसती रही। नदी-नाले भर गये; तराइयोंमें जल ही जल दिखाई देने लगा। कुरोकीकी सैन्यमें बैठे विलायतके 'टाइम्स'के संवाददाताने इसी वृष्टिके सम्बन्धमें १८वीं अगस्तको अपने कम्पसे तार द्वारा समाचार दिया था,—"लगातार चार दिनोंकी वृष्टिने नदी-नाले भर अब विश्राम लिया है; फिर भी, मौसम अभी साफ नहीं हुआ; काली काली घटायें आसमानमें उड़ती फिरती हैं।" इस वृष्टि-जल प्लावित युद्ध-स्थलमें उच्चभूभागमें रहनेकी वजह रूसी सेनाके कष्ट बहुत कुछ संरक्षित थे और जापानी निम्नभूभागमें रहनेकी वजह बड़ी ही विपद्में। जापानी ही आगे बढ़नेको थे; जलप्लावनकी वजह बढ़ न सके। रूसी बढ़े थे; या बढ़नेका मौका पूरा करने पर थे; किन्तु कर न सके। उसी १८वीं अगस्तको टाइम्सके संवाद-दाताने लिखा था,—"उस दिन फसलमें लहराते ऊंचे [illegible]-इयोंमें घुस चुपके चुपके आगे बढ़ रूसी एक जापानी चौकीके सामने पहुंच गये। जापानी कुछ चौंके सही; किन्तु उन्होंने चटपट बन्दूकें उठा रूसियोंको मार भगाया।" इसमें सन्देह नहीं, कि वह फसलसे भरे खेत या घासाच्छन्न तुरन्त मैदान दलदलसे भरकर जापानी सैन्यके लिये नितान्त दुर्गम्य हो गये होंगे। ऐसे ही कितने ही कारणोंसे जापानी सैन्य-पंक्ति आगे बढ़ लियाओयाङ्गका वह ऐतिहासिक महासमर आरम्भ कर नहीं सकी। क्रम क्रमसे जमीन सूखी और जैसे ही रिसाला-तोपखाना आदिके निकलने लायक हुई, वैसे ही जापानकी ओरसे वह युद्ध आरम्भ हुआ। महायुद्ध है; इसलिये इस वक्तव्यमें यानी एक परिच्छेदमें इसका हाल लिखनेमें असमर्थ हैं। इसके लिये हम दूसरे मोर

भागोंमें विभक्त किये देते हैं,—पहला भाग २३ वीं अगस्तसे २८ वीं अगस्ततक; दूसरा भाग २६ वींसे ३१ वीं अगस्ततक और तीसरा भाग १ लीसे ३ री अगस्ततक समझिये।

पहले ही लिख चुके हैं; कि कुरोकीकी सैन्यके सामने रूसकी चुनी हुई युरोपियन सैन्य थी। इस सैन्यके सेनापति केलरके निहत होनेपर रूस-रूम युद्धमें अपूर्व पराक्रम प्रकाश करनेवाले प्रथितयशाः वयोवृद्ध रूस-सेनापति इवनाफ़पर इस सैन्यकी परिचालनाका भार रखा गया था। आप लियावयाङ्गकी शाहराहके उस आनपिङ्ग नगरको अपना केन्द्रस्थल बना कोई पैंसठ हजार सिपाहियों और एक सौ बीस तोपोंके साथ जमे बैठे थे। आनपिङ्गके सामने रूसी मोरचेकी लम्बाई कोई पांच कोसकी थी। इनमें तीन मोरचे तीन ओरके केन्द्र थे। हुनशालिङ्गका मोरचा रूसी फौजके बायें किनारेका केन्द्र था, आनपिङ्गसे कुछ आगेका कङ्गलिङ्गका मोरचा रूसी फौजके मध्य भागका केन्द्र था और ताशीकौका मोरचा रूसी फौजके दाहने किनारेका केन्द्र। रूसके इन तीनों केन्द्रोंके सामने जापान-सेनापति कुरोकीकी तीन सैन्य थीं। कुरोकीकी सैन्यका दाहना बाजू हुनशालिङ्गके सामने था, मध्यभाग कङ्गलिङ्गके सामने और बायां बाजू ताशीकौके सामने।

२३ वीं अगस्तको प्रातःकाल जापानकी यह तीनों फौजें धीरे धीरे आगे बढ़ीं। रूसके गिरदावरीके सवारों और चौकियोंने बाधा देनेकी चेष्टा की; किन्तु मत्त गजेन्द्र क्या तृणकी बाधा मान सकता है? वायुके झोंकेसे जिसतरह खाक उड़ जाती है; बढ़ती हुई जापानी सैन्यके सामने पड़ उसीतरह

रूसी गिरदावरोंके खबर और चौकियां उड़ गईं। जो यूरोपियन सिपाही अबतक जापानियोंको 'पीला बन्दर' आदि समझते थे; वह जापानियोंका प्रचण्डप्रताप देख जापानियोंसे भीत हुए। समय रूसी मोरचेमें खबर फैल गई, कि सावधान,—जापानी लशकरने चढ़ाई आरम्भ की है।

इसतरह रूसियोंको पीछे हटा कुरोकीकी सैन्यके तीनों टुकड़े रूसी मोरचोंके सामने पहुंचे। कोई टुकड़ा रूसी मोरचेके सामने २४ वींको पहुंचा, कोई २५ वींको और कोई २६ वींको। इससे पहले उल्लेखयोग्य कोई युद्ध नहीं हुआ। रूसी मोरचोंके सामने पहुंच सबसे पहले कुरोकीकी सैन्यके मध्यभागने काङ्गचङ्गपर आक्रमण किया। कुरोकीकी सैन्यका मध्यभाग २५ वीं की रात होते ही काङ्गवलिङ्गके सामने पहुंच गया। था। रात होते रक्ष-महतावोंके प्रकाशमें काङ्गवलिङ्गके रूसी तोपखानोंके सामने जापानी तोपखाने लगा दिये गये। जगह जगह आक्रमण-कारनेवाली जापानी फौजें बैठा दी गईं। २६ वीं अगस्तको प्रातःकाल कोई तीन बजे, रात्रिकी निःस्तब्धता एकाएक भङ्ग हुई; एक जापानी तोप दगी; रूसी मोरचेपर गोला पड़ा; काङ्गवलिङ्ग पर्व्वतकी शान्ति भङ्ग हुई; काङ्गवलिङ्गके इर्दगिर्दका पार्व्वत्य अञ्चल प्रतिध्वनित हुआ। इसतरह लियाउयाङ्ग महासमर आरम्भ हुआ।

पहला गोला चलनेके बाद ही दोनों ओरके तोपखानोंसे छूट खुल गये। आकाशसे जैसे उल्कापात होता है, वैसे ही रात्रिके उस घोर अन्धकारमें तेजोमय बड़े बड़े भयङ्कर गोले रूसी और जापानी मोरचोंपर गिरने लगे। धनाधना —धनाधना-

ना—धनानानाना,—विराम नहीं था; विश्राम नहीं था; अवि-राम गोला-वृष्टि होने लगी थी; अविराम तोपोंका विकट गर्ज्जन होने लगा था। इस महाध्वनिके उत्थानसे सर्पादि जीव भागकर बिलोंमें घुस गये; हिंस्र जन्तु स्थलस्थलसे दूर भागे, पक्षी भयवश अपने रातभरके बसेरेको जगह भी रह न सके और प्रातःकालका अन्धकार रहनेको वजह उड़कर धुंधला भाग भी नहीं सके। रणभूमिमें युद्धारम्भकर दोनो शक्तियोंने प्रकृति देवीको प्रत्यूषकी स्वर्गीय शान्तिमें घोर विश्रृंखला उप-स्थित की।

क्रम क्रमसे रात्रि बीती प्रभात उपस्थित हुआ। पूर्वगगनने रक्ताभ सूर्य्यके सम्मानार्थ रङ्गीन बादलोंका सिंहासन बिछाया। बाल सूर्य्य मुस्कुराते हुए ऊपर चढ़ उस सिंहासनपर आसीन हुए। उनकी लाल ज्योतिसे पर्व्वत लाल हुए, वन लाल हुए, नदी-नाले लाल हुए;—उनके रक्ताभ किरण-जालसे तोपें लाल हुईं, बन्दूकें लाल हुईं, तलवारें लाल हुईं, सङ्गीनें लाल हुईं; सूर्य्यकी लालिमाने तृणाच्छादित हरिद्वर्ण रणभूमिको लाल बना दिया; युद्धके लिये प्रस्तुत सिपाहियोंके मुखमण्डल लाल बना दिये। इस लालिमाको देख रणचण्डीके मनमें कितना हर्ष उत्पन्न हुआ होगा?

सूर्य्योदयके साथ साथ एकाएक जापानी तोपोंके मुंह बन्द हुए। अफसरोंके घोड़े इधर-उधर दौड़े; बिगुल बजे; अफसरोंकी तलवारें म्यानसे बाहर निकल पड़ीं। बेण्ड बाजा बजने लगा; रणोन्मत्त योद्धा बेण्डकी आवाज सुन रणके लिये और ... हुए। ऐसे समय जापानी सैन्यके मध्यभागको आ

बढ़नेकी आज्ञा मिली। काञ्चनलिङ्ग पर्व्वतमालाके सामने एक बहुत बड़ा मैदान था; मैदानके छोरपर वन था। अबतक जापानी सैन्य इसी वनमें थी; जैसे ही उसे आगे बढ़नेकी आज्ञा मिली, वैसे ही वह एक विशाल अर्द्धचन्द्र पंक्तिमें वनसे बाहर मैदानमें निकली और काञ्चनलिङ्ग पर्व्वतमालाकी ओर डबल मार्च करती मानो किसी लहर दौड़ती चली। इस बढ़ती हुई जापानी सैन्य-पंक्तिके लिये रूसी गोले तुच्छ थे; गोलियां कङ्कड़-पत्थर थीं; कितने ही जापानी सिपाही मैदानमें ढेर हो गये; किन्तु उस आगे बढ़ती हुई सैन्य-पंक्तिकी अग्रगतिमें कोई बाधा उपस्थित नहीं हुई; वह बराबर आगे बढ़ती ही गई। जैसे जैसे काञ्चनलिङ्गकी तराई समीप होती गई, वैसे वैसे जापानी सैन्य-पंक्ति उसकी ओर अधिकसे अधिकतर वेगसे बढ़ती गई। अन्तमें जापानी सैन्य-पंक्ति पर्व्वतमालाकी तलहटीमें पहुंच गई। वहां पहुंच उस सैन्य-पंक्तिके प्रत्येक सिपाहीने कण्ठसे कण्ठ मिला हर्षध्वनि की। वह गगनभेदी हर्षध्वनि अलौकिक थी; उससे दिशायें ध्वनित हुईं; रूसियोंके हृदय आप ही आप हिल गये।

ऐसे समय घोड़ोंकी टापोंकी आवाजें आईं और बजनी गाड़ियोंके दौड़नेसे पृथ्वी हिली। जापानी तोपखाने एकाएक वनसे निकल मैदानमें आये। पहले जो कई जगहें तोपखानोंके लिये निर्दिष्ट की गई थीं, उन जगहोंमें जापानी तोपखाने लगा दिये गये। कहते हैं, कि इस समय जापानी तोपखानोंने बड़ी सावधानताके साथ कार्य किया। रूसी तोपोंके ठीक सामने उनसे बहुत ही समीप जापानी तोपखाने लग गये। इस और जिस समय जापानी फौजें काञ्चनलिङ्ग पर्व्वतकी [illegible]

देशमें पहुंच रूसी गोलोंकी मारसे रुका था आगे बढ़नेके लिये दम ले रही थीं; दूसरी ओर उसी समय जापानी तोपखानोंने अपने नये मोरचोंमें लग रूसी तोपखानोंपर गोलन्दाजी आरम्भ की। इस अवसरमें रूसी तोपखाने निस्तब्ध या निकम्मे नहीं थे; पहले बढ़ती हुई जापानी सैन्य-पंक्तिपर; इसके बाद बढ़ते हुए जापानी तोपखानोंपर अपने गोले बरसा रहे थे। अबतक जापानी तोपोंका मुंह बन्द था; इसलिये रूसी तोपखानोंको और भी पराक्रम प्रकाश करनेका अवसर मिला था; किन्तु जैसे ही जापानी तोपखानोंने समीप पहुंच रूसी तोपखानोंपर गोला-वृष्टि आरम्भ की, वैसे ही रूसी तोपखानोंकी आवाज धीमी पड़ गई। जापानी गोले बड़े ही भयङ्कर थे; विशेषतः इस समय जापानी तोपों द्वारा चलते हुए आपनल गोले और भी भयङ्कर थे। उनकी चोटसे रूसी गोलन्दाज उड़ने लगे; रूसी तोपोंके सामनेकी घुस उड़ने लगी; काञ्चनलिङ्ग पर्व्वतमालाकी छाती फटने लगी। कई घण्टे तक ऐसी ही भीषण गोलन्दाजी हुई। इस गोलन्दाजीके फलसे काञ्चनलिङ्गकी देहपर लगे कितने ही रूसी तोपखानोंके मुंह बन्द हो गये; कितने ही रूसी तोपखानोंका गर्ज्जन बहुत कुछ घट गया।

अब दिन चढ़ गया था। सूर्य्यदेव; वह प्रातःकालके सूर्य्यदेव नहीं थे। इस समय उनकी रश्मियां अत्यन्त तीक्ष्ण हो गई थीं; उनका तेज नितान्त असह्य हो गया था। ऐसे समय एकाएक फिर काञ्चनलिङ्गके तलदेशमें बैठी जापानी फौजको आगे बढ़नेकी आज्ञा मिली। काञ्चनलिङ्ग पर्व्वतमालाके पादमूलसे .. स्थानस्थान सुविधानुसार जगह जगह रूसी फौजें बैठी थीं।

यह सब फौजें युद्धके लिये तय्यार बैठी थीं। जापानी सिपाहियोंने आगे बढ़नेकी आज्ञा पाते ही सबसे पहले अपनी वरदियां उतार फेंकीं; क्योंकि तापकी वजह जापानी सिपाही पसीने पसीने हो गये थे; वरदियोंकी भी गर्मी उनसे सही जाती नहीं थी। सिवा इसके इस बार समतल भूमिपर आगे बढ़नेका काम नहीं; एक ऊंचे पर्वतपर चढ़नेका काम था। वरदियोंके साथ सिपाहियोंके जितने ही प्रयोजनीय साज-सामान होते हैं; उन सामानोंका बोझ होता है; पर्वतपर चढ़नेके लिये तय्यार जापानी सिपाही अपनी वरदीके साथ साथ यह साज-सामान भी फेंक बहुत कुछ हलके हो गये। ख़ाली वरदीके जापानी सिपाही अब सब नङ्ग-धड़ङ्गे हो गये।

वरदी उतार शस्त्र हाथमें ले जापानी सिपाहियोंने घोर जयध्वनिपूर्वक पर्वतपर चढ़ना आरम्भ किया। जैसे ही जापानी सिपाही पर्वतपर चढ़े, वैसे ही पर्वतपर बैठी रूसी फौजने जापानियोंपर गोली-वृष्टि आरम्भ की। सहस्र सहस्र रूसियोंकी बन्दूकें एक साथ दगने लगीं। रूसियोंकी यह भीषण गोला-वृष्टि देख जापानियोंने वीरताके साथ आगे बढ़ना आरम्भ किया। चट्टानोंकी ओटसे, छोटी छोटी झाड़ियोंकी ओटसे छिप छिप आगे बढ़ने लगे। जापानी सिपाहियोंका जो एक दस्ता रूसी मोरचोंके समीप पहुंच गया; उसने किसी सुरक्षित स्थानकी आड़ पकड़ रूसी सिपाहियों पर गोली बरसाना आरम्भ किया। कुछ देरतक ऐसा ही हाल रहा। क्रम क्रमसे कुछ जापानी फौजें रूसी मोरचोंके बहुत नजदीकी चोटियोंके समीप पहुंच गईं।

इस जगह कुछ देर विश्राम लेनेके उपरान्त जापानी सिपाहियोंने मिलकर एकबार फिर बड़ी गगनभेदी रणहुङ्कार किया। इसके उपरान्त जिसतरह चीता शिकारपर झपटता है, उसीतरह जापानी फौजें रूसी मोरचोंपर टूटीं। पलक झपकते रूसी और जापानी सिपाही भिड़ गये; तलवार, सङ्गीन, छुरे, तमचे आदिकी लड़ाई आरम्भ हुई। हताहतोंकी देहसे खूनके फव्वारे छूटने लगे; मार मार और हाय हायकी चिल्लाहटसे बड़ा शोर हुआ। जापानी सिपाही मानो पीछे हटना या रुकना जानते ही नहीं थे। एक जापानी सिपाहीके गिरनेपर अनेक जापानी सिपाही आगे बढ़ते थे। रूसी सिपाही आज घृणित 'पीले बन्दर' को सामने पा उसका पराक्रम देख स्तम्भित हुए थे। जापानियोंकी मार देख जापानियोंके प्रति का घृणाभाव भयमें परिणत हो गया था। जापानियोंको रोकना आसान नहीं था; उन्हें जो रोकनेके लिये आगे बढ़ता, वही मारा जाता। अथवा रूसियोंको आगे बढ़नेकी जरूरत ही नहीं थी; जापानी स्वयं ही आगे बढ़ रहे थे। कुछ देरतक इसीतरह लड़ाई चली।

लड़ते लड़ते एकाएक जापानी सिपाहियोंने एकबार फिर हर्ष-नाद किया और शस्त्र उठा रूसी सिपाहियोंमें जोरशोरके साथ घुस पड़े। विकट युद्ध आरम्भ हुआ। किसी जापानीने किसी रूसीके सङ्गीन भोंक दी; रूसीने भी चलते चलाते जापानी सिपाहीकी छातीपर तमचेसे गोली सर की; दोनों एक साथ मरकर धराशायी हुए। युद्धमें सब कुछ होता है। किसी रूसीने झपटकर जापानी सिपाहीपर तलवारका वार किया; जापानी

सिपाहीने वार बचा रूसी सिपाहीकी गरदन पकड़ ज़मीनपर गिरा उसकी छातीमें तीक्ष्णधार छुरा घुसेड़ दिया। किसी जापानीने आगे बढ़ तलवारकी एक ही चोटसे किसी रूसीका शिर उड़ा दिया; उस रूसी सिपाहीकी बेशिरकी लाश एक क्षणतक जहांकी तहां खड़ी रही; इसके बाद एकाएक धम-धमाकर गिरी। किसी जापानी अफ़सरने रूसी अफ़सरको टोका,—खड़ा रह! कहां जाता है? रूसी अफ़सरने वार किया; जापानी अफ़सरने वार खाली दिया और तमंचेके एक ही वारसे रूसी अफ़सरकी खोपड़ी चकनाचूर कर दी। इसतरह कदम कदमपर और आगे-पीछे दाहने-बायें मृत्युकी विकट लीला देख सिपाही ज्ञानशून्य हो गये। वह चीख चीखकर मुंहसे मार मार करते; किन्तु अपने मुंहकी निकली उस चीखको आप ही सुन न सकते। कितने ही सिपाही युद्धकी ज्वालासे कातर हो उठे; उनकी जीभ सूख उनके तालूसे लग गई; उनकी आंखें नाचने लगीं। कुछ देरतक इसतरह भी युद्ध चला।

अन्तमें इस युद्धानलकी समाप्ति हुई। जापानी सिपाहियोंने हताहत रूसी सिपाहियोंसे उनके मोरचे भर दिये। बहुसंख्यक रूसी सिपाही मारे गये। कहीं कहीं हताहत रूसी सिपाहियोंकी देहके छोटे छोटे टीले तय्यार हो गये। मृत्यु सामने आ बड़े बड़े वीरोंकी छाती दहलती है; जापानियोंके सामने या हताहत होनेसे बचे रूसियोंकी छाती दहलने लगी। बन्दूक छूट गई; निशान छूट गया; कारतूस छूट गये; टोपी छूट गई;—सब छोड़ एकमात्र प्रिय प्राण ले रूसी जापानियोंके सामनेसे भागने लगे। पहले दस पांच भागे; फिर पचीस पचास

भागे ; फिर सौ दो सौ भागे ;—फिर तो भागड़ हान्त जापानी सिपा-
रूस रूसी भागे ; ऐसे समय जापानियों रणहुङ्कार किया ।
हुङ्कार हुआ ; रूसी और भी फुरतीसे पर भारटता है, उसी-
जापानियोंके सामने भागते हुए रूसि टूटीं । पलक भपकते
देने लगी । न, छुरे,

जिसके पैर उठ जाते हैं, उसके पैर फिर नहीं न नके
रूसियोंके एक मोरचेसे उटे पैर क्रम क्रमसे. हरेक मोरचे
उठते ही गये । सिवा इनके जापानी रूसियोंके पीछे ही पीछे
थे ; वह रूसियोंको तनिक भी ठहरने देते नहीं थे । जो रूसी
तनिक भी ठहर जाते थे ; जापानी उन्हें तुरन्त मार-काट कर
शायी बना देते थे । जैसे शीघ्र शीघ्र बढ़ता समुद्र जल स्थलोंको
स्तम्भ पर चढ़ता है, उसीतरह जापानी सैन्य पर्वत-शिखरपर
चढ़ती गई । पर्वत-शिखरपर जगह जगह रूसकी राजपताका
कावें सदम्भ शिर उठाये वायुमें फर फर फहरा रही थीं । एक
दल जापानी सिपाही शीघ्र शीघ्र पर्वतपर चढ़ ऐसी ही एक
रूसी पताकाके समीप पहुंच गये । जापानी सिपाहियों और
उड़ती हुई उस पताकाके बीच बहुत ही थोड़े रूसी थे ।
जापानी सिपाही अधीर हुए ; जो रूसी सिपाही उनके सामने
थे, उनपर बाजकी तरह भपटे । कितने ही रूसी काटे गये .
कितने ही प्राण ले भागे । जापानी सिपाहियोंने कोई बाधा
सामने न पा भपटकर उस उड़ती हुई रूसी पताकाको गिरा
की जगह अपनी राज-पताका स्थापित की । राजपताका
कर उन सुद्दीभर जापानियोंने खिलखिलाकर और अपनी
कि और आनन्दित उत्साहसे ध्वनि की,—"बेनजई—

सिपाहीने वार बचा लिया होनेपर भी बड़ा ही तीक्ष्ण था। खड्ग गिरा उसकी छातीमें से घुस उसकी बगलमें घुस गई। एकबार जापानीने आगे बढ़ तलवारने घर्षध्वनि की; जान पड़ा मानो सिर उड़ा दिया; उस रूस सिपाहीका कोई बात नहीं। इस घटनाके कुछ उपरान्त समग्र जापानी सैन्यने झपट कर कल्कनलिङ्ग मशाकतमालाके शिखरदेशपर ओरसे छोरतक अधिकार कर लिया। इस घटनाके उपरान्तका हाल विलायतके 'डेली मेल'के संवाददाताने अपने तारमें लिखा था,—"मानो मन्त्र-बलसे एकाएक कल्कनलिङ्ग पर्व्वत-शिखरकी रूसकी ध्वजायें उतर गईं और उनकी जगह जापानी ध्वजायें उड़ने लगीं।"

जिस फुरतीसे जापानी सिपाही पर्व्वत-शिखरपर चढ़े; उससे अपेक्षा कहीं अधिक फुरतीसे रूसी सिपाही कल्कनलिङ्ग पर्व्वतमालाके नीचे उतरने लगे। अब जापानी सिपाहियोंने रूसी सिपाहियोंका पीछा छोड़ पर्व्वतशिखरपर ठहर उतरते हुए रूसी सिपाहियोंपर गोलियोंकी बौछार आरम्भ की; जापानी सिपाही पर्व्वतके एक पार्श्वमें जो कुछ गंवा चुके थे; अब दूसरे पार्श्वमें वह उसकी पूर्त्ति करने लगे। इस प्रकार रूसियोंकी बड़ी क्षति हुई। आनशिङ्ग नगरके समीप कितनी ही ऊंची पहाड़ियोंपर रूसी तोपखाने लगे थे; रूसियोंके पर्व्वत-शिखर परित्यागकर भागनेपर उन तोपखानेसे पर्व्वत-शिखरपर बैठे जापानियोंपर गोले बरसाने लगे। इससे रूसियोंके भागनेमें बहुत कुछ सुविधा हुई। अन्ततः रूसी सिपाही प्रायः दस बजे तोपखानोंके पीछे आनशिङ्ग नगर निर्व्विघ्न पहुंच गये।

जापानी सैन्यके समस्तमालापर जाते देखते ही रूसी, सब

दाहने और बायें बाजूके कामका हाल सुनिये। जापानके बायें बाजूने इसी २६ वीं अगस्तको अपने सामनेके रूसी मोरचेके केन्द्र-स्थल ताशीको या कौफेङ्गसूपर आक्रमण किया। प्रातःकाल पहले कोई दो घण्टे तक दोनों ओरसे खूब गोले चले। जापानी सैन्यका मध्यभाग जिस जगह था, उस जगहसे कौफेङ्गसू बहुत फासिलेपर था; फिर भी, कौफेङ्गसूकी गोलन्दाजोकी आवाज उस जगहसे साफ साफ सुनाई देती थी। इतना ही नहीं; जापानी सैन्यके मध्यभागमें अवस्थित विलायतके अखबार टाइम्सके संवाददाताने लिखा है,—"कौफेङ्गसूसे बहुत फासिलेपर रहनेपर भी वहांकी भीषण गोलन्दाजीके फलसे वायु-मण्डलमें विषम हलचल पड़ गई थी; वैद्युतिक प्रवाहकी तरह वायुकी थर्राती हुई लहरें शरीरको खाती थीं।" दो घण्टेकी ऐसी ही भीषण गोलन्दाजीके उपरान्त जापानी फौजें कौफेङ्गसूकी ओर बढ़ीं। आखगलिङ्गवाले युद्धकी तरह यहां धावा नहीं हुआ। यहां आगे बढ़नेकी आज्ञा पा बड़े ही सतर्क भावसे छोटे छोटे दलोंमें विभक्त हो जापानी सैन्य आगे बढ़ी। निरी पार्व्वत्य भूमि थी; इस भूमिमें सिपाहियोंका पंक्ति बांध आगे बढ़ना कठिन था। रूसी सिपाही हरेक पहाड़ी, टीले आदिके पीछे छिपे बैठे थे; जापानी सिपाही आड़से उन-पर पहले गोलियां बरसाते और जब उनके बलकी थाह पा जाते, तब एकाएक धावाकर उन्हें स्थानच्युत करते। बहुत धीरे धीरे युद्ध हुआ; इसलिये जापानी फौज सन्ध्यातक यद्यपि कौफेङ्गसूके समीप पहुंच गई, तथापि उस समयतक उसपर अधिकार कर नहीं सकी। सन्ध्या होनेपर जापानी फौज जिस जगह पहुंची थी; रातको विश्रामके लिये उसी जगह ठहर गई।

जापानी सैन्यने ख्याल किया, कि शत्रुको यहीं विश्रामकर प्रातःकाल हङ्गामा करना होगा; किन्तु आगे चलकर पाठक आप ही देख लेंगे, कि जापानियोंकी यह कामना कहांतक सफल हुई।

जापानके बायें बाजूने इस दिन इतना ही काम किया। अब यह देखिये, कि इस अवसरमें रूसियोंके सैन्यके दाहने बाजूने कितना काम किया। २६ वीं अगस्तकी प्रातःकाल जिस तरह उनकी सैन्यका बायां बाजू टौपिङ्गसूकी ओर बढ़ा, उसी तरह दाहना बाजू उनकी सैन्यके बायें बाजूमें बेङ्कलाग दुङ्गाशिङ्गकी ओर बढ़ा। इस ओर रूसियोंकी फौजें आगे बढ़ीं थीं; गिरि-शिखरपर लगी कितनी ही तोपखाने थे। जापानी फौजें वन-पर्वतका आश्रय ले इन तोपखानोंकी ओर बढ़तीं थीं और यह तोपखाने अपनी पूरी शक्तिके साथ जापानी फौजोंपर गोले बरसाते थे। दिनभर ऐसा ही युद्ध हुआ। जापानी फौजें दिनभर घेरे

जापानी अफसरोंने ख्याल किया था, कि रात कोई काम न होगा; किन्तु ऐसा नहीं हुआ। चांदनी रात थी; वन-पर्व्वतमें खूब प्रकाश फैला हुआ था। रूसियोंने ख्याल किया, कि जापानी सैन्य इस समय खुले मैदानमें पड़ी है; उसपर एकाएक टूट उसे मार भगाना चाहिये। ऐसा ही स्थिरकर कौफेङ्गस्यू और हुमशालिङ्ग दोनों बाजुओंकी रूसी फौजें अपनी अपनी जगहसे निकल आगे बढ़ीं। दोनों बाजूकी जापानी फौजें अरक्षित रहनेकी बजाय युद्धके लिये पूर्णरूपसे प्रस्तुत थीं। जगह जगह सन्तरी थे और सिपाही भरी बन्दूकें अपनी बगलमें रख पूरी वरदीमें घासके फर्शपर सोये थे। चन्द्र-प्रकाशमें जापानी सन्तरियोंको रूसी फौजें दूर होसे आती दिखाई दीं। सन्तरियोंने तुरन्त जापानी फौजको सावधान किया। जापानी सिपाही बन्दूकें ले उठ बैठे और आगे बढ़ रूसियोंके समीप पहुंचनेकी प्रतीक्षा करने लगे। रूसी बहुत ही धीरे धीरे आगे बढ़ रहे थे; उन्हें खबर नहीं थी, कि जापानी फौजें उनके बहुत ही समीप पहुंच गई हैं। रूसी फौजें जैसे ही और कुछ कदम आगे बढ़ीं, वैसे ही उनपर जापानी सिपाहियोंकी गोलियां बरसने लगीं। गोलियोंकी इस वृष्टिसे व्याकुल हो चार बाढ़ दाग रूसी भागे। जापानी फौजके रूसी हाथ यह सुअवसर लगा; वह जयध्वनि करती भागती हुई फौजके पीछे पीछे चली। पहले जापानी सैन्यके बायें बाजूका कार्य सुनिये। यह बाजू भागते हुए रूसियोंके पीछे पीछे चला। रूसी तोपखाने अपनी भागी आती सैन्यको क्षति पहुंचनेकी आशङ्कासे बिलकुल ही चुप थे। जापानी सैन्यकी अग्र-

गतिमें बाधा देनेवाला कोई नहीं था। रूसी फौज थी, वह बेतहाशा भाग रही थी। रूसी फौज भागकर अपने मोरचोंमें पहुंची; वहां ठहरकर वह अपने पीछे आनेवाले जापानियोंसे युद्ध करनेके लिये रुकी; किन्तु जापानी फौजने उसे रुकने न दिया। जापानी फौजके सरदार [illegible] धावा करते ही रूसी फौज अपने मोरचे छोड़ फिर भागी। जापानी फौजने फिर पीछा किया। इसके उपरान्त किसी भी मोरचेमें रूसी फौजके पैर न ठहरे। रूसी तोपखाने भागे—रूसी फौजें भागीं; रूसने चाहे थे जापानियोंको भगाने; किन्तु उनके पहले आप ही सुदृढ़ मोरचा खो बैठे। रात होते [illegible] जापानी [illegible] अधिकार हो गया। जिस जगह रूसी ध्वजाएं उड़ती थीं, उस जगह जापानी ध्वजाएं उड़ने लगीं; [illegible] जापानी ध्वजाओंपर सुधा-दृष्टि करने लगे।

एक ओर यह हुआ; दूसरी ओर जापानी [illegible] विपक्षतारोपण हो भागती हुई रूसी फौजका और रंग हुआ [illegible] हुआ। एक ओर रूसी फौज जब भागने लगी, तब जापानी फौज [illegible] उनपर टूट पड़ी। कुछ देरके लिये घमासान लड़ाई हुई। बहुतेरे रूसी मारे गये। इतनेमें जापानियोंसे [illegible] किसी तरह निकल रूसी बड़ी ही बेतरतीबी और हड़बड़ीके साथ भागे। रूसी तोपवाले समझते थे, कि उनके सिपाही उनकी रक्षा करेंगे; किन्तु जो स्वयं सिपाही इस समय अपनी ही रक्षा करनेमें असमर्थ थे, वह भला तोपवालोंकी रक्षा कैसे कर सकते थे? इतनेमें रूसी सिपाहियोंकी दुर्दिन [illegible] देख रूसी गोलन्दाजोंके छक्के छूटे; [illegible]

मोरचोंसे अपनी तोपें हटाने लगे। कुछ तोपखाने हटा दिये गये; कुछ बाकी थे; ऐसे समय जापानी सिपाही तोपखानोंपर टूट पड़े। एक रूसी तोपखानेमें आठ तोपें थीं। जापानी सिपाहियोंने इसे सामने या भीमवेगसे इसीपर आक्रमण किया। तोपोंके रक्षक और गोलन्दाज काट डाले गये; समूची बेटरी, यानी आठो तोपोंपर जापानियोंका अधिकार हो गया। बाकी तोपें रूसी निकाल ले गये। इसके उपरान्त जापानी सिपाहियोंने हुनशालिङ्गके रूसी मोरचोंपर अधिकार कर लिया। जिसतरह कौफेङ्गमूमें उसीतरह इस हुनशालिङ्गमें भी रूसी ध्वजाओंके बदले जापानी ध्वजायें चन्द्रप्रकाशमें फर फर फहराईं। इसतरह जो बात सन्ध्यातक नहीं हुई, वही बात २६ वीं की रातको हो गई। २७ वीं अगस्तको प्रातःकालसे पहले जापानने रूसके दाहने बायें और मध्य तीनों भागोंपर अधिकार कर लिया। कुरोकीकी सैन्य-पंक्तिने रूसी सैन्य-पंक्तिको एक कदम और पीछे हटा दिया।

२७ वीं अगस्तको सूर्यदेवने उदित होकर देखा, कि युद्ध-स्थलमें बहुत बड़ा परिवर्त्तन संघटित हुआ था। कल जिस जगह रूसी मोरचे थे, आज उस जगह जापानी जमे बैठे थे। पराजित रूसी फौज पीछे हट रही थी। जापानी फौजके मध्यभागके सामने दूरसे लियावयाङ्ग नगर झलकता था। यही नगर में इस रूसी सैन्यका बदर था। इस नगरको मञ्चूरिया और लियावयाङ्गके बीचकी शाहराह थी। यह नगर एक घाटीमें अवस्थित था; इसीलिये इसकी एक ओर वही कबानलिङ्ग गिरिमाला थी और दूसरी ओर गिरिमालाकी ढलानपरजालमें गहती तङ्गहो

गई थी, जो मध्य सन्धियाको और कुछ दूर वह लियावयाङ्ग नगरके समीप बहुत बड़ी नदी ताइजीहोमें मिल गई थी। वङ्कन-लिङ्ग गिरिशिखरपर पहुंचनेसे इस घाटीका दृश्य बिलकुल दिखाई देता था। रूसी फौज वङ्कनलिङ्ग पर्वतमालासे आगे लियावयाङ्गकी सामनेकी पहाड़ियोंके शिखरोंपर तोपखाने लगाये बैठी थी। जापानी फौजका मध्यभाग रूसी फौजको उसके इस दूसरे मोरचेसे भी हटानेके लिये तय्यार हुआ। जेनरल कुरोकीने शायद अपने अधीनस्थ अफसरोंको आज्ञा दे दी थी, कि आज ३० वीं अगस्तको दूसरा बहुत बड़ा ग्राम ल्यावलिङ्ग नगरपर कब्जा होना चाहिये।

पिछली रातको वङ्कनलिङ्ग पर्वतपर और उसके भी आगे एक छोटी पहाड़ीपर जापानी तोपखाने लगा दिये गये थे। ज्योंही दिनका प्रकाश बढ़ा, वैसे ही जापानी तोपोंसे छूटने लगे; रूसियोंने भी अपनी तोपोंसे जवाब देना आरम्भ किया। जापानी गोलन्दाजी बहुत ही सख्त थी; रूसी कुछ आशाएं छोड़ ल्यावयाङ्ग नगर खालीकर ताइजी पार हो आगेका आयोजन करने लगे।

जिस समय यह बातें हो रही थीं, उस समय विलायती अखबार टाइम्सके संवाददाता जापानी सिपाहियोंके बीच एक गिरि-शिखरपर बैठ युद्धस्थलको ओर दूरबीन लगाके इस विराट वक्षस्थले युद्ध दृश्यको देखा कर रहे थे। इस देखाका जो अनुभव हुआ, आपने उसे इसतरह लिखा है;—

“सवेरा होनेपर एकाएक मेरे सामनेका दृश्य साफ हुआ; घाटी साफ दिखाई देने लगी। जापानी सेनाने ...

दूरको उन राहोंपर बरस रहे थे, जिनसे पराजित रूसी सिपाही लौट रहे थे। कहीं कहीं अबतक धुंधलका छाया हुआ था। अब एकाएक तेज वायु-प्रवाह आरम्भ होनेसे वायुके झोंकेने धुंधलकेको धक्के दे वहांसे दूर कर दिया; धुंधलका क्या मिटा,—एक परदा हटा। सामनेकी सुविस्तीर्ण घाटीमें एक वह दृश्य दिखाई दिया, जो आजकलके किसी बड़े युद्धके लिये उपयुक्त था। घाटीमें आनपिङ्ग नगरकी बगलसे तङ्ग हो नदी बह रही थी; इसके किनारेका लम्बा-चौड़ा मैदान अगणित सफेद खीमोंसे सफेद हो रहा था। इन खीमोंके बीच बीचकी राहोंमें बार-बरदारीकी गाड़ियोंकी कतारें खड़ी थीं और शीघ्र शीघ्र डेरे-खीमे उखाड़े और गाड़ियोंमें लादे जाते थे। लियावयाङ्गकी ओर जानेवाली शाहराह भरी हुई थी। इस राहसे बारबर-बरदारीकी गाड़ियोंके तांते जा रहे थे; रिसाले जा रहे थे; तोपखाने जा रहे थे; सिपाही जा रहे थे। आन-पिङ्ग नगरसे आगे तङ्गहो नदी चमक रही थी। शाह-राह पार करनेके लिये इस नदीपर एक बड़ा पुल था, जिससे ओर छोरपर रूसियोंकी बड़ी भीड़ थी। इस पुलसे आगे रूसी सैन्य कई भागोंमें बंट उसपारकी पहाड़ियोंके बीच कुछ निगाहोंकी ओट हो रही थी।

"कोई साठ हजार रूसी झपटोंमें लौट रहे थे। जापानी तोपखाने नदीके इस पारकी रूसी फौजोंपर नियमितरूपसे गोले बरसा रहे थे। सन्ध्या समय एकाएक दाहने और बांयेंसे जापानी सैन्यने आगे बढ़ना आरम्भ किया। जापानी सिपाहियोंकी बन्दूकोंकी गाढ़ी लम्बी धूम-पंक्ति दिखाई दी; इसके बाद

ही तड़ तड़ तड़ तड़ बाढ़ दगनेकी आवाज़ आई। नीचे नीचे जापानी फौज बढ़ती थी; ऊपर ऊपर जापानी आग्नेय गोले बढ़ते थे। रूसी भी जापानी फौजपर आग्नेय गोले चलाने लगे। जापानी गोलोंका धुंआँ सफ़ेद था; रूसी गोलोंका काला। दूसरी सैन्यके बायें भागने रूसियोंको खूब दबाया। रूसी आगे आगे भागने लगे; जापानी पीछे पीछे मारने लगे। इस भागमें जापानी फौजें रूसियोंको तङ्गकी नदीमें पूरबको ओर भगा रही थीं। एक खतरेमें पड़ा। जापानी फौज यदि पश्चिम बढ़कर वार करती, तो रूसियोंके भागनेकी राह रुक जाती। इन्हीं समीपकी एक पहाड़ीपर बड़ी तोपें थीं और उनसे बराबर रूसियोंने जापानियोंकी द्रुत गति मन्द की। बाकी फौज भी पुलोंकी राह नदी पार करने लगी। यह फुरती यहाँतक हुई, कि रूसियोंने अपने रिसालेको घोड़े पैरा नदी पार करनेकी आज्ञा दी। नदीमें सवारो धम धम पानी पैठे। नदीकी धारा बहुत ही प्रखर थी और जल गहरा; कितने ही घोड़े डूब-कियां खा गये और कितने ही बह गये। रिसालेके निकल जानेसे पुल पार करनेवालोंकी भीड़ बहुत कुछ घट गई। रूसी सेना शीघ्र शीघ्र पार उतरने लगी। अब चमक चमककर सूर्य अस्त हुआ; रातने मानो लौटते हुए रूसियोंपर अपना परदा डाला।"

परदा पड़ गया; किन्तु इसी परदेमें बड़े बड़े काम हुए। जापानी सैन्यके दाहने-बायें बाजूके बढ़नेकी खबर टाइम्सके संवाद-दाताके पूर्वोक्त युद्ध-विवरणमें लिखी हुई है; इसके उपरान्त जापानी सैन्यका मध्य भाग भी आगे बढ़ने लगा। रूसी भाग ही रहे

थे ; और भी फुरतीसे भागने लगे। क्रम क्रमसे जापानी फौजें आगे बढ़ीं। क्रम क्रमसे आनपिङ्ग और उसके पीछेकी तङ्गहो नदी जापानी सैन्यके समीप हुई। जापानी सैन्य और आगे बढ़ी, रूसियोंके सदर आनपिङ्गमें जापानी सिपाही घुसे। आन-पिङ्ग नगरके लिये यह स्मरणीय सन्ध्या थी। नगर मानो श्मशान बन गया था। न कहीं नगरवाले थे ; न कहीं रोशनी थी। मकानोंके अन्दर भी प्रदीप जलते नहीं थे। राहोंमें पलटनें और रिसाले चल-फिर रहे थे। नगरके एक फाटकसे रूसी सिपाही निकल रहे थे ; दूसरे फाटकसे जापानी सिपाही नगर-प्रवेश कर रहे थे। अन्तमें रूसी नगर छोड़ गये ; जापानियोंने उसपर अधिकार कर लिया। इसके उपरान्त भी जापानी सैन्यका आगे बढ़ना स्थगित नहीं हुआ। रात होते रूसी फौजें तङ्गहो नदी पारकर गईं ; जापानियोंको रोकनेके लिये नदीका पुल उड़ाती गईं ; जापानी फौजोंने आगे बढ़ नदीतटपर अधिकार किया। इसतरह उस २७ वीं की रातको ही यह पूरी घाटी जापानियोंके हाथ आ गई।

२८ वीं को प्रातःकाल जापानी फौजका मध्य भाग लपककर आनपिङ्गके समीप तङ्गहो नदीके किनारे खड़ा हुआ। जापानी सैन्यके सामने खरस्रोता तङ्गहो कोई दो सौ गजकी चौड़ाईमें बह रही थी। उसका दूसरा किनारा जलके समीप किसी कदर नीचा रहनेपर भी जैसे जैसे आगे बढ़ा था, वैसे वैसे ऊंचा होता गया था ; अन्तमें उसने पहाड़ियोंका रूप धारण किया था। इन पहाड़ियोंपर और इनके पीछेके मैदानमें रूसी फौज ...त हो रात रूसियोंने पहाड़ियों और नदी-जलके बीचकी

लगीं; अपने साथ साथ रूसियोंको भी उड़ाने लगीं। रूसी अस्थिर हुए। दूसरा जापानी गोला आनेसे पहले ही एक रूसी धुसवन्दीसे निकल भागा। उसके पीछे दूसरा भागा। फिर तो तांता लग गया। दलके दल रूसी भागे; जलके समीप मोरचों-में जितनी रूसी पलटनें थीं, वह सब धुसबन्दियोंसे निकल भागीं। रूसी अपने पीछेके वनाच्छादित उच्च भूभाग या श्यामल पहा-ड़ियोंकी ओर भागे। दूर दीवार जैसी खड़ी उस ओर नीलाभ पर्व्वतमालाकी ओर भागते हुए भूरे रङ्गकी वरदियां डाटे सिपाही जापानियोंको साफ साफ दिखाई देते थे। ऐसे समय नदीतटपर यदि अधिक जापानी तोपें होतीं, तो रूसियोंकी बड़ी क्षति होती। एक ही तोप थी। फिर भी, वह एक ही तोप जिस जिस जगह रूसी सिपाहियोंका दल सघन देखती, उस उस जगह गोले मारती थी। तोपोंकी बड़ी जरूरत देख जापानियोंने कल रातके अधिकृत आनपिङ्ग नगरकी बगलकी एक पहाड़ीपर अपने तीन तोपखाने लगवा दिये; कुछ फासिलेपर रहनेपर तीनों तोपखाने भागते हुए रूसियोंपर विषम गोलावृष्टि करने लगे। किसी कदर उच्च भूभागकी धुसबन्दीमें बैठी रूसी फौजकी कोई दो कम्पनियां अपनी लौटती हुई फौजको मदद देनेके लिये अपने धुसोंसे निकलीं; किन्तु जापानी गोलोंकी मार खा तुरन्त वापस भागीं। नये लगे तोपखानोंके गोलोंने भागती हुई रूसी फौजको बहुत ही क्षतिग्रस्त किया।

दोपहरतक जापानी गोलोंकी मारकी वजह नदीतटके रूसी मोरचे बिलकुल खाली हो गये; नदीतटसे कुछ फासिलेके मोरचों ... उनके पीछेकी पहाड़ियोंपर रूसियोंका अधिकार बाकी

ध्वनि करती आगे बढ़ी। राह खुल गई। अन्यान्य जापानी फौज भी क्रम क्रमसे नदी पारकर ऐसी ही पंक्ति तय्यारकर आगे बढ़ने लगीं। उच्चस्थानमें बैठे रूसियोंको दिखाई दिया, कि अगणित अर्द्धचन्द्राकार पंक्तियोंमें बंटकर जापानी फौज उनकी ओर घटाकी तरह उमड़ी चली आती हैं। इस घनघटासे बचना कठिन समझ उसके पहुंचनेसे पहले ही रूसी फौजें अपनी जगह छोड़ पीछे खिसकने लगीं।

पाठकोंको स्मरण रखना चाहिये, कि यह वर्णन कुरोकीकी सैन्यके सिर्फ मध्य या प्रधान अंशका है। जिसतरह यह भाग आगे बढ़ रहा था, उसीतरह इस फौजका दाहना और बायां बाजू भी आगे बढ़ रहा था। २८ वीं अगस्तको जिसतरह इस मध्य भागने नदी-जल पार किया; उसीतरह दाहने और बायें बाजूने भी पार किया। इसके बाद उसी २८ वीं अगस्तको जिसतरह जापानियोंका मध्य-भाग अर्द्धचन्द्राकार व्यूह बना रूसियोंको पीछे हटाता आगे बढ़ने लगा, उसीतरह जापानियोंके दाहने और बायें बाजूने भी आगे बढ़ना आरम्भ किया। रूसी पूर्णरूपसे विध्वस्त हो लियावयाङ्गकी ओर भाग रहे थे।

उस सुविशाल जापानी सैन्य-पंक्तिके दाहनेके सेनापति कुरोकीकी कार्यावली लिखी गई; अब यह देखिये, कि इस अवसरमें कुरोकीके बगलके सेनापति नोजू और उनकी भी बगलके सेनापति ओकूकी सैन्यने क्या काररवाई की। सेनापति कुरोकीकी सैन्यके आगे बढ़नेके दो दिन बाद यानी २५ वीं अगस्तको ओकू और नोजूकी सैन्य-पंक्तियां आगे बढ़ीं। ओकूकी सैन्य-पंक्ति किसी कदर अपने बायें यानी कुरोकीकी सैन्य-पंक्तिके

वन रूसियोंको भयङ्कर प्रतीत होने लगा; इसीमें शत शत—सहस्र सहस्र—शायद लक्ष लक्ष जापानी घुसे हुए हैं; रूसियोंकी क्या दशा होगी? सामनेके मैदानमें जहां जहां जापानियोंकी जरा भी झलक दिखाई देती थी, वहां वहां रूसी तोपें गोले चलाने लगती थीं। फ्रान्स-राजधानी पेरिसके अखबार 'मतान'के संवाददाता लुडोविन नाडव उस समय रूसियोंकी फौजमें थे। आपने यह घटना देख इसी दिन यानी २८वीं अगस्तको अपने अखबारको समाचार भेजा था,—"सामनेके सुविस्तीर्ण भूभागकी बनावट ऐसी थी, जिससे वह सबका सब पूर्णतया दिखाई देता था। रूसी गोले अपने तोपखानोंसे निकलते और सामनेके जापान-अधिकृत वनपर पहुंच फटते साफ साफ दिखाई देते थे। जैसे जैसे सन्ध्या समीप होती गई, वैसे वैसे जापानी फौजें वनके भीतर भीतर रूसी मोर्चोंके समीप होती गईं; रूसी भी वैसे ही वैसे घोर युद्धके लिये तय्यार होते गये। आनशानशन पहाड़ीकी चोटीपर रूसी तोपखाने थे; तोपखानेसे नीचे एक लम्बी पंक्तिमें चुने हुए गुलचले थे; उनके कुछ नीचे और उनकी ही जैसी आगे पंक्तिमें रूसी पलटनें थीं। दोनों ओरसे घोर युद्धकी तय्यारियां हो रही थीं; ऐसे समय छाये हुए बादल बराबर सघन हो गये और मूसलधार वारिवृष्टि करने लगे।"

शायद रात होते युद्ध होता; किन्तु उस होती हुई विषम वृष्टि और उसके फलसे उत्पन्न उस प्रगाढ़ अन्धकारमें रजनीने विकट-दर्शन बन उस युद्धस्थलमें अवस्थित खूनकी प्यासी मानव-जातिको अपना भीषण कार्य आरम्भ करने

आर्थर-बन्दर-मुकदन रेल गई थी; बस्तीमें उसके नामका रेल-ष्टेशन था। पहाड़ी छोड़नेके उपरान्त रूसी फौज जब यह नगर छोड़ने लगी, तब इसके रेल-ष्टेशन और मुख्य मुख्य इमारतोंको आग लगाती गई। नगरमें जगह जगहसे धूमपटल उत्थित हो आकाशमें विस्तृत होने लगे। जगह जगह लाल लाल लपलपाती सुविशाल अग्निशिखा निकलती दिखाई दी; आनशानशान नगर मानो किसी महा-श्मशानमें परिणत हुआ।

आनशानशानके मोरचेपर अधिकार करते ही सेनापति ओकूने अपनी सैन्यको कई ओरसे, लौटते हुए रूसियोंको दबानेके लिये रवाना करना आरम्भ किया। आनशानशान पहाड़ीकी एक ओरसे जापानी सैन्य चढ़ने और दूसरी ओरसे उतर कई ओरसे रूसियोंकी ओर बढ़ने लगी। देखते देखते आनशानशान नगर जापानी फौजोंसे भर उठा; देखते देखते वह कलकी दूरकी उमड़ती जापानी सैन्यकी घनघटा पीछे हटते हुए रूसियोंके समीप पहुंच गई। बाढ़ दगने लगीं; बाढ़पर बाढ़ दगने लगीं। रेल-लाइनके दाहने-बायेंसे हटकर रूसी कवाइदके साथ लौटना छोड़ बेतहाशा भागने लगे। वर्षाऋतुका अन्त था; कल रातको घोर वृष्टि हुई थी; अपनी सघनता और पूर्णताईक्यको प्राप्त हुई काली हरियालीके तलदेशमें अगाध अगाध जल भरा था; कीचड़ भरा था। भागते हुए रूसी सिपाहियोंने उस जलका भी खयाल नहीं किया; कीचड़का भी खयाल नहीं किया; जापानी सिपाहियोंके

गया] बहुत बड़ा तोपखाना था, जिसमें बीस तोपें और पचास या साठ गाड़ी गोले थे। दोनों ओरसे दबाव पड़नेपर रूसी यह तोपखाना एक तीसरी ओरसे ले चले। उस ओर कीचड़ अधिक था; बड़ी बड़ी वजनदार तोपोंके पहिये भूमिमें धंस गये। जापानी बढ़े चले आते थे; उनकी गोलियां तोपोंके इर्दगिर्द बरस रही थीं; तोपोंकी रक्षा कैसे हो? करनल रावेनने आज्ञा दी, हरेक तोपमें चौबीस चौबीस घोड़े जोते जायें; सिवा इसके तोपसे लम्बी लम्बी रस्सि बांध और उन्हें पकड़ सिपाही खींचें। कुछ दूरतक तोपें इसीतरह खिंचीं; किन्तु अब उनका आगे खिंचना कठिन हो गया। जापानी फौजें तोपोंके बहुत समीप पहुंच गई; तोपोंके गिर्द जापानी फौजोंकी गोलियोंकी घोर वृष्टि होने लगी, उस वृष्टिमें बहुतेरे रूसी मरने लगे। रूसी करनल रावेन अपने सिपाहियोंका उत्साह बढ़ा रहे थे; ऐसे समय अगणित गोलियां आ उनकी देहमें लगीं; रावेन मारे गये; वीरवर मरकर अपनी तोपोंके समीपसे हटे। करनेलके मरते ही रूसी सिपाहियोंके पैर उठे; बीसों-तोपें और उनके गोलोंसे भरी हुई कुल गाड़ियां जापानी फौजके हाथ लगीं। सिवा इसके दोनो जापानी फौजोंके बीचमें फंस बहुतेरे रूसी सिपाही मारे गये। दूसरे दिन २८ वीं अगस्तको ओकू और नोजूकी फौजें रूसियोंकी दूसरे दरजेकी सुदृढ़ किलाबन्दीके सामने पहुंच गईं।

इसतरह इस लियावयाङ्ग युद्धका पहला पर्व समाप्त हुआ। जापानी देखने रूसी सैन्यको उसकी किलाबन्दीके बाहरी दर-

पञ्चदश परिच्छेद

लियावयाङ्ग महायुद्ध—मध्य-पर्व—श्रोकू और
नोजूका अग्रगमन—भीषण युद्ध।

इस युद्धके प्रथम पर्व्वमें जापानकी जय हुई सही; किन्तु कोई दावा नहीं कर सकता था, कि दूसरे पर्व्वमें क्या होगा। और तो क्या,—इतने बड़े सेनापति ओयामा और कुरोपाटकिन भी यह बता नहीं सकते थे, कि अन्तमें क्या होगा। असलमें युद्ध शतरञ्जका खेल है। स्याह मुहरोंने सफेद मुहरोंको बिलकुल दबा लिया है; सफेद बाजी बिलकुल ही बिगड़ चुकी है; ऐसे समय स्याह बाजीकी एक चाल वाहियात होती है और सफेद बाजी स्याह बाजीको दबाने लगती है; अन्तमें वह चढ़ी-चढ़ी स्याह बाजी बिलकुल दब जाती है; दबी हुई सफेद बाजीके फिर विजयका सङ्कट बंधता है। युद्धका भी यही हाल है; कभी कभी दबी हुई फौज एकाएक जोर पकड़ आगे बढ़ती और शत्रुको विजयवाहिनीको परास्त करती है। इसीलिये कहा, कि लियावयाङ्ग युद्धके इस द्वितीय पर्व्वका फलाफल पहलेसे कोई सोच नहीं सकता था।

रूसी मोरचेके इस दूसरे दर्जेकी दृढ़ताका परिचय पाठक अबसे पहले पा चुके हैं। इसी मोरचेमें वह भूगर्भस्थ भयङ्कर कुंओंकी मालाओंसे घिरे दुर्भेद्य बहुसंख्यक किले थे। इन किलोंका सिलसिला लियावयाङ्ग नगरसे आगे जापानी सैन्य-पंक्तिके

पञ्चदश परिच्छेद

लियावयाङ्ग महायुद्ध—मध्य-पर्व्व—ओकू और नोज़ूका अग्रगमन—भीषण युद्ध।

इस युद्धके प्रथम पर्व्वमें जापानकी जय हुई सही; किन्तु कोई यह नहीं समझता था, कि दूसरे पर्व्वमें क्या होगा। और तो क्या,—इतने बड़े सेनापति ओयामा और कुरोपाटकिन भी यह बता नहीं सकते थे, कि अन्तमें क्या होगा। असलमें युद्ध शतरञ्जका खेल है। स्याह मुहरोंने सफेद मुहरोंको बिलकुल दबा लिया है; सफेद बाजी बिलकुल ही बिगड़ चुकी है; ऐसे समय स्याह बाजीकी एक चाल वाहियात होती है और सफेद बाजी स्याह बाजीको दबाने लगती है; अन्तमें वह बढ़ी-चढ़ी स्याह बाजी बिलकुल दब जाती है; दबी हुई सफेद बाजीके शिर विजयका मुकुट बंधता है। युद्धका भी यही हाल है; कभी कभी दबी हुई फौज एकाएक जोर पकड़ आगे बढ़ती और शत्रुकी विजयवाहिनीको परास्त करती है। इसीलिये कहा, कि लियावयाङ्ग युद्धके इस द्वितीय पर्व्वका फलाफल पहलेसे कोई सोच नहीं सकता था।

रूसी मोरचेके इस दूसरे दरजेकी दृढ़ताका परिचय पाठक अबसे पहले पा चुके हैं। इसी मोरचेमें वह भूगर्भस्थ भयङ्कर कुंओंकी मालाओंसे घिरे दुर्भेद्य बहुसंख्यक किले थे। इन किलोंका सिलसिला लियावयाङ्ग नगरसे आगे जापानी सैन्य-पंक्तिके

सामने अर्द्ध-चन्द्राकारमें फैला था। इन किलोंकी अर्द्धचन्द्रकार पंक्तिके दाहने छोरपर यानी ओकूकी सैन्य-पंक्तिके बायें बाजूके ठीक सामने शुशान नाम्नी पर्व्वतमाला थी; पर्व्वतमाला उतनी ऊंची नहीं थी; फिर भी, इदगिर्दके दिगन्तव्यापी मैदानमें यही एक पर्व्वतमाला थी; इसलिये अत्यन्त प्रयोजनीय थी। रूसी भूगर्भस्थ किलोंमें जो तोपें थीं, वह तो थीं ही; सिवा उनके इस शुशान पर्व्वतपर रूसके बड़े ही जबरदस्त कितने ही तोप-खाने लगे हुए थे। शुशान पर्व्वतमालाकी आगी रूसकी लम्बी लम्बी तोपें अपनी बगलके अपने किलोंकी रक्षा करनेके साथ साथ सामनेके मैदानमें भरी जापानी फौजोंपर गोले बरसा सकती थीं। इन भीषण तोपखानोंको देख ओकूने विचार किया था, कि रूसी किलोंपर धावा होनेसे पहले इस शुशान पर्व्वतपर धावा होना चाहिये। शुशान ही रूसियोंकी किलाबन्दीके इस दूसरे दरजेको खोलनेकी कुञ्जी है।

२८ वीं अगस्तको प्रातःकाल लियावयाङ्ग महायुद्धका द्वितीय पर्व्व आरम्भ हुआ। इस युद्धके पहले पर्व्वमें जापानी सैन्य-पंक्तिका दाहना भाग यानी सेनापति कुरोकीकी फौज आगे बढ़ी थी; इस द्वितीय पर्व्वमें जापानी सैन्य-पंक्तिका बायां और मध्य भाग यानी ओकू और नोजूकी फौज आगे बढ़ी। इस दिन दिनभर घोर युद्ध नहीं; हलकी हलकी कई लड़ाइयां हुईं। रूसी फौज अपने किलोंके आगेके मैदानमें छोटे छोटे मोरचे बांध पड़ी थीं; जापानी फौजोंने आगे बढ़ इन छोटे छोटे मोरचोंपर अधिकारकर उनसे रूसियोंको निकाल उन्हें उनके पीछेके किलोंमें ढकेल दिया। जापानी फौजोंको क्षतिग्रस्त करनेके लिये

आज दिनभर शुशान पर्व्वतके तोपखाने गोले बरसाते रहे; किन्तु उनसे जापानियोंकी उतनी क्षति नहीं हुई। रूसियोंको पीछे हटा और उनके तोपखानोंकी स्थिति मालूमकर जापानियोंने अपने तोपखानोंके लिये जगहें चुन उनमें तोपें लगाईं। आज दिनभर इतना ही काम हुआ। सन्ध्या समय जापानी फौजोंने मैदानमें विश्राम किया।

३० वीं अगस्तको रात्रि समाप्तिके समीप पहुंची; प्रातःकालकी हलकी हलकी सफेदी रणस्थलपर फैली। जापानी सिपाही बरसातकी उस तर और वृक्ष-लतासे ढंकी जमीनपर दिनभर खूब थकनेकी वजह रातको सन्तरियोंके पहरेमें किसी कदर सोये भी; किन्तु जापानी अफसर और इञ्जीनियर बिलकुल नहीं सोये; रातभर जागे और फौजोंके आगे बढ़ानेकी राहें और लगते हुए तोपखानोंके मौके जनवाते रहे; रातोरात रूसी हुई-पंक्ति और शुशान पर्व्वतमालाके सामने कोई तीन कोसकी अर्द्धचन्द्राकार रेखामें ओकूकी कोई दो सौ तोपें लगीं। ओकूकी बगलमें नोडूकी सैन्य-पंक्ति थी, उसके सामने भी रूसी मोरचे थे; उस सैन्य-पंक्तिने भी रात ही रात तोपें आदि लगा प्रातःकालके घोर युद्धकी तय्यारी की। इसतरह रात होनेपर जिस समय पूर्व्वीय गगन प्रकाशोज्ज्वल होने लगा, उस समयतक जापानी फौजें ३०वीं अगस्तके युद्धके लिये पूर्णरूपसे प्रस्तुत हो गईं। सिपाही सजधजकर अस्त्र-शस्त्रसे सुसज्जित हो युद्धके लिये तय्यार हो गये। उस प्रातःकालके बढ़ते हुए प्रकाशमें साथी अपने बगलके सिपाहियोंके मुख देख जापानी सिपाहियोंके मनमें जो भाव उदित

हुआ होगा, वह कैसा गम्भीर और कैसा अद्वितीय होगा ?

प्रातःकाल पांच बजे जापानी फौजें आज्ञा पा आगे बढ़ने लगीं। रूसी मोरचों और जापानी फौजोंके बीचकी जमीन जगह जगह फसल तथा इत्यादिसे बिलकुल ही छिपी हुई थी। इस वर्ष घासकी उंचाई कोई आठ या दश फुटकी थी, जिसमें मनुष्य पूर्णतया छिप जा सकता था। जापानी फौजें इसी हरियालीसे रूसी मोरचोंकी ओर बढ़ीं। रूसी दुर्ग-पंक्तिके सामनेकी जापानी फौजें शीघ्र ही हरियालीसे बाहर न निकलीं। शुशान पर्व्वतमालाके समीपकी फौजें हरियालीपार करते ही एक चौड़ी पंक्ति बांध शुशान पर्व्वतमालाकी ओर बढ़ीं। शुशान पर्व्वतके अफसर दूरबीनें लगाये जापानी फौजोंके मैदानमें आनेकी प्रतीक्षा कर रहे थे; जैसे ही जापानी फौजें मैदानमें आईं, वैसे ही पर्व्वतके रूसी तोपखाने गोले चलाने लगे। रूसी तोपोंके मुंह खुलते ही जापानी तोपोंके भी मुंह खुले। एक ओर रूसी गोले जापानी फौजोंकी ओर आने लगे; दूसरी ओर जापानी गोले शुशान पर्व्वतमालाकी ओर जाने लगे। इसतरह युद्ध आरम्भ हुआ। इसके बाद ओकूकी पूरी सैन्य-पंक्ति अपने स्थानसे निकल रूसी मोरचोंकी ओर धीरे धीरे आगे बढ़ने लगी; नोजूकी सैन्य-पंक्तिने भी ऐसा ही किया; रूसी दुर्ग-पंक्तिमें लगी तोपें जापानकी बढ़ती हुई सैन्य-पंक्तिपर गोले बरसाने लगीं। कोई चार कोसकी लम्बाईमें आग्नेय-अस्त्रोंकी भयङ्कर अग्निक्रीड़ा आरम्भ हुई।

दोपहरतक यह जापानी सैन्य-पंक्ति तिल तिल बराबर

पहुंची थी गई। रूसी सैन्य-पंक्ति और जापानी सैन्य-पंक्तिके बीच अपेक्षाकृत कुछ ऊंचे भू-भागका एक लम्बा सिलसिला था। दोपहरतक आगे बढ़ जापानी सैन्य-पंक्तिका एक बहुत बड़ा भाग इस टीलेके पीछेतक अधिकारकर ठहर गया। पूशान पर्वतपर रूसकी कोई एक सौ तोपें थीं। इन तोपोंकी विषम गोला-वृष्टिके फलसे जापानी फ़ौजें रूसियोंकी दुर्ग-पंक्ति-पर स्वच्छन्दसे आक्रमण कर नहीं सकती थीं। सिवा उनके रूसी दुर्ग-पंक्तिमें लगी तोपें भी जापानी सैन्य-पंक्तिकी अग्रगतिमें बड़ी बाधा उपस्थित करती थीं। इसलिये दोपहरको स्थिर हुआ, कि जापानी फ़ौजें बादको बढ़ें; पहले रूसी तोपोंकी खबर लेना चाहिये। कार्य्य आरम्भ हुआ। कुरोकी और नोदू दोनोंकी सैन्य-पंक्तिसे शत शत जापानी तोपें एक साथ दगने लगीं; रूसकी ओरकी भी शत शत तोपें एक साथ गर्ज्जन करने लगीं; पर्व्वत थर थर कांपने लगे; पृथ्वी डग डग हिलने लगी; दिशायें अतभयङ्कर विकट ध्वनिसे परिपूर्ण हुईं; कोसोंके सम्मे युद्धस्थलपर विषम अग्नि-वृष्टि होने लगी।

कुछ घण्टोंतक ऐसी ही विकट गोला-वृष्टि हुई। अन्तमें जापानियोंकी तोपें कुछ धीमी हुईं; नोदू और ओकू दोनोंकी सैन्य-पंक्तिको धावा करनेकी आज्ञा मिली। जापानी सैन्य पंक्ति ने मद्दम सहम नहीं; तत्कालिक सिपाहियोंने सिंहितकण्ठसे हर्षध्वनि की; शत शत मेघोंके सम्मिलित गर्ज्जन जैसा शब्द हुआ; उस शब्दसे दूर दूरतककी दिशायें परिव्याप्त हुईं। कहीं कहींकी जापानी फ़ौजें रूसी दुर्ग-पंक्तिके समीप पहुंच गईं; पूशान पर्व्वतके सामनेकी जापानी सैन्य-पंक्ति पर्व्वतके सन्देशतक

पहुंच गई। रूसियोंकी दृढ़ता देख इस समय इससे आगे अपनी फौजोंको आगे बढ़ाना उचित न समझ उन्हें पलटन-कर सुरक्षित स्थानमें ठहरनेकी आज्ञा मिली। जापानी फौजें पलटीं सही; किन्तु पलटकर जिस जगहसे चली थीं, उस जगह नहीं गईं; शाह होलें टीलों या कुछ भी उच्च भूभागकी आड़ पकड़ ठहर गईं। इन फौजोंमें और फौज मिलाई जाने लगी; दूसरे धावेकी तय्यारियां होने लगीं। तीसरेपहर यह तय्यारियां आरम्भ हुईं; ऐसे समय आकाश मेघाच्छन्न हुआ और घोर वृष्टि होने लगी। देखते देखते उस तृणाच्छादित भूभागपर जल ही जल दिखाई देने लगा। जापानी सिपाही जिस जगह थे, उसी जगह ठहर वृष्टि-जलसे भीगने लगे; उनकी वर्दी भीगी; पीठपर टंगा साज-सामान भीगा; देह और हाथके अस्त्र-शस्त्र भीगे। फिर भी; जापानी सिपाहियोंका उत्साह तनिक भी ठण्ढा नहीं हुआ; वह अपनी जगह ठहर वृष्टि थमनेकी प्रतीक्षा करने लगे।

वृष्टि वेगसे हुई सही; किन्तु शीघ्र ही थम गई। जापानी फौजें एकबार फिर धावा करनेके लिये तय्यार हुईं। ऐसे समय जापानी फौजोंको रूसी मोर्चोंके बीचसे एक विशालाकार चीज वायु-मण्डलमें चढ़ती दिखाई दी। यह चीज क्या थी? यह चीज और कुछ नहीं,—बहुत बड़ा एक फौजी गुब्बारा थी; गुब्बारेके खटोलेसे एक रस्सी बंधी थी और टेलीफोनका एक तार भी लगा था। उद्देश्य यह था, कि वायुके धक्कोंसे गुब्बारा उड़ न जाये; एक जगह बंधा रहे और गुब्बारेमें बैठे रूसी अफसर जापानियोंकी गतिविधि देख उसका समाचार टेलीफोन द्वारा

नीचेके अफसरोंको दें। जापानी अफसरोंने इस गुवारेकी आशङ्का की नहीं थी; करते तो शायद अपनी फौजके लिये भी गुबारे तय्यार कराते। एकाएक रूसियोंका गुबारा देख जापानी अफसरोंने अपनी फौजके दूसरे धावेको कुछ देरके लिये स्थगित कर दिया। आज्ञा दी,—"अभी नहीं; जब सान्ध्य अन्धकार फैलने लगे, तब धावा किया जाये।" यह आज्ञा देनेके उपरान्त जापानी अफसरोंने अपनी फौजोंकी स्थिति बदल दी। उद्देश्य यह था, कि रूसियोंके पास गुबारा रहनेपर भी वह जापानी फौजकी यथार्थ स्थिति जान न सकें।

३०वीं अगस्तकी सन्ध्या होनेके उपरान्त जापानी फौजोंने अपनी जगहें बदल दीं। जिस जगह एक भी जापानी सिपाही नहीं था, उस जगह बहुसंख्यक जापानी सिपाही एकत्र हुए; जिस जगह जापानी सिपाहियोंकी भीड़ लगी थी, उस जगह इने गिने सिपाही रह गये। सन्ध्यातक गुबारेमें बैठे रूसी अफसरोंने जापानी फौजोंकी जो स्थिति देखी थी, सन्ध्याके उपरान्त वह स्थिति बिलकुल बदल गई। स्थिति बदलनेमें बड़ा समय लगा; इसलिये जापानी फौज अर्द्धनिशासे पहले दूसरा धावा कर नहीं सकी। रूसियोंने खयाल किया था, कि आज दिन भरके युद्धमें असफलकार्य्य हो जापानी फौजें अत्यन्त हृदय-भग्न हुई हैं; दूसरे दिन प्रातःकालसे पहले उनके द्वारा आक्रान्त होनेकी आशङ्का नहीं। किन्तु जापानी फौजें और ही मन्त्रसे दीक्षित हुई थीं; वह बिना काम सम्पूर्ण किये विश्राम करनेको घोर पाप समझती थीं।

रात्रिकी निस्तब्धता भङ्गकर रात कोई एक बजे जापान-सैन्य-

पंक्तिमें एकाएक विगुल बजने लगा ; जापानी सैन्य-पंक्ति हर्षनादसे दिशायें परिपूर्ण करती रूसियोंकी ओर झपटी। रूसी एकाएक यह आक्रमण देख व्याकुल हुए। फिर भी; रूसियोंकी सैन्य-संख्या जापानियोंकी सेन्य-संख्यासे अधिक थी ; सिवा इसके जापानी सैन्य-पंक्ति जल-कीचड़से भरे मैदानसे कष्टपूर्व्वक आगे बढ़ रही थी ; रूसी सैन्य सुखपूर्व्वक अपनी रूखी दुर्गश्रेणीके भीतर बैठी थी। रूसी अपनी दुर्गश्रेणीके भीतरसे जापानी सैन्य-पंक्तिपर गोले और गोलियोंकी वृष्टि करने लगे। रात्रिका समय था ; छिपे हुए बहुसंख्यक रूसियोंके बीच फंस क्षतिग्रस्त होनेके भयसे जापानी सैन्य-पंक्ति वेधड़क आगे बढ़नेका साहस करती नहीं थी। फिर भी, इस सैन्य-पंक्तिके दो भाग क्रम क्रमसे आगे बढ़ रूसियोंके बहुत समीप पहुंच गये। एक भाग शुशान पर्व्वतकी बगलके एक लम्बे टीलेके नीचे पहुंच गया ; दूसरा भाग रूसी दुर्गश्रेणीके समीप अवस्थित हुआ। इस समय यह दोनो भाग वहांसे आगे बढ़ न सके। उनकी दोनो ओरसे गोली और गोलोंका तूफान बह रहा था ; प्रथमोक्त भाग पूर्व्वोक्त टीलेका आश्रय ले लेट गया ; शेषोक्त भाग एक उच्च भूभागकी आड़में धराशायी हुआ। इसतरह यह दोनो भाग अपने अपने आश्रयस्थलमें लेट प्रातःकालकी प्रतीक्षा करने लगे। जापानी सैन्य-पंक्तिका बाकी भाग कुछ ही दूर आगे बढ़ ठहर गया और बारंबार रूसी मोरचोंपर गोलियां बरसाने लगा। इसीतरह रात बीत गई।

३१ वीं अगस्तका प्रातःकाल उपस्थित हुआ। सूर्य्योदयसे पहले टीलेके नीचे पड़ी जापानी फौजको मदद पहुंची। वह

अपनी जगहसे उठी और अपने रणहुङ्कारसे दिशायें कंपाती टीलेपर झपटी। टीलेके कंटीले तार तोड़, टीलेकी धुन पारकर रूसी मोरचेमें जा कूदी। कुछ देरतक तलवार-मशीनकी लड़ाई चली। अन्तमें जापानी सिपाहियोंने टीलेके रूसियोंको मार-काट उन्हें टीलेसे भगा उसपर अधिकार कर लिया। प्रातः-समीरणमें नव-प्रतिष्ठित जापानी ध्वजा मन्द मन्द लहराने लगी। इस टीलेकी बगलमें पुशान पर्वतमाला थी; इसके पीछे अगणित रूसी सिपाही थे; इसकी बगलसे बड़ी भयङ्कर भूगर्भस्थ दुर्गश्रेणी आरम्भ हुई थी, इसतरह इस टीलेकी तीनों ओर रूसियोंका बड़ा जोर था। टीलेपर जापानी फौज देखते ही उसपर तीन ओरसे रूसी गोले-गोलियोंकी वृष्टि होने लगी। पुशान पर्वतमालापर लगी तोपोंके भयङ्कर गोलोंसे जापानी फौज की जापानी फौज; वह त्रिशूलाकार लम्बा टीला भी क्रम क्रमसे उड़ने लगा। यह देख जापानी फौजको टीलेपर ठहरना युक्ति-सङ्गत जान न पड़ा; वह शीघ्र शीघ्र टीला छोड़ लौट अपनी सैन्य-पंक्तिमें आ मिली। जापानी सैन्यके एक भागका कार्य्य इसतरह समाप्त हुआ।

जापानी सैन्यके दूसरे भागको शीघ्र मदद नहीं मिली; देरसे मदद पानेपर प्रातःकाल कोई आठ बजे यह अपने सामनेकी भूगर्भस्थ रूसी किलोंकी ओर बढ़ा। उस समय एक ओरसे कुछ रूसी तोपें गोले बरसा रही थीं; दूसरी ओरसे कुछ जापानी तोपोंके मुंह खुले हुए थे। उस भयङ्कर अग्नि-वृष्टिमें आगे बढ़ना तो आगे बढ़ना; एक स्थानके लिये ठहरना भी बड़े साहसका काम था। फिर भी; जापानी फौजें बराबर आगे

बढ़ती ही गई । इन भयङ्कर किलोंका सविस्तार वर्णन हम पीछे यथास्थान कर आये हैं। पाठक सहज ही समझ सकते हैं, कि इन रूसी किलोंमें घुसना कितना कठिन काम था। किलेके सामने ही कंटीले तार थे और उन तारोंके जालोंके नीचे छिपी हुई उन भयङ्कर कुओंकी माला। जापानी सैन्य जैसे ही किलोंके समीप पहुंची, वैसे ही उसमें कितने ही दुर्द्धर्ष सिपाहियोंका एक दल निकला इस दलके प्रत्येक सिपाहीके हाथमें सिवा बन्दूकके लोहेकी बड़ी बड़ी कैंचियां थीं। इस दलने झपटकर कुंओंपर लगा तारका जाल काट अपनी फौजके आगे बढ़नेकी राह तय्यार करना आरम्भ किया। क्या ही भीषण काम था! क्या ही अमानुषिक बल-विक्रम-प्रकाश था! सोचिये, तो रूएं खड़े होते हैं। उस समय दोनो ओरसे कोई चार सौ तोपें दग रही थीं। नये ढङ्गकी अग्नि व्ययभरमें दगनेवाली चार सौ बड़ी बड़ी तोपोंका सम्मिलित गर्जन जैसा विशेर हो सकता है, वैसा ही हो रहा था। वह विकट गर्जनध्वनि सिपाहियोंके ब्रह्माण्डमें समा गई थी; उनके शिरमें एक तरहकी सनसनी फैली हुई थी; उन्हें तोपोंकी ध्वनि साफ सुनाई नहीं देती थी; उनकी श्रवणेन्द्रियां अपना स्वाभाविक धर्म्म भूल गई थीं। सिवा इसके इस विकट ध्वनिसे धिक विकट उन चार सौ तोपोंकी गोला-वृष्टि थी। प्रायः समस्त युद्धस्थलमें बड़े बड़े आग्नेय गोले गिरते और सहस्र सहस्र टुकड़ोंमें विदीर्ण हो दूर दूरतक जाते थे। सिपाही दूर हीसे देखते थे, कि वह गोला आया ज्योतिर्म्मयविशिष्ट श्वेत-रक्त-प्रभायुक्त गोला राहमें विकट शब्दके साथ फटता, गोलियां बरसाता, आका-

धूमें ध्वनि करता वह आया। गोलेका आगमन देख लोग उसको भारी गिरनेकी जगहसे दूर हटनेके लिये भागे; बहुतेरे भागनेवालोंमें कुछ निकल गये; कुछ निकल जानेकी चेष्टा कर रहे हैं; ऐसे समय वह आनेवाला गोला आ गिरा। जान पड़ा वज्र गिरा; प्राय: उसही जैसा शब्द हुआ; प्राय: उसकी ही जैसी चमक उत्पन्न हुई। जिस जगह गोला गिरा, उस जगह उसने बड़ा गड्ढा बना दिया; गड्ढेकी कई गज लम्बी चौड़ी भूमिका अधिकांश धूलिकी तरह वायुमें उड़ गया; सिवा इसके इसतरह भूमिसे टकरा गोला फटा, उससे अगणित बड़े बड़े लौह-खण्ड और गोलियां प्रकट हुईं; लौहखण्डने जिसको सामने पाया, उसको उड़ा दिया; गोलियोंने भूमिपर गिरा दिया। ऐसे तोपे एक दो नहीं, शत शत—सहस्र सहस्र संख्यक काम रहे थे। सिवा गोलोंके मेक्सिम प्रभृति छोटी छोटी तोपें तथा रूस-जापा-नी लक्ष लक्ष सिपाहियोंके हाथोंकी बन्दूकें चल रही थीं। लक्ष लक्ष गोलियोंके एक साथ इधर उधर आनेजानेसे युद्धस्थलमें ऐसा शब्द हो रहा था, मानो कोटि कोटि मधुमक्खियां कानोंके समीप पहुंच भंवला गंडवाकार भनभना रही हों। गोलोंके फटने, गोलियोंके चलने, मेक्सिम तोपोंके लगातार छूटनेसे युद्ध-स्थल साक्षात् नरक बन गया था। जगह जगह लाशोंके ढेर थे; कितनी ही लाशोंकी सूरतें बिगड़ गई थीं; किसी किसीके अङ्ग-प्रत्यङ्ग भयङ्कर रूपसे उड़कर जगह जगह पड़े थे। लाशोंके साथ साथ घायलोंके ढेर थे; जिन घायलोंमें बोलनेकी शक्ति थी, उनमें कितने ही धीरे धीरे और कितने ही उच्चस्वरसे ... रहे थे; किन्तु उस भयङ्कर युद्धके कोलाहलमें उन बेचा-

रोंको चिल्लाहट उन्होंको सुनाई नहीं देती थी। ऐसे ही भीषण समयमें—सिपाहियोंको भी पागल बना देनेवाले ऐसे ही विकट समयमें—शुशान पर्व्वतमाल और सामनेकी दुर्गश्रेणीकी तोपों और दुर्गस्थ सिपाहियोंकी तथा मेक्सिम तोपोंकी गोला-गोली-वृष्टिमें जापानी सिपाहियोंका बुद्धि स्थिर रख आगे बढ़ लोहेकी बड़ी बड़ी कैंचियोंसे लोहेका खारदार जाल काटनेका काम अमानुषिक अलौकिक नहीं, तो और क्या था?

तार काटनेवाले एक दलके अपने काममें प्रवृत्त होते ही, जापानी सेन्यसे वैसे ही और दो चार दल निकले; वह दूसरी जगहोंमें पहुंच तार काटने लगे। तार काटनेवालोंपर रूसी गोलों और गोलियोंकी अविराम वर्षा होने लगी; क्षण क्षणमें अनेक तार काटनेवाले उड़ने लगे; फिर भी, तार काटनेका काम चलता ही रहा,—गोलोंकी चोटसे जितनी देरतक जो तार काटनेवाला बचा, वह तार काटता ही रहा। जान जाती थी; तार काटनेका काम जाता नहीं था। उन क्षत विक्षत तार काटनेवालोंमें एक भी तार काटनेवाला कर्म्मविमुख हो प्राणोंकी ममतासे पीछे नहीं हटा। ऐसे साहस—ऐसी सहिष्णुता—ऐसे उत्साहसे पर्व्वत कट जा सकते हैं—सागर पट जा सकते हैं; उस तुच्छ सामान्य नगण्य कंटीले तारकी हकीकत ही क्या थी? तार कट गये; एक दूर्गमें जानेमें प्रवेश करनेकी राह खुली; तार काटनेवाले अपना काम समाप्तकर अपनी सैन्य-पंक्तिमें वापस लौटे; जिस रेजिमेण्टके सिपाही इस कामके लिये गये थे, उनमें सैकड़े पीछे पचीस बचे; बाकी सब तारके भेंट चढ़ गये; उनकी लाशोंसे जंग भर

गये; तार-जालके बीचसे जापानी फौजोंके निकलनेके लिये सामोंकी राह तय्यार हुई!

अपने तार काटनेवाले सिपाहियोंका पराक्रम देख दुर्ग-श्रेणीके सामनेकी समग्र जापानी फौजमें मानो किसी वैद्युतिक प्रक्रिया द्वारा असीम शक्ति-साहसका सञ्चार हुआ। आगे बढ़नेकी आज्ञा पाते ही जापानी वीरवाहिनियां उन्मत्तकी तरह सिंहनाद करती भूमध्यस्थ रूसी किलोंकी ओर झपटीं। पहले कुंओंकी माला बहुत ही तयकर तारोंके जाल काट दूसरी मालाके समीप पहुंचीं। इस मालाके तार बड़ी ही फुरतीके साथ काटे गये; एक ओर तार कटता गया, दूसरी ओर कितने ही जापानी सिपाही कुंओंमें कूद अपनी देहोंसे कुंए पाट अपनी फौजोंके निकलनेके लिये राह तय्यार करते गये; देखते देखते उस कूपमालामें कई राहें तय्यार हो गईं। इसतरह बनी इन कई राहोंसे जापानी फौजें भीतर घुस तारोंका जाल तोड़ खन्दक पारकर किलोंमें घुस रूसी सिपाहियोंसे भिड़ गईं। बड़ा ही भयङ्कर युद्ध हुआ; दो परस्पर-विरोधी हिंस्र जन्तुओंके एक दूसरेपर टूट पड़नेपर जैसा होता है, वैसा ही होने लगा। सङ्गीनोंसे पेट फटने लगे; तलवारोंसे हाथ, पैर और शिर जुदा होने लगे; कोई कोई उन्मत्त सिपाही अपने शत्रुको अत्यन्त समीप पा हथियार चलाना भूल उछलकर उसके गलेसे मुंह लगा उसका खून पीनेकी चेष्टा करने लगा; बड़ा ही विकट युद्ध हुआ। उभय पक्षके शत शत सिपाही हताहत हो भूमिपर लोट गये।

भूगर्भस्थ दुर्गके भूगर्भस्थ सुविशाल प्राङ्गणकी एक ओर

जिस समय यह लोमहर्षण युद्ध चल रहा था, उस समय उनको दूसरी ओरसे हर्षनाद करते रूसी सिपाहियोंके असंख्य दल घुसे। रूसियोंको मददको ताजा फौज पहुंची। पहले ही लिख चुके हैं, कि जापानियोंकी संख्या कम थी; इसीलिये जापानी अफसर अपनी किलेमें पहुंची फौजको वैसी मदद पहुंचा न सके; उन्होंने उसे किला छोड़ लौटनेकी आज्ञा दी। भाटेके समय सागर-जल जिसतरह लहरें मारता आगे बढ़ता और फिर पीछे हटता है; उसीतरह जापानी फौज उस दुर्गकी दीवारें तोड़ती, कुंएं पाटती और तारके जाल विनष्ट करती पीछे हटी और अन्तमें किलेसे निकल अपनी सैन्य-पंक्तिमें आ मिली; इस सैन्यके वापस लौट आनेपर जापानी सैन्य-पंक्ति अपनी जगहसे पीछे हट अपनी तोपोंकी बगलके सुरक्षित स्थानमें जा ठहरी; इसतरह जापानी सैन्य-पंक्तिके इस दूसरे आक्रमणकी समाप्ति हुई।

सेनापति ओकूके क्षोभकी सीमा नहीं रही। उनकी सैन्यने दो बार आक्रमण किया; दोनो बार असफलकार्य्य हो उसे पीछे हटना पड़ा। अब क्या किया जाये? ओकूने आज्ञा दी, कि उनकी कुल तोपें अपने पूरे शक्ति-सामर्थ्यके साथ रूसी तोपखानोंपर गोले बरसायें। अब क्या देर थी; भीषण गोला-वृष्टि आरम्भ हुई। रूसी मोरचोंपर; विशेषत: रूस-अधिकृत उस शुशान पर्व्वतमालापर अतीव भयङ्कर रूपसे गोले बरसने लगे। एक युरोपीय संवाददाताने लिखा है,—"इस समय शुशान पर्व्वतपर आग्नेय-गिरिका धोका होता था; अगणित जापानी आपसका गोलोंके गिरने और फटनेसे

श्रृङ्गवान पर्व्वतमाला अग्निसे आच्छादित दिखाई देती थी। प्रबलपराक्रान्त होनेपर भी रूसी इस भीषण गोला-वृष्टिके फलसे घबरा गये। उनके कितने ही तोपखानोंका वज्र वट गया; कितने ही तोपखानोंके सामनेकी भूमि उड़ गई; कितने ही तोपखानोंके गोलन्दाज उड़ गये। जापानी गोलोंका तेज असह्य था,—अदम्य था। रूसियोंको स्वप्नमें भी खयाल हुआ नहीं था, कि एशियाकी भी किसी शक्तिके तोपखाने यहांतक जबरदस्त हो सकते हैं। इससे पहले रूसी, तोपखानोंको अपने ही घरकी चीज समझे हुए थे; रूसियोंने समझ रखा था, कि जैसी गोलन्दाजी युरोपीय शक्तियोंके तोपखाने कर सकते हैं, वैसी गोलन्दाजी जगत्‌का और कोई तोपखाना कर नहीं सकता; विशेषतःपतित एशियाकी कोई वाञ्छित शक्ति तो कर ही नहीं सकती; किन्तु लियावयाङ्ग महायुद्धकी यह गोलन्दाजी देख रूसियोंके मनसे—अथवा समस्त युरोपीय दर्शकोंके मनसे यह धारणा बिलकुल ही दूर हो गई। आज एशियाकी ओरसे युरोपके मनमें भय हुआ। युरोपके 'होली रशिया' या पवित्र रूसके गोलन्दाज साहसकर अपने मोरचोंके आश्रयस्थलसे बाहर निकल अपनी तोप सीधी करते और गोले चलाते थे; ऐसे समय जिस जगह वह खड़े रहते, उस जगह एकके बाद दूसरे अगणित जापानी गोले आ गिरते; कितने ही रूसी गोलन्दाज उड़ जाते, जो बचते वह तोपके समीपसे हट अपने आश्रयस्थानमें जा घुसते। जापानियोंको उस विकट अग्नि-वृष्टिमें ठहरना आसान नहीं था। एक ओर दम्भ था, क्रूरता थी,

घृणा थी,—धन-मद—ऐश्वर्य्य-मद था; दूसरी ओर नम्रता थी, दया थी, स्वदेशभक्ति थी, बुद्धि थी, साहसिकता थी और भगवान्पर पूर्ण निर्भरता थी।

दिन कोई पौने बारह बजे शुशान पर्व्वतकी गलके टीलेपर जो अग्नि-दृष्टि हो रही थी, वह एकाएक रुक गई। और कितनी ही जापानी फौजें कई ओरसे बहुत ही धीरे धीरे इस टीलेकी ओर बढ़ीं। इस बार इस आगे बढ़नेवाली हरेक जापानी फौजके साथ कितनी ही छोटी छोटी तोपें भी थीं। यह तोपें बहुत नहीं, सिर्फ हाथ दो हाथ लम्बी थीं; इनके मुंह बहुत ही बड़े थे; इनके चलाये गोले बहुत दूर न जानेपर भी जहां गिरते, वहां भीषण काण्ड उपस्थित करते थे। 'होविजर' नाम्नी यह तोप उतनी वजनी नहीं थी; एक या दो सिपाही आसानीसे उसे उठा ले जा सकते थे। ऐसी ही तोपें ले जापानी फौजें बहुत ही धीरे धीरे आगे बढ़ती थीं। उनके आगे बढ़नेका ढङ्ग बड़ा ही कौशलपूर्ण था। यह सब सौ पचास कदम दौड़कर आगे बढ़ती और फिर जमीनपर लेट जाती थीं; टीलेके रूसी सिपाहियोंकी बाढ़के जवाबमें एक भी बाढ़ न दागतीं; उस बाढ़का जवाब बढ़ती हुई जापानी फौजोंके पीछेकी जापानी सैन्य-पंक्ति द्वारा दिया जाता था। कुछ देरतक जापानी फौजें अपनी जगह पड़ी रहतीं; इसके बाद फिर पचीस पचास कदम आगे दौड़ जमीनपर लेट जाती थीं। इसीतरह यह फौजें आगे बढ़कर रूसी टीलेके समीप पहुंच गईं। वहां पहुंचते ही इन फौजोंने अपनी बन्दूकों और तोपोंसे काम लिया। टीलेकी रूसी फौजपर गोला-गोलियोंका तूफान बहने

लगा। टीलेकी रूसी फौजोंका ठहरना कठिन हो गया; कुछ देर-तक गोलियां चलानेके उपरान्त अन्तमें रूसी फौज अपने मोरचे छोड़ भागीं और एक बार फिर जापानियोंने उस टीलेपर अधिकार किया। इस बारकी अधिकार-प्राप्तिके उपरान्त ही जापानी फ़ौजोंने टीलेको चारों ओरसे सुरक्षित करना आरम्भ किया; मानो टीलेकी जापानी फौजोंने दृढ़ प्रण कर लिया था, कि अबके जीवन रहते टीलेसे पीछे हटना न होगा।

जिस समय एक ओर जापानी फौजें टीलेपर अधिकार कर रही थीं, उस समय दूसरी ओर जापानियोंके तोपखाने उसी जोर शोरके साथ रूसी तोपखानोंपर गोले बरसाते रहे। रूसी तोपखाने यदि जापानी तोपखानोंका जवाब देनेमें फंसे न रहते, तो जापानियोंका टीलेपर ठहरना कठिन हो जाता। जापानी तोपखाने रूसी तोपखानोंको दम नहीं लेने देते थे। टीलेका आश्रय पा कितने ही जापानी तोपखाने अपनी जगहसे आगे बढ़ रूसी मोरचोंके और भी समीप खिसक गोला-वृष्टि करने लगे। आज जापानी तोपोंके लिये विराम नहीं था, विश्राम नहीं था; प्रातःकाल आठ बजेसे उन सबने जो गोला-वृष्टि आरम्भ की थी, वह दिनभर चली; सूर्यास्तके उपरान्त रातको भी चली। इधर दूसरे आक्रमणमें विफल हो जापानी सैन्य-पंक्ति पलटकर जिस जगह पहुंची थी, उसी जगह ठहरी रही। दोपहरको टीलेपर जापानी फौजोंका अधिकार हो चुकनेपर दिन ढलनेके साथ साथ जापानी सैन्य-पंक्ति क्रम क्रमसे आगे बढ़ी सही; किन्तु उसका वह आगे बढ़ना सिर्फ नामके लिये था; कोई फौज दस कदम आगे बढ़ बैठ गई; कोई पचास

कदम। कहते हैं, कि प्रत्येक जापानी सिपाहीको पृथक् पृथक् जगह जगह लेटकर आगे बढ़नेकी शिक्षा दी गई थी। गोलियोंसे बचानेवाले छोटे छोटे मट्टीके तोदोंके पीछे जापानी सिपाही लेट जाते थे; इनके बाद उनके पीछेसे उनके पास पूर्व्वोक्त तोदे जैसा तोदा बनाने लायक मट्टीसे भरा टोकरा पहुंचता था; यह टोकरा ले जापानी सिपाही आगे दौड़ते और अपनी पहली जगहसे दश बीस कदम आगे दौड़ फिर वैसा ही तोदा स्थापनकर उसके पीछे लेट जाते थे। इस तरह लेटे लेटे आगे बढ़ते बढ़ते महाश्मशानवत् उस भीषण रणक्षेत्रमें बहुत दूर आगे बढ़ जाते थे।

सन् १६०४ ई०की ३१वीं अगस्तको जिस समय जगत् अपने अपने धन्धेमें फंसा था, उस समय लक्षाधिक सिपाहियों और कोई दो सौ तोपोंके अधिनायक ओकू सहस्र सहस्र मनुष्योंके जीवन-मरणसे क्रीड़ा कर रहे थे; उनके इशारेपर दोनो बन्दूकें बजाते थे। अपने गुरु-गम्भीर दायित्वपूर्ण भारकी दुश्चिन्तासे ओकू वाह्यज्ञानशून्यसे जान पड़ते थे। इस युद्धमें दो बार उनकी सैन्यने धावा किया; दोनो ही बार वह धावा व्यर्थ ठहरा; बल्कि जापानी सैन्य-पंक्तिमें तीसरे धावेकी तय्यारी थी; इससे ओकूको घोर दुश्चिन्ता इस बातकी थी, कि कहीं यह धावा भी विफल न हो जावे। इस धावेको सफल बनानेकी कोई तय्यारी; कोई बात वह उठा रखना नहीं चाहते थे; बुद्धिमान् दूरदर्शी निपन-केशरी खूब समझते थे, कि वह उस दिन जो काम कर रहे थे, वह उज्ज्वलाक्षर द्वारा जगत्के इतिहासमें चिरकालके लिये लिखा जानेको था। ऐसे ही महागुरुत्वपूर्ण कामको सामने पा उसके फलाफलकी चिन्तासे युरोकी बारंबार

मन ही मन अपने इष्ट देवके सामने अवनत हो जाते थे। विजय-लक्ष्मीकी मनोहारिणी मूर्त्ति देख उसे पानेके लिये माथा-जोव बहुत ही अधीर हो पड़े थे।

३१वीं की सन्ध्या आ पहुंची। निष्प्रभ अथच रक्तपीताभ सूर्य्यदेव अस्ताचलके सिंहासनपर आसीन होने चले। दोनो ओरकी फौजें अपनी अपनी जगहपर थीं; किन्तु दोनो ओरके तोपखानोंके गोले अपनी अपनी जगह नहीं थे; विशेषतः जापानी तोपखानोंके गोले तो अपनी जगह क्षण भरके बाद ही नहीं थे। प्रातःकाल कोई आठ बजेसे जापानी कोई दो सौ तोपोंकी जो भीषण गोलन्दाजी आरम्भ हुई थी वह अबतक चल रही थी। कहते हैं, कि लियावयाङ्ग अपने सदरमें अपनी स्पेशल ट्रेनके समीप बैठे कुरोपाटकिन इस अविराम गोलन्दाजीकी ध्वनिसे सुगभोर मानसिक यन्त्रणा अनुभव कर रहे थे। सवेरा बीत गया; दोपहर बीत गई तीसरा पहर बीत गया; सन्ध्या समीप पहुंची; इतना समय समाप्त हो गया; किन्तु जापानी तोपोंका वह गगनभेदी गर्ज्जन समाप्त नहीं हुआ। कुरोपाटकिन मानो मन ही मन कहते थे,—"क्या यह गर्ज्जन कभी समाप्त न होगा?"

एक ओर जापानी तोपोंका ऐसा ही गर्ज्जन चल रहा था; दूसरी ओर सन्ध्या कोई पांच बजे सुअवसर देख वीरपुङ्गव ओकूने जापानी सैन्य-पंक्तिको युक्तिपूर्व्वक आगे बढ़नेकी आज्ञा दी। जापानी सैन्य-पंक्ति उसी पूर्व्वोक्त ढङ्गसे अपने सामने मट्टीके तोदे तय्यार करती जापानी क्रम क्रमसे आगे बढ़ने लगी।

सन्ध्या कोई पांच बजे सेनापति ओकूको एकाएक समाचार मिला, कि उसकी फौजके बायें जितनी ही तोपें साथ ले एक रूसी फौज आगे बढ़ रही है। ओकूको यह अच्छा अवसर मिला; उन्होंने अपनी रक्षित फौजसे एक बड़ा टुकड़ा निकाल इस फौजको मुकाबलेके लिये भेजा और उसके सेनापतिको चेता दिया, कि रूसी फौजको मार-काट पीछे हटा उसीके पीछे पीछे रूसी मोरचेमें घुसनेकी चेष्टा करना। इस जापानी फौजके साथ जापानी रिसाला भी था। जापानी रिसाला एक भयङ्कर चीज समझा जाता था। जिस समय युद्ध आरम्भ हुआ था, उस समय लोगोंको रूसी रिसालेपर; विशेषतः कज़्ज़ाक-रिसालेपर बड़ा भरोसा था। युद्धस्थलके युरोपीय संवाददाताओंने रूसी कज़्ज़ाक-रिसालेसे तुलनाकर प्रमाणित करनेकी चेष्टा की थी, कि उसके सामने जापानी रिसाला कोई चीज नहीं। कज़्ज़ाक-रिसालेके सामने जापानी रिसालेके घोड़े वाहियात, सवार अनाड़ी, रिसालेका युद्धोपकरण उतना दुरुस्त नहीं; उसकी कोई हस्ती ही नहीं। यह सब सुन रूसको भी अपने रिसालेपर बड़ा घमण्ड हो गया था। असलमें रूसका कज़्ज़ाक-रिसाला घमण्ड करने ही लायक है। किन्तु काम पड़नेपर प्रमाणित हुआ, कि जिसतरह रूसके दूर पूर्वके बड़े लाट अलक-सिफने जापानकी यथार्थ शक्तिका अन्दाजा नहीं पाया था, उसी-तरह युरोपीय संवाददाता जापानी रिसालेका प्रकृत सामर्थ्य जान नहीं सके थे। यह दोनो ही बड़े भ्रम थे; और दोनो हीकी वजह रूस-सरकारको क्षतिग्रस्त होना पड़ा था। आगे बढ़ती हुई रूसी फौजको रोकनेके लिये रवाना की गई ओकूकी फौजके साथके

उस जापानी रिसालेने आंधीकी तरह आगे बढ़, आगे बढ़ती रूसी फौजका मुंह मोड़ दिया।

ओकू चिन्तित थे, उद्विग्न थे, विजय-प्राप्तिके लिये बावले हो रहे थे। आपकी आज्ञासे सन्ध्या कोई सात बजे वह दिन भरकी होती हुई गोलन्दाजी और भी भयङ्कर हुई। शत शत जापानी तोपें एक मिनटमें अनेक बार रूसी मोरचों और तोपखानोंपर गोले बरसाने लगीं। इस विषम गोलन्दाजीने रूसी मोरचेमें प्रलय उपस्थित किया। पहाड़ उड़ने लगे, टीले उड़ने लगे, रूसी तोपें उड़ने लगीं, रूसी गोलन्दाज उड़ने लगे; जापानी गोलोंके सामने स्थावर-जङ्गम, लघु-गुरु, पशु-मनुष्य जो पड़े, वह सब उड़ने लगे। उस मेघाच्छन्न आकाशके नीचेकी रजनीमें उस विकट, अग्नि-वृष्टिसे रूसियोंके हृदयमें बड़ा ही भय उत्पन्न हुआ, वह देखते थे, कि इस अग्नि-वृष्टिसे कहीं रक्षा ही नहीं। मकान, पहाड़ी मोरचे, किले, सभी,—इन गोलोंके सामने व्यर्थ थे। रूसी अपने जिस मोरचेके जिस भागमें रक्षा पानेकी आशासे भागते, उसी मोरचेका वही भाग जापानी गोलोंकी चोटसे उड़ जाता। इस विकट गोला-वृष्टिके कारण रूसी यदि त्राहि त्राहि पुकार उठे हों, तो आश्चर्य ही क्या है? नहीं जानते, कि अपने सदर लियावयाङ्गमें बैठ दिनभर ओकूकी तोपोंका गर्ज्जन सुननेवाले रूसके प्रधान सेनापति क्रुरोपाटकिनने जब सन्ध्योपरान्त यह विकट तोपगर्ज्जन सुना होगा, तब उनके मनकी क्या दशा हुई होगी? उन्होंने अपनी आंखोंके सामने जगत्में उपस्थित होनेवाले भावी महान् परिवर्त्तनका स्पष्ट चिह्न देखा होगा और इच्छा न रहनेपर

भी श्रोकूके सामनेकी अपनी फौजकी रक्षाकी आज्ञा दी होगी ।

सन्ध्या सात बजेसे रात शायद नौ बजेतक जापानकी यह विकट गोला-वृष्टि हुई ; इसके फलसे रूसी मोरचे डग डग हिल गये । इसके उपरान्त यह गोलन्दाजी मानो मन्त्रबलसे एकाएक बन्द हो गई । इसके बन्द होते हो घरथो हिलो, पर्व्वत हिले, समीप तो समीप दूरके भो प्राणी चौंके, —उस कोसोंकी लम्बाईमें अवस्थित जापानी सैन्यने जयध्वनि की और अपने पदभारसे पृथ्वी कंपाती रूसी दुर्गश्रेणी और मोरचोंकी ओर चली। जापानकी जो फौज मैदानमें जिस जगह पहुंच गई थी, वह उसी जगहसे आगे चली । आगे आगे जापानकी एक ही सैन्य-पंक्ति थी ; किन्तु उसके पीछे पंक्ति नहीं ; एक, दो, दश, बोस नहीं ;— अगणित पंक्तियां थीं ; जहांतक दृष्टि जाती थी, वहांतक पंक्तियां ही पंक्तियां दिखाई देती थीं। इससे कई घण्टे पहले, उस दिन रूसियोंको, एक उच्च भागकी एक ओरसे आ दूसरी ओर उतरती हुई प्रातःकालसे सन्ध्याका अन्धकार फैलनेतक जापानी सैन्य-पंक्तिकी जो काली काली रखाये आती दिखाई दी थीं, वह सभी इस धावेमें शरीक हुईं । इतने घण्टों बाद आज वह फौजें रूसियोंके सामने आईं । उस समयकी वह चढ़ी हुई घटा अब मानो बरसनेपर तय्यार हुई । कुछ देरतक कोसोंकी लम्बाईमें दोनो ओरसे बन्दूकोंकी बाढ़ें दगती रहीं ; किन्तु यह तभीतक दगीं, जबतक जापानी फौजें रूसी मोरचोंसे कुछ दूर थीं । यह दूरी शीघ्र ही समाप्त हुई । जापानी सैन्य नहीं ; सैन्य-सागर आगे बढ़ रहा था ; ताजादम रूसी फौजें भी इस सैन्य-सागरको रोक

नहीं सकती थीं ; दिनभरकी ; विशेषतः इस आक्रमणके पहलेकी जापानी गोल-वृष्टिसे विकल रूसी फौजें भला उस सैन्य-सागरको कैसे रोक सकती थीं ?

किलोंकी वह कुओंकी मालायें, उनके बीचका लगा वह कंटीले तारोंका जाल, शताधिक तोपोंसे संरचित शुशान पर्वतके वह सुदृढ़ रूसी मोरचे दावानलमें पतित सुविस्तृत वनकी तरह नष्ट होने लगे। कुल विघ्न-बाधाओंको अतिक्रमकर जापानी फौजें रूसी मोरचोंमें ठसाठस भरी रूसी फौजोंके सामने पहुंच गईं।

जापानी सैन्य यदि सागरवत् थी,-तो रूसी फौजें महासागर जैसी थीं। जिस समय दोनों ओरके दस लाख लाख सिपाहियोंके बीच टक्कर हुई, उस समय अतीव भीषण युद्ध-कोलाहलका उत्थान हुआ और क्षण क्षणमें अगणित सिपाही हताहत होने लगे। कोटि कोटि कण्ठके 'मार मार' रवसे युद्धस्थल गूंजने लगा ; लोहेसे लोहा भिड़ने लगा। मुण्ड लुढ़कने लगे, रुण्ड उछलने लगे, हाथ-पैर कट कट कर गिरने लगे ; बन्दूकोंके कुन्दोंके आघातसे खोपड़ियां चूर चूर होने लगीं ; तमञ्चोंकी गोलियोंकी चोटसे बड़े बड़े जवान धराशायी हो अपने वक्षसे बहते उत्तप्त रक्तसे धरणी सिक्त करने लगे। विकट युद्ध आरम्भ हुआ। एक रूसी सिपाहीने मुंह खोल घोर गर्जन आरम्भ किया ; दूसरे ही क्षण किसी जापानी सिपाहीकी गोली उसके मुंहमें घुस उसकी गरदनसे निकल गई। किसी रूसीने भोंकनेके लिये सङ्गीनदार बन्दूक उठाई ; दूसरे ही क्षण उस रूसीको पहुंचे जापानीने तड़से रूसीके पेटमें तलवार भोंक दी ; उ-

सकी आंतें निकल पड़ीं, वह गिरकर ढेर हो गया। एक जापानी और एक रूसी परस्पर अत्यन्त समीप होनेकी वजह हथियार चलानेका अवसर न पा गुंथ गये, जापानीने रूसीके मुंहमें हाथ डाल उसकी जुबान पकड़ खींच ली; रूसीना हाथ बढ़ा जापानीकी आंख फोड़ दी। किसीकी गरदनसे रक्त बहने लगा, किसीकी जांघसे रक्तधारा बहने लगी, किसीकी छातीसे रक्त टपकने लगा, किसीके शिरसे टप टप रक्त टपकने लगा। युद्धकी गर्मीमें आहत सिपाहियोंको कुछ देरतक अपने जखमकी खबर नहीं होती थी; अन्तमें रक्तकी गर्म्म गर्म्म धारा या प्रस्रवण देख उन्हें जान पड़ता था, कि वह जखमी हुए हैं। कितने ही सिपाहियोंकी भुजा कन्धेके पाससे जुदा हो गई; किसी सिपाहीका पैर घुटनेके पाससे उड़ गया, किसी सिपाहीका कान उड़ गया, किसी सिपाहीका जबड़ा चूर चूर हो गया। इसतरहके घोररूपसे आहत अधिकांश रूसी सिपाहियोंके चीत्कारसे रणस्थलमें अत्यन्त लोमहर्षण ध्वनिका उत्थान हुआ।

दोनो सैन्योंके बीच टक्कर होनेका ऐसा ही फल हुआ। भूमि लाशोंसे ढंकी दिखाई देने लगी। कुछ देरतक जय-पराजय प्रकट नहीं हुई। जापानियोंका सैन्य-सागर रूसियोंके सैन्य-महासागरसे भिड़ा हुआ था; सागर उस महासागरको विनष्ट करना चाहता था; बालक लड़न्तिया पट्ठेको पछाड़ उसकी छातीपर चढ़ना चाहता था। यह असम्भव सम्भव कैसे बने? बिना भगवत्कृपा हुए चींटी ऐरावतको पददलित कैसे करे? भगवत्कृपा होसे असम्भव सम्भव होता है; भगवत्कृपा होसे अचिन्तनीय बातें प्रत्यक्ष होती हैं। कुछ देरतक युद्धका फला-

फल अनिर्द्धारित रहा सही; किन्तु अन्तमें वह स्पष्ट दिखाई देने लगा। यह कहनेसे बाहुल्य न होगा, कि उस समय समग्र एशिया—समग्र युरोप,—समग्र जगत् रूस-जापानका यह युद्ध देख रहा था। समग्र जगत्‌के सुप्रसिद्ध समाचारपत्रोंके प्रतिनिधि उस समय उस युद्धस्थलमें उपस्थित रह निमेषशून्य नयनसे इस युद्धका फलाफल देख रहे थे। युद्धका उलझाव देख उनके हृदयमें नाना प्रकारकी भावनायें उत्पन्न हो रही थीं। इस अल्पकालीन अस्थायी उलझावके अन्तमें एकाएक रूसियोंकी सैन्य-पंक्तिका हिलना देख अखबारोंके उस प्रतिनिधिदलके जापानियोंके शत्रु मित्रके हृदयमें जो भिन्न भिन्न परस्पर-विरोधी भाव उत्पन्न हुए होंगे, उनका वर्णन कैसे किया जा सकता है?

अन्तमें तिलिस्म टूटा। जापानके उस सैन्य-सागरका असह्य दबाव रूसियोंकी सैन्य-पंक्ति सह न सकी। कुछ देरतक वह लड़खड़ाती रही; इसके उपरान्त चार कदम पीछे हटनेके साथ ही दो कदम आगे बढ़ने लगी। थोड़ीसी ऐसी रूसी फौजें भी थीं, जो पीछे हटनेके बदले अपनी जगह रह प्राण देना पसन्द करती थीं। रूस-सरकारके युद्ध-संवाददाता नेमिरोविच साहबने लिखा है,—"हमकी फ्रिटियर गार्ड नाम्नी फौज अपनी जगह रही और आत्मसमर्पण करना अस्वीकारकर मारी गई। इसी दिन यानी ३१वीं अगस्तको यह फौज संगठित हुई थी; इसलिये आज उसकी वर्ष-गांठ थी; इस फौजने अपनी वर्ष-गांठके उपलक्ष्यमें इस दिनसे पहले यानी ३०वीं अगस्तकी रातको भोज, पान और गान द्वारा खूब आनन्द मनाया था; आज इस युद्धमें इसकी ...: समाप्ति हुई।" इसतरहकी कितनी ही फौज और

कितने ही फौजके टुकड़े मारे गये। रूसियोंकी लाशोंसे गड्ढे भर गये; समतल भूमिपर टिले बन गये। जो रूसी ठहरा, वह चढ़ते हुए जापान सैन्य-सागरमें डूब गया; कोई भी तैरकर किनारा पा न सका।

कुछ रूसी फौजोंके आत्मबलि देनेके फलसे रूसी सैन्य-पंक्ति स्थानच्युत होकर भी जापानियोंके सामनेसे भागकर नहीं; मचल मचलकर पीछे हटी; किन्तु अन्तमें वैसे ही आत्मबलि देनेवालोंकी समाप्ति हुई; वैसे ही जापानी सैन्य सागरने एकबार फिर वही दिगन्तव्यापी हर्ष-ध्वनि की और उस हर्षध्वनिसे कांप रूसी सैन्य-पंक्ति शीघ्र शीघ्र पीछे हटने लगी। शुशान पर्व्वतमाला रूसियों द्वारा परित्याग की जाने लगी; दुर्भेद्य किलोंकी वह लम्बी श्रेणी रूसियों द्वारा खाली की जाने लगी। शुशान पर्व्वतमालाकी एक ओरसे जापानी सैन्य-सागर चढ़ने; दूसरी ओरसे रूसी सैन्य-सागर उतरने लगा; उस विकट दुर्गश्रेणीकी एक ओरसे असंख्य जापानी घुसने और दूसरी ओरसे बहस बहस रूसी सिपाही निकलकर लियावयाङ्ग नगरकी ओर भागने लगे। अब जापानी सैन्य-सागरको अवसर मिला; तब उसने भागते हुए रूसियोंको गोलियों और मेक्सिम प्रभृति छोटी छोटी तोपोंकी बाढ़से क्षतिग्रस्त करना आरम्भ किया। एक ओर जापानी सैन्य-पंक्तिके छोटे छोटे दल भागते हुए रूसियोंके पीछे पीछे चले; दूसरी ओर जापान-सैन्य-सागरने रूसियोंके छोड़े हुए मोरचोंपर अधिकारकर उसमें जमकर बैठना आरम्भ किया। २६ वीं अगस्तसे जो युद्ध आरम्भ हुआ था; इसतरह वह समाप्त हुआ। गत कोई साठ घण्टोंसे जापानी सैन्यने कमर नहीं खोली थी; नियमित रूपसे आहार-

निद्राका सुख प्राप्त कर नहीं सकी थी ; ३१वींकी अर्द्धनिशाके उप-राम्त जापानी सैन्यके अधिकांश भागने रूसी मोरचों और हताहतोंसे भरी रणभूमिमें लेट विश्राम किया। इन मोरचोंके सामने ही मञ्चूरियाका वह प्रसिद्ध लियावयाङ्ग नगर था ; शुशान पर्व्वतके छोरसे छोरतक वह साफ साफ दिखाई देता था। इस नगरको इस तरह अपने सामने देख जापानकी विजय-वाहिनीको जो आनन्द प्राप्त हुआ होगा, उसका वर्णन क्या किसी तरह भी किया जा सकता है ?

ओकूकी सैन्य-पंक्तिको अपने नवाधिकृत मोरचोंमें छोड़ अब हम सेनापति नोजूकी ओर मुड़ते हैं। उनकी सैन्य-पंक्तिके एक भागने ओकूकी सैन्य-पंक्तिके साथ आगे बढ़ रूसकी पूर्व्वोक्त दुर्गश्रेणीके एकभागपर अधिकार कर लिया था ; इसलिये इस भागके कामका हाल इतना ही है। दूसरा भाग नोजूके अधीनस्थ सेनापति देवके अधीन था। देवको आज्ञा मिली थी, कि जिस समय कुरोकीकी सैन्य-पंक्ति आगे बढ़े उस समय तुम भी सदलबल स्वतन्त्र पथसे आगे बढ़ो और जिस जगह कुरोकीकी सैन्य-पंक्ति ठहरे, उस जगह ठहर उससे अपनी सैन्य-पंक्ति मिला दो। कुरोकीकी सैन्यकी अग्र-गतिका समाचार पा २८ वीं अगस्तको सेनापति देवने सदलबल आगे बढ़ना आरम्भ किया। उनके पथमें सघन-वनाच्छादित पार्व्वत्य प्रदेश था ; उसे अतिक्रमकर ३० वीं अगस्तको वह लिया-वयाङ्गके मैदानमें पहुंचे। देवकी सैन्य-पंक्ति और लियावयाङ्ग नगरके बीच छोटीसी एक पर्व्वतमाला थी। प्रातःकाल कोई ·बजे देवने विचार किया, कि सामनेकी उस पर्व्वतमालापर

अधिकार कर लेना चाहिये। आपने अपनी सैन्य-पंक्तिको उस पर्व्वतमालाकी ओर बढ़नेकी आज्ञा दी। सैन्य-पंक्ति बढ़ी; उससे आगे आगे फौजी जासूस चले। कुछ ही आगे बढ़नेपर जापानी जासूसोंको रूसी जासूस दिखाई दिये; रूसी जासूसोंके पीछे गिरदावरीके सवार दिखाई दिये; यह सब देख जापानी जासूसोंने अपने सेनापतिको समाचार दिया, कि सामनेकी पहाड़ी खाली नहीं; उसपर रूसी फौजका कबजा है। यह समाचार पाते ही देवकी सैन्य-पंक्ति ठहर गई; उसके तोपखाने जल्द जल्द लग गये। दिन कोई सात बजे देवकी तोपोंने रूस-अधिकृत पर्व्वतमालापर गोला-वृष्टि आरम्भ की। एक घण्टे की गोला-वृष्टिके उपरान्त जापानी सैन्य-पंक्तिने फिर आगे बढ़ना आरम्भ किया। पर्व्वतमालापर बैठे रूसियोंने देवकी सैन्य-पंक्तिको रोकनेकी चेष्टा की; किन्तु उसका कोई फल नहीं हुआ। एक ही धावेमें जापानी फौजें रूसियोंको मारकाट भगा पर्व्वत-मालाके शिखरदेशपर पहुंच बैठ गईं और पर्व्वत-मालासे उतरते हुए रूसी सिपाहियोंको गोलोंकी बाढ़से धराशायी बनाने लगीं। रूसियोंको भगा पर्व्वतमालाके शिखरदेशपर ठहर जापानियोंने जब सामने निगाह की, तब उन्हें अपने सामने एक हराभरा मैदान और उससे दूर लियावयाङ्ग नगर अवस्थित दिखाई दिया। लियावयाङ्ग देख नोजूकी इस सैन्य-पंक्तिने हर्षध्वनि की।

नोजूकी सैन्य-पंक्ति अभी अपने नवाधिकृत पर्व्वतमालापर अच्छी तरह जमने भी न पाई थी; ऐसे समय छोटे छोटे टीलों और वनोंके बीचसे एक जबरदस्त रूसी फौज लियावयाङ्गकी

ओरसे निकल पर्व्वतमालाकी ओर बढ़ती दिखाई दी। इस फौजके साथ कोई पचास या साठ बड़ी बड़ी तोपें थीं। बनसे निकल पर्व्वतके सामने पहुंच जब रूसी फौजने अपना आकार विस्तृत किया, तब जान पड़ा, कि दो डिविजन फौज है,—यानी कोई चालीस हजार। एक ओर रूसी फौजोंके तोपखाने लगने लगे; रूसी फौज धावेके लिये तय्यार होने लगी; दूसरी ओर टेनने पर्व्वतमालाके दाहने-बायें अपनी फौज फैलाईं और पर्व्वतके गात्रमें जगह जगह तोपखाने लगा, उनकी बगलमें शीघ्र तैय्यार बने मोरचोंमें बाकी फौजें बैठा दीं; पर्व्वतके पीछे जापानी रक्षित सिपाही बैठे। इसतरह सेनापति टेन दो डिविजन रूसी सैन्यका आक्रमण रोकनेके लिये तय्यार हुए।

रूसियोंने पहले खूब गोलन्दाजी की; इसके उपरान्त अपनी फौजोंको धावेकी आज्ञा दी। आज रूसी फौजें आक्रमण करने चलीं; जापानी फौजें आक्रान्त हुईं। रूसियोंको बड़ी आशा थी, कि इतने दिनोंसे सदा आक्रमणकारी जापानको अपने आक्रमणके फलसे जो विजयलक्ष्मी मिला करती थीं, वह आज जापानियोंको छोड़ उनकी अङ्कशायिनी होंगी। रूसियोंने पर्व्वतमालाकी ओर हर्षनादकर भीमवेगसे धावा किया। तार नहीं थे; मारने नहीं थीं; कुंवोंकी वह विकट माला भी नहीं थी; फिर भी, जापान-अधिकृत पर्व्वतमालातक पहुंचना कठिन था। जापानी फौजकी अचूक बाढ़ें और जापानी तोपोंके अमोघ गोले बढ़ते हुए रूसियोंके परेके परे साफ करने लगे। वह मार पड़ी, कि रूसियोंका उत्साह बहुत कुछ ढीला पड़ ; वह अपनी पहली फुरती छोड़ सावधान हो आगे बढ़ने

लगे। किन्तु आगे बढ़कर जा नहीं सकते थे; मुश्किलसे कुछ ही दूर आगे बढ़नेके बाद और आगे बढ़ना दुष्कर हो गया। यह धावा व्यर्थ हुआ; रूसी लौटे। इस दिन तीसरेपहरतक रूसियोंने ऐसे ही कितने ही धावे दिये और हर धावेमें अकृत-कार्य्य हुए। जापानी फौजें अपने मोरचोंमें अटल-अचल हो बैठी रहीं। दिन कोई तीन बजे—शायद तोपोंका गर्ज्जन सुन—कुरोकीकी सैन्यके वामभागने उस ओर आ अपनी पं-क्तिको देवकी पंक्तिके साथ मिला दिया। इतना सहारा पा देवकी फौजोंने पर्व्वतके ऊपर रूसियोंपर धावा किया; रूसियोंके धावेकी तरह जापानियोंका यह धावा व्यर्थ नहीं हुआ; रूसियोंके पैर उखड़ गये, वह जिस लियावयाङ्ग नगरकी ओरसे आये थे, उसी लियावयाङ्ग नगरकी ओर वापस गये।

प्रधान सेनापति मारशल ओयामाने कुरोकीको आज्ञा दी थी,—"तुम अपनी सैन्यके वाम और मध्य-भागको लियावयाङ्गकी ओर बढ़ाओ और दाहने भागको जिस तत्सिहो नदीमें जा तङ्गहो नदी मिल गई है, वह तत्सिहो नदी पार करा आगे बढ़ा लियाव-याङ्गकी बगलसे उसके पीछे पहुंचा लियावयाङ्ग-मुकदन रेलपथ-पर अधिकार कर लो, जिसमें रूसी फौज लियावयाङ्गसे भाग न सके।" यह भी आज्ञा थी, -"जैसे जैसे लियावयाङ्गके समीप पहुंचना, वैसे वैसे अपनी सैन्यके तीनों भागोंको समवेत करते जाना, जिसमें जिस समय तुम्हारा सैन्यका दाहना भाग रेल-पथके समीप पहुंचे, उस समय तुम्हारी सैन्यके तीनों भाग परस्पर मिल एक सुदृढ़ सैन्य पंक्ति तय्यार कर सकें।"

कुरोकीने इस आज्ञाके अनुसार कारवाई आरम्भ की।

बहुत बड़ा काम था; बहुत बड़ी तय्यारी आरम्भ की। २६वीं होसे तय्यारी आरम्भ हुई, जो ३०वीं की अर्द्धनिशातक चली। अर्द्धनिशाके उपरान्त जापानी इञ्जीनियर तत्सिहो नदीपर कितने ही पुल बंधवाने लगे; पार्वत्य प्रदेशमें घोर वृष्टि होनेकी वजह तत्सिहो खूब बढ़ी थी; उसका जल दोनो किनारोंतक लबालब भर बड़ी ही तेजीसे बह रहा था; उस अर्द्धनिशामें बढ़ी तत्सिहो-पर पुल बांधनेमें जापानी इञ्जीनियरोंको बड़ी दिक्कत हुई। फिर भी, समयपर काम तय्यार हो गया; सूर्य्योदयसे पहले ही कितने ही सुदृढ़ फौजी पुल बनकर तय्यार हो गये; कुरोकीकी सैन्यका दाहना बाजू उन पुलों द्वारा नदी पार करने लगा। मध्य-भागका भी कुछ अंश इस दाहने भागमें मिला दिया गया, जिससे उसकी शक्ति और भी बढ़ गई। कुरोकीकी सैन्यका यह दाहना बाजू बहुत बड़ा बाजू बन गया; ३०वीं अगस्तको प्रातःकालसे इस बाजूकी फौजें नदी पार करने लगीं; ३१वीं अगस्तको सन्ध्यातक पार उतरती रहीं; अन्तमें इसी तारीखकी रातको दाहने बा-जूकी तोपें भी जब नदी पार कर चुकीं, तब समूचा दाहना बाजू तत्सिहोके इस पारसे उस पार पहुंचा। उस पार पहुंच वह एक बड़ी ही लम्बी पंक्ति तय्यार कर अपने निर्दिष्ट स्थानकी ओर बढ़ने लगा।

कुरोकीकी फौजके बायें बाजूके सेनापति देवकी सैन्य-पंक्तिके साथ लियावयाङ्गके सामने अवस्थान करनेका हाल हम लिख चुके हैं; अब इस सैन्यके मध्यभागका हाल सुनिये। ३०वीं अगस्तको एक ओर जिस समय वह दाहना बाजू नदी पार रहा था, उस दिन उसी समय मध्य-भाग लियावयाङ्गकी ओर

पढ़ रहा था। इस दिन कई पर्व्वतमालायें तयकर अन्तमें इस भागने जिस पर्व्वतमालाके समीप पहुंच अवस्थान किया, उस पर्व्वत मालाके शिखरदेशपर चढ़नेवाले जापानी अफसरों और विदेशी संवाददाताओंकी बहुत दिनोंकी एक मनोकामना पूर्ण हुई। इन लोगोंने देखा, कि रूसकी फौजी राजधानी लियावयाङ्ग नगर अपने पूरे सौन्दर्य्य और प्रभावके साथ सामने चमकता दिखाई देता है। विलायती अखबार टाइम्सके संवाददाताने यह दृश्य देख लिखा था,—"एक अत्युच्च पर्व्वतशिखरसे मैं नीचे देख रहा हूं। इस पर्व्वतके पादमूलसे आगेकी ओर जहांतक दृष्टि जाती है, वहांतक एक सुविशाल हराभरा मैदान फैला हुआ है। इस मैदानमें जगह जगह भूरे भूरे बब्बे दिखाई देते हैं, जो नई बनी अगणित कबरें हैं। हमारी बगलसे तत्सिहोकी चौड़ी धारा सशब्द बहकर आगे निकल गई है। कुछ दूर आगे जा यह नदी एकाएक दायें मुड़ गई और अपने क्रोड़में लियावयाङ्ग नगरको लेती उसके पीछेसे समुद्रकी ओर निकल गई है। नदीके क्रोड़में लियावयाङ्ग नगरकी इमारतें चमक रही हैं; नगरकी कुल इमारतोंसे ऊंचा एक सुविशाल मन्दिरका अत्युच्च चूड़ा मानो गगनस्पर्श कर रहा है। जिस मन्दिरका यह चूड़ा है; चीनाओंमें उसका बड़ा आदर है। कारण, इस मन्दिरमें सिवा बुद्धदेवकी मूर्त्तिके उनके पूर्ववर्त्ती अन्यान्य आठ अवतारों कृष्ण, राम, वामन, वराह प्रभृतिकी मूर्त्तियां भी हैं। नगरके किनारे भुण्डके भुण्ड वृक्ष हैं, जिनकी हरी हरी टहनियोंके बीचसे लियावयाङ्ग नगरके किनारेकी सफेद सफेद इमारतें साफ दिखाई देती हैं। नगरकी बगलके मैदानोंमें रसदादिके बड़े बड़े ढेर

लगे हुए हैं। नगरकी बगलसे नदी पारकर दूरतक फैली रेलकी सफेद लाइन दिखाई देती है। नगरके दाहने शुश्चान पर्व्वतमाला है, जिसपर अबतक रूसी फौजोंका अधिकार है; नगरके सामनेकी बहुसंख्यक पर्व्वतमालाओंके छोरपर एक पहाड़ी है, जिसपर जापानी सैन्य-पंक्तिकी ध्वजा लहरा रही है।

"लियावयाङ्ग नगर मानो उस भावी युद्धकी प्रतीक्षा कर रहा है; जिसके फैसलेपर प्राच्य और प्रतीच्यके बीचमें होनेवाले युद्धके प्रथम अंशका फैसला होनेको है। चारो ओरकी छाई हुई शान्तिको भेदकर समय समयपर जो एक अविराम घोर-गभीर गर्ज्जन सुनाई दे रहा है, वह दूर चलते हुए किसी घोर युद्धकी सूचना दे रहा है। नगर और नगरके सामनेके उच्च भूभागपर रूसियोंका अधिकार है। इससे आगे मैदान है। मैदानके छोरपर वन, उपवन आदि जापानियोंके हाथ हैं। जिस पर्व्वतपर मैं खड़ा हूं, उसके नीचेके मैदानमें जापानी रेजिमेण्टें, ब्रिगेड और डिविजन आगे बढ़ रहे हैं। उनके बढ़नेके ढङ्गसे जान पड़ता है, मानो उन्हें विजय-प्राप्तिका पूर्ण विश्वास है। जापानी फौजोंका बादल लियावयाङ्ग नगरको घेर रहा है; लियावयङ्गकी क्या दशा होगी?"

इसतरह क्रम क्रमसे आगे बढ़कर ३१वीं अगस्ततक कुरो-कीकी सैन्यका बायां बाजू और मध्य-भाग लियावयाङ्ग नगरके सामने पहुंच गया; दाहना बाजू जबरदस्त तोपखानेके साथ तात्सहो नदी पारकर लियावयाङ्ग नगरकी बगलसे चक्कर काट ... पश्चाद्भागके रेल-पथपर अधिकार करने चला। लियाव-महासमरका द्वितीय पर्व्व यहीं समाप्त हुआ।

षोड़श परिच्छेद।

लियाओयाङ्ग-महासमर—परिशिष्ट।

आदि पर्व्व हो गया; मध्य पर्व्व भी हो गया,—अब लियाओयाङ्ग महासमरका परिशिष्ट है। इतने दिनोंतक जो युद्ध चल रहा था, अब उसका फल प्रकट होनेको है।

१ली सितम्बरको प्रातःकाल लियाओयाङ्ग नगरकी वही स्थिति थी, जो फ्रान्स-सम्राट् तृतीय नेपोलियनके समय फ्रान्स-जर्म्मन-युद्धमें फ्रान्सीसी नगर सेडानकी थी। जिन पाठकोंने इस युद्धका वर्णन पढ़ा है, उन्हें स्मरण होगा, कि इस १ली सितम्बरको ही बहुत सहस्र सिपाहियों और कोई पांच सौ तोपोंसे सेडान घेर सेडानमें बैठी फ्रान्सीसी फौजपर जर्म्मनोंने गोलन्दाजी आरम्भ की थी। सेडानमें फ्रान्सीसी सैन्यकी जो दुर्दशा हुई थी, उसका वर्णन यहां असङ्गत होगा; हां इतना कहना उचित है, कि इस युद्धके फलसे सहस्र सहस्र फ्रान्सीसी सिपाहियोंको आत्मसमर्पण करना पड़ा था और इस युद्धके उपरान्त जर्म्मन-सैन्य आसानीसे साथ फ्रान्स-राजधानी पेरिसके दरवाजेतक पहुंच सकी थी। जिस मासकी जिस तारीखको सेडानपर गोला-वृष्टि आरम्भ हुई थी, उसी मासकी उसी तारीखको लियाओयाङ्ग नगरपर गोला-वृष्टि आरम्भ हुई। सेडान युद्धमें जर्म्मन जीते, फ्रान्सीसी हारे; लियाओयाङ्ग-युद्धमें कौन जीतेगा और कौन हारेगा?

कुछ देरके लिये जापानी फौज छोड़ रूसी फौजकी ओर चलिये; कुरोपाटकिनके सदर लियाओयाङ्ग नगरमें चलिये।

लियावयाङ्ग रेल-स्टेशनके समीप बड़ी हलचल है। स्टेशनकी एक अतिरिक्त लाइनपर कुरोपाटकिनकी स्पेशल ट्रेन खड़ी है। ट्रेनमें एञ्जिन लगा है, जिसका वाष्प हर समय तय्यार रहता है; कल घुमाते ही ट्रेनको भगा ले जा सकता है। इस ट्रेनके इर्दगिर्द और रेलवे स्टेशनमें रूसी अफसरोंकी भीड़ है। सभी रूसी अफसर व्यस्त हैं; कोई आता है; कोई जाता है; कोई खड़ा हो अपने अधीनस्थ अफसरोंको आज्ञायें देता है। कोई घोड़ेपर है; कोई पैदल है; कोई साइकिलपर है। ३१वीं अगस्तकी सन्ध्यासे कुरोपाटकिनकी स्पेशल ट्रेनके गिर्दकी हलचल और भी बढ़ी। गत कई दिनोंसे कुरोपाटकिन समयपर खा नहीं सकते हैं, समयपर सो नहीं सकते हैं, समयपर कोई काम कर नहीं सकते हैं। चारो ओरसे उन्हें तोपोंके गर्जनकी आवाजें सुनाई दे रही हैं; चारो ओरसे उनके पास युद्धस्थलसे भेजे हुए तार आ रहे हैं। किसी तारको देख कुरोपाटकिन विकल हो उठ खड़े होते हैं; किसी तारको देख कुरोपाटकिन चिन्ताभाराक्रान्त बड़ी ही बेचैनीके साथ अपनी स्पेशल ट्रेनमें टहलने लगते हैं। फिर भी; उन्हें छुटकारा नहीं; चिन्ता कर कोई सुयुक्ति ढूंढ निकालनेका अवसर नहीं; तार पाते ही तारका प्रत्युत्तर देनेके लिये बाध्य होते हैं; तार द्वारा कोई शिकायत सुनकर उसी समय उसके प्रतिकारकी व्यवस्था करनेके लिये बाध्य होते हैं। उनकी आज्ञा ले अफसर दौड़ते हैं, सवार दौड़ते हैं, पैदल दौड़ते हैं; जैसी आज्ञा होती है, वैसे मनुष्य दौड़ते हैं।

लियावयाङ्ग स्टेशनके समीप ही लियावयाङ्गके राजा रूसियोंकी [illegible]थी। रूसियोंकी बस्तीमें उत्तमोत्तम राहें थीं; राहोंके

गिर्द साफ-सुथरी पटरियाँ या फूटपाथ थे। छोटे छोटे उद्यानोंमें आलीशान इमारतें थीं। लम्बे-चौड़े बाजार थे; बाजारोंमें करीनेसे लगी रङ्ग-बरङ्गी और बड़ी-छोटी बहुतसी चीजोंसे भरी बड़ी बड़ी दुकानें थीं। गेस-बिजलीकी रोशनी थी; सुपेय जलकी सुव्यवस्था थी। सिवा इसके इसी बसतीमें 'पगोडा-गारडन' या मन्दिरो-द्यान नामक सुरम्य बाग था, जिसमें दिनमें कई बार पानीका छिड़काव होता था, जिसकी सफाईके लिये कितने ही कुली नियुक्त थे। सन्ध्या समय इस बागमें बेण्ड बाजा बजता था। नित्य सान्ध्य-समीरण सेवन करनेके लिये अगणित रूसी नर-नारी इस वाटिकामें एकत्र होते थे। हर्म्योंसे, कुञ्जभवनोंमें, जलाशयोंके तटपर खान-पान और आमोद-प्रमोद चलता था। बड़ी बहारें होती थीं; बड़े मजे लूटे जाते थे। सिवा इस उद्यानके इसी बसतीमें डाकखानेकी, अदालतकी, बङ्ककी, बीमेकी,—कितने ही व्यवसायकी कितनी ही सुदृश्य अट्टालिकायें थीं, जिनमें दिनको आनेजानेवालोंकी भीड़ लगी रहती थी। लियावयाङ्ग नगर बड़ी रौनकपर था; किन्तु जबसे लियावयाङ्ग-महासमर आरम्भ हुआ था, तबसे इस नगरकी रौनक क्रम क्रमसे फीकी पड़ने लगी थी। इतना ही नहीं; जैसे जैसे युद्ध आगे बढ़ा, वैसे वैसे कितने ही दूरदर्शी रूसी और चीना अपनी घर-दुकानपर ताले लगा सपरिवार भागने लगे थे; भागनेवाले यात्रियोंसे खचाखच भरी कितनी ही ट्रेनें नित्य लियावयाङ्ग नगरसे छूटती थीं। इस-तरह युद्धके साथ साथ नगरका सन्नाटा बढ़ा और ३१वीं अगस्तकी सन्ध्यातक बहुत ही बढ़ गया। सन्नाटा इसलिये नहीं बढ़ा, कि नगरमें आदमियोंकी कमी थी; नगरके निर्द्धन और मध्यश्रेणीके

अधिवासी—कितने ही धनी अधिवासी भी; अदृष्टपर निर्भर हो नगर हीमें थे; सिवा इसके बहुतेरी रूसी फौजें भी नगरमें और नगरके पड़ोसमें थीं; मनुष्योंकी कमी नहीं थी और मनुष्योंके अभावसे लियावयाङ्ग नगरमें सन्नाटा छाया नहीं था। सन्नाटा छाया था,—बाजारोंके बन्द होनेसे—व्यवसायके बन्द होनेसे—अधिवासियोंके मकानोंके द्वार बन्दकर भीतर बैठनेसे। फिर, सन्नाटा छाया था—युद्धके भीषण हो उठनेसे—चारो ओरसे जापानी सैन्यके चढ़ आनेसे।

३१वीं अगस्तकी रातको सन्नाटा और भी बढ़ा। सुसमाचार कुछ देरके लिये दबा रहे, तो दबा रह सकता है; किन्तु कुसमाचार कभी दबा रह नहीं सकता; वायुके किसी प्रचण्ड झोंकेकी तरह अत्यन्त शीघ्रतापूर्व्वक बहुत बड़े भूभागमें फैल जाता है। ३१वीं अगस्तको जन्म्याकी जैसे जैसे ओकू और नोजूकी सैन्य-पंक्ति रूसी मोरचोंके समीप होने लगी, वैसे वैसे लियावयाङ्ग नगरमें रूसियोंके दबनेका समाचार पहुंचने लगा। इससे पहले ही चारो ओरसे रूसी हताहतोंसे भरी असंख्य गाड़ियां लियावयाङ्ग नगर पहुंच चुकी थीं और उन्हें ही देखकर नगरके चीना तथा रूसी अधिवासियोंको युद्धके भावी परिणामका पूर्व्व-चिह्न दिखाई दे चुका था। लियावयाङ्गके बाहर जगह जगह शत शत बड़े बड़े गड्ढे खोदे और रूसियोंकी लाशोंसे भरे जाकर तोपे गये थे। कितने ही मकान खाली किये जाकर अस्पतालमें परिणत किये गये थे। इन अस्पतालोंमें जगह जगह नितान्त बीभत्स दृश्य दिखाई देते थे। कहीं किसी अचेत रूसीका पैर काटा जाता , कहीं हाथ काटा जाता था; कहीं जखमोंकी पीड़ासे

चिल्लाता रूसी 'क्लोरोफार्म' देनेवालोंकी बूसे अचेत किया जाता था; कहीं कोई रूसी चैतन्यलाभकर और अपनेको पैर या हाथसे शून्य पा शीघ्र शीघ्र मर रहा था। अस्पतालमें जगह जगह कटे हुए पैर आदिके ढेर लगे थे। अस्पतालमें आहतोंकी संख्या क्रमशः बढ़ती जाती थी, विशेषतः ३१ वीं अगस्तकी सन्ध्याके उपरान्तसे वह और भी शीघ्र शीघ्र बढ़ने लगी।

इस तारीखको प्रायः अर्द्धनिशाके समीप समग्र लियावयाङ्ग नगरमें एकाएक यह समाचार फैला, कि ओकू और नोजूकी सम्मिलित सैन्य-पंक्ति द्वारा रूसी सैन्य परास्त हुई। राहमें सन्नाटा था; किन्तु मकानोंके भीतर भीतर खूब आवादी थी। एक मकानसे दूसरे मकान; दूसरेसे तीसरे मकान,—खिड़की, छत और बरामदेकी राहसे प्रहरभरमें खबर फैल गई। कितने ही लोगोंने इस समाचारपर विश्वास किया; कितने ही प्रमाणकी प्रतीक्षा करने लगे। प्रमाण मिलनेमें अधिक विलम्ब नहीं हुआ। दिनभरके तोपोंकी गर्जनके अन्तमें सन्ध्याके उपरान्तसे वह जो बाढ़की आवाजें और युद्ध-कोलाहल सुनाई दे रहा था, वह क्रम क्रमसे नगरके समीप होने लगा। इसके बाद ही रूसी सैन्य-सागर ओकू और नोजूकी सैन्यके सामनेसे पीछे हट नगरके बाहरकी घाटियों और उच्च भूभागका आश्रय लेने लगा। इतना ही नहीं; और भी प्रत्यक्ष प्रमाण मिला। अगणित रूसी फौजें युद्धस्थलसे लौट लियावयाङ्ग नगरके बीच या किनारेसे क्रूरोपाटकिनके सदर लियावयाङ्ग रेल-ष्टेशनको ओर जा रही थीं। जो फौजें लियावयाङ्ग नगरके बीचसे लौट रही थीं, नगर-वासियोंने झरोकोंसे उनपर निगाह की। उन्हें रूसी फौज

नितान्त दुर्द्दशाग्रस्त दिखाई दी। किसी फौजके साथ दश अफसर थे ; किसीके साथ पांच। किसी फौजमें पांच सात सौ सिपाही थे, किसी फौजमें सौ ही दो सौ। हरेक सिपाहीका चेहरा सूखा हुआ था ; आंखें धंसी हुई थीं ; गालम्राल जबड़ेकी हड्डीसे चिपके हुए थे। भूखसे, प्याससे, गत कई दिनोंकी युद्ध-क्लान्तिसे सिपाही नितान्त निर्बल हो गये थे। उनके हृदयमें उत्साह नहीं था, उनकी छातीमें बल नहीं था, उनके चित्तको धैर्य दिलानेवाली भविष्यत्‌की कोई आशा नहीं थी। किसी सिपाहीके शिरपर टोपी नहीं थी, किसीकी वरदी फट गई थी, किसीके जूता नहीं था,—नङ्गे पैर जा रहा था। किसी सिपाहीके हाथमें बन्दूक नहीं थी, किसी सिपाहीकी कमरमें कमरबन्द नहीं था, किसीका परतला टुकड़े टुकड़े हो गया था। वेष बाना नहीं था, शृङ्खला नहीं थी, क्रम नहीं था ; भेड़ोंके झुण्डकी तरह रूसी सिपाही एक ओरसे दूसरी ओर जा रहे थे। उनके पैरोंका शब्द होता था ; उनके मुंहसे आवाज निकलती नहीं थी।

सिवा इसके इन फौजोंके बीचसे, आगेसे,पीछेसे जिधरसे राह मिलती थी, उधरसे अगणित गाड़ियां जा रही थीं। कोई अल-गाव नहीं था ; रसदकी गाड़ियां, तोपोंकी गाड़ियां, जखमियोंकी गाड़ियां, लाशोंकी गाड़ियां,—सब तरहकी गाड़ियां एक ही पंक्तिमें या एक साथ एक ओरसे दूसरी ओर भागी चली जा रही थीं। किसी तोपखानेके दश ही गोलन्दाज बचे थे, किसीके पचीस पचास बचे थे ; किसी तोपका पहिया टूटा हुआ था, धुरी टूटी हुई थी,—तोपों और गोलन्दाजोंकी अवस्था

और भी शोचनीय थी। जो गोलन्दाज या सिपाही सामान्यरूपसे आहत हुए थे, उनको गाड़ियोंमें जगह ही नहीं गई थी। उनके जखमोंसे रुधिर बह रहा था और वह चलते चलते क्लान्त हो दम लेनेके लिये राहकिनारे बैठ जाते थे। इतने प्रमाण मिलनेपर सन्दिग्ध नगरवासियोंके मनका सन्देह मिटा; जापानकी जय हुई; रूसी सैन्य पराजित हुई; नगरवासी मन ही मन गभीर चिन्तामें निमग्न हुए; प्रातःकाल उन सबके भाग्यमें क्या लिखा है?

इसी समय आइये एकबार फिर सेण्ट्रल ट्रेनमें अधिष्ठित क्रुरोपाटकिनके समीप चलें। एक ओर क्रुरोपाटकिनकी ट्रेनके गिर्दके सुदूरव्यापी मैदानमें परास्त रूसी फौजें एकत्र हो रही थीं; दूसरी ओर एकाएक उन्हें तार द्वारा समाचार मिला,—"क्रुरोकीकी सैन्यका दाहना बाजू तत्सिहो नदी पारकर लियावयाङ्गकी बगलसे आगे बढ़ रहा है; जान पड़ता है यह बाजू लियावयाङ्गके पीछेके रेल-पथपर अधिकारकर रूसी-सैन्यसे भरे लियावयाङ्ग नगरको पश्चाद्भागसे घेर लेना चाहता है; इस प्रबल बाजूके रोकनेमें रूसी सैन्य असमर्थ है।" पाठक जानते हैं, कि क्रुरोकीके सामने रूसकी युरोपीय सैन्य थी; वही युरोपीय सैन्य समसंख्यक जापानी सैन्यको रोकनेमें असमर्थ थी; उसे मदद चाहिये। मदद भी यथासम्भव शीघ्र चाहिये; नहीं तो एकबार यदि जापानी सैन्य रेल-पथपर अधिकार कर लेगी, तो प्रधान सेनापति क्रुरोपाटकिनके साथ साथ लक्ष लक्ष रूसी सिपाही लियावयाङ्गमें अवरुद्ध हो अन्तमें या तो मारे जायेंगे या आत्मसमर्पणकर जापानियोंके कैदी बननेपर बाध्य होंगे।

प्रचण्ड प्रताप ओकू और नोजूकी सैन्यकी विजयप्राप्तिके समाचारके उपरान्त ही कुरोकीकी सैन्यकी इन भयङ्कर धमकीका समाचार पा व्याकुल कुरोपाटकिन और भी व्याकुल हो गये। इस आसन्न विषम विपदसे रक्षा कैसे होगी?

एक ही उपाय था। ओकूकी सैन्यके सामनेसे लौटी जो अगणित फौजें कुरोपाटकिनके इर्दगिर्द जमा हो रही थीं, वह ट्रेनों द्वारा दूरतक रेल-पथ किनारे उतार दी जायें और उन्हें आज्ञा दी जाये, कि जबतक लियावयाङ्ग खाली किया न जाये, तबतक वह जापानी सैन्यको रेल-पथके समीप आने न दें। सिवा इसके कुरोकीके सामनेकी युरोपीय सैन्यको कहा जाये, कि वह इस रेल-पथकिनारेकी सैन्यसे पूर्ण रूपसे साहाय्य ले। ऐसी ही आज्ञा दी गई और इसीके अनुसार कार्य्य आरम्भ हुआ। कितने ही समझदारोंने कहा है, कि कुरोपाटकिन यदि यह काररवाई करनेमें तनिक भी विलम्ब करते, तो जापानी सैन्य-पाशमें फंस रूसैन्य उनका सर्व्वनाश हो जाता। अर्द्ध-निशाके उपरान्त ही शुशान पर्व्वत तथा उसकी बगलकी दुर्ग-मालासे भागी रूसी फौजें ट्रेनमें सवार कराई जाकर निर्द्दिष्ट स्थानकी ओर रवाना की जाने लगीं। एक हलचल मिटने न पाई थी, कि यह दूसरी हलचल आरम्भ हुई। रातोंरात कितने ही पुलों द्वारा तत्सिही नदी पार करा लियावयाङ्ग नगरके पीछे रेल-पथ और कुरोकीकी सैन्यके आगे बढ़ते हुए दाहने बाजूके बीच रूसी सैन्यकी एक सुदृढ़ पंक्ति तय्यार कर दी गई। केसेलने जापान-सेनापतियोंकी वैसी कोई श्लाघा न करके भी इस गतिके लिये कुरोपाटकिनकी खूब प्रशंसा की है। कहा है,—"जापा·

नियोंने ससैन्य रूस-सेनापति कुरोपाटकिनको चालाकीके साथ जिस जालमें फँसानेकी चेष्टा की थी, वीरवरने उस जालसे ससैन्य अपनेको निकाल अपने रण-पाण्डित्यका पूर्ण परिचय प्रदान किया।"

अब रूसी सैन्यकी आंखें अच्छी तरह खुल गई थीं। प्रमाण पहले भी मिल चुका था; किन्तु इस लियावयाङ्ग महायुद्धमें और भी प्रमाण मिल गया, कि रशियाके मूर्त्ति-पूजक जापानी किसी तरह भी छ्यापात नहीं; और एक जापानी सिपाही एक ही नहीं; दो बल्कि समय उपस्थित होनेपर तीन रूसी सिपाहियोंको पदद‌लित कर सकता है। अबतक रूसी सिपाहियोंको उनके अफसर तरह तरहसे गाल बजा भुलावेमें डालते आते थे। कभी उनसे कहते थे, कि अभी तुम्हारी संख्या कम है; इसीलिये तुम जापानियोंके सामनेसे पीछे हटाये गये हो; कभी कहते थे, कि रूसी अफसर इस जगहको अप्रयोजनीय नगण्य समझते हैं; इसीलिये तुम यह जगह परित्यागकर पीछे हटनेके लिये आदिष्ट हुए हो; अन्तमें कहते थे,— जैसे ही यथेष्ट रूसी फौजें युद्धस्थलमें समवेत हो जायेंगी, वैसे ही पवित्र रूसकी वीरवाहिनियां रणहुङ्कारसे दिशायें प्रतिध्वनित करती, तुच्छ जापानियोंपर टूट उन्हें मञ्चूरिया और कोरियासे निकाल अन्तमें सागर पारकर जापान पहुंच जापान-राजधानी टोकियोपर अपनी विजय-वैजयन्ती उड़ायेंगी।" रूसी सिपाही उन्मत्तप्रलापवत् इन आशापूर्ण बातोंको सुन नितान्त आल्हादित हो जयध्वनि किया करते थे। किन्तु इस बार लियावयाङ्ग महासमरमें परास्त होनेपर रूसी अफसर ऐसी कोई बात बना

नहीं सके। बना कैसे सकते थे ? रूसी सिपाही अपनी आँखों देख रहे थे, कि यह नगर क्रूरोपाटकिनका मदर या रूसी फौजकी राजधानी था ; इसकी रक्षाके लिये चारों ओरसे बहु-संख्यक रूसी फौजें एकत्र की गई थीं ; आक्रान्त रूसियोंकी अपेक्षा आक्रमणकारी जापानी सिपाहियोंकी संख्या बहुत कम थी,—इतनी तय्यारी, इतनी सुविधा होनेपर भी रूसी फौजें जापानी फौजोंके सामनेसे भाग रही थीं। इन प्रत्यक्ष प्रमाणोंपर धूलि झोंक जापानी फौजोंकी श्रेष्ठता छिपाई कैसे जा सकती थी ? इसीलिये इस महायुद्धमें रूसके प्रत्येक सिपाहीके मनमें ध्रुव विश्वास हो गया, कि एशियाके जापानी उनसे प्रबल हैं और अपनी प्रबलताकी वजह ही वह रूसियोंको परास्त करनेमें सक्षम हुए हैं। खबर है, कि इसी युद्धके बादसे रूसियों तथा युरोपकी अन्यान्य जातियोंने जापानियोंको सभ्य जापानी कहना आरम्भ किया था, जिसपर किसी समझदार जापानीने हंसते हंसते कहा था,—"जो 'सभ्यता' इतने रक्तपातके बाद प्राप्त की जा सकती है, उस सभ्यताको दूर हीसे प्रणाम।"

बालाई बातें बहुत हुईं ; अब हमें युद्धकी ओर ध्यान देना चाहिये। आरम्भ हीमें लिख चुके हैं, कि यह युद्ध लियावयाङ्ग महासमरका परिशिष्ट है। इस अंशमें सबसे पहले हम ओकू और नोजूकी सम्मिलित सैन्य-पंक्तिका कार्य्य वर्णन करते हैं। १ली सितम्बरको प्रातःकाल इन दोनो सेनापतियोंको सैन्य-पंक्ति शुशान पर्व्वत तथा उसकी बगलकी दुर्भेद्य दुर्ग-पंक्तिमें सुदृढ़ रूपसे बैठी दिखाई दी। इन मोरचोंसे भागनेपर रूसी सैन्य-पंक्तिका कुछ अंश तो क्रूरोपाटकिनके आज्ञानुसार सेनापति

कुरोकीके आगे बढ़ते दाहने बाजूके सामने पहुंचा और कुछ अंश लियावयाङ्ग नगरसे बाहरके बागों तथा उच्च-भूभागमें सुदृढ़ मोरचे बना बैठ गया। लियावयाङ्ग नगरके दाहने—शुशान पर्व्वतके सामने कितने ही रूसी किले थे; इन किलोंमें रूसी फौजें ठसाठस भर गईं। शत शत रूसी तोपें इन किलों और लियावयाङ्ग नगरसे सटे हुए रूसी मोरचोंमें लगा दी गईं। इस तय्यारीके साथ बैठ रूसी जापानी सैन्य-पंक्तिके आगे बढ़नेकी प्रतीक्षा कर रहे थे।

इधर ओकू और नोजूकी सैन्यने जबसे विजय प्राप्त की थी, तबसे आगे एक कदम भी बढ़ना भूल वह कितने ही प्रयोजनीय कामोंमें लगी हुई थी। इस समय रसद-विभाग, बारबरदारी-विभाग, अस्पताल-विभाग प्रभृति कितने ही विभागोंके आद-मियोंके उस नवविजित रणस्थलमें एकत्र हो जानेकी वजह उनकी संख्या बढ़कर दो लाखसे भी ऊपर हो गई थी। एक तो इतने आदमियोंका उसतरह वहां एकत्र रहना ही उतना स्वास्थ्य-नियमानुकूल नहीं था; दूसरे रणस्थलने जैसी विकट मूर्त्ति धारण की थी; वह जिसतरह असंख्य लाशोंकी विकट विभी-षिकासे लोमहर्षण बनी थी, उससे उतने मनुष्योंका वहां रहना ऐसे एक नहीं, अनेक विधियोंके प्रतिकूल था। ऐसी अवस्थामें इतने आदमियोंको वहां स्वस्थ रखनेके लिये सबसे पहले रण-क्षेत्रके उस महाश्मशानको अपसारित करनेकी बड़ी जरूरत थी। इसलिये सबसे पहले आगे बढ़ना छोड़, लियावयाङ्ग नगरपर अधिकार करनेका ख़याल छोड़ जापानी फौजें उस रणस्थलकी विभीषिका मिटानेमें प्रवृत्त हुईं।

रात्रिका अन्धकार बीतने और प्रातःकालकी सफेदी फैलनेपर जापानियोंको अपनी गत रातकी जीती युद्ध-भूमिमें बड़े ही विकट दृश्य दिखाई दिये। कोसोंकी लम्बाईमें रूसियों और जापानियोंकी अगणित लाशें पड़ी थीं। सभी ठण्डी हो अकड़ गई थीं। किसीका हाथ उठा था, किसीका पैर सिकुड़ा था, किसीकी गरदन उठी थी, किसीकी कमर सीधी होनेकी वजह लाश बैठ गई थी। किसीकी आंखें खुली थीं; बन्द होंठ बैठे हुए थे—किसीकी आंखें भी खुली थीं और मुंह भी खुला था और उस खुले हुए मुंहके भीतरसे दांतोंकी पंक्ति दिखाई देनेकी वजह लाश अट्ट अट्ट विकट हास्यध्वनि करनेपर उद्यत प्रतीत होती थी। फिर, कितनी ही लाशें एक या दो दिन नहीं; तीन तीन दिनसे पड़ी थीं; तपनके आधिक्यसे सड़ने लगी थीं; उनके अङ्गप्रत्यङ्ग बहुत फूल आये थे; उनका आकार इतना भयङ्कर हो गया था, कि उसे देख उस ओरसे आंखें मोड़ ली जाती थीं। सड़े हुए मांस और बहकर सूखते हुए रक्तके दुर्गन्धसे युद्धस्थलमें एक अनुपमेय गन्ध फैल रहा था; मांसके लोभसे मक्खियोंके अगणित झुण्ड अपनी कालिमासे रणस्थलको काला बना रहे थे। फिर, तोपखानोंके घोड़े, सवारोंके घोड़े अफसरोंके घोड़े—कितने ही दलोंके घोड़े अपने सवारोंसे जुदा हो दल बांध भूखसे, प्याससे अधीर हो और कई दिनोंसे विश्राम न पानेकी वजह अत्यन्त विह्वल हो वायुवेगसे कोसों लम्बे युद्ध-स्थलमें कोसोंका चक्कर लगाते फिरते थे। १ली सितम्बरकी प्रातःकाल जापानकी विजयवाहिनीने अपने पीछे मुड़ जब निगाह की, तब रणस्थलको ऐसे ही दृश्योंसे परिपूर्ण देखा।

अफसरोंने शीघ्र शीघ्र इस विकट-दर्शन महाश्मशानको वहांसे अपसारित करनेकी व्यवस्था की। लाख लाख जापानी अपने अफसरोंकी अधीनतामें युद्धस्थल साफ करनेमें प्रवृत्त हुए। रूसियोंकी लाशोंके लिये एक ओर बहुत ही गहरे और लम्बे-चौड़े गड्ढे खोदे जाने लगे; जापानियोंकी लाशोंके लिये दूसरी ओर पर्व्वतप्रमाण ऊंची ऊंची चितायें तय्यार की जाने लगीं। बहुतेरे गड्ढे खोदे गये; बहुतेरी चितायें तय्यार की गईं। रूसियोंकी लाशें गड्ढोंमें भर ऊपरसे मट्टी दी गई; गड्ढा बराबर हुआ; मट्टी बचनेसे बराबर गड्ढेके ऊपर बीचमें एक ऊंचा चौंतरा तय्यार किया गया; उसपर सलीब या ईसाइयोंके प्रभु ख्रीष्टका आत्मोत्सर्ग-निदर्शन क्रास गाड़ दिया गया। जापानियोंकी लाशोंकी उन पर्व्वतसी जैसी चिताओंमें अग्नि-संयोग किया गया; जापानी धर्म्मयाजकोंने मृत-संस्कार सम्बन्धीय मन्त्रोच्चारण किये; प्रधूमित अग्निने शीघ्र शीघ्र आगे बढ़ समग्र चिताको ग्रास किया; अग्निशिखायें दूर दूरसे दिखाई देने लगीं; कोई दहनशील पर्व्वत जलकर खाक होता जान पड़ा; कोई बहुत बड़ी बाजीगरी लीप होती हुई जान पड़ी। रणस्थलके समीप ही इस तरहकी एक नहीं, अनेक चितायें जलीं। अपने विजयी जाति-भाइयों द्वारा अपनी अन्त्येष्टिक्रियाका सम्पादन देख मृत जापानियोंकी आत्माओंको जिस सुखका अनुभव हुआ होगा, उसका वर्णन किससे हो सकता है?

१ली सितम्बरको प्रातःकाल एक ओर जिस समय यह सब होने लगा, दूसरी ओर उसी समय जापानी फौजी अस्पतालोंमें रूसी और जापानी हताहतोंकी चिकित्सा होने लगी। उनकी

चारपाइयोंके समीप फूलोंके गुलदस्ते सजाये जाने लगे; उनको बगलमें बैठ जापान-महिलायें अपनी आशापूर्ण दृष्टि और हर्षप्रद उज्ज्वल चन्द्राननसे आहत सिपाहियोंका शोक-ताप मिटाती हुई उनकी सेवा-शुश्रूषा करने लगीं। शत्रु या वीरदर्पसे आहत होनेपर भी ऐसे दृश्योंसे परिवेष्टित अपने सैन्यका विजय-समाचार-प्राप्त जापानी सिपाहियोंके वदन-मण्डलसे अलौकिक कान्ति प्रस्फुटित हो रही थी। उस समय टाइम्सके संवाद-दाता घूमते-घामते उस ओर जा निकले थे; उन्होंने लिखा है,—"मैं ऐसे कितने ही असपतालोंमें गया; प्रसन्न जख़मी अपने जख़मोंका गौरव करते दिखाई देते थे। असपतालका प्रबन्ध प्रशंसनीय था; किन्तु विजय बड़े दामों खरीदी गई थी।" ऐसे बड़े महासमरकी विजय कहां और कब कौड़ियोंके मोल खरीदी गई है?

एक ओर यह सब हो रहा था, अल्पकालमें युद्धस्थलके परिष्कार-परिच्छन्न होनेका आयोजन हो रहा था; दूसरी ओर नवविजित उस भयङ्कर शुशान पर्व्वतके मोरचोंमें कोसोंतक मार करनेवाली बड़ी बड़ी तोपें चढ़ाई जा रही थीं। कल इसी समय जिस जगह रूसी तोपें चढ़ी थीं, आज उसी जगह जापानी तोपें चढ़ाई गईं। शुशान पर्व्वतके सामने ही सुविस्तृत लियाव-याङ्ग नगर था; विशेषतः लियावयाङ्ग नगरके पीछेका वह रूसि-योंका महल्ला और उसके एक किनारेका कुरोपाटकिनकी स्पेशल ट्रेनवाला वह लियावयाङ्ग रेल-ष्टेशन शुशान पर्व्वतके ठीक सामने था। शुशान पर्व्वतपर लगी जापानी तोपें मुख-व्यादानकर मानो उस नगर, रूसी बसती और रेल-ष्टेशनको ग्रास

करनेके लिये तय्यार हुईं। इसीके साथ साथ नगरके सामनेकी रूसी मोरचा-बन्दियोंके सामने भी जापानी तोपें लगाई जाने लगीं।

दोपहरतक ल्यिावयाङ्ग नगरके सामने शत शत जापानी तोपें लग गईं। कुछ ही घण्टोंके विश्रामके उपरान्त एकबार फिर जापानी गोलन्दाज गोलन्दाजी करनेके लिये अपनी तोपोंकी बगलमें खड़े हुए। दिन बारह बजेके बाद शुशान पर्व्वतकी एक सुदीर्घ जापानी तोपके मुंहसे एकाएक ज्वाला निकल पड़ी—कई मनका आपगल गोला एकाएक रेल-ष्टेशनके जनाकीर्ण पलाटफारमपर जा गिरा; आवाज आई,—धनानानानाना। जिस जगह गोला गिरा, उस जगह बहुत बड़ा गड्ढा बन गया। कितने ही आदमी उड़ गये; कितने ही लघु-घोररूपसे आहत हुए। रूसियोंको खबर नहीं थी, कि जापानियोंके पास भी वहां इतनी जबरदस्त तोपें थीं। इसीलिये शुशान पर्व्वतकी लगी तोपोंके सामने रेल-ष्टेशनपर ठहर रूसी धीरे धीरे नगर परित्याग करनेकी तय्यारियां कर रहे थे। रेल-ष्टेशनमें कहीं असबाबके ढेर लगे थे; कहीं टेबुल बिछा खान-पान चलाया जा रहा था; कहीं समय बितानेके लिये बातचीत की जा रही थी; रूसियोंको यह खबर नहीं थी, कि जापानी गोले वहांतक पहुंच उनके कुछ आनन्दमें घोर निरानन्द उपस्थित कर सकते थे। ऐसे ही समय शुशान पर्व्वतके जापानी तोपखानेकी एक तोपसे चला हुआ भीषण आपगल गोला ल्यिावयाङ्ग रेल-ष्टेशनपर जा फटा।

इस एक ही गोलेने बड़ी खलबली डाली। ष्टेशन और उसके गिर्दके मैदानमें भगदड़ पड़ गई। माल छोड़, असबाब

छोड़, भोजन छोड़, जलपान छोड़, इष्ट-मित्रोंका साथ छोड़, जिसे जिधर राह मिली, वह उधर ही भागा। कोई भागते समय मुंहके बल गिर पड़ा, कोई ष्टेशनकी चहारदीवार एक ही छलांगमें पार कर गया, कोई अपने सामनेके टेबुलपर गिर उसके साथ साथ धराशायी हुआ,—प्राण बड़े ही प्यारे होते हैं। रूसियोंकी भागड़ देख दुर्वृत्तोंको सुअवसर मिला। ऐसा ही हुआ करता है। जैसे ही रूसी अपना माल-असबाब छोड़ भागे, वैसे ही कितने ही रूसियों तथा चीनाओंने वह परित्यक्त माल-असबाब लूट भागना आरम्भ किया। ष्टेशनकी एक ओर 'शाम्पेन' मदिराके अगणित सन्दूक रखे थे; इन सन्दूकोंको रक्षकविहीन पा इनपर कितने ही कज्जाक सिपाही टूट पड़े और इन्हें तोड़ शाम्पेन निकाल पीने लगे। विपदके समय रूसी ही रूसियोंको लूटने लगे। आरम्भ होमें इतना कुछ हुआ। जापानियोंके पहले गोलेने इतनी करामात दिखाई। सिवा इसके कितने ही आदमियोंके चीथड़े उड़ा दिये; कितने ही आदमियोंको आहत किया।

जापानियोंकी पहली तोपने एक गोला छोड़ा मानो अन्यान्य कुल जापानी तोपखानोंको गोला-वृष्टि आरम्भ करनेकी सूचना दी। लियावयाङ्ग नगरपर—विशेषतः लियावयाङ्गके उस रूसी महल्लेपर विषम गोला-वृष्टि होने लगी। डाकखानेपर, अदालतपर बङ्कपर, सौदागरोंकी बड़ी बड़ी कोठियोंपर वजनी आपनल गोले जा जा गिरने और फटने लगे। जिस 'पगोडा गारडन' या मन्दिरोद्यानका हाल हम ऊपर लिख आये हैं, उसमें इस समय स्त्रियोंकी खासी भीड़ थी। चलचलावका समय था,—रूसी

अपरपर उस सुनिर्मल जल-विशिष्ट मनोरम पुष्प-फल-समन्वित पादपोंसे परिपूर्ण—वर्षा-ऋतुसे घोर हरितवर्णीय तृण-गुल्म-लता-दिसे परिवृत उद्यानमें बैठ भोजन-पान कर रहे थे। हाथ शीघ्र शीघ्र चल रहे थे; आहार शीघ्र शीघ्र समाप्त किया जा रहा था; क्योंकि शुश्यान पर्वतकी जापानी तोपोंने घोर गर्ज्जन आरम्भ कर दिया था। ऐसे समय अग्नि-पुञ्जवत् एक आपनल गोला इस उद्यानकी ओर आता दिखाई दिया। देखते देखते गोला आ उद्यानमें गिर फटा; कितने ही आदमी उड़ गये; कितने ही आहत हो भूमिपर गिर छटपटाने लगे। वहां भीषगड़ पड़ी। खानसामा भागे, खाना चुननेवाले भागे और खानेवाले भागे। कोई फर्क न रहा;—सब एक साथ गिरते-पड़ते भागे। उद्यानपर भी जापानी गोले पड़ अपनी एक एक चोटसे कितने ही ऊंचे ऊंचे तनावर वृक्षोंको भूसात् करने लगे।

देखते देखते प्रायः समग्र लियावयाङ्ग नगरपर गोला-वृष्टि होने लगी। चौराहोंपर, राहोंपर, गलियोंपर, मकानोंपर, बाजारोंपर, दुकानोंपर,—आपनल गोले आ गिरने और फटने लगे। मकानोंमें आग लगने लगी; धुंएके बादल आकाश काला बनाने लगे। नगरके सामने और बगलमें जापानी तोपें लगी थीं; पश्चाद्भागमें लग नहीं सकती थीं; उधर अपेक्षाकृत शान्ति थी; इसलिये कितने ही रूसी तथा नगरवासी प्राण-रक्षाके लिये उसी ओर भागे। इधर मैदान खाली हुआ। इस-तरह मैदान खाली होनेपर जो होने लगता है, वही होने लगा। किसी मकानसे चिल्लाहटकी आवाज सुनाई दी; कोई मनुष्य प्राणरक्षाके लिये उच्चस्वरसे चीत्कार करने लगा; कोई उसका

खून करने लगा। कोई द्वार तोड़ जैसे ही किसीके मकानमें घुसा, वैसे ही मकानके लोगोंके एक दलने उसके सम्मुखीन हो उसे टुकड़े टुकड़े उड़ा दिया। कहीं दुर्वृत्त लुटेरोंके दल और मकानवालोंके दलके बीच टक्कर हो गई; मारकाट चली थी; ऐसे समय एक गोलेने आ दोनों दलोंको अपनी अपनी ओर भागनेपर बाध्य किया। कहीं किसीने किसीको खिड़कीसे फेंक दिया; कहीं मकानमें बैठे किसीको किसीने गोली मार ठण्ढा बना दिया; उसकी लाशका कुछ अंश खिड़कीसे बाहर निकल झूलने लगा। कितने ही रूसियोंने इस लूटपाटका समाचार पा नगरमें घोट लुटेरोंको मारा सही; किन्तु उसका कोई फल नहीं हुआ और असलमें लूटपाट रोकनेके लिये उन्होंने लुटेरोंको मारा भी नहीं था। उनका उद्देश्य सिर्फ़ यह था, कि हमारे शिकारको कोई दूसरा हाथ लगाने न पाये।

आज दिनभर यानी १लो सितम्बरको ओकूकी सैन्यने सिर्फ़ इतना ही किया। युद्धस्थलकी विभीषिका मिटाई और तोपें लगा दोपहरसे सन्ध्यातक रूसी मोरचोंपर, रूसी बसतीपर और किसी कदर लियावयाङ्ग नगरपर गोले बरसाये। सन्ध्या समय ओकू और नोजूकी फौजने अपने अधिकृत मोरचोंसे किसी कदर आगे बढ़ युद्धस्थलमें लेट विश्राम किया। लियावयाङ्ग नगर सामने ही था; कहीं कहींसे उसकी ऊंची शहरपनाहकी ईंट तक दिखाई देती थीं; फिर भी, इस दिन ओकूकी सैन्यने नगर-अधिकारका कोई यत्न नहीं किया। कितने ही लोगोंका कहना है, कि कुरोकीकी सैन्य गत कई घाटोंके भयङ्कर युद्धमें प्रवृत्त रहनेकी वजह थककर चूर हो गई थी; वह आगे बढ़नेमें

असमर्थ थी। फिर कोई कोई मानो पूर्व्वोक्त कथनका खण्डन करते हुए यह भी कहते हैं, कि लियावयाङ्ग नगर ओकूके पैरों-तले था; इच्छा करते ही उसपर वह अधिकार कर सकते थे; किन्तु ओकू या नोजू स्वतन्त्र नहीं थे; जबतक उन्हें प्रधान सेनापति फील्ड मारशल ओयामाकी आज्ञा न मिलती, तबतक वह उसपर कब्जा कैसे कर सकते थे? यह शेषोक्त बात ही सत्य जान पड़ती है। ओयामा जानते थे, कि लियावयाङ्गमें रूसी फौजें भरी हुई हैं; इस समय ओकू और नोजूकी सैन्यके आगे बढ़नेसे भयङ्कर युद्ध होगा; किन्तु कुछ ही घण्टे बाद जिस समय कुरोकीकी सैन्य लियावयाङ्गके पश्चाद्‌भागपर आक्रमण करेगी, उस समय लियावयाङ्गमें भरी रूसी सैन्यका बड़ा भाग कुरोकीका आक्रमण व्यर्थ करनेमें प्रवृत्त होगा; उस समय ओकू और नोजूकी सैन्य-पंक्ति आगे बढ़ बड़ी ही आसानीसे लियावयाङ्ग नगरपर अधिकार कर सकेगी। शायद यही सब सोच-समझ १ली सितम्बरको ओयामाने ओकू और नोजूकी सैन्य-पंक्तिको आगे बढ़नेकी आज्ञा नहीं दी। ओकू और नोजूकी सैन्य पंक्ति लियावयाङ्ग नगरपर सिर्फ गोले बरसा और कुछ आगे बढ़ ठहर गई।

अब यह देखिये, कि इस दिन जापानी सैन्य-पंक्तिके दाहने अवस्थित जापान-सेनापति कुरोकीने क्या किया। पहले ही लिख चुके हैं, कि आपकी सैन्यका दाहना बाजू तत्सिहो नदी पारकर लियावयाङ्गके पीछे पहुंच रूसियोंके एक मात्र सम्बल उस रेलपथपर अधिकार कर लेना चाहता था। यह दाहना बाजू लियावयाङ्ग नगरकी बगलसे चक्कर काट उस रेल-पथको

ओर बढ़ने लगा,तब उस ओर उसे एक लम्बी पर्वतमालापर रूसी ही रूसी दिखाई दिये। यह देख कुरोकीने अपनी सैन्यके मध्य-भागको भी नदीपार पहुंचा दिया और अपनी सैन्यको आज्ञा दी, कि वह रेल-पथके किनारे किनारे दूरतक आगे बढ़े ; जिस जगह रूसियोंकी सैन्य-पंक्ति समाप्त हो, उसी जगह चक्कर काट रेलपथपर अधिकार करे। इस आज्ञाके अनुसार जापानी सैन्य-पंक्ति क्रम क्रमसे आगे बढ़ने लगी। लियावयाङ्ग नगरके पश्चाद्भागमें बहती हुई तात्सिहो नदीके उसपार उसे सिकवान-तुन नगर मिला ; इसमें रूसी ठसाठस भरे थे ; सिकवानतुनसे आगे रेलपथके साथ साथ खमदार एक पहाड़ी सिलसिला चला था, जिसपर जगह जगह रूसी बैठे थे। सिकवानतुनसे कोई डेढ़ कोस आगे इसी पहाड़ी सिलसिलेके दामनमें हेयानताई नामक दूसरा नगर था ; इसमें भी रूसियोंका जबरदस्त मोरचा था ; इससे भी कोई डेढ़ कोस आगे उसी पहाड़ी सिलसिलेके एक दामनमें येनताई नामक एक तीसरा नगर था। छोटासा पहाड़ी नगर था ; कोयलेकी खानिके लिये अत्यन्त प्रसिद्ध था। रूसके मञ्चूरियाके कुल-कारखानोंके एञ्जिन तथा मुकदन-पोर्टआर्थर-बन्दर रेलपथके कुल एञ्जिन इसी जगहसे निकले पत्थरके कोयलेसे चलाये जाते थे ; उपयोगी होनेकी वजह यह नगर रूसियोंमें और भी प्रसिद्ध था। जापानी सैन्यने इस नगरके सामने पहुंच इसे भी जबरदस्त रूसी फौजोंसे सुरक्षित पाया। लियवयाङ्ग अपनी बगलमें छोड़ कोई तीन कोसतक,—उस खानियाके नगर येनताईतक जापानी फौजें फैल गईं ; वहांतक उन्हें रूसी ही रूसी दिखाई दिये। गत रात्रि लियावयाङ्ग के प्रनकी चारो

ओरको उस सुविशाल मैदानमें भरी जिन रूसी फौजोंको उनके प्रधान सेनापति कुरोपाटकिनने कुरोकीकी सैन्यकी गति रोकनेके लिये अपने पश्चाद्भागको रेल-पथकी ओर रवाना किया था, वह फौजें कुरोकीकी सैन्यसे कई घण्टे पहले पहुंच पूर्व्वोक्त समूचो पर्व्वतमालापर फैली बैठी थीं। अनुमान किया जाता है, कि कोई डेढ़ लाख रूसी सिपाही कई फौजोंमें विभक्त हो प्रधानतः सिकवागटुन, हियानताई और येनताईमें तथा साधारणतः रेल-पथकी बगलकी उस पर्व्वतमालापर जगह जगह डटे बैठे थे। घोरचिन्तामग्न कुरोकी अब क्या करें?—इस दुर्गम्य शत्रु-सैन्य-वारिधि पार कैसे उतरें?

लिखने और उससे अधिक पढ़नेमें यदि समय लगे, तो लग सकता है; किन्तु वीरवर कुरोकीको सैन्य-पंक्तिके प्रसारमें तनिक भी समय नहीं लगा। १ली सितम्बरको प्रातःकालसे कुछ पहले कुरोकीकी सैन्य रूसी सैन्य-पंक्तिके मुकाबिल फैल गई। विश्रामका अवकाश नहीं मिला; कुरोकीने अपनी इस सैन्य-पंक्तिको रूसी सैन्य-पंक्तिपर आक्रमण करनेकी आज्ञा दी। १ली सितम्बरको सूर्य्योदयके साथ साथ जापानी तोपें रूसी मोरचोंपर गोले बरसाने लगीं; रूसी तोपें भी जवाब देने लगीं। प्रायः दिनभर गोलन्दाजी हुई। सन्ध्योपरान्त जापानी तोपखानोंके मुंह बन्द हो गये और दिनभरकी थकी-मांदी जापानी फौजोंको रूसी मोरचोंपर आक्रमण करनेकी आज्ञा दी गई। प्रसन्नचित्त और प्रफुल्लमनसे जापानी फौजोंने यह आज्ञा स्वीकार की और वह रयोत्सुक हो आड़ पकड़ती हुई रूसी मोरचोंकी ओर बढ़ने लगी। जगह जगह घोर संग्राम उपस्थित हुआ।

लियावयाङ्ग नगरके समीपसे कोयलेकी खानि येनताईकी ओर क्रमसे बढ़िये। इस रातके युद्धमें सिक्वानटुनके रूसी मोरचेको वैसी कोई क्षति नहीं पहुंची; एकवार धावा मार जापानी फ़ौज सिक्वानटुन नगरके समीप पहुंच गई सही; किन्तु रूसी तोपोंकी विषम गोलावृष्टिके फलसे लौट जानेके लिये बाध्य हुई। कितने ही लोग कहते हैं, कि सेनापति कुरोकीने सिक्वानटुनपर अधिकार करनेकी वैसी चेष्टा भी नहीं की; उन्होंने खयाल किया था,—"यहां इतना रक्तपात करनेका प्रयोजन क्या है? हेयानताई या येनताई स्थानको अधिकारभुक्त करते ही सिक्वानटुनके रूसी मोरचे आप ही आप जापानी सैन्य-पंक्तिके घेरेमें आ जायेंगे।"

हेयानताईके मोरचेके सामने निःसन्देह घोर युद्ध हुआ। रूसियोंने यहां आत्मरक्षाके बड़े ही विकट उपाय अवलम्बन किये थे। अपने मोरचोंके सामने तारके जाल लगवा दिये थे और उन तारके जालोंमें एञ्जिनसे चलाये जाते हुए 'डिनेमो' द्वारा प्रस्तुत बिजलीकी भीषण शक्ति भरी गई थी; प्राणनाश करना उस अद्भुत वैद्युतिक शक्तिका चुटकियोंका खेल था। जापानी सैन्य-पंक्ति जिस समय हेयानताईकी ओर बढ़ी, उस समय रूसियोंने उसे बड़ी बाधा दी; उसके शिरपर गोलेकी वृष्टि की; उसकी छातीपर गोलियां बरसाईं,—जापानी सैन्य-पंक्तिकी बढ़ती हुई दीवारको रोकनेकी हर तरहकी चेष्टाएं की गई; किन्तु यह वह दीवार थी, जो रुकना जानती नहीं थी। क्रम क्रमसे जापानी सैन्य-पंक्ति रूसी मोरचोंके सामने पहुंची; उसे अब बाधा गोली-गोलोंके उन वैद्युतिक-प्रवाहपूर्ण तारोंके जालसे भी

सामना करना पड़ा। उस अन्धकारमें आगे बढ़ एकाएक तार स्पर्शकर कितने ही जापान-योद्धा धराशायी हुए। शोर मच गया; लोग तारकी शक्तिसे सावधान कर दिये गये। भीषण आग्नेय गोलों और विकट गोलो वृष्टिको तृणवत् तुच्छ समझने-वाले,—साक्षात् यमकिङ्करोंको भी परवा न करनेवाले जापानी योद्धा घोर सङ्कटमें रहनेपर भी रूसियोंकी वह वैज्ञानिक अथच प्रलयङ्करी युक्ति देख यदि हंसे हों, तो हंस सकते हैं। दूसरे ही क्षण उस तारके जालपर शत शत बन्दूकोंके कुन्दे पड़ने लगे; तार तोड़ दिये गये; आगल-दागलसे काट दिये गये; एक क्षणमें वह बाधा मिटी जापानी सैन्य-पंक्ति अपने उसी भीम-वेगसे फिर आगे बढ़ने लगी। सहस्र सहस्र रूसी सिपाही अपने मोरचोंसे निकल जापानी सैन्य-पंक्तिपर टूट पड़े। कुछ कालतक अत्यन्त भीषण युद्ध हुआ। जापानी सिपाही इस युद्धमें फंस उन्मत्त हो गये; वह जिन रूसियोंके गोले गोलीको मार खा इतनी देरसे उन्हें ढूंढ रहे थे, उन्हींको सम्मुख समरमें प्रवृत्त देख उनके क्रोध तथा उत्तेजनाकी सीमा नहीं रही। अधीर और विह्वल हो जापानी सिपाही सङ्गीनें भोंकते, तलवारें चलाते और तमञ्चे मारते रूसी सिपाहियोंमें धंस पड़े। रूसियोंकी हिम्मत छूट गई; उनके जमे हुए पैर उखड़ गये। रूसियोंको मार भगा रात कोई दो बजे जापानी सैन्य-पंक्तिने रूसी मोरचों और उसको बगलके हैयानताई नगरपर अधिकार कर लिया। यहां जापानियोंकी पूर्ण जयजयकार हुई।

और आगे बढ़के,—कोवलेकी खानि येनताईके समीप पहुंचिये। इस दिन यहां कोई उल्लेख योग्य युद्ध नहीं हुआ।

युद्धकी तय्यारियां खूब हुईं। एक ओर जापानी फौजने युद्ध आरम्भ करनेके दाव-घात किये; दूसरी ओर मुकदन नगरसे युरोपसे नई आई ग्यारह बटालियन फौज येनताईमें पहलेसे बैठी रूसी फौजमें मिला दी। रूससे नवागत सेनापति ओरलोफपर इस सैन्यकी परिचालनाका भार रखा गया।

२री अगस्तको दो मारकेके युद्ध हुए। इनमें एक युद्ध उसी हियानताईमें हुआ, जिसपर अगली रातको जापानी सैन्य-पंक्तिने अधिकार किया था। २री अगस्तको प्रायः दिनभर रूसियोंने अपने परित्यक्त और जापानियों द्वारा अधिकृत उस मोरचेपर गोले बरसाये। तीसरेपहर कई भागोंमें विभक्त हो धावा किया। खबर है, कि कितनी ही रूसी फौजें हेयानताईके जापानी मोरचोंके समीप पहुंच गईं; किन्तु अन्तमें वहांसे पीछे पलटनेपर बाध्य हुईं। इस भयङ्कर मारकाटका कोई फल नहीं हुआ; रूसी फौजें अपने छोड़े मोरचोंको फिर स्वाधिकारभुक्त कर न सकीं। रूटरके संवाददाताने लिखा है,—"हेयानताईकी पर्व्वतमालाके समीप जैसे दृश्य दिखाई दिये, वैसे बहुत थोड़े युद्धोंमें दिखाई देते हैं। कोई एक चौथाई मील पर्व्वतमालामें यह युद्ध हुआ। यह कहनेसे अत्युक्ति न होगी, कि इस भागकी चोटियां, ढालें और पर्व्वत-मध्यस्थ सङ्कीर्ण पथ मोरचोंसे परिपूर्ण हो ग्रहदके छत्ते जैसे जान पड़ते थे। कितने ही मोरचोंके सामने अस्थायी रूसी मोरचे दिखाई देते थे, जिनसे प्रमाणित होता था, कि अमुक जापानी मोरचेके सामने अमुक स्थानतक रूसी पहुंच गये थे। जापानी मोरचोंके सामने कोई दो सौ रूसियोंकी लाशें पड़ी थीं;

अबतक उनकी बन्दूकें उनकी मुट्ठियोंमें थीं। यह प्रकट होता था, कि वह हद सिपाही घायल था आगे बढ़े और जापानी गोलियोंकी बाढ़से भुन गये थे। धूलिसे, बारूदके धुंएसे, दागनेके समय बन्दूकों और तोपोंके मुंहसे निकलनेवाली अग्नि-शिखाओंसे और तपते हुए प्रचण्ड मार्तण्डकी तीक्ष्ण रश्मियोंसे रूसियोंकी जो लाशें रणस्थलमें पड़ी थीं, उनके चेहरे और हाथ काले हो गये थे; सिवा इन लाशोंके रूसियोंकी बहुतेरी लाशें पहाड़ीतके मैदानमें भी पड़ी थीं। शत शत गोले पहाड़ियोंपर बरसे थे, जिनकी चोटसे कितने ही मोरचे और गड्ढे उड़ गये थे। युद्धस्थलमें चलनेसे कदम कदमपर गोलोंके टुकड़े और गोलियां मिलती थीं। कितने ही रूसी दमामे कोई दो या तीन सौ रूसी बन्दूकें टूटी-फूटी पड़ी थीं; सङ्गीनें बल खा गई थीं और गोली-गोलोंकी चोटसे रूसी सिपाहियोंकी देहसे उड़ी वरदियां या टोपियां रक्त-मांससे शराबोर थीं। मोरचे और मोरचोंके बाहरकी समतल भूमि रक्तसे लिपी हुई थी।" विश्व-दूत रूटरके संवाददाताके भेजे इस विवरणको पढ़ आप ही प्रमाणित होता है, कि रूसियोंने हियानताईके मोरचेपर पुनराधिकार करनेकी प्राणपणसे चेष्टा की थी, किन्तु उसका कोई फल नहीं हुआ; रूसियोंको विषम क्षति स्वीकारकर पीछे हटना पड़ा। इस रीते लिताङ्करको उस सुदीर्घ युद्धस्थलके मध्य भागमें सिर्फ इतना ही हुआ। आजकी लड़ाईका पूरा जोर इस मध्य भागमें नहीं; कोयबेकी खानि येनताईके समीप ही प्रकट हुआ था।

उस समय जापान-सेनापति मारक्वस ओयामाने युद्ध-कौशलसे

येनताई-खानिको इस महायुद्धका द्वार बना दिया था। इसके पतनसे रूसियोंकी हार थी; इसके अवस्थानसे उनकी जीत। कुरो-पाटकिनने इसकी रक्षाके कुल सामान किये थे। एक जबरदस्त फौज और कोई एक सौ तोपोंके साथ सेनापति बिलडरलिङ्गको यहां बैठा दिया था और उनकी बगलमें समूचे एक डिविजन यानी कोई बीस हजार फौज और साठ तोपोंके साथ सेनापति ओरलो-फको प्रतिष्ठित किया था। सेनापति ओरलोफके सिपाही सीधे युरो-पसे युद्धस्थलमें पहुंचे थे; ताजादम थे; इससे पहले चलते हुए उस घोर युद्धसे उनसे कोई वास्ता नहीं था। उधर सेनापति कुरो-कीका समूचा दाहना बाजू इस मोरचेके सामने रहकर भी रूसि-योंके सामने हालमें नमकके बराबर था। स्वयं टाइमसके संवाद-दाताने लिखा है,—"खानिके सामने जापान-सेनापतिकी सैन्य बहुत ही कम थी; रूसियोंके तीन सिपाहियोंके सामने एक ही जापानी सिपाही था।" इसका मतलब यह है, कि वहां रूसके यदि कोई साठ हजार सिपाही थे, तो जापानियोंके सिर्फ बीस ही हजार। रूस-सेनापति कुरोपाटकिन इस प्रयोजनीय स्थानकी ओरसे बिलकुल निश्चिन्त थे और ल्योयाङ्ग पर अधिकार करनेके लिये नितान्त समुत्सुक। स्थलमें युरोपकी सर्वश्रेष्ठ शक्ति रूसके तिगुने सिपाहियोंको एकगुने जापानी सिपाही कैसे उखाड़ सकते थे? बिना भगवत्कृपा हुए यह असम्भव सम्भव कैसे हो सकता था?

कठिनतापर कठिनता यह थी, कि जापानी सेनाका वह दाहना भाग एक दिनमें लियावयाङ्ग नगरके पश्चाद्भागसे आगे बढ़ने नहीं पहुंचे लियावयाङ्ग नगर और इसके बाद सिक॰

वानतुन और हैयानताईको अपनी बगलमें छोड़ता सुदूरके उस येनताई-खानि पहुंच गया था। राहमें उसको तनिक भी विश्राम नहीं मिला। येनताई-खानिमें सेनापति विलदरलिङ्गको एक सौ तोपों और सहस्र सहस्र बन्दूकोंकी अग्नि-वृष्टिने मार्गा इस भागका स्वागत करना आरम्भ किया था। दाहने भागको इस दिवस अग्नि-वृष्टिमें आगे बढ़ अपने ठहरनेके लिये स्थान चुनना पड़ा था। सैन्यका स्थान निर्दिष्ट न होनेकी वजह कामसरियटका स्थान भी ठीक हो नहीं सका था। १ली अगस्तको जापानी सैन्यको नियमित रूपसे भोजन नहीं मिला था। टाइम्सके संवाददाताने लिखा है,—"गत रातसे जापानी सिपाहियोंने न तो भोजन किया था न एक बिन्दु जल पिया था; जो पायस उनके वेगमें था, उसीको कच्चा चबा अपनी उदर-ज्वाला निवारण कर ली थी।" ऐसे सिपाही रूसके खाये-पिये आरामतलब सिपाहि-योंसे कैसे युद्ध कर सकते थे?

फिर भी, युद्ध करना ही होगा; येनताई-खानि लियावयाङ्ग युद्धकी कुञ्जी थी; उसपर अधिकारकर इस युद्धका विजय-द्वार उन्मुक्त करना ही होगा। २री जुलाईको प्रातःकाल होते जापानी सैन्य धीरे धीरे रूसी मोरचोंकी ओर बढ़ने लगी थी और रूसी तोपें उसपर लगातार गोला-वृष्टि करने लगी थीं। एक ओर छल-बल कला-कौशल था; दूसरी ओर स्थिर बुद्धि थी और युक्तिपूर्ण नवाविष्कृत युद्ध-कौशल था। जापानी सिपाही क्रम क्रमसे रूसी मोरचोंके समीप होने लगे। इधर स्वयं सेना-पति कुरोकी,—कुरोकी ही क्यों;—उनके साथ साथ सरदार फील्ड मारशल ओयामा भी इस जगह मौजूद थे। यहांसे पर्वत, मैदान

आदि ऊंची ऊंची घाससे भरे थे; जापानी जासूस जान हथेलीपर रख उस घासकी बीचसे शत्रुके समीप पहुंच उनकी गतिविधि देख उसकी खबर अपने अफसरोंको दे रहे थे। जापान-सेनापतिको एकाएक समाचार मिला, कि रूस-सेनापति ओरलोफ कोई बीस हजार ताजादम सिपाही और नाठ तोपोंके साथ आगे बढ़ जापानी सैन्यके पार्श्वमें पहुंच उसपर आक्रमण करनेकी तय्यारी कर रहे हैं। जापानी सैन्यको सहारेका प्रयोजन हुआ; दिन कोई साढ़े नौ बजे कुरोकीके अधीनस्थ सेनापति मत्सुनाग एक जबरदस्त सैन्य ले आगे बढ़ कुरोकीकी सैन्यके दाहने भागसे मिल गये। इस सैन्यके आगमनके उपरान्त जासूसों द्वारा समाचार आया, कि सामनेके सुविस्तृत 'कावलियाङ्ग' यानी बाजरेके खेतसे सेनापति ओरलोफ अपने सिपाहियोंके साथ आगे बढ़ा हो चाहते हैं। अब क्या किया जाये? थोड़ीसी जापानी फौज क्या क्या करे? येनताई-खानिके समीप बैठे रूस-सेनापति बिलडरलिङ्गके मोरचोंपर आक्रमण करे या बढ़ते हुए रूस-सेनापति ओरलोफकी राह रोके। दोनो काम करना होगा। जापान-सेनापति मत्सुनाग रूस-सेनापति बिलडरलिङ्गके सामने छोड़े गये और जापान-सेनापति शिमासुरा बढ़ते हुए रूस-सेनापति ओरलोफके सामने भेजे गये। शिमासुराको और उनके अधीनस्थ सिपाहियोंको समझा दिया गया,—"तुमलोग युद्ध करने नहीं; इस महायुद्धका फैसला करने जाते हो। ओरलोफके परास्त होते ही बिलडरलिङ्ग सहज ही परास्त हो जायेंगे; बिलडरलिङ्गके परास्त होते ही येनताई-खानिपर जापानियोंका अधिकार हो जायेगा। येनताई-खानिपर जापानियोंका अधि-

चार होना और इस महासमरमें जापानियों द्वारा विजयश्री लाभ करना एक ही बात है। तुम थोड़े हो; ओरलोफके सिपाही अधिक हैं; तुम दोनोंमें समानता नहीं; फिर भी, तुम्हारा देश, तुम्हारे सम्राट्, तुम्हारे सेनापति—युद्धस्थलमें घोर युद्धमें प्रवृत्त तुम्हारे लक्ष लक्ष भाई तुमसे बड़ी आशा करते हैं; वह चाहते हैं, कि तुम थोड़े होकर भी बहुसंख्यक रूसियोंको परास्तकर जापान और जापानियोंका मुखोज्ज्वल करो।" अधिक उत्साह-प्रदानका प्रयोजन नहीं था; दृढ़प्रतिज्ञ स्वदेशभक्त महाबलशाली जापानी योद्धाओंके रुद्र-मण्डल रूसियोंसे भिड़नेकी प्रत्याशासे चमक उठे। शिनासुराकी अधीनस्थ फौजने कण्ठसे कण्ठ मिला हर्षध्वनि की।

शिनासुरा अपनी सैन्यके साथ ऊंची ऊंची घास तथा ज्वारके खेतोंसे भरे मैदानके किनारे पहुंचे। इसी घास और ज्वारके खेतोंसे ओरलोफकी सैन्य धीरे धीरे आगे बढ़ रही थी। शिनासुराने अपनी सैन्यको इस घासमें कुछ जगह जगह छिप जानेकी आज्ञा दी। यह आज्ञा भी दी,—"रूसी सैन्य जब तुम्हारे बीचमें आ जाये, तब उसपर एकाएक भीमवेगसे आक्रमण करना।" जापानी सैन्य ऊंची ऊंची घास और ज्वारके खेतोंमें लेट शत्रुके आनेकी प्रतीक्षा करने लगी।

स्वयं सेनापति ओरलोफ और उनके अधीनस्थ सेनापति फो-मिन इस सैन्यको परिचालित कर रहे थे। ओरलोफ [illegible] थे, कि जापानियोंको उनके आगे बढ़नेकी खबर न [illegible] घास और ज्वारके हरे परदेसे एकाएक निकल [illegible] गिर उन्हें ध्वंस-विध्वंस कर डालेंगे। यह हल

हो रहे थे, कि एक ओरसे वह अपनी सैन्य द्वारा जापानियोंको पददलित करेंगे और दूसरी ओरसे बिल्डरलिङ्ग अपनी सैन्य द्वारा और इसतरह इस मोरचेमें जापानियोंके पराजित होते ही वह अन्यान्य मोरचोंमें भी परास्त किये जा सकेंगे,—जापानियोंकी अबतककी विजय बिलकुल ही अफलोदय बनाई जा सकेगी। आशा और उत्साहसे परिपूर्ण ओरलोफ अपने ताजादम सिपाहियोंके साथ शीघ्र शीघ्र आगे बढ़ रहे थे। उन्हें समाचार मिला, कि अब घास तथा खेतोंका सिलसिला समाप्त होनेको है; इससे आगे ही जापान-परित्यक्त मैदान है। यह समाचार पा ओरलोफने अपने सिपाहियोंको शीघ्र ही घास और ज्वारसे मैदानमें निकल एकाएक जापानियोंपर आक्रमण करनेकी आज्ञा दी। रूसी सिपाही हर्षपूर्व्वक शीघ्र शीघ्र आगे बढ़े; ऐसे समय उनके एक पार्श्वसे घासके भीतरसे एकाएक बन्दूककी बाढ़ दगी,—दांय दांय दांय दांय। कितने ही रूसी सिपाही ढेर हो गये; कितने ही गिरकर तड़पने लगे। हाय! यह क्या हुआ? यह बाढ़ किसने दागी? अधिक चिन्ता करनेका अवसर नहीं मिला,—पहली बाढ़ दगनेके बाद ही दाहने, सामने और बायें,—तीनों ओरसे रूसी सिपाहियोंपर गोलियां बरसने लगीं इसीके साथ साथ सहस्र सहस्र जापानियोंके कण्ठसे निकला गुरु-गम्भीर रण-हुङ्कार सुनाई दिया। अब रूसियोंकी आंखें खुलीं; उनमें 'जापानी जापानी'का शोर हुआ। उस घासके जङ्गलमें तोपें लगाई जा नहीं सकती थीं; सिपाहियोंकी पंक्ति बांधी जा नहीं [illegible] : विधिपूर्व्वक युद्ध किया जा नहीं सकता था। [illegible] गोंदें भरी हुई बन्दूकें थीं सही; किन्तु वह चलाई

जा नहीं सकती थीं; एक तो इसलिये कि एक रूसीके सामने दूसरा रूसी था, दूसरे इसलिये, कि बन्दूकें चलाई किसपर जातीं? घास और बाजरेके खेतमें लेटे गोली बरसाते जापानी सिपाही दिखाई नहीं देते थे। जिसतरह आगे बढ़ना कठिन था; उसी-तरह ठहरना भी कठिन था; प्रति क्षण जापानी गोलियोंसे प्रवा-हित रूसी धराशायी हो रहे थे। पीछेसे भी घिर जानेकी आशङ्कासे ओरलोफने शीघ्र ही रूसी सिपाहियोंको पीछे पलट-नेकी आज्ञा दी। रूसी सिपाही यह आज्ञा पा पीछे क्या पलटे; घाससे उलझ उलझकर गिरते; अपने साथियोंको ढके-लते-धकियाते प्राण ले भागे। जिस जगह एक सिपाही गिरता था, उस जगह भागनेवाले अन्यान्य सिपाही भी गिरते थे और यह सब उठनेसे पहले जापानी सिपाहियोंकी गोलियोंकी चोटसे मारे जाते थे। खेत और घासका जङ्गल रूसियोंकी लाशोंसे भर उठा। कहते हैं, कि उस समय जो रूसी आहत हो घासमें गिरे थे; उनमें बहुतेरे साहाय्य न पानेकी वजह जखमकी वेदना और भूख-प्यासकी यन्त्रणासे तड़प तड़पकर वहीं मर गये; घासके उस विशाल जङ्गलमें जापानी उन्हें ढूंढ उनकी रक्षा कर न सके; घास सूखने या कटनेपर उनका तनपिञ्जर दिखाई दिया था।

रूसी भागे; रूसियोंके पीछे पीछे जापानी चले। जिस जिस ओरसे रूसी भागे, उस उस ओरसे जापानियोंने उनका पीछा किया। घासके जङ्गलमें मानो तूफान आया; ज्वारके खेतमें मानो मत्त कुञ्जर पैठे। रूसकी पुरानी फौजें, तो जापा-नियोंसे किसी कदर सामना भी करती थीं; किन्तु यूरोपसे

हुई उन नई रूसी फौजोंने कुछ भी सामना न किया। उनके मनमें भय घुस गया था और उस घासके वनमें उन्हें हर तरफ जापानी ही जापानी दिखाई देते थे। इसतरह विषम चतिग्रस्त हो रूसी फौजें घासके वनसे निकल अपने मोर्चोंके समीपके मैदानमें निकलीं। रूसी इस जगह पलटकर जमना चाहते थे; किन्तु घासके वनसे आहत व्याघ्रकी तरह टूट जापानी फौजोंने रूसियोंके पैर उखाड़ दिये। जापानी सिपाहियोंकी तलवारों और सङ्गीनोंकी चमकसे रूसियोंकी आंखोंको चकाचौंध लगने लगी। रूसी मैदानमें बेतहाशा भागने लगे। इस मैदानमें एक पहाड़ीपर ओरलोफके कितने ही मोरचे थे; जापानी सैन्यके एक टुकड़ेने सिंहनादकर इन मोरचोंपर धावा किया और सामान्य युद्धके उपरान्त इनपर अधिकार कर लिया। रूसी सिपाही इन मोरचोंके पीछेके मैदानमें भागे। जापानियोंने पीछा किया। कहते हैं, इस जगह कोई तीन कोसतक रूसी नितान्त विकल हो आगे आगे भागते गये और जापानी पीछे पीछे उन्हें मारते गये। इस युद्धको दो या तीन पंक्तिमें लिखनेवाले टाइम्सके संवाददाताको भी स्वीकार करना पड़ा है,—"रूसी सैन्यको बड़ी चति हुई और वह कोई छः मीलतक अत्यन्त विशृङ्खलित भावसे भागी।" इस युद्धमें सेनापति ओरलोफ आहत हुए; सेनापति फोमिन आहत हो अन्तमें पञ्चत्वको प्राप्त हुए। उधर जापानकी वीरवाहिनीने रूसियोंको भगा उच्चस्वरसे हर्षध्वनि की। जापानी सैन्यके योद्धा जिस कामके लिये गये थे, वह पूरा हुआ; जापानका मुखोज्ज्वल हुआ।

सेनापति ओरलोफकी सैन्यके विध्वस्त होनेसे सेनापति बिल-

इसलिए वह भी सङ्कटमें पड़े। उनपर दो ओरसे जापानियोंका प्रबल दबाव पड़ने लगा; वह अकेले हो गये। उनके पास उस समय एक सौ तोपें थीं; सहस्र सहस्र सिपाही थे; फिर भी, वह अपने सामनेसे जापान-सेनापति मत्सुनाग और अपनी वामके सेनापति शिनाहराका दबाव बर्दाश्त नहीं कर सकते थे। उन्हें विशेष भय इस बातका था, कि लियावयाङ्गसे येनताई-खानितक फैली जिस रूसी सैन्य-पंक्तिमें उनका सैन्य-पंक्ति बायां अंग थी; उस सैन्य-पंक्तिको भेद ओरलोफको भगा वहांकी पर्वतमालापर जापानी सैन्य अवस्थान करने लगी थी। यानी बिलडरलिङ्ग अपनी सैन्य-पंक्तिसे विच्छिन्न कर दिये गये थे और उन्हें अपने पार्श्वकी सैन्य-पंक्तिसे उनका सहारा पानेकी आशा नहीं थी। अपनी इस दुरवस्थासे अवगत हो और जापानी सैन्यका पूर्ण बल अपनी ओर झुकता देख बिलडरलिङ्गने अपने प्रधान सेनापति क्रुरोपाटकिनको स्मरण किया।

अच्छा; सन्धियाके चलते हुए उस महा-युद्धमें उस समय रूसके क्रुरोपाटकिन कहां थे? क्या अबतक वह वहीं ासे थे। यानी क्या अबतक वह अपने सदर स्थान उनके इशारेसे मैदानमें खड़ी स्पेशल ट्रेनमें होने थे? ठीक खबर नहीं; इतना ही मालूम हुआ है, कि १लीको नहीं; २री सितम्बरको प्रातःकाल आठ बजे सहोनोंसे नया। यानी जुती वह स्पेशल ट्रेन अपने उन महामहिम यात्रीको ले जिस ओरसे आई थी, उसी ओर यानी लियावयाङ्गसे मुकदनकी ओर। वह बड़ी ... चली। जान पड़ता है, कि १ली सितम्बरकी दोपहरको ...

समय शुशान पर्वतपर जमी ओकूकी तोपें लियावयाङ्ग ग और उसके स्टेशनपर गोले बरसाने लगी होंगी, उसी समय क्रुरो-पाटकिनकी स्पेशल ट्रेन स्टेशनसे हट दूर किसी सुरक्षित स्थानमें ठहरनेपर बाध्य हुई होगी। रातभर वहीं रही होगी; उसमें बैठे क्रुरोपाटकिन अपनी लियावयाङ्गकी फौजको लड़ानेकी व्यवस्थायें करते रहे होंगे; दूसरे दिन २री सितम्बरको शायद ओकूकी तोपोंके मुंह खुलनेसे पहले ही क्रुरोपाटकिनकी वे रवाना हुई होगी। एक ओर ओकूकीकी तोपोंके गोले थे दूसरी ओर क्रुरोकीकी सैन्य द्वारा स्पेशल ट्रेनकी लाइनपर अधिकार होने या उसके कट जानेका भय था। इस तारीखको दिन कोई ११ बजे क्रुरोपाटकिनकी ट्रेन सिवावचेन्तसी ग्रामके समीप खड़ी थी। टाइम्सके संवाददाता भी इस ग्रामकी स्थिति जान नहीं सके हैं। कहीं होगा। दिन ग्यारह बजे इसी स्थानोंसे आपने ओरलोफकी सैन्यका समाचार मंगाया था। जिस सैन्यको आपने समाचार लेनेके लिये भेजा, उस सैन्यने तो लौट कोई समाचार नहीं दिया; हां ओरलोफ और या तीन दफे भेजे सवारोंसे तीसरेपहर कोई तीन बजेके उपरान्त रना पाटकिनको ओरलोफके पूर्णरूपसे पराजित हो भागने और सिलेडरलिङ्गके सङ्कटमें पड़नेका समाचार मिला। यह समाचार पा चिरशान्त धीर-गम्भीर क्रुरोपाटकिन घबरा उठे। आपने उसी समय सेनापति स्टाकलबर्गको बहुत बड़ी एक फौजके साथ सेनापति सिलडरलिङ्गके साहाय्यके लिये रवाना किया। सेनापति स्टाकलबर्गने शीघ्र शीघ्र आगे बढ़ युद्धस्थानमें पहुंच देखा, कि उनके और सिलडरलिङ्गके

सेनापति शिनामुराकी सैन्य अवस्थान करती है। स्टाकल-

मारकेका युद्ध नहीं हुआ। मारकेका युद्ध न होनेपर भी गोल-न्दाजी मारकेकी हुई,—सरगर्मीय हुई। १ ली अगस्तको प्रातः-काल ओकू और नोज़ूके कुल तोपखाने यथास्थान लग नहीं सके थे; इस लिये १ लीको दोपहरसे सन्ध्यातक लियावयाङ्ग नगर-पर जो गोलन्दाजी हुई, वह वैसी जबरदस्त नहीं हुई। १ ली अगस्तकी रातको कुल जापानी तोपें लियावयाङ्गपर लगा दी गईं; यानी सामने अर्द्धचन्द्राकार पंक्तिमें जापानी तोपखानोंके लग जानेसे लियावयाङ्ग नगर अपने सामने और दाहने-बायें जापानी तोपखानोंसे घिर गया, सिर्फ उसका पश्चाद्भाग—जिधर तजिहो नदी थी घिरनेसे बाकी रहा। ओकू और नोज़ूको प्रधान सेनापति ओयामाने शायद यह कहला भेजा था, कि २ री अग-स्तको तुमलोगोंका आक्रमण न हो; इस दिन गोलों द्वारा शत्रुको विच्छित दण्ड दिया जाये; लियावयाङ्गके पीछे पहुंच जानेवाले कुरोकीकी विजय होते ही लियावयाङ्गमें बैठे शत्रुकी कमर टूट जायेगी; उस समय वह थोड़े ही आयासमें मारा और भगाया जा सकेगा। ऐसा ही हुआ। २ री अगस्तको दिनभर जापानी तोपखानोंने रूसी मोर्चों और लियावयाङ्ग नगरपर सिर्फ गोला-वृष्टि की। इस गोला-वृष्टिके फलसे लियावयाङ्ग नगरकी रूसी बसती बिगड़ गई और चीनायोंके महल्लोंका छाया हुआ सन्नाटा और भी बढ़ गया। सन्ध्या समय जापानियोंने हलकासा नाममात्रके लिये एक धावा भी किया।

एक ओर यह सब होने लगा, दूसरी ओर नगरके चीना अधिवासियोंका सङ्कट और भी बढ़ा; साधारण लोग अपने नाशके भयसे स्त्री-पुत्र लिये अपने अपने घरोंमें छिपे बैठे

थे। मकानोंके ऊपरके आकाशसे वज्र जैसा शब्द करते गोले आते जाते दिखाई देते थे ; किसी किसी महल्लेसे गोलों द्वारा लगाई आगकी लालशिखा दिखाई देती थी। जिस मकानपर गोला गिरता था, उसके अधिवासी और उसके इर्दगिर्दके और कितने ही मकानोंके अधिवासी उच्चस्वरसे आर्त्तनाद कर उठते थे। जिस मकानपर गोला पड़ता था, वह मकान टूट जाता था, उसके अधिवासी उड़ जाते थे ; स्त्री, पुत्र, सन्तान, सन्तति दास-दासियों द्वारा परिपूर्ण घराने पलक झपकते मट्टीमें मिल जाते थे। नगरके अधिवासियोंके लिये ऐसे ही ; कितने ही सङ्कट थे , किन्तु मानो इतने सङ्कटोंको यथेष्ट न समझ इन सबसे अधिक भयङ्कर एक और आया। इसका मतलब यह है, कि एकाएक रक्षक भक्षक बन गये ; रूसी, किथावयाङ्गके चीना अधिवासियोंके शत्रु हो गये। एक बहुत बड़ी रूसी फौज चीनाओंके महल्लोंमें घुस गई और चीनाओंकी दुकानों तथा मकानोंको लूटने और तनिक भी बाधा देनेवाले चीनाओंको मारने लगी। एक क्षण पहले जिस मकानमें शान्ति छाई हुई थी ; दूसरे ही क्षण उस मकानका द्वार एकाएक बन्दूकोंके कुन्दोंसे तोड़ा जाने लगा ; द्वार टूटा ; रूसी मकानमें घुसे ; मकानके भीतरसे स्त्री, पुरुष, बालक, बालिका, वृद्ध, युवक सभीके कण्ठसे घोर आर्त्तध्वनि उत्थित होने लगी। दूसरे ही क्षण उस उत्थित आर्त्तध्वनिसे भी ऊंची कुछ पुरुषों तथा स्त्रियोंका चीत्कार सुनाई देने लगा। पुरुष मानो मारे जा रहे थे ; क्रम क्रमसे उनकी चीत्कारध्वनि क्षीण हो एकाएक बन्द ... ; स्त्रियोंकी चीत्कारध्वनि कभी बन्द हुई कभी चल ...

बालक-बालिकाओंकी चीत्कारध्वनि सहज ही ठण्ढी हुई। इस-भरमें मकान लुट-पुट और टूट-फूट श्मशानमें परिणत हो गया; यदि कोई स्त्री या बालक या स्त्री-बालक दोनो बच गये, तो वह रोते-सिसकते रह गये; रूसी इसतरह एक मकानका सर्व-नाशकर दूसरे मकानकी ओर बढ़ते थे। इसतरह अन्यान्य घटनाओंके साथ लियावयाङ्गके अधिवासियोंको इस एक नये सङ्कटमें भी सामना करना पड़ा था। २री अगस्तकी रात लियावयाङ्गवासियोंके लिये कैसी विकट हुई होगी?

३री अगस्तका प्रातःकाल हुआ। ओकू और नोढ़ूको खबर मिल चुकी थी, कि कल २री अगस्तको यानगाई और हैयागताईमें रूसी, सेनापति कुरोकीकी सैन्य द्वारा पूर्णरूपसे पराजित हो चुके हैं। वह समझ गये, कि लियावयाङ्गके रूसी कुछ घण्टोंके मिहमान हैं, आगे बढ़ आक्रमण भी कर न सकेंगे; अपनी जगह स्थिर भी रह न सकेंगे। इसीलिये इन दोनो सेना-पतियोंने इस दिन प्रातःकाल अपनी संख्या बढ़ा उसे क्षतिग्रस्त करनेके बदले अपने तोपखानों और उनके साथ साथ अपनी फौजोंको रूसी मोरचोंके समीप बढ़ा दिया। टाइमसके संवाद-दाताने लिखा है, कि जापानी फौजें आगे बढ़ रूसी मोरचोंसे कोई दो सौ गजके फासिलेपर पहुंच गई थीं। ओकूकी सैन्य-पंक्तिके वाम भागके सामने लियावयाङ्ग नगरकी बगलमें रूसियोंके मोरचे ही नहीं; किले भी थे और इन किलोंमें बैठे ... जापानी गोलोंसे विषम क्षति सहकर भी अपनी जगह बैठे और जापानी फौजोंको समीप आनेसे रोकते थे। ... अपना कितनी ही तोपें इन किलोंके समीप लगा दीं।

इन तोपोंके पर्वत-विदीर्णकारी गोलोंके सामने वह रूसी किले कितनी देरतक ठहर सकते थे? इनकी दीवारोंकी धज्जियां उड़ने लगीं; उनकी खन्दकें ऊंची ऊंची दीवारोंसे पटने लगीं। रूसियोंके वह अन्तिम सुदृढ़ मोरचे भी टूट पड़े।

दोपहरके बादसे लियावयाङ्गके समग्र रूसियोंकी आंखोंतले नैराश्यका डरावना रूप खड़ा दिखाई देने लगा। रूसी सेनापतिगण भी निराश हुए; इनके बड़े विचक्षण सेनापति कुरोपाटकिन भी निराश हुए; आपने आज्ञा दी,—"अब ... है; लियावयाङ्गसे पलटना चाहिये।" इसी समयसे ... तय्यारी आरम्भ हुई। लियावयाङ्ग नगरसे पीछे ताई... नदी रेलके पुलके और कितने ही अस्थायी पुल बांधे ... इस दिन तीसरेपहरसे इन पुलों द्वारा नदीसे पार उतरने ... फौजें पार उतरने लगीं; रिसाले पार उतरने लगे, ... योंसे भरी गाड़ियां भी पार उतरने लगीं। चारों ओर हल... पड़ गई; चारों ओर शीघ्र शीघ्र नदी पार करनेकी ... दिखाई देने लगी। जो रूसी सिपाही मोरचोंमें थे; वह डटे रहे; बाकी सभी लियावयाङ्गसे चले। जगह जगह रूसी ... रसद रखी थी; वह कैसे हटाई जाये? समय बहुत ही कम था; प्रति क्षण जापानियोंका धावा होनेका भय था; इस असमयमें रूसी फौजें ही कठिनतासे हटाई जा सकती थीं; सिपाहियोंसे पहले रसद कैसे हटाई जा सकती थी? रूसी अफसरोंने आज्ञा दी, कि रसदको आग लगा दी जाये। ऐसा ही हुआ; पर्वत-प्रमाण रसद अग्नि-संयोगसे धांय धांय जलने लगी। रूसी अपनी रसद ही को आग लगा सन्तुष्ट नहीं हुए;

क्रोपाटकिनके इतने दिनोंके आवासस्थान रेल-ष्टेशनको भी आग लगा दी; वह भी जलने लगा। इसतरह रूसी अफसर अपने परित्यक्त नगरको बिगाड़ उसे छोड़ चले। उसमें सिर्फ वही रूसी सिपाही छोड़ दिये गये जो मोरचोंमें या उनके मददगार थे। इन लोगोंसे कह दिया गया, कि रूसी सैन्यके रौ-हौर नेतक पुल को रोकना; इसके बाद मोरचोंसे निकल गई और पुल तोड़ देना या उसे आग लगा देना। यह लि सिपाही भी थोड़े नहीं; सहस सहस थे।

श्री कथमय कोई बात बने जापानी गोलन्दाजोंको सावधान मिल चुकी आज्ञा मिली; जापानी फौजोंको धावेकी आज्ञा दी गई। रूसी, सेनअम्बाईमें बिगुल बज उठे; हथियार खड़कने लगे। हैं। सहस्र नहीं; लक्ष लक्ष जापानी सिपाहियोंने मिश्रित मिहते रणहुङ्कार किया; इस रणहुङ्कारसे जैसा शब्द होना चाहिये, था, वैसा ही हुआ; इससे वन-पर्व्वत गूंज गये; अति दूरके प्राणी थर थर कांप गये; मानो अगणित बादलोंने एक साथ मिल गर्ज्जन किया। कोसों लम्बी अर्द्धचन्द्राकार जापानी सैन्य-पंक्ति आगे बढ़ दिनभरकी गोलन्दाजोसे जीर्ण-शीर्ण रूसी किलों और मोरचोंमें जा घुसी। महायुद्ध आरम्भ हुआ। मुण्ड नाचने, रुण्ड उछलने लगे। खोपड़ियां चूर चूर होने लगीं; छातियां बिंधने लगीं। अच्छे अच्छे रूपशाली बलविशिष्ट सशस्त्र जवान माथेपर, छातीपर, पेटपर जांघमें गोली खा टूटी लताकी तरह नोर्जीव निःस्पन्द हो भूतलपर गिरने दोनो ओरके सिपाहियोंके मुंहसे निकलती 'मार मार'की बड़ा ही भयङ्कर रव उत्थित हुआ। जापानी सिपाही

मानो विजय-प्राप्तिके लिये उन्मत्त हो रहे थे; अप
तृणवत् तुच्छ समझ विसर्ज्जन करने और रूसियों
लगे। जापानी सैन्यको इस विश्वसंहारिणी मूर्त्तिके स
क्षणतक ठहर सकते थे? किसी किसी मोरचेके रूसी
ही भेड़-बकरियोंकी तरह और किसी किसी मोर
बहुत ही शस्त्र चलाकर पीछे हटने लगे। रूसियोंके
ही जापानी सैन्य-सागर और भी वेगसे आगे बढ़ा
रूसी काटे जाने लगे; उनकी लाशोंके ढेर लगने लगे।
पीछे ही नगर था। कितनी ही रूसी फौजें नगरके
कितनी ही फौजें नगरकी बगलसे पीछे हटने लगीं
बगलमें—नगरमें—युद्ध आरम्भ हुआ। कितने ही
नगरवासी भरोखोंसे भांक रहे थे। युद्ध-कोलाहल
उनके समीप होता था। अन्तमें उनकी आंखोंके सा
मोड़पर व्याकुल रूसी सिपाही पलटते दिखाई देते थे
हियोंके बाद बारंबार बाढ़ दागते रूसी सिपाही प्रक
इनसे कुछ ही अन्तरपर रूसियोंपर गोलियोंकी वृ
पानी लिखाती प्रकट होते थे। जापानी सिपाही
हियोंको पीछे हटाते हुए एक ओरसे दूसरी अ
जाते थे। युद्धमें प्रवृत्त दोनो पक्ष जब उस राहसे
जाते थे, तब उसमें एकबार फिर सन्नाटा छा जा
कभी कभी वहां गिरे रूसी या जापानी आहत सि
आहसे भङ्ग होता था। कुछ देर बाद ही वहां जा
सियोंका पहरा बैठ जाता था; इसतरह जापानी ब
सैन्य रूसी सैन्यको पीछे हटाती थी और पीछे पीछे